सुभाष चन्द्र बोस के दस्तावेज

भाग—1

सुभाष चन्द्र बोस के दस्तावेज

भाग–1

संपादक

डॉ प्रभाष कुमार

भव्या पब्लिकेशन

ए–21 ओल्ड भिलेज जसोला

नियर शिव मंदिर, न्यू दिल्ली, पिन–110025

(1)

श्री श्री ईश्वर सहाय

कटक,
शनिवार

आदरणीया माँ,

आज 'पूजा' का अंतिम दिन है। इसलिए अवश्य ही आप हमारे ग्राम–निवास में होंगी और देवी दुर्गा की उपासना में लीन होंगी।

मुझे आशा है कि इस साल पूजा खूब धूम–धाम से होगी। लेकिन, माँ, इस सब धूम–धाम की क्या कोई आवश्यकता है? इतना ही यथेष्ट है कि जिसे हम पाना चाहते हैं उसका सम्पूर्ण हार्दिकता और सच्चाई से आह्वान करें। इससे अधिक की जरूरत क्या है? जब चंदन और फूल का स्थान हमारी भक्ति और प्रेम ग्रहण कर लेते हैं, तो वह विश्व की सबसे सुंदर उपासना बन जाती है। शान–शौकत और भंक्ति का कोई मेल नहीं है। इस वर्ष मेरे मन में पीड़ा है। यह सामान्य नहीं, एक गहरा अवसाद है। इस वर्ष मुझे उस परिपूर्णता से वंचित रहना पड़ा है जो देवी दुर्गा के दर्शन से प्राप्त होती है, उस देवी के, जो त्रैलोक्य की स्वामिनी है, जो सभी तरह के दुर्भाग्य से हमारी रक्षा करती है और सभी दोषों से हमें बचाती है; जो विविध वस्त्रालंकार विभूषिता है और जिसके इन्द्रधनुषी आलोक से मंडित महिमामय दर्शन हमें धन्य बनाता है; इस बार मैं उस प्रसन्नता से वंचित रह गया हूँ जो शंख और घंटे घड़ियाल की ध्वनि के साथ पंडितों के पावन मंत्रोच्चार से प्राप्त होती है; वह संतोष मुझे नहीं मिल पाया है जो पुष्प और चंदन और धूप की पवित्र सुगंधि तथा देवी को अर्पित प्रसाद का सबके साथ मिलकर सेवन करने से प्राप्त होता है; इस बार मुझे यह सौभाग्य नहीं मिला है कि मैं पुजारी से आशीर्वाद के पावन पुष्प प्राप्त करू और इससे भी अधिक, पूजा के पवित्र जल के संपर्क से उपलब्ध मानसिक शांति का अनुभव करूँ; मै इन सबसे वंचित रह गया हूँ;

मेरी पंचेन्द्रियां सब की सब अतृप्त रह गई हैं। यदि मैं देवी के सर्वव्यापक और वैश्व विग्रह की अनुभूति कर सकता तो मैं काष्ट–प्रतिमा के दर्शन के लिए व्याकुल न होता। लेकिन कितने ऐसे भाग्यवान और वरदानी व्यक्ति हैं जो ऐसी अनुभूति कर सकते हैं। इसलिए, मुझे सान्त्वनाा नहीं मिल पा रही है।

प्रतिमा–विसर्जन के दिन मैं यहाँ विह्वलता विव्हलता का अनुभव कर रहा होऊंगा, परंतु मेरा मन आप सबके साथ होगा। ऐसे पवित्र दिवस पर भी मेरे मन में प्रसन्नता नहीं होगी। लेकिन अब कुछ किया भी नहीं जा सकता। कल सांयकाल हम यहाँ से आपको अपने प्रणाम भेजेंगे। कृपया आप और पिताजी हमारे प्रणाम स्वीकार करें और अन्य बड़ों तक भी उसे पहुँचा दें।

हम सब सानंद हैं। मुझे आशा है कि आप सब स्वस्थ हैं। आपको और पिताजी को मेरा प्रणाम।

आपका आज्ञाकारी पुत्र
सुभाष
पुनश्च–शारदा कैसी है?

(2)

श्री श्री मातेश्वरी सहाय

कटक,
शनिवार

आदरणीया माँ,

मुझे आज सवेरे आपका पत्र पाकर बहुत प्रसन्नता हुई। उसके साथ पचास रूपये का मनीआर्डर भी आया।

मेरे पत्रों का उत्तर देने में आप कृपया शीघ्रता न करें। जब भी आपको समय मिले, आप उत्तर भेजें! यदि आपको उन्हें पढ़ने में कोई कठिनाई प्रतीत हो तो कृपया उन्हें किसी और से पढ़वा लें।

मटर के बीज जोबरा बगीचे में बोए जा रहे हैं या जल्द बोए जाएँगे। पांच–छः दिन पहले रघुवा मुझ से बीज ले गया था। मै स्वयं बगीचे में नहीं गया।

मुझे यह जानकर दुख हुआ कि नगेन ठाकुर इस वर्ष पूजा नहीं कर सके। क्या वह अब पूर्ण स्वस्थ हैं? मैं जितने भी पूजा–समारोहों में शामिल हुआ हूँ, उनमें से ठाकुर और हमारे परमपूज्य गुरूदेव द्वारा कराई गई पूजाएँ धार्मिक भावना उत्पन्न करने में सबसे अधिक सफल रही हैं। नगेन ठाकुर का चंडीपाठ बड़ा ही हृदयग्राही है और नास्तिक में भी श्रद्धा का संचार कर देता है।

मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि कोडलिया में पूज्य गुरूदेव का मकान बनकर तैयार हो गया है। जब हम अगली बार अपने गाँव जाएँगे तो पहला मौका मिलते ही हम उनका घर देखने जाएँगे। जब आप उनसे मिलें तो हमारा सादर प्रणाम निवेदन कर दें। बड़ी दीदी की बीमारी की बात को सुनकर मुझे दुख हुआ। अब वे कैसी हैं? हमें यह जानकर चिन्ता हुई कि आपको 'डेगू' बुखार हो गया था। कृपया लिखिए कि अब आपकी

तबियत कैसी है, जिससे हमारी चिन्ता दूर हो। शंकराचार्य के स्तोत्रों का पूरा सेट बड़े उचित दाम में 'बसुमति' के कार्यालय में बिक्री के लिए उपलब्ध है। एक पुस्तक में उनके सभी स्तोत्र संग्रहीत हैं और मूल्य केवल बारह आना या एक रूपया है। कृपया यह मौका हाथ से न जाने दें और कांची मामा से कहें कि वह जा कर खरीद लाएं। पुस्तक आप अपने पास सुरक्षित रख लें और जब कटक आएं तो उसे लाएं।

माँ, मुझे आपसे कुछ कहना है। आपको शायद पता होगा कि मैं निरामिषभोजी होना चाहता हूँ। लेकिन इस डर से मैं अभी तक ऐसा नहीं कर सका हूँ कि लोग मेरे इस कदम का विरोध करेंगे या इसका कुछ और अर्थ निकालेंगे। एक महीना पहले से मैंने मछली के सिवा बाकी सब मॉसाहारी भोजन त्याग दिया है। लेकिन आज नादादा ने मुझे जबरदस्ती कुछ मॉस खिला दिया। मैं क्या कर सकता था? मुझे वह खाना पड़ा लेकिन बहुत ही अनमनेपन से। मैं इसलिए शाकाहारी होना चाहता हूँ कि हमारे ऋषियों ने कहा है कि अहिंसा एक महान गुण है। केवल ऋषियों ने ही नहीं, बल्कि, स्वयं भगवान ने ऐसा कहा है। इसलिए भगवान की सृष्टि को नष्ट करने का हमें क्या अधिकार है? क्या ऐसा करना महान पाप नहीं है? जो लोग कहते हैं कि अगर मछली न खाई जाए तो नेत्र ज्योति मंद पड़ जाती है, वे गलती पर हैं। हमारे ऋषि इतने अज्ञानी नहीं थे कि अगर मछली न खाने से लोग अंधे हो जाते तो वे मछली खाने का निषेध करते। इस बारे में आपकी क्या राय है?

मै आपकी सहमति के बिना कुछ नहीं करना चाहता हूँ। हम सब कुशल हैं। आप सबको मेरा प्रणाम।

आपका आज्ञाकारी पुत्र
सुभाष

(3)

श्री श्री ईश्वर सहाय

कटक
शनिवार

आदरणीया माँ,

गोपाली ने मुझसे कहा है कि आप काशी नहीं गई हैं और पिताजी वहाँ अकेले ही गए हैं। पिताजी के पत्र से मुझे मालूम हुआ है कि आपके लिए जाना इसलिए संभव नहीं हुआ, क्योंकि आल के राजा ने समय से पैसे नहीं भेजे। कल मैंने उस नुस्खे के बारे में आपको लिखा है जिसकी चर्चा आपने की थी। लेकिन मैं जल्दी में था और विस्तार से नहीं लिख पाया। मैंने आपके कमरे में नील रतन बाबू के दो नुस्खे देखे, लेकिन मैं यह निश्चय नहीं कर पाया कि आपको किसकी जरूरत है और इसीलिए मैंने दोनों ही भेज दिए। कृपया 'छोटे–दादा' से पूछ कर उनमें से सही नुस्खा ले लें।

मैंने दीदी के लिए कल पत्र लिख लिया और भेज दिया। मैं जानने को उत्सुक हूँ कि 'लिली' कहाँ है और कैसी है?

मेजदादा ने मुझे मेरे अनुरोध पर एक लंबा पत्र लिखा है जो मुझे कल मिल गया, और उसे पाने पर मेरी प्रसन्नता की सीमा न रही। उन्होंने मेरे नम्र निवेदन पर जो कष्ट किया, उससे मुझे बड़ा संकोच हो रहा है। उनके वापस आने तक मैं उस पत्र को एक निधि के समान सुरक्षित रखूँगा।

इससे अधिक मैं और क्या लिख सकता हूँ? ईश्वर की कृपा से हम सब सकुशल हैं शरत बाबू (जमाई बाबू के भाई) इस समय यहाँ हैं। मैं समझता हूँ कि जब वे अपने रहने के लिए किसी घर का प्रबंध कर लेंगे तो चले जाएँगे।

कृपया मुझे सूचित करें कि हमारे परम श्रद्धेय गुरूदेव और माताजी कैसी हैं। उन्हें मेरा सादर प्रणाम निवेदन करें। मैं उन्हें रोज याद करता हूँ। मेरे मन में उस समय की याद अभी भी ताजा है, जब वह यहाँ फूल चुनने को जाया करते थे और हम सब उन फूलों की सुगंध का आनंद लेने के लिए उनके पास जाते थे। उन्होंने एक दिन जिस प्रकार हमें पूजा करने के बाद पवित्र चरणोदक और फुल दिए थे, उसका स्पष्ट चित्र मेरे मन पर अंकित है। मैं शायद एक पागल व्यक्ति जैसा यह सब लिख रहा हूँ। आपको शायद मेरा पत्र पढ़कर कष्ट हो।

हमारा स्कूल संभवतः 15 तारीख को खुले। ठीक–ठीक नहीं मालूम, क्योंकि अभी तक कोई सूचना जारी नहीं की गई हैं। शेष समाचार आपको बड़े दादा से मिल जाएँगे।

मैं बिल्कुल ठीक हूँ। मुझे आशा है कि जब आप अगली बार मुझे देखेंगी तो अधिक मजबूत और वजनी पाएंगी। अगर ऐसा नहीं होता तो इसमें मेरा कोई कसूर नहीं होगा, बल्कि हमारे भाग्य का दोष होगा, क्योंकि अपने स्वास्थ्य क़ी जितनी चिंता मैं। करता हूँ, उतनी शायद ही कोई और करता होगा। लेकिन आप शायद यह सोचती हैं कि मैं जानबूझ कर अपने स्वास्थ्य को नष्ट कर रहा हूँ। मैं एक महीना पहले की अपेक्षा अब अधिक अच्छा अनुभव कर रहा हूँ।

औसत दैनिक खर्च किन्हीं दिनों चार रूपये से पाँच–पाँच रूपये तक आता है, और अन्य दिनों तीन रूपये। आपने जो तीस रूपये भेजे थे, वे सब खर्च हो चुके हैं। जगत बंधु ने पिताजी के हिसाब में से मुझे सैंतीस रूपये आठ आने दिए थे। इसी में से मैं विभिन्न कार्यो के लिए खर्च कर रहा हूँ।

यहाँ बड़े सवेरे हवा मे कुछ खुनकी तो महसूस होती है लेकिन सर्दी अभी दूर है। गोभी के पौधे अभी नहीं लगाए गए हैं। दो रूपये के गोभी के बीच खरीदे गए थे। अभी उनमें केवल अंकुर ही फूटे हैं।

इस समय 'बऊदीदी', 'मामी माँ' और 'मेजबऊ दीदी' कहाँ हैं, और कैसी हैं, उन्हें मेरा प्रणाम कहें। अशोक कैसा है? क्या अब तक उसके सब दाँत निकल आए हैं? यहाँ सब राजी खुशी हैं। मुझे आशा है कि वहाँ भी सभी कुशल से होंगे। कृपया हमारे प्रणाम स्वीकार करें।

आपका आज्ञाकारी पुत्र

सुभाष

(4)

कटक,
बृहस्पतिवार

आदरणीया माँ,

कृपया क्षमा करें कि मैं आपको इतने लंबे समय तक पत्र नहीं लिख सका। कृपया मुझे 'नादादा' के स्वास्थ्य के संबंध में सूचित करें जिससे हमारी चिन्ता दूर हो। क्या वह इस बार परीक्षा मैं नहीं बैठ सकेंगें?

मातेश्वरी की कृपा हमारे साथ सदैव रहती है। यदि हम उसकी अनुभूति करना चाहें तो अपने जीवन के प्रत्येक क्षण में कर सकते हैं। लेकिन (हम भगवान की कृपा को गहन रूप में इसलिए नहीं महसूस कर पाते कि हम अज्ञानी हैं, अविश्वासी हैं और पक्के नास्तिक हैं। हम तभी प्रभु के लिए प्रार्थी होते हैं जब हम कष्ट में होते हैं और, तभी शायद कुछ हद तक सच्चाई से उसे याद करते हैं। लेकिन जैसे ही हमारा कष्ट दूर हो जाता है और हम बेहतर महसूस करने लगते हैं, वैसे ही हम प्रार्थना करना बंद कर देते हैं और भूल जाते हैं।) इसीलिए कुंती देवी ने कहा था 'भगवान! हे प्रभु मुझे सदैव सब समय कष्ट में रहने दो, जिससे मैं हमेशा तुम्हारे प्रति हृदय से प्रार्थना करती रहूँ। यदि मैं प्रसन्न रहूँगी तो शायद

मै तुम्हें भूल जाऊँ, इसलिए तुम मुझे प्रसन्नता मत दो।

मनुष्य जीवन जन्म और मृत्यु का एक अनंत चक्र है और उसका साथ यह है कि हम हरि के प्रति समर्पित हो सकें। इस समर्पण के बिना जीवन का अर्थ नहीं है। हम में और पशुओं में यही अंतर है कि पशु न भगवान के अस्तित्व का अनुभव कर सकते हैं, और न उनकी प्रार्थना कर सकते हैं, जबकि हम अगर चाहें तो वैसा कर सकते हैं। इसलिए, यदि हम उसकी महिमा का गान न कर सकें तो इस संसार में हमारा जन्म ही व्यर्थ जाएगा। ज्ञान बहुत अगाध है और मेरी सीमित बुद्धि उसकों सम्पूर्णतः ग्रहण नहीं कर सकती। इसलिए मुझे ज्ञान नहीं, बल्कि, इस समय भक्ति चाहिए। मैं किसी तरह के तर्क में नहीं पड़ना चाहता, क्योंकि मैं नितांत अज्ञानी हूँ। इसीलिए मुझे केवल श्रद्धा चाहिए। तर्क से अतीत श्रद्धा–यह श्रद्धा, कि भगवान का अस्तित्व है। इसके अतिरिक्त मुझे कुछ भी नहीं चाहिए। श्रद्धा से मुझ में भक्ति जाग्रत होगी और भक्ति से ज्ञान मुझे स्वतः प्राप्त होगी। महान ऋषियों ने कहा है कि श्रद्धा से ही ज्ञान प्राप्ति का मार्ग खुलता है। शिक्षा का उद्देश्य है बुद्धि को कुशाग्रबुद्धि बनाना और विवेक शंक्ति को विकसित करना। यदि ये दोनों उद्देश्य पूर्ण हो जाते हैं तो यह मानना चाहिए कि शिक्षा का लक्ष्य पूरा हो गया है। यदि कोई पढ़ा–लिखा व्यक्ति चरित्रवान नहीं है तो क्या मैं उसे पंडि कहूँगा? कभी नहीं। और यदि एक अनपढ़ व्यक्ति ईमानदारी से काम करता है, ईश्वर में विश्वास रखता है और उससे प्रेम करता है तो मैं उसे महापंडित मानने को तैयार हूँ। कोई व्यक्ति कुछ बातें रट–रटाकर ही विद्वान नहीं बना जाता। सच्चा ज्ञान तो भगवान के दर्शन से ही आता है। शेष जो कुछ है वह ज्ञान नहीं है। मैं विद्वान या पंडित व्यक्तियों को आसमान पर नहीं चढ़ाना चाहता। मैं ऐसे व्यक्ति की पूजा करता हूँ जिसका हृदय ईश्वर के प्रेम से सराबोर है। अगर ऐसा व्यक्ति नीची जाति का भी हो तो भी मैं उसकी चरण धूलि लेने को तैयार हूँ, क्योंकि मेरे लिए उसकी चरण–धूलि बड़ी पवित्र वस्तु है। और जिस व्यक्ति में दुर्गा या हरि

जैसे भगवान के नाम के उच्चारण को सुनते ही हर्ष की हिलोंरे उठने लगती हैं, शरीर रोमांचित होने लगता है, वह तो निस्संदेह स्वयं भगवान है। ऐसे ही लोगों के होने से यह संसार धन्य है। हम सब तो बड़े ही नगण्य जीव हैं।

हम व्यर्थ में धन के पीछे भागते हैं और नहीं जानते कि वास्तव में सच्चा धन क्या है। इस संसार में केवल वही व्यक्ति वास्तव में धनी है जिसमें भगवान के लिए प्रेम और भक्ति जैसे बहुमूल्य गुण हैं। उसकी तुलना में बड़े–बड़े सम्राट भी भिखारियों के समान हैं। यह सचमुच आश्चर्य की बात है कि ऐसे बहुमूल्य कोष को खोने के बाद भी हम जीवित बचे हुए हैं।

हम परीक्षाओं के निकट आते ही बेचैन होने लगते हैं, लेकिन हम यह कभी नहीं सोचते कि हमारे जीवन का प्रत्येक क्षण परीक्षा का क्षण है। हमारा परीक्षक हमारा प्रभु है हमारा धर्म है। शैक्षणिक परीक्षाएँ न कोई ज्यादा महत्व की हैं, और न स्थायी मूल्य की। लेकिन जीवन की परीक्षाएँ अनंत काल के लिए हैं। उनके नतीजे हमें इस जीवन में भी भुगतने होते हैं और आने वाले जन्मों में भी।

वह व्यक्ति धन्य है जिसने अपने इसी जीवन में अपने आपको बिना किसी शर्त के भगवान के हाथों में सौंप दिया है। उसे ही पूर्णता प्राप्त होती है और इस संसार में आकर उसी का जीवन सार्थक बनता है। लेकिन कितने दुःख की बात है कि हम इस महान सत्य को स्वीकार नहीं करते। हम इतने अंधे, इतने अविश्वासी और इतने अज्ञानी हैं कि हम इस सत्य का अनुभव नहीं कर पाते। हम वास्तव में मनुष्य कहलाने योग्य नहीं हैं। हम तो इस पापपूर्ण युग में राक्षसों के समान हैं।

लेकिन फिर भी हमारे लिए कुछ आशा शेष है, क्योंकि भगवान दयालू है और उसकी कृपा सदैव बनी रहती है। चाहे हम घोरतम पाप के अंधकार में ही क्यों न हों, हम उसकी कृपा को पहचान सकते हैं।

उसकी करूणा का कोई अंत नहीं है।

एक बार जब वैष्णव धर्म के सामने ऐसी स्थिति आई कि वह लगभग समाप्त होने को हुआ तो महानतम वैष्णव अद्वैताचार्य ने अपने धर्म की ग्लानि को देखकर भयभीत स्वर में भगवान से यह प्रार्थना की, "हे, भगवान! हमारी रक्षा करो। इस पाप–पूर्ण युग में धर्म निर्मल हो जाने का खतरा पैदा हो गया है। आओ हमारा परित्राण करो।" इस पर नारायण श्री चैतन्य के रूप में धराधाम पर अवतीर्ण हुए। समय–समय पर पाप और अंधकार से परिपूर्ण धरती पर सत्य, ज्ञान, प्रेम और पवित्रता का प्रकाश जिस प्रकार फैलता रहा है, उससे हमें आशा बंधती है कि अभी ऐसी स्थिति नहीं आई है कि हमारा उद्धार हो ही न सके। यदि ऐसा होता तो परमेश्वर इस धरती पर बार–बार मनुष्य रूप में क्यों अवतरित होता? आप कलकत्ता में और कितने दिन रूकेंगी? कृपया हमें इस कुशल–मंगल की सूचना दें जिससे हम चिन्तामुक्त हो सकें । हम सब सानंद हैं। पिताजी कुशल से हैं।

आपका आज्ञाकारी पुत्र
सुभाष

(5)

अपने पुत्रों को क्या बनाना चाहेंगी? दयालु परमेश्वर ने हमें यह जीवन दिया है, यह स्वस्थ शरीर दिया है, बुद्धि और शक्ति दी है। ये सब बड़े बहुमूल्य वरदान हैं। लेकिन किस उद्देश्य की पूर्ति के लिये ये हमें मिलते हैं? भगवान ने हमें इतना सब कुछ निस्संदेह, इसलिए दिया है कि हम उसकी पूजा करें और उसका कार्य करें। लेकिन माँ! क्या हम उसका कार्य करते हैं? हम दिन में एक बार भी तो हृदय से उसकी प्रार्थना नहीं करते। सच माँ, यह सोचकर बहुत ही पीड़ा और निराशा होती है कि हम उसे शायद ही कभी पुकारते हों जो हमारे लिए इतना सब कुछ कर रहा है, जो सदैव हमारा सखा है, सुख–दु:ख का सहचर है, हम चाहे घर में

हों या वन में, जिसका निवास हमारे हृदय में है, और जो हमारे निकट है कि हमारा अपना ही है। हम महत्वहीन सांसारिक चीजों के लिए रोते हैं, लेकिन उस परमेश्वर के लिए हमारी आँखो में कभी एक भी आँसू नहीं उमड़ता। बोलो माँ! क्या हम पशुओं से भी अधिक अकृतज्ञ और निर्मम नहीं है? कितनी लज्जा की बात है कि हमें इस प्रकार की अनीश्वरवादी शिक्षा मिल रही है। अगर कोई प्रभु की महिमा के गीत नहीं गा सकता तो उसका जन्म व्यर्थ है। अगर हमें प्यास लगे तो हम किसी पोखर या नदी से पानी पीकर उसे बुझा सकते हैं, लेकिन क्या किसी की आध्यात्मिक प्यास इतनी आसानी से बुझ सकती है? नहीं, यह असंभव है कि आध्यात्मिक प्यास पूरी तरह बुझ सके इसीलिए हमारे ऋषियों ने कहा है:

"हे अज्ञानी मुनष्य! तु उसकी शरण जा! तू अपने आप को उसके प्रति पूर्णतः समर्पित कर दे।"

वर्तमान युग में भगवान ने कुछ ऐसी नई चीज उत्पन्न की है जो पिछले युगों में नहीं थी। यह नई सृष्टि है 'बाबु' की। हम सब बाबुओं की जमात में शामिल हैं। भगवान ने हमें एक जोड़ी पाँव दिए हैं, लेकिन हम चालीस–पैंतालीस मील पैदल नहीं चल सकते क्योंकि हम बाबू हैं। हमें एक जोड़ी मजबूत हाथ मिले हैं, लेकिन हम हाथों से काम नहीं लेना चाहते क्योंकि हम बाबू हैं। भगवान ने हमें अच्छा–खासा शरीर दिया है, लेकिन हम सोचते हैं कि शारीरिक श्रम केवल निम्न जातियों को ही शोभा देता है क्योंकि हम बाबू वर्ग के हैं। हर तरह के काम के लिए हम नौकर की चीख–पुकार मचाते हैं। और स्वयं हाथ–पांव नहीं हिला सकते क्योंकि आखिर हम बाबू जो हैं। हालांकि हमारा जन्म एक गर्म देश में हुआ है, लेकिन हम गर्मी नहीं सह सकते क्योंकि हम बाबू जो हैं। और हम बाबू हैं इसीलिए सर्दी से हम इतने भयभीत रहते हैं कि अपने आपको ढकने के लिए हम मोटे से मोटे लिहाफ तैयार कराते हैं। हर जगह हम बाबू के रूप में बन–ठनकर निकलते हैं क्योंकि आखिर हम बाबू ही तो

हैं। लेकिन दरअसल हम मनुष्यों के वेश में ऐसे पषु हैं जिनमें मानवोचित गुणों का कहीं पता ही नहीं चलता। बल्कि कहना यह चाहिए कि हम पषुओं से भी गए बीते हैं क्योंकि हम में बुद्धि और चेतना है जो पषुओं में नहीं होती। जन्म से ही हमारा पालन–पोषण आराम से और विलासिता के बीच होता है, और इसीलिए कठिनाइयों का सामना करने की हमारी क्षमता समाप्त हो जाती है। हम अपनी इच्छाओं के स्वामी नहीं बन पातें। हम जीवन भर अपनी कामनाओं के दास रहते हैं और जीवन हमारे लिए भार बन जाता है। कभी–कभी मुझे आश्चर्य होता है कि आखिर हम बंगाली कब पूरी तरह मनुष्य बनेंगे? कब पैसे के लिए अपनी लालसा पर विजय पाएंगे और जीवन के उच्चतर मूल्यों के बारे में सोचना आरंभ करेंगे? कब वे सभी मामलों में स्वावलंबी बनेंगे और शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक उत्थानों के लिए प्रयत्नशील होंगें? अन्य देशों की तरह वे कब आत्मनिर्भर बनेंगे और दुनिया को बता देगें कि उनमें भी पौरूष है। यह देखकर मुझे गहरा दुःख होता है कि आजकल पश्चिमी शिक्षा के प्रभाव से बहुत से बंगाली नास्तिक बनते जा रहे हैं और अपने ही धर्म को ठुकरा रहे हैं। मुझे तब गहरा आघात लगता है, जब मैं देखता हूँ कि आज के बंगाली शान–शौकत की जिन्दगी की ओर बिना सोचे–विचारे ही बढ़ रहे हैं, और चरित्रहीन होते जा रहे हैं। यह कितनी दयनीय स्थिति है कि आजकल के बंगालियों ने अपनी ही राष्ट्रीय वेश–भूषा को तिरस्कार की दृष्टि से देखना सीख लिया है। मुझे इस बात से गहरी व्यथा होती है कि आज के बंगालियों में बहुत कम ऐसे लोग हैं जिन्हें सुदृढ़, स्वस्थ और ओजस्वी व्यक्ति कहा जा सके। और, इस सबसे ऊपर, यह देखकर दुःख होता है कि आज के भद्र बंगालियों में बहुत कम ऐसे हैं जो प्रतिदिन ईश्वर प्रार्थना को कर्त्तव्य समझते हों। माँ, इससे अधिक कष्टदायक और क्या हो सकता है कि आज के बंगाली आराम–तलब, संकीर्ण विचारों वाले, चरित्रहीन, ईर्ष्यालु तथा परायों के कामों में दखल देने वाले हो गए हैं। इस समय हम शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और अगर उद्देश्य केवल इतना है कि हमें नौकरी और पैसे मिलें तो हम इस शिक्षा और अपनी मनुष्यता के

योग्य कहाँ सिद्ध हो सकेंगें? माँ! क्या बंगाली कभी भी अपनी प्रकृति के अनुरूप बन सकेंगे? आपके इस संबंध में क्या विचार हैं? मैं तो यह समझता हूँ, माँ, कि हम एक राष्ट्र के रूप में नर्क की ओर जा रहे हैं। हमारा त्राण कौन करेगा? हमारी त्राता बंगाल की माताएँ ही हो सकती हैं। अगर बंगाल की माताएँ अपने पुत्रों का लालन–पालन एक बिल्कुल नए ढंग से करें, तभी बंगालियों को फिर से सच्ची मानवता प्राप्त हो सकती है।

हम सब ठीक हैं। मैंने छोटे दादा को लिख दिया है। पिताजी सोमवार को गोपानीपालन जाएँगे। कृपया मेरे प्रणाम स्वीकार करें। मैं इस पत्र में कुछ ज्यादा ही बहक गया हूँ। यदि आपको पढ़ने में कष्ट हो तो आप इसे फाड़ दीजिएगा और मुझे क्षमा कीजिएगा।

आपका आज्ञाकारी पुत्र
सुभाष

(6)

श्री श्री मातेश्वरी सहाय

कटक,
रविवार

आदरणीया माँ,

भारत भूमि भगवान को बहुत प्यारी है। प्रत्येक युग में उन्होंने इस महान भूमि पर त्राता के रूप में जन्म लिया है, जिससे जन–जन को प्रकाश मिल सके, धरती पाप के बोझ से मुक्त हो और प्रत्येक भारतीय के हृदय में सत्य और धर्म प्रतिष्ठित हो सके। भगवान अनेक देशों में मनुष्य के रूप में अवतरित हुए हैं, लेकिन किसी अन्य देश में उन्होंने इतनी बार

अवतार नहीं लिया जितनी बार भारत में लिया है। इसीलिए मैं कहता हूँ कि यह भारत हमारी माता, भगवान की प्रिय भूमि है। माँ! तुम स्वयं देखो कि इस देश में तुम जो कुछ भी चाहो मिल सकता है। अधिकतम ताप वाला ग्रीष्म, अधिकतम शीत शरद ऋतु, अधिकतम वर्षा और फिर हृदयं में अपार प्रसन्नता का संचार करने वाले हेमंत और बसंत–तुम जो कुछ भी चाहो। दक्षिण में हमें गोदावरी नदी मिलती है, जिस का निर्मल जल उसके तटों का स्पर्श करता हुआ समुद्र की ओर लगातार बहता रहता है–ऐसी है वह पावन नदी। उसे देखकर और उसके विषय में सोचकर हमारी आँखो के सामने रामायण में वर्णित पंचवटी का दृश्य नाच उठता है–हमारे दृष्टि–पथ पर राम, लक्ष्मण और सीता आते हैं, जो बड़ी प्रसन्नता से गोदावरी के रम्य तट पर अपना समय बिता रहे हैं और जिन्होंने अपने राज्य और वैभव को बनवास के लिए त्याग दिया; कोई भी परमेश्वर की पूजा में अपार प्रसन्नता के साथ अपना समय बिता रही है। इधर हम हैं कि हमारा समय व्यर्थ की सांसारिक चिन्ताओं में नष्ट हो रहा है। कहाँ है वह प्रसन्नता? कहाँ है वह शांति जिसके लिए हम बेचैन हैं? शांति तो तभी मिल सकती है जब हम भगवान के ध्यान में डूबें और भगवान की पूजा करें। अगर इस धरती पर किसी भी प्रकार से शांति आनी है तो वह इसी तरह आएगी कि प्रत्येक घर में भगवान का भजन कीर्तन गूंजे। जब मै उत्तर दिशा की ओर देखता हूँ तो मेरे दृष्टिपथ पर एक और अधिक भव्य दृश्य आता है– मुझे वह पवित्र गंगा दिखाई देती है जो न जाने कब से बहती रहती है, और जिसकी कल्पनामात्र से मेरे सामने रामायण का एक और दृश्य झलक आता है। मै देखता हूँ एक वन में ध्यानमग्न वाल्मीकि की कुटी को, और फिर उस महर्षि के मंत्रोच्चारण से वातावरण गूंज उठता है, जो पवित्र वैदिक मंत्र हैं –और फिर मैं देखता हूँ मृगचर्म पर बैठे उस वयोवृद्ध ऋषि को, अपने दो शिष्यों कुश और लव के साथ, जो उनसे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। विषधर सर्प ने भी अपना स्वभाव त्याग दिया है, और शांत भाव से फन उठाए चुपचाप मंत्रोच्चारण सुन रहा है। ढेर के ढेर पशु गंगा में प्यास बुझाने के लिए आते हुए अचानक ठिठक

जाते हैं जिससे वे उन पवित्र मंत्रों को सुन सकें। पास में ही अधलेटा एक हिरण टकटकी लगाए महर्षि को देख रहा है। रामायण में जो कुछ भी है वह कितना उदात्त है। घास के एक छोटे से तिनके तक का वर्णन कितनी उत्कृष्टता से किया गया है। परंतु यह कितने दुःख का विषय है कि अपने धर्म से विमुख हो जाने के कारण हम ऐसे उदात्त और उत्कृष्ट वर्णनों को समझने में असमर्थ रहते हैं। मुझे एक और दृश्य याद आ रहा है: गंगा इस संसार का समस्त कलुष ढोकर ले जाती हुई निरंतर बह रही है, उसके तट पर योगीजन तपस्यारत हैं। कुछ की आँखें अधमुंदी हैं और वे प्रातः की प्रार्थना में निमग्न हैं। कुछ ने प्रतिमांए प्रतिष्ठित की हैं और वनफूलों, चंदन और धूप–दीप से उनकी पूजा कर रहे हैं। उनमें से कुछ मंत्रोच्चारण कर रहे हैं, जिनकी ध्वनि से वातावरण गूंज रहा है। कुछ गंगा के पवित्र जल में स्नान कर अपने आपको निर्मल बना रहे हैं। और कुछ अन्य, पूजा के लिए फूल चुनते हुए गुनगुना रहे हैं। यह सब कितना महान है, और आंखों तथा मन के लिए कितना सुखद। लेकिन आज वे सब मंत्रदृष्टा ऋषि कहाँ हैं? उनकी पूजा और उनके संस्कार कहाँ हैं? यह सब सोचकर हृदय विदीर्ण हो जाता है। हमने अपना धर्म खो दिया है और वस्तुतः सब कुछ खो दिया है– अपना राष्ट्रीय जीवन भी। अब हम एक दुर्बल, गुलाम, धर्मविहीन और श्राप–ग्रस्त राष्ट्र बनकर रह गए हैं। हे भगवान! भारत क्या था और आज पतन के किस गर्त में पहुँच गया है। क्या तुम अब भी आकर इसका उद्धार नहीं करोगे? यह तुम्हारी ही भूमि है। लेकिन देखो प्रभु! आज उसकी दशा कैसी है। कहाँ है वह सनातन धर्म, जिसकी स्थापना तुम्हारे वरद् पुत्रों ने की थी? वह धर्म और वह राष्ट्र, जिसकी स्थापना और जिसका निर्माण हमारे पूर्वज आर्यों ने किया था, आज धूलि–धूसर है। हे करूणाकर! हम पर दया करों और हमें बचाओं।

मां, जब मैं कोई पत्र लिखने बैठता हूँ तो मुझे ध्यान ही नहीं रहता कि क्या और कितना लिखना है । जो कुछ भी मुझे तत्काल सूझता है, मैं लिख देता हूँ और यह सोचने की चिन्ता नहीं करता कि मैंने क्या लिखा है और क्यों लिखा है। मैं जो चाहता हूँ और मेरा मन मुझे जैसे प्रेरित

करता है वैसे मैं लिखता जाता हूँ। अगर मैंने कोई अनुचित बात लिख दी हो तो आप मुझे क्षमा करेंगी।

जब मैं अपने परम श्रद्धेय गुरूदेव के ब्रह्मलीन होने की बात सोचता हूँ तो मुझे समझ में नही आता कि मैं इस पर दुःख प्रगट करूँ या प्रसन्नता? हम नहीं जानते कि मृत्यु के बाद मनुष्य कहाँ जाता है और उसके साथ क्या घटित होता है। लेकिन अंत में हमारी आत्मा उस परमात्मा में लीन हो जाती है। और वही हमारे लिए सबसे अधिक उल्लास का क्षण होता है। जब न दुःख होता है न सुख। और पूर्वजन्म के कष्ट से मुक्त होकर हम अनंत आनंद में निमग्न हो जाते हैं। जब मैं यह सोचता हूँ कि वह वहाँ के लिए गए हैं जहाँ अखंड शांति है और वह अमर आत्माओं के साथ स्वर्गीय आनंद की बात सोचकर हमें भी प्रसन्न होना चाहिए। दयालु परमेश्वर जो कुछ भी करता है संसार के हित के लिए करता है। इसकी अनुभूति हमको आरंभ में नहीं होती थी क्योंकि हमारी बुद्धि तब कच्ची थी। जब हमें यह अनुभूति होने लगती है तभी हम जान पाते हैं कि वास्तव में जो कुछ भी भगवान कर रहा है, वह हमारी अच्छाई के लिए है। अगर भगवान ने अपने किसी भी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्हें हम से दूर खींच लिया है तो हमें दुःख से अभिभूत नहीं होना चाहिए क्योंकि जो कुछ उसका है; उसे वह कभी भी अपनी इच्छानुसार वापस ले सकता है और इसमें कोई दखल देने का अधिकार हमें नहीं है।

और अगर भगवान की यह इच्छा है कि गुरूदेव लोगों को धर्म के पथ पर चलाने के लिए, और उन्हें सनातन धर्म के सिद्धांतो से प्रेरणा देने के लिए, मनुष्य शरीर में फिर से जन्म लें तो इसलिए भी हमें दुःखी होने की कोई आवश्यकता नहीं है। अगर ऐसा होता है तो संसार का महान कल्याण होगा। जो चीज संसार की भलाई के लिए है, हम उसके विरूद्ध नहीं जा सकते। उससे प्रत्येक मनुष्य का हित होगा। हम भारतीय हैं, और वे अपने भारतीय बंधुओं को धर्म–पथ पर अग्रसर करते हैं, तो हमें इस पर अपार प्रसन्नता होनी चाहिए। स्वयं भगवान ने गीता में कहा है–

देहिनाऽस्मिनयथा देहे कौमारं यौवनं जरा
तथा देहांतर प्राप्ति धीरेस्तत्र न मुह्यति।

अर्थात् जैसे जीवात्मा की इस देह में बालपन, जवानी और वृद्धावस्था होती है, वैसे ही अन्य शरीर की प्राप्ति होती है; इस विषय में धीर पुरूष मोहित नहीं होता।

हम सब कुशल से हैं। हमारा रक्षक भगवान है और उसकी इच्छा सर्वोपरि है। हम सब कोई इसकी लीला के सहचर हैं, और हममें कितनी शक्ति है, यह उसकी कृपा पर निर्भर करता है। हम बगिया के माली हैं और वह मालिक है। हम बगिया में काम करते हैं, लेकिन वहाँ के फल–फूल पर हमारा कोई अधिकार नहीं है। जो भी फल वहाँ होते हैं उन्हें उसके चरणों में अर्पित कर देते हैं। हमें केवल काम करने का अधिकार है, कर्म ही हमारा कर्त्तव्य है। कर्म–फल का स्वामी वह है, हम नहीं। यही बात भगवान ने गीता में कही है–

'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।'

लिली अब कहाँ है। और कैसी है? मैं उसे लिख रहा हूँ क्योंकि मुझे नहीं मालूम कि कहाँ है? मामी माँ और मेरी भाभियां कहाँ हैं? मेरे भाई कैसे हैं? और सबके क्या हाल हैं? पिताजी कैसे हैं? और आप कैसी हैं? कृपया मेरा प्रणाम स्वीकार करें। मेजदादा की कोई खबर आपको मिली है क्या? पिछले दो या तीन डाक–दिवसों से मुझे कोई पत्र नहीं मिला। नूतन मामाबाबू कैसे हैं?

मैंने सुना है कि छोटी मामी माँ बहुत बीमार हैं। उनकी तबियत अब कैसी है? शारदा के क्या समाचार हैं?

आपका आज्ञाकारी पुत्र
सुभाष

(7)

रांची,
रविवार

आदरणीया माँ,

मुझे काफी समय से कलकत्ता के समाचार नहीं मिले हैं। मैं आशा करता हूँ कि आप सब स्वस्थ होंगे। मैं समझता हूँ कि आपने शायद समयाभाव के कारण पत्र नहीं लिखा है।

मेजदादा की परीक्षा कैसी रही? क्या आपने मेरा पूरा पत्र पढ़ लिया था? अगर आपने नहीं पढ़ा है तो मुझे सचमुछ दुःख होगा।

माँ, मैं सोचता हूँ कि क्या इस समय भारत माता का एक भी सपूत नहीं है, जो स्वार्थरहित हो? क्या हमारी मातृभूमि इतनी अभागी है? कैसा था हमारा स्वर्णिम अतीत और कैसा है यह वर्तमान। वे आर्य वीर आज कहाँ हैं, जो भारत माता की सेवा के लिए अपना बहुमूल्य जीवन प्रसन्नता से न्यौछावर कर देते थे?

आप माँ हैं, लेकिन क्या आप केवल हमारी ही माता हैं? नहीं, आप सभी भारतीयों की माँ हैं, और यदि सभी भारतीय आपके पुत्र हैं तो क्या आपके पुत्रों का दुःख आंपको व्यथा से विचलित नहीं कर देता? क्या कोई भी माता हृदयहीन हो सकती है? मेरी माँ, आपने सभी देशों की यात्रा की है; क्या भारतीयों की वर्तमान दशा को देखकर आपका हृदय रक्त के आंसू नहीं बहाता? हम अज्ञानी हैं और इसलिए हम स्वार्थी बन सकते हैं, लेकिन कोई माँ कभी भी स्वार्थी नहीं बन सकती क्योंकि माँ अपने बच्चों के लिए जीवित रहती है। अगर यह सच है तो क्या कारण है कि उसके बच्चे कष्ट से बिलबिला रहे हैं और वह फिर भी अप्रभावित है। तो, क्या माँ भी स्वार्थी हो सकती है? नहीं, नहीं ऐसा कभी नहीं हो सकता; माँ कभी भी स्वार्थी नहीं बन सकती।

माँ, केवल देश की ही दुर्दशा नहीं हो रही है। आप देखिए कि हमारे धर्म की हालत क्या है? हमारा हिन्दू धर्म कितना सनातन और कैसा पवित्र था और आज वह किस प्रकार पतन के गर्त में जा रहा है। आप उन आर्यों की बात सोचें जिन्होंने इस धरती की शोभा बढ़ाई थी और अब उनके पतित वंशजों कों देखें। तो क्या हमारा सनातन धर्म विलुप्त होने जा रहा है? आप देखें कि किस प्रकार नास्तिकता, श्रद्धाहीनता और अंधविश्वास का बोलबाला है। इसी का परिणाम है इतना अधिक पाप और जन–जन के लिए दु:ख और कष्ट। देखिए कि जो आर्य जाति इतनी अधिक धर्म प्राण थी, उसी के वंशज आज कितने अधार्मिक और नास्तिक हो गए हैं। उस अतीत में मनुष्य का एकमात्र कर्त्तव्य ध्यान, प्रार्थना और उपासना था, जबकि आज कितने लोग हैं जो जीवन में एक बार भी प्रभु को पुकारते हैं? बोलो माँ, क्या यह सब देखकर और इन सब बातों को सुनकर तुम्हारा दिल नहीं दहल जाता, तुम्हारी आंखें नहीं डबडबा आतीं, तुम्हारा मन व्याकुल नहीं हो जाता? मैं नही मान सकता कि ऐसा नहीं होता। माँ कभी भी हृदयहीन नहीं हो सकती।

माँ, तुम अपने बच्चों की दुखःद अवस्था को अच्छी तरह देखो। पाप, दु:ख–कष्ट, भूख, प्यार की प्यास, ईर्ष्या, स्वार्थपरता और इस सबसे अधिक धर्म का अभाव, इन सब ने मिलकर उनका अस्तित्व नारकीय बना दिया है। और अपने पवित्र सनातन धर्म की दुर्दशा पर भी दृष्टि डालो। देखो कि किस प्रकार वह लुप्त होता जा रहा है। श्रद्धाहीनता, नास्तिकता और अंधविश्वास उसे पतन की ओर ले जा रहे हैं और कुरूप बना रहे हैं। इतना ही नहीं, आजकल धर्म के नाम पर इतने पापकर्म हो रहे हैं, पवित्र स्थानों में इतना अधर्म फैला है कि शब्द उसका वर्णन नहीं कर सकते। आप पुरी के पंडों की दुर्दशा ही देखिए; यह कैसी लज्जाजनक स्थिति है। कहाँ तो हमारे प्राचीन काल के पवित्र ब्राह्मण थे और कहाँ आज के पाखंडी ब्राह्मण! आज जहाँ कहीं भी थोड़ा बहुत धर्माचरण होता है, वहाँ कट्टरता और पाप हावी हो जाते हैं।

बड़े दुःख की बात है कि हम क्या थे और क्या हो गए हैं। हमारा धर्म कहाँ से कहा पहुँच गया है। माँ, क्या इन सब बातों को सोचकर तुम्हें बेचैनी नहीं होती, क्या तुम्हारे हृदय पीड़ा से हाहाकार नहीं मच जाता।

क्या हमारा देश दिनों–दिन और अधिक पतन के गर्त में गिरता जाएगा, क्या दुखिया भारत माता का कोई एक भी पुत्र ऐसा नहीं है, जो पूरी तरह से अपने स्वार्थ को तिलांजलि देकर अपना सम्पूर्ण जीवन माँ की सेवा में समर्पित कर दे।

बोलो माँ हम कब तक सोते रहेंगे? हम कब तक अनावश्यक चीजों को लेकर खिलवाड़ करते रहेंगें? क्या हम अपने देश के रूदन के प्रति अपने कान बंद रखेंगे? हमारा प्राचीन धर्म मृत्यु शैया पर है; क्या हमार हृदय अब भी नहीं पिघलेगा?

कोई कब तक हाथ पर हाथ रखे अपने देश और धर्म की इस दुर्दशा को देखता रहेगा? अब और प्रतीक्षा नहीं की जा सकती। अब और सोने का समय नहीं। हमको अपनी जड़ता से जागना ही होगा, आलस्य त्यागना ही होगा और कर्म में जुट जाना होगा। लेकिन कैसा दुर्भाग्य है कि भारत माता की बहुत कम ऐसी संताने हैं जो आज के स्वार्थपूर्ण युग में अपने निजी हितों को पूरी तरह से त्याग कर सकें और माँ की सेवा के लिए समर्पित हो सकें। माँ! क्या आपका यह बेटा इसके लिए तैयार हो पाया है?

हमें चौरासी लाख योनियों में भटकने के बाद यह मनुष्य जीवन मिला है। हमें बुद्धि, चेतना, आत्मा जैसे गुण मिले हैं, लेकिन अगर इन सब के होते हुए भी हम पषुओं के समान खाने और सोने से ही संतुष्ट रहें, अगर हम अपनी इन्द्रियों के दास बने रहें, अगर हम केवल अपनी चिन्ता करें और पषुओं के समान नैतिकता शून्य जीवन जिएं तो मनुष्य के रूप में हमारे जन्म लेने की क्या सार्थकता है। केवल वह जीवन जीने योग्य है जो दूसरों की सेवा के लिए समर्पित हो। माँ! क्या तुम जानती हो कि मैं तुम्हें यह सब क्यों लिख रहा हूँ? तुम्हीं कहो कि मैं यह सब बातें

किससे करूँ? कौन मेरी बातें सुनेगा? कौन इन्हें गंभीर मानेगा? जिनका जीवन स्वार्थ से प्रेरित है, वे कभी इस प्रकार से नहीं सोच सकते। क्योंकि वैसा करने से उनके स्वार्थ पर आंच आएगी, लेकिन एक माँ का जीवन स्वार्थ रहित होता है। उसका जीवन अपने बच्चों और अपने देश के लिए समर्पित होता है। यदि आप भारत का इतिहास पढ़े तो आप देखेंगी कि कितनी ही माताएं भारत माता की खातिर जीवित रही हैं और जब कभी आवश्यकता हुई है तो उन्होंने भारत माता के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी है। ऐसी ही थीं अहिल्या बाई, मीरा बाई, दुर्गावती और कितनी ही माताएं जिनके नाम मुझे इस समय स्मरण नहीं हैं। हमारा लालन–पालन माँ के दूध से होता है। और इसीलिए हमें जो सीख और मार्गदर्शन माता से मिलता है उससे अधिक शिक्षण योग्य और उदात्त और कुछ भी नहीं हो सकता।

अगर कोई माँ अपने बच्चे से कहे कि तुम अपने आप से संतुष्ट रहो तो इस पर कोई क्या कह सकता है? ऐसा बच्चा अवश्य ही बहुत अभागा होगा, और ऐसी स्थिति में यह निश्चित है कि आज आशा नहीं रह जाएगी। इस स्थिति में पछतावे के सिवा और कुछ हाथ न लगेगा। अगर यह बात सही है, अगर पुनरूद्धार की सभी आशाएं मिट चुकी हैं, अगर हमें हाथ पर हाथ रखे बैठे रहना है और इस अधःपतन और कष्ट को केवल देखते रहना है तो यह सब परेशानी किसलिए। अगर मुझे अपने जीवन में इससे अधिक कुछ नहीं प्राप्त करना है, तो मैं जीवित ही क्यों रहूं?

मेरी प्रभु से प्रार्थना है कि मैं सम्पूर्ण जीवन दूसरों की सहायता में बिता सकूँ। मुझे आशा है कि वहाँ सब कुशल हैं। यहाँ हम सानंद हैं। कृपया मेरे प्रणाम स्वीकार करें। और इस पत्र का उत्तर अवश्य ही दें।

सदैव आपका प्रिय पुत्र,
सुभाष

(8)

श्री श्री मातेश्वरी सहाय

रांची,
रविवार

आदरणीया माँ,

मुझे आपका पत्र काफी समय पहले मिल गया था और मैंने उत्तर लिख दिया था। लेकिन जब मैंने फिर पढ़ा तो पाया कि भावुकता में आकर मैंने उसमें बहुत सी मूर्खतापूर्ण बातें लिख दी हैं। इसलिए मेरा मन उसे भेजने को नहीं हुआ और मैंने उसे फाड़ दिया। मेरी यह आदत बन गई है कि जब मैं पत्र लिखने बैठता हूँ तो अपने ऊपर मेरा नियंत्रण नहीं रहता और मैं भावना में बह जाता हूँ। मुझे सांसारिक बातों के बारे में पत्र लिखना या पढ़ना अच्छा नहीं लगता; इस बात से मेरा दृष्टिकोण स्पष्ट हो जाता है। मैं चाहता हूँ कि पत्र विचारों से पूर्ण हो। जब मुझे प्रेरणा नहीं होती तब मैं नहीं लिखता। लेकिन जब लिखने का मन होता है तो मैं एक के बाद एक पत्र लिखता जाता हूँ।

मुझे यह हमेशा ही आवश्यक नहीं प्रतीत होता कि मैं शारीरिक कुशल क्षेम के बारे में लिखू। अगर किसी को भगवान में विश्वास है तो चिन्ता और भय उससे दूर रहतें हैं। आखिर दुर्भाग्य का सामना होने पर भी कोई कर क्या सकता है? हमारे पास ऐसी कोई शक्ति नहीं है कि हम किसी का अपनी इच्छानुसार उपचार कर सकें। फिर हम चिन्ता क्यों करें? जगमाता, जो हमस ब की पालक हैं, हमारी रक्षा करेंगी ही। जब त्रैलोक्य जननी हमारे परिश्रम के लिए हैं तो भय कैसा और चिन्ता किस बात की? श्रद्धा का अभाव ही सभी प्रकार के दुर्भाग्य और दुख की जड़ है। लेकिन मनुष्य यह अनुभव नहीं कर पाता। वह सोचता है कि अगर वह इच्छा करे तो किसी को भी चंगा कर सकता है। कैसा अज्ञान है। मामा आठ या नौ दिन पहले कलकत्ता गए और ठीक हैं। उन्हें अब कच्चे नारियल का पानी पीना बहुत अच्छा लगता है। उनके स्वास्थ्य की वर्तमान

अवस्था में वह उनके लिए बहुत गुणकारी भी है। यदि आप कुछ दवा कलकत्ते में उनके पास भेज सकें तो उनका बड़ा हित होगा। उन्होंने मुझ से कहा है कि मैं इस विषय में आप से चर्चा कर दूं।

यहाँ सब कुशल मंगल है। मुझे जानकर प्रसन्नता हुई कि आप सब स्वस्थ हैं। मेजदादा कब लौटेंगे?

हमारे परीक्षाफल संभवतः मई के मध्य तक आ जाएँगे। सचाई क्या है, यह तो मैं नहीं जानता लेकिन मैंने यह सुना है कि कई लड़कों को तो अपने प्राप्त अंकों का भी पता चल गया है।

क्या सेज दीदी और उनका परिवार यहाँ आने वाला है?

मैं इस विचार से हर समय पीड़ित रहता हूँ कि मैंने इस बहुमूल्य किन्तु संक्षिप्त जीवन का इतना अधिक समय व्यर्थ में गंवा दिया है। कभी–कभी तो वह पीड़ा असहय हो जाती है।

यदि मनुष्य का जन्म लेकर मैं मानवीय अस्तित्व के उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर सकूँ, यदि मैं उसकी नियति को चरितार्थ नहीं कर सकूँ तो उसकी सार्थकता ही क्या है? जैसे सभी भगवान में होती है। अगर हमें ईश्वर के दर्शन नहीं होते तो हमारा जीवन व्यर्थ है, सभी कर्मकांड, उपासनाएं और ध्यानादि व्यर्थ हैं, केवल पाखंड हैं। व्यर्थ की बातों में समय गंवाना मुझे अच्छा नहीं लगता। मैं यह अधिक पसंद करूँगा कि मैं अपने आपकों एक कमरे में बंद कर लूं और दिन–रात चिन्तन–मनन और अध यन में डूबा रहूँ। प्रत्येक दिन हम मृत्यु के निकटतर पहुंचते जा रहे हैं। हमारे पास भगवान को पाने के लिए, अखंड शांति और विश्राम पाने के लिए साधना करने का समय कहाँ है? जब तक हम उसके दर्शन नही कर लेंगे, जो समस्त आनंद का उद्‌गम है, तब तक हम सुखी नहीं हो सकते। मुझे अक्सर यह अचंभा होता है कि लोग धन और संपति मात्र से कैसे संतुष्ट हो पाते हैं? उसके बिना, जो समस्त सुखों की खान है, जीवन में कभी भी शाश्वत सुख नहीं मिल सकता। अगर हमें चिर–संतोष प्राप्त

करना है तो हमें उस तक पहुंचना होगा जो सभी प्रसन्नताओं का अक्षय स्त्रोत है।

भगवान की अनुभूति और अभिव्यक्ति के बिना जीवन व्यर्थ है। मनुष्य जो भी पूजा–अर्चन, ध्यान, चिन्तन–मनन और प्रार्थना आदि करता है उसका एक ही उद्देश्य हैः भगवान की प्रत्यक्षानुभूति। यदि यह उद्देश्य सिद्ध नहीं होता तो उसके सभी प्रयास व्यर्थ हैं। जिसने एक बार भी ऐसे दिव्य आनंद की रसानुभूति कर ली है, वह फिर कभी भी पापपूर्ण भौतिक जगत् की और दृष्टि नहीं डालेगा।

उस लीलामय ने हमें संसार के भौतिक पदार्थो की लालसा से प्रेरित किया है और माया के मोह जाल में उलझाया है। यह वैसा ही है जैसे माँ अपने घरेलू काम–काज में व्यस्त हो, और शिशु अपने खिलौनों में। जब तक बच्चा अपने खिलौनो को परे हटाकर अपने हृदय की सम्पूर्ण शक्ति से माँ के लिए रोता नहीं है, तब तक माँ उसके पास नहीं आती। यह जानकर कि अभी तो बच्चा खेल में उलझा है, माँ समझती है कि उसे उसके पास जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। लेकिन जब बच्चे की चीख उसके कानों में पड़ती है, वह तुरंत दौड़कर उसके पास आ पहुँचती है। यही खेल जगमाता भी हमारे साथ खेल रही है। भगवान को कोई भी तब तक नहीं पा सकता, जब तक उसके प्रति समर्पण शत–प्रतिशत न हो। यदि भगवान को केवल कुछ अंश तक ध्यान देकर पाया जा सकता तो वे सब लोग, जो सांसारिक सुखों में डूबे हैं, उसे पाने से क्यों वंचित रह जाते? उसके बिना सब कुछ शून्य है–नितांत शून्य; उसके बिना व्यक्ति का जीवन एक विडम्बना है, एक असहनीय भार है।

इस संबंध में आपके क्या विचार हैं? यदि मैं उस तक नहीं पहुँच सकूँगा तो मेरा जीवन किसके काम आएगा? किसको मैं अपने जीवन का परम प्राप्य बनाऊँगा? किससे मैं अंतस्तल के उद्‌गार प्रकट करूँगा? किसमें मैं आनंद के अखंड स्त्रोत की खोज करूँगा? वह प्राणी मात्र का सारतत्व हैः वही है जिसको उपलब्ध करना है, जिसकी अनुभूति करनी है।

वह केवल साधना द्वारा मिल सकता है—गहन ध्यान और तीव्र प्रार्थना द्वारा। केवल इसी प्रकार उसकी तीव्रता से अनुभूति हो सकती है—यहाँ तक कि दो या तीन वर्षो में ही हमें लगातार साधना करते जाना होगा—सफलता या विफलता उसके हाथ में है। मुझे तो कर्मरत रहना है, अंतिम परिणाम देने वाला वह है: उसी को चिन्ता करनी है कि मैं सफल होऊं या निष्फल—हमें तो लगे रहना है और प्रयास करते जाना है। अगर किसी ने उसे एक बार भी पा लिया तो फिर उसे कोई प्रयास या प्रार्थना करने की आवश्यकता नहीं रह जाएगी। मुझे आशा है कि आप सब सकुशल हैं। मेरे प्रणाम स्वीकार करें।

आपका आज्ञाकारी पुत्र,
सुभाष

(9)

रांची,
सोमवार (1913)

आदरणीया माँ,

कल आपका पत्र पाकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। मामी की बीमारी के कारण हमें यहाँ और अधिक समय तक रूकना पड़ा। वह अब पहले से अच्छी हैं और मौसम भी अब साफ हो गया है। हम कल यहाँ से चलेंगे और परसों बड़े सवेरे कलकत्ता पहुँच जाएँगे।

हम सब स्वस्थ हैं।

मैंने परीक्षा से काफी पहले से आशा लगाई थी, और मुझे लगभग निश्चित लगता था कि मुझ को 20 रूपये का वजीफा मिलेगा। इसका कारण यह था कि मैं पूरे हृदय से उसके लिए इच्छा कर रहा था। यह इच्छा मैं अपने लिए नहीं कर रहा था, क्योंकि मुझे पैसों की क्या जरूरत है? मुझे धन से वितृष्णा है क्योंकि धन ही सभी बुराइयों की जड़ है। मैं

यह इच्छा व्यक्तिगत हित की दृष्टि से नहीं कर रहा था। मैंने तो यह संकल्प किया था वजीफा मिलने पर मैं उससे एक पाई भी अपने ऊपर खर्च नहीं करूँगा, बल्कि उसे दूसरों के हित में व्यय करूँगा। मुझे आशा है कि मैं अपने संकल्प पर दृढ़ रह सकूँगा। लेकिन मुझे यह समझ में नहीं आता कि मैंने इतना ऊँचा स्थान कैसे प्राप्त कर लिया। मैंने परीक्षा से पहले दरअसल बहुत कम पढ़ाई की थी और काफी समय से मै पढ़ाई की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दे रहा था। मैं निश्चित रूप से जानता हूँ कि मैं इतने ऊंचे स्थान को पाने के योग्य नहीं था। मुझे तो आशा थी कि मुझको सातवां स्थान मिलेगा। यदि बिना यथेष्ट पढ़ाई किए मुझे ऐसा स्थान मिल सकता है तो उनका क्या होगा जिनके लिए पढ़ाई के सिवा और कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं है, और जो अध्ययन की खातिर अपनी जान की भी बाजी लगाने को तैयार होंगे। लेकिन चाहे मैं प्रथम आऊं या अंतिम, मैंने यह अनुभव कर लिया है कि अध्ययन ही विद्यार्थी के लिए अंतिम लक्ष्य नहीं है। विद्यार्थियों का प्रायः यह विचार होता है कि अगर उन पर विश्वविद्यालय का ठप्पा लग गया तो उन्होंने जीवन का चरम लक्ष्य पा लिया। लेकिन अगर किसी को ऐसा ठप्पा लगने के बाद भी वास्तविक ज्ञान नहीं प्राप्त हुआ तो? मुझे कहने दीजिए कि मुझे ऐसी शिक्षा से घृणा है। क्या इससे कहीं अधिक अच्छा यह नहीं है कि हम अशिक्षित रह जाएं? विद्यार्थी का प्राथमिक कर्त्तव्य है चरित्र–निर्माण। विश्वविद्यालय की शिक्षा चरित्र–निर्माण में सहायक होती है। और हम किसी के भी चरित्र को उसके कार्यों द्वारा आंक सकते हैं। कार्य ही चरित्र को व्यक्त करता है। किताबी जानकारी से मुझे घोर वितृष्णा है। मैं चाहता हूँ चरित्र, विवेक, कर्म। चरित्र के अंतर्गत सब कुछ आ जाता है– भगवान की भक्ति, देशभक्ति, भगवान को पाने की उत्कट आकांक्षा। किताबी जानकारी एक बेकार चीज होती है, जिसका कोई महत्व नहीं होता, लेकिन कितनी शोचनीय बात है कि अनेक लोग उसी की डींग हांकते रहते हैं।

कलकत्ता में पढ़ाई करने के कुछ लाभ हैं और कटक में अध्ययन करने के कुछ अन्य लाभ अभी मैं निश्चय नहीं कर पाया हूँ कि कहाँ पढ़ूं?

मै कलकत्ता वापस आने पर यह तय करूँगा। लेकिन मैं सोचता हूँ कि मुझे प्रेसीडेंसी कालेज में भर्ती नहीं होना चाहिए क्योंकि जिन विषयों को मैं लेना चाहता हूँ उनकी पढ़ाई की सुविधा वहाँ नहीं है।

आपका आज्ञाकारी पुत्र
सुभाष

(अगले चार पत्र नेताजी ने अपने बड़े भाई शरत चन्द्र बोस को लिखे थे। उस समय नेताजी 15 वर्ष के थे और उन्होंने ये पत्र अंग्रेजी में लिखे थे। पहला पत्र तब लिखा गया था जब उनके भाई वकालत पढ़ने के लिए इंग्लैंड जाने की तैयारी कर रहे थे और अन्य तीन तब लिखे गए थे, जब वह इंग्लैंड में पढ़ रहे थे। नेताजी ने 1920.21 में भी अपने भाई को इंडियन सिविल सर्विस से अपने इस्तीफे के संबंध में कई बड़े महत्वपूर्ण पत्र लिखे थे।)

(10)

कटक
22 अगस्त, 1912

प्रिय दादा,

यह पत्र मैं आपको बहुत संकोच के साथ लिख रहा हूँ क्योंकि आप अपनी विदेश यात्रा की तैयारी के सिलसिले में बहुत व्यस्त और चिन्तित होंगे। लेकिन मैं यह लिख रहा हूँ कि आपके भारत में रहते यह मेरा अंतिम पत्र होगा जो आपको मिलेगा।

इस पत्र को लिखने का मेरा एक ही उद्देश्य है और वह है आपसे अनुरोध करना कि इंग्लैंड की अपनी यात्रा के दौरान आप जो कुछ भी देखें, उसका विवरण भेजकर मेरी जानकारी बढ़ाएं और मुझे प्रसन्न होने का अवसर दें, साथ ही मुझे यह भी बताएं कि अजनबी और विदेशी संपर्कों

से आपको कैसा महसूस हुआ है।

जब आपका जहाज बम्बई बंदरगाह से रवाना होगा और किनारा दूर से दूर छूटता जाएगा–जब आप तट की हरियाली की अंतिम झलक देखेंगे, और देखेंगें कि आपकी मातृभूमि की आखिरी नीलाभ रेखा क्षितिज के बादलों में लुप्त होती जा रही है, और जब आपकी दृष्टि लौटकर समुद्र की अनंत लोस लहरों और गरजती महा तरंगों पर पड़ेगी, जिन्हें चीरता हुआ जहाज आगे बढ़ रहा होगा–जब ऊपर नीलाकाश होगा और नीचे सागर की आतल, नीरस गहराइयां–तो क्या आपके मन में प्रकृति के इन रूपों के प्रति कोई अनोखी भावना उत्पन्न होगी? क्या आप इर्विंग की ये पंक्तियां याद करेंगे– " मुझे ऐसा लगा की मेरे लिए विश्व पोथी के एक खंड का और उसमें सन्निहित विषयों का पटाक्षेप हो चुका है और दूसरे खंड को खोलने से पहले मेरे पास उन पर मनन क़रने का समय।" अथवा क्या आप इसी लेखक की ये पंक्तियां दुहराएंगे– "इससे मुझमें यह चेतना जाग्रत होती है कि एक सुव्यवस्थित जीवन का सुदृढ़ आश्रय मुझसे टूट गया है और एक संदिग्ध विश्व में भटकने के लिए मुझे भेज दिया गया है।" निस्संदेह, कोई भी पहले उद्धृत की गई पंक्तियां दुहराना चाहेगा, न कि बाद की।

मैं समझता हूँ कि आपको कुछ दिन के बाद ही धरती फिर दिखाई देगी जो अदन के निकट की धरती होगी। संक्षिप्त नमस्कार के बाद धरती जब आपका दुबारा अभिनंदन करेगी तो आपको कैसा लगेगा?

समुद्र में आपको सूर्यास्त का पूर्ण और विशद दृश्य देखने को मिलेगा। यह वास्तव में बड़ा ही मनोरम दृश्य होता है, और जिन्होंने सागर–यात्रा नहीं की है, वे इस दृश्य के लिए तरसते रहते हैं। इतना सुंदर होता है यह। क्या आप सागर में सूर्यास्त का संक्षिप्त विवरण भेजकर मुझे आनंदविभोर नहीं करेंगे? आह! कितनी सुंदर होगी अस्त होते हुए सूर्य के प्रकाश की वह सुनहरी बाढ़ जो अपनी बांहों में सागर के सम्पूर्ण प्रसार को समेटे होगी और जो एक–एक उठती और गिरती

लहर के साथ अठखेलियां कर रही होगी। डूबते सूरज की किरणें पश्चिमी क्षितिज को गुलाबी लालिमा दे रही होंगी। और अगले ही क्षण आप देखेंगें कि संध्या की लंबी छायाएं आकाश तक फैल गई हैं और आधा घंटा बीतते–न–बीतते सम्पूर्ण वातावरण को अंधेरे ने अपनी बांहों में जकड़ लिया है–केवल जहॉ–तहां किन्हीं पीताभ ग्रह–नक्षत्रों की क्षीण टिम–टिम उसको भेदने का प्रयास कर रही है। आंखो और आत्मा के लिए यह कितना सुंदर, कितना मनमोहक दृश्य होगा।

और फिर प्रायः एक पखवाड़े की नीरस समुद्री यात्रा के बाद आप एक और ही दुनिया में पहुंचेंगें, जहॉ शोर–शराबा है और जो उन परदेसी लोगों की दुनिया है जिनकी चमड़ी गोरी है और आंखे नीली। क्या उस विचित्र परिवेश की तुलना में आपको अपना विमुक्त अपनत्वपूर्ण परिवेश अधिक ग्राह्य नहीं लगेगा? लेकिन निस्संदेह यह भावना एक–दो दिन में दूर हो जाएगी।

मै नहीं जानता कि मैं यह सब क्या लिख गया हूॅ। एक पागल व्यक्ति की तरह मुझे जो कुछ सूझा है, मैं घसीटता गय हूॅ। लेकिन मैं समझता हूॅ कि मैने आपसे जो उम्मीद लगाई है, वह पूरी होगी। अगर छोटे भाई के लिए ऐसा कहना अनुचित न हो तो मैं ह्रदय से यह मंगल–कामना करता रहूँगा कि भगवान की कृपा से आपकी यात्रा सकुशल संपन्न हो। हम सब सानंद हैं।

प्यार और आदरपूर्वक,

मैं हूॅ,
आपका स्नेहभाजन
सुभाष

(11)

कटक

17—09—12

प्रिय दादा,

मुझे आशा है कि आपको मेरा वह पत्र अब तक मिल चुका होगा जो मैंने आपको लंदन के पते पर भेजा था। मैंने आपको एक पत्र तब भेजा था जब आप कलकत्ता में थे, लेकिन मुझे निश्चयपूर्वक नहीं मालूम हो पाया था कि वह पत्र आपको मिला है या नहीं। लंदन से आपने जो पत्र माताजी को लिखा था उसे मैं पढ़ गया हूँ, और यह जानकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है कि मेरा वह पत्र आपको मिल गया था। जब मैंने उसे लिखा था तब मैंने क्षणभर के लिए भी यह नहीं सोचा था कि वह आपको कोई संतोष दे सकेगा, लेकिन मुझे यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि आपने उसे पढ़कर प्रसन्नता प्राप्त की। इसका कारण यह है कि उसमें व्यक्त भावनाएं मेरे हृदय से निकली थीं। हृदय सदा ही हृदय का स्पर्श करता है और ऐसा ही इस मामले में भी हुआ। जो विचार सीधे हमारे हृदय से उद्‌भूत होते हैं वे अन्य विचारो की अपेक्षा कहीं अधिक सक्षम होते हैं, भले ही हार्दिक विचारों की भाषा सीधी—सादी और अनलंकृत हो तथा अन्य विचार आलंकारिक भाषा और शैली में व्यक्त किए गए हों। मैं नहीं जानता कि मैंने उसे क्यों लिखा—मुझे अब कुछ याद नहीं आ रहा है। मैं अचानक भावना में बह गया और मैंने तुरंत लिखना शुरू कर दिया। मैं नहीं जानता कि मैंने क्या लिखा और क्यों लिखा। मैंने तो बस उस समय के अपने हृदय के भावों को सहज रूप में व्यक्त कर दिया। शायद वह रात का घनघोर सन्नाटा था, क्योंकि वह लगभग आधी रात का समय था, जिसने ऐसी अनोखी भावनाओं को जगा दिया। मैं समझता हूँ कि ऐसी भावनाओं का अनुभव सभी को हुआ होगा, विशेषतः उनको जिन्होने उन विदाई समारोहों में भाग लिया होगा और शायद बहुत अधिक तीव्रता से अनुभव हुआ होगा कि वह इतना संवेदनशील क्षणभर भी मुझसे शायद ही सहन हो पाता। लेकिन जो विगत है उसकी बात छेड़कर मुझे आपकी भावना

को झकझोरना नहीं चाहिए।

आपको संभवत: वहाँ बंगला कवि और श्रद्धेय मनीषी रवीन्द्र नाथ ठाकुर के विषय में सुनने और बहुत कुछ पढ़ने को मिला होगा। उनके बारे में पढ़कर और यह जानकर कितना गर्व होता है कि अन्य देश वालों ने उनका कितना महान आदर किया है। इससे हमें बंगाल और भारत के भविष्य के प्रति आशा बंधती है। मैं अपने आपको तब बहुत धिक्कारने लगता हूँ जब मैं सोचता हूँ कि किस प्रकार बंगाल उनके प्रति सराहना व्यक्त करने में उदासीन रहा है और किस प्रकार उसने उनकी असाधारण प्रतिभा के प्रति उपेक्षा दिखाई है। जबकि ऐसे परदेसियों ने, जिनकी भाषा भिन्न है, जिनके विचार और आदर्श न केवल भिन्न हैं, बल्कि कुछ मामलों में एकदम विपरीत हैं, उन्हें उठाकर अंधकार से आलोक में पहुँचा दिया है और महानतम विश्व कवि की श्रेणी में बिठा दिया है। हम कैसे विचित्र लोग हैं। कृतज्ञता की भावना तो जैसे हमारे हृदय से लुप्त ही हो गई है। कवि ने कहा है:

"नित्य प्रति बढ़ता जाए ज्ञान
और भी किन्तु बढ़े सम्मान।"

मुझे आशा है कि समय आएगा जब मैं कवि ठाकुर की कविताओं को समुचित रूप में समझ सकूँगा।

क्या आप अपने किसी पुराने मित्र से मिले हैं? क्या उनमें बीरेन बोस भी थे?

अंग्रेज अपनी मातृभूमि के प्राकृतिक दृश्यों की बड़ी प्रशंसा करते हैं। क्या यह प्रशंसा उचित है? मैं समझता हूँ कि आप भारत और इंग्लैंड की दृश्यावलियों की तुलना कर सकने की स्थिति में हैं।

हम यहाँ खूब अच्छी तरह हैं। आशा है आप पूर्ण स्वस्थ होंगे।

सादर प्रणाम सहित,

मैं हूँ,
आपका स्नेहभाजन
सुभाष

(12)

कटक
11–10–12
8 बजे रात्रि

प्रिय दादा,

आपका सुदीर्घ पत्र मुझे आज शाम को ही मिला। आपने मेरे एक बचकाने अनुरोध को पूरा करने के लिए जो अपार कष्ट झेला है, उसके लिए मैं नहीं जानता कि किन शब्दों में आपके प्रति आभार प्रकट करूँ। भाषा असमर्थ है क्योंकि वह विचारों को आधा–अधूरा ही प्रकट कर पाती है। मेरी कामना है कि मनुष्य उसे और पूर्ण बना सके क्योंकि अभी वह बेचारी इतनी लंगड़ी है। मैं आपसे कह नहीं सकता कि आपके द्वारा प्रेषित वर्णन मुझे कितना अच्छा लगा–वह कितना विशद और प्रभावोत्पादक है। आपने जिन दृश्यों का विवरण भेजा है, वे जैसे मेरी आंतरिक आंखों के आगे नाच रहे हैं और जीवंत एवं यथार्थ प्रतीत हो रहे हैं। इतना ही नहीं, वे अन्य ऐसे दृश्यों को भी प्रस्तुत कर रहे हैं, जिन्हें मैंने कभी देखा था लेकिन जो स्मृति और प्रेरणा के अभाव में कहीं भीतर सो रहे थे। मैं मनोरम दार्जिलिंग के सुंदर दृश्यों को बायस्कोप की भांति एक के बाद एक देख रहा हूँ; मेरे सामने समुद्र–पुरी का नीला समुद्र–नर्तन कर रहा है, सैकत तट से पूरे जोरों से टकरा रहा है–अथाह नीला जल, जिसमें जहाँ तहां फैनिल सफेदी चित्रित है, क्षितिज की अटूट नीलिमा को छूने के लिए बढ़ रहा है; नरज की पथरीली, रूखी पहाड़ियां महानदी के श्वेत भव्य तटों पर गर्व से सिर ऊंचा किए खड़ी हैं, भुवनेश्वर में उदयगिरि और खंडगिरि की ऐतिहासिक गुफाएं–इन सबका, जिन्हें मैं देख चुका हूँ, दृश्य मेरी आंतरिक आंखों के आगे नाच रहा है। आपके द्वारा प्रेषित 'हैप्पी स्नोडन' का चित्र मैं देख रहा हूँ और उसकी सुंदरता पर मुग्ध हो रहा हूँ; क्षण–क्षण बदलते आकाश के कौतुकी रंग हिमशिखरों पर अपना ठप्पा लगा रहे है; नीचे पसरी बर्फीली झीलें उन रंगों की परछाइयां पकड़ने में व्यस्त हैं; हिमाच्छादित चट्टानें जगह–जगह चटखीले लाल रंगों से रंगी

है; सम्पूर्ण दृश्य हिन्दुओं के पौराणिक हेमकूट पर्वत अथवा यूनान के देवस्थान 'ओलिम्पस' जैसा प्रतीत होता है।

मैं नहीं जानता कि मैं यह सब बकवास लिखकर आपको क्यों भेज रहा हूँ और क्यों आपका समय नष्ट कर रहा हूँ, लेकिन मेरे भीतर की कोई प्रेरणा है जो मुझे ऐसा करने के लिए विवश कर रही है। मुझे ठीक तो मालूम नहीं, लेकिन शायद यह सब आपको क्लांतिजनक लग रहा होगा।

लगभग एक पखवाड़ा पहले अपने माँ को बेहद सुंदर पिक्चर पोस्टकार्डों का एक पैकेट भेजा था। आपका चुनाव बहुत अच्छा था: ऐसे खूबसूरत पोस्टकार्डों का संचय दुर्लभ है। जब माँ ने मुझसे कहा कि मैं उनमें से सर्वोत्तम चुन लूं तो मैंने उत्तर दिया कि ये सभी अनुपम और श्रेष्ठ हैं। चित्र इतने अच्छे हैं और निस्संदेह सौन्दर्य को इतना बढ़े–चढ़े रूप में प्रस्तुत करते हैं कि लगता है जैसे नर्क स्वर्ग बन गया हो। वे तद्रूप तोनहीं हैं, लेकिन आकर्षक अवश्य हैं। हमें उनको देखकर हार्दिक प्रसन्नता हुई और उनमें से कुछ को मैंने अपने पास रख लिया है।

आपने जो वर्णन लिख भेजा है, वह इतना विशद और सजीव है कि अगर मुझे चित्रांकन का ज्ञान होता तो मैं उसके अनुसार चित्र बनाने का प्रयास अवश्य करता जिससे उनकी छाप और गहरी बने और मुझे आत्म–संतोष मिले। लेकिन मैं चित्रकला नहीं जानता, और इसीलिए मुझे उनको मन:पटल पर अंकित देखकर ही संतोष करना होगा।

आप जब बम्बई और स्वेज के बीच यात्रा कर रहे थे तो आपकी मन:स्थिति क्या थी, इसकी मैं सहज ही कल्पना कर सकता हूँ–नीले सागर की एकरसता से क्लांत और जीवंत प्रकृति की एक झलक पाने के लिए लालायित। मैं स्वयं एक बार एक महीने से अधिक कलकता में नही रहना चाहता, क्योकि मैं अपनी आंखो को ताजा सौन्दर्य और प्रकृति की प्रसन्न सुषमा की खुराक देने की अदम्य इच्छा की उपेक्षा नहीं कर

सकता। अगर किसी की आत्मा को सांत्वना देने और दुर्बल क्षणों में प्रेरणा का बल प्रदान करने के लिए प्रकृति न हो तो मैं सोचता हूँ कि मनुष्य जीवन में प्रसन्नता का अनुभव नहीं कर सकता। जब तक प्रकृति हमारी सहचरी न हो और हमारा मार्गदर्शन न करे, तब तक जीवन किसी मरूस्थल में निष्कासन का शाप भोगने वाला बन जाता है, उसकी ताजगी समाप्त हो जाती है, वह निष्क्रिय बन जाता है और जीवन का शुक्ल पक्ष धुंधलाने लगता है।

आपने मेरे लिए जो कष्ट सहा और जो मुझे विवरण भेजा है, उसके लिए मैं आपके प्रति कितना भी आभार प्रकट करूँ, कम है।

मुझे आशा है कि मैंने आपको जो पत्र लंदन के पते पर भेजे थे, वे आपको अब तक मिल चुके होंगे।

आज डाक का दिन है। मुझे अपना पत्र अवश्य भेज देना है। गत सोमवार को मुझे आपका पत्र मिला था। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप कैप्टेन और श्रीमती वेब के बहुत निकट ही रह रहे है और आप उनसे अक्सर मिलते रहते हैं।

लंदन में आजकल सूर्योदय का समय क्या है? क्या संसद का अधिवेशन इन दिनों चल रहा है? अब जब सर्दियां आ गई हैं, क्या आपने लंदन के कुहरे का अनुभव किया हैं?

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपकी भेंट आपके पुराने मित्र सुधीर राय से हुई है।

क्या मार्सीलीज से लंदन जाते हुए आप पेरिस में भी रूके थे?

मैंने आपसे पहले ही निवेदन किया है कि जब आप व्यस्त हों तो मुझे अलग से लिखने की आवश्यकता नहीं है। मुझे फिर यह कहने की अनुमति दें कि आपको इतने अधिक पत्र लिखने होते हैं, और आपके पास समय बहुत सीमित रहता है।

मैं आपका लंबा पत्र मेजोजमाई बाबू को भेज रहा हूँ और उनसे कहूँगा कि वे उसे पढ़कर सेजोजमाई बाबू को भेज दें। लेकिन मैं उसे फिर वापस मंगा लूंगा।

स्कूल अब बंद हो गया है और अब हमें 11 नवंबर तक लंबा अवकाश है। छुट्टियों में नाडू, रांगा मामाबाबू और मैं–हम तीनों यहीं रहेंगे। बाकी सब लोग कलकत्ता में हैं। नादादा अब यहाँ आ गए हैं। पिताजी और माँ वहाँ सानंद हैं।

मैं समझता हूँ कि इस पत्र को कलकत्ते के बड़े डाकघर में माँ का पत्र साथी के रूप में मिलेगा। कृपया हमारे विजया प्रणाम स्वीकार करें, हालांकि देर काफी हो चुकी है। आदर सहित,

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष

(13)

कटक
8–1–13

प्रिय दादा,

एक और वर्ष बीत गया है और हमने गत बारह महीनों में जो भी प्रगति की है या नहीं की है उसके लिए हम भगवान के प्रति अपने को उत्तरदायी भी समझते हैं।

जब मैं अपने पिछले वर्ष के कार्य की समीक्षा करता हूँ तो मुझे जीवन के लक्ष्य के विषय में सोचने पर विवश होना पड़ता है। मैं समझता हूँ कि टेनिसन एक अदम्य आशावादी कवि हैं और उनका विश्वास है कि विश्व दिनोंदिन प्रगति कर रहा है। लेकिन क्या यह बात सही है? क्या हम अपने चिर–अभिलाषित लक्ष्य के निकट पहुँच रहे हैं? क्या हमारा प्यारा भारत देश प्रगति के राजमार्ग पर चल रहा है? मैं ऐसा नहीं सोच

पाता। हो सकता है कि बुराई में ही अच्छाई छिपी हुई हो और भारत पाप और अनाचार के पंथ में से होकर शांति और प्रगति की ओर बढ़े। लेकिन जहाँ तक विवेक, दूरदर्शिता और भविष्यदृष्टि के संकेत मिलते हैं, सर्वत्र अंधकार है। गहन अंधकार, जिसमें सच्चे कार्यकर्त्ता या उदात्त देशभक्त की खुशी के लिए बस कहीं–कहीं आशा की कुछ किरणें चमक जाती हैं। कभी–कभी इन किरणों का आलोक प्रसारित होता हुआ दिखता है तो कभी–कभी लगता है कि अंधेरे का ही साम्राज्य चलता रहेगा। भारत का भावी इतिहास तूफान के साथ अंधकाराच्छन्न आकाश जैसा है। इंग्लैंड और सम्पूर्ण यूरोप भी शायद प्रगति के पथ पर अग्रसर होगा। यूरोप के अंतरिक्ष में धर्म के नक्षत्र का उदय हो रहा है, लेकिन भारतीय आकाश में वह क्रमशः अस्त हो रहा है। भारत क्या था और क्या हो गया है! यह कैसा भयावह परिवर्तन है। वे ऋषि–मुनि और दार्शनिक आज कहाँ है–हमारे वे पूर्वज आज कहाँ हैं जिन्होंने ज्ञान का उसकी चरम सीमा तक अन्वेषण किया था? उनका ओजस्वी व्यक्तित्व आज कहाँ लुप्त हो गया है? उनके जैसा नैष्ठिक ब्रह्मचारी आज कहाँ हैं? उनकी भगवान की अनुभूति कहाँ है? उनकी आत्मा का परमात्मा से मिलन कहॉ है जिसकी आज हम चर्चा करके ही संतुष्ट हो जाते हैं। सभी कुछ तो विलुप्त हो चुका है। उनके द्वारा वैदिक मंत्रों का उच्चारण अब कहीं नहीं सुनाई देता। पवित्र गंगा के तट पर अब सामवेद की ध्वनि नहीं गूंजती। लेकिन फिर भी आशा अभी शेष है, कम–से–कम मुझे तो ऐसा ही लगता है। हमारे बीच आशा की देवी हमारी बुझी हुई आत्माओं को फिर से आलोकित करने के लिए, और हमारे आलस्य को झकझोरने के लिए, आ चुकी है। उसका आविर्भाव स्वामी विवेकानन्द के रूप में हुआ है। वह देखिए उनका दिव्य तेज से दीप्त मुखमंडल, उनकी बड़ी–बड़ी, मर्मभेदनी आंखे और उनका पवित्र गैरिक परिधान। वह सम्पूर्ण विश्व को हिन्दू धर्म में बद्धमूल पावन सत्यों की सीख दे रहे हैं। सांध्य नक्षत्र डूब चूका है– अब निश्चय ही चन्द्रोदय होगा। भारत का भविष्य आशाओं से जाज्वल्यमान है। भगवान सदैव ही हितकारी हैं। पाप, अधर्म, अनाचार और ऐसी ही बुराइयों

के बीच में वह हमें हमारे एकमात्र लक्ष्य की ओर लिए जा रहे हैं। वह एक ऐसा चुम्बक है जिसकी ओर सब कुछ, सभी ओर से खिंच रहा है और जिसकी ओर सम्पूर्ण सृष्टि को अनिवार्यतः बढ़ना है। हमारा मार्ग भले ही खतरनाक और पथरीला हो, हमारी यात्रा भले ही कष्टदायक हो, हमें आगे बढ़ना ही है। हमें अंततः उसमें लीन होना ही है। वह दिन दूर हो सकता है, पर उसका आना अनिवार्य है। इसी आशा को मैं पाले हुए हूँ, अन्यथा शेष सब कुछ तो मुझे निराशाजनक और मन को तोड़ने वाला ही लगता है।

क्या हम अनुभव नहीं करते कि भगवान हमें अपनी चुम्बकीय शक्ति द्वारा अपनी ओर खींच रहा है? मुझे तो ऐसा ही लगता है। क्या उसने हमारे चारों ओर नैसर्गिक सौन्दर्य इसीलिए नहीं बिखराया है कि हम उसके अस्तित्व को न भूलें? क्या उसने असंख्य तारों को यह आदेश नहीं दिया कि वे उसकी महिमा का बखान करें, और क्या आकाश की अनंतता उसकी ही अनंतता का पाठ मनुष्य को नहीं पढ़ा रही है? क्या उसने हमारे हृदयों में प्रेम का संचार इसीलिए नहीं किया है कि हम अपने प्रति उसके प्यार को लगातार याद करते रहें? आहा, वह कितना अच्छा है और हम कितने दुष्ट स्वभाव के हैं। प्यारे दादा, मैं नहीं जानता कि मैं यह सब इस प्रकार क्यों लिख रहा हूँ। मैंने पाया है कि बीच–बीच में, मैं अपने मन का बोझ उतारने के लिए उद्विग्न हो जाता हूँ। शायद यह वैसा ही अनोखा क्षण है।

पिछली डाक से आपका पत्र पाकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। मैं पिछले दिनों ऐसा सोचता रहा कि दूरी ने आपको मुझसे दूर कर दिया है, लेकिन इस पवित्र पत्र–दूत ने उस अभाव की आवश्यकता से भी अधिक पूर्ति कर दी।

हम अपने पिछले स्वर्गीय सहायक मुख्याध्यापक (बाद में मुख्याध्यापक, संभलपुर जिला स्कूल) बाबू सुरेशचन्द्र गुप्त का कोई स्मृति चिन्ह अपने स्कूल में रखना चाहते हैं। हम चाहेंगे कि उनकी आवक्ष प्रतिमा हमें

सीधे इंग्लैंड से मिल जाए। अगर वह एक पौंड में मिल सकती है तो वह निश्चय ही बहुत सस्ती होगी। उसके यहाँ तक पहुंचने का भाड़ा आपकी समझ से कितना होगा? क्या 35 या 40 रूपये में उसे इंग्लैंड से सीधे मंगाया जा सकता है?

आजकल हमारी टेस्ट परीक्षाएं हो रही हैं और हम उन्हें अच्छी प्रकर से दे रहे हैं। हमस ब यहाँ कुशल से हैं आशा है आप पूर्ण स्वस्थ होंगे।

आपको मेरे प्रणाम!
आपका स्नेहभाजन,
सुभाष

(निम्नलिखित 31 पत्र नेताजी ने अपने बचपन के मित्र हेमन्त कुमार सरकार को 1914–1919 के दौरान लिखे थे। उनका मूल बंगला से अनुवाद किया गया है। मूल में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्दावली को बनाए रखा गया है। पहले पत्र का संबंध उन परिस्थितियों से है, जिसमें वह गुरू की खोज में भटकने के बाद घर लौटे थे, और जिनकी चर्चा नेताजी ने अपनी आत्मकथा में की है।)

(14)

बृहस्पतिवार
अपराहन
19–6–14

मैं गाड़ी से सड़क पर उतरा, अपने आपको हिम्मत बंधाई और घर में प्रविष्ट हुआ। सामने के कमरे में मुझे सत्येन मामा और एक अन्य परिचित मिले। वह कुछ आश्चर्यचकित दिखे। घर के अंदर मैं पिशेमोशाई और दादा से मिला। माँ को खबर दी गई। उनसे मैं ऊपर जाते हुए आधे

रास्ते मिला। मैंने उन्हें प्रणाम किया। मुझे देखकर उनकी रूलाई बरबस फूट पड़ी। बाद में उन्होंने केवल इतना ही कहा, लगता है कि तू इस दुनिया में इसीलिए आया है कि मेरे प्राण हर ले। मैं गंगा में डूब मरने के लिए इतने दिन तक प्रतीक्षा न करती, लेकिन अपनी बेटियों का ख्याल करके मैंने अपने आपको रोक लिया। मैं मनही मन मुस्कराया। फिर मैं अपने पिताजी से मिला। जब मैं उन्हें प्रणाम कर चुका तो उन्होंने मुझे अपने आलिंगन में बांध लिया और अपने कमरे में ले गए। रास्ते में ही उनके धैर्य का बांध टूट गया, और कमरे में पहुंचकर वे मुझे बांहों में भरे काफी समय तक रोते रहे। जब वह इस प्रकार रो रहे थे तो मैं यह महसूस किए बिना नहीं रह सका कि यद्यपि मैंने पूर्ण चन्द्र के समान निर्दोष उस तरूण मुखमंडल की खातिर शेष सब कुछ भूल जाने का प्रयत्न किया था, लेकिन मैं अपने सम्पूर्ण अस्तित्व से वैसा नहीं कर संका था। तब वे लेट गए और मैं उनके पांव दबाने लगा—और ऐसा लगा जैसे वह किसी स्वर्गिक आनंद में मग्न हो गए हों। फिर दोनों ही विस्तार से पूछने लगे कि मैं कहाँ—कहाँ गया। मैंने उनसे सभी बातें साफ—साफ बता दीं। मैंने पैसों का भी जिक्र किया। उन्हें हरिपद के बारे में पता चल चुका था; तुम्हारे बारे में उन्हें बताना आवश्यक नहीं था और इसीलिए मैंने कुछ नहीं कहा। मामा ने मुझ से पूछा और इसलिए उनसे मैंने बताया लेकिन यह कोई खास बात नहीं है। उन्होंने मुझसे इतना ही पूछा कि मैंने उन्हें कुछ भी क्यों नहीं लिखा?

विभिन्न स्थानों को तार भेजे गए थे और पूछताछ की गई थी। माँ सक्रिय थीं। पिताजी निष्क्रिय थे। उनका रूख यह था कि जो कुछ होगा, ठीक ही होगा। पुलिस में कोई रिपोर्ट नहीं की गई। हमारा एक संबंधी पुलिस अधिकारी था और उसने रिपोर्ट करने की राय नहीं दी। माँ यह सोचकर प्रायः पागल जैसी हो रही थी कि मैंने हमेशा के लिए घर छोड़ दिया है। इसलिए मेरी खोज में एक और मामा (जो अमरीका हो आए थे) गए। उन्होंने बैद्यनाथ और देवघर में पूछताछ करने के बाद एक पत्र भेजा जो यहाँ आज पहुंचा। मुझे पता है कि उन्होंने क्या लिखा था।

वे बालानन्द के पास गए थे। एक अन्य ब्रह्मचारी ने उनसे कहा कि "यदि वह बिना तैयारी के बाहर गया है, तो उसे अच्छी खासी ठोकर खानी पड़ेगी, जिसके बाद वह वापस लौट जाएगा और अगर ऐसी बात नहीं है तो उसकी खोज करना बेकार है।"

बेलूड में पूछताछ की गई। हरिद्वार के रामकश्ष्ण मिशन को तार भेजा गया जहाँ से 'न' में उत्तर मिला। हावड़ा के एक ज्योतिषी से पूछा गया। उसने कहा कि मैं उन्नीस या बीस दिन में लौट आऊंगा, मैं भला चंगा हूँ और अकेला नहीं हूँ बल्कि मेरे दो अन्य साथी भी हैं, और यह भी कि मैं कहीं पश्चिमोत्तर दिशा में ऐसे स्थान में हूँ जिसका पहला अक्षर 'ब' है। मैं शायद उस समय बनारस में था। ज्योतिषी ने यह भी बताया कि मैं संन्यासी नहीं बनूंगा क्योंकि कुछ ग्रह इसके लिए अनुकूल नहीं है और में संसार में वापस आ जाऊँगा। वह भाड़ में जाए। उसे कुछ आता–जाता नहीं। सभी लोगों में रणेने मामा का रूख सबसे अधिक अनुकूल है। सत्येन ने मुझे नितांत आज्ञाकारी होने का परामर्श दिया है, मानों वही उनके जीवन का परम आदर्श हो। शेष लोगों ने कुछ विशेष बातें नहीं कहीं।

यहाँ एक व्यक्ति है जिसे मैं काफी समय से जानता हूँ। वह बहुत समझदार है। उसने कहा कि मुझे सभी मामलों पर साहस के साथ विचार–विमर्श करना चाहिए, साफ–साफ बातें करनी चाहिए और तब संन्यासी हो जाना चाहिए। उसने पूछा कि आखिर कोई भी मेरे रास्ते में अड़ंगा कैसे लगा सकता है?

अपराह्न में मैंने पिताजी से फिर लंबी बातचीत की। उनका संबंध जीवन के विविध पक्षों से, संन्यासियों से मिलने–जुलने और मेरी यात्राओं से था। मैंने उनसे कहा कि मुझे कोई पसंद नहीं आया। मैंने उनसे यह भी बताया कि मेरा तात्कालिक आदर्श क्या है। वे विचार–विमर्श के दौरान जिन बातों पर पहुंचना चाहते थे, वे इस प्रकार थीं: (1) क्या सांसारिक जीवन बिताते हुए धर्माचरण संभव है? (2) संसार त्याग के लिए तैयारी

करना जरूरी है? (3) क्या किसी के भी लिए अपने कर्त्तव्य कर्म से बचना उचित है? उत्तर में मैंने कहा कि (1) प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक ही दवा नहीं होती, क्योंकि प्रत्येक को एक ही रोग नहीं होता, न प्रत्येक की एक समान क्षमता होती है; (2) त्याग संभव है या नहीं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि किसी को कितनी आत्म–शुद्धि की आवश्यकता है– सभी को अपने आपको एक समान संवारने की जरूरत नहीं होती; (3) कर्त्तव्य सापेक्ष्य होता है–उच्चतर पुकार, अपने से निम्न पुकार को स्थांनातरित कर देती है और जब ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है तो कर्म अर्थहीन हो जाता है।

उन्होंने मुझ से पूछा कि क्या दिव्यात्मा की अखंडता अर्थात् आत्मा ही सत्य है, संसार तो सम्पूर्णतः मिथ्या है, केवल शास्त्रीय सिद्धांत नहीं है? मैंने कहा कि जब तक वह केवल जबानी जमा खर्च रखता है, तब तक वह प्रमेय मात्र रहता है, लेकिन जब उसकी अनुभूति कर ली जाती है तो वह सत्य बन जाता है, और ऐसी अनुभूति संभव होती है। जिन्होंने ऐसा कहा है, उन्होंने इस सत्य की अनुभूति की है और उनका यह भी कहना है कि हम भी आत्मानुभूति कर सकते हैं। पिताजी ने पूछा, "वे कौन लोग थे जिन्होंने ऐसा किया, और क्या प्रमाण है कि उन्होंने ऐसा किया?" मैंने कहा कि ऋषियों ने आत्मोपलब्धि की थी और तब 'वेदाह मिति' से आरंभ होने वाले श्लोक का मैंने हवाला दिया। इस पर उन्होंन कहा कि एक समय महर्षि देवेन्द्र नाथ ठाकुर, केशव चंन्द्र सेन और परमहंस–तीनों ही कलकत्ता में थे और लोगों ने अपनी क्षमता के अनुसार उनसे उपलब्ध किया। मैंने कहा कि विवेकानन्द का आदर्श मेरा आदर्श है।

अंत में उन्होंने कहा, "जब तुम्हारे लिए उच्चतर पुकार आएगी, तब देखा जाएगा।" अभी तक मैंने सक्रिय रूप में पिताजी का विरोध नहीं किया है? फिर भी विजय मुझे मिली है। अब वे मेरे ऊपर कोई बात लाद नहीं सकते। और, जब मैं अगली बार घर छोडूंगा तो वे शायद मुझे वापस

लौटाने का विचार और प्रयत्न छोड़ देंगे।

लेकिन अब मुझे लग रहा है कि वापस आकर मैंने अच्छा ही किया है।

परंतु माँ अपने विचारों पर दृढ़ हैं और कहती हैं कि अगर मैं फिर घर छोड़ूंगा तो वह भी मेरे साथ जाएंगी, और फिर कभी घर नहीं लौटेंगी। में समझता हूँ कि मैं उन्हें समझ नही पाऊंगा। मैं बिल्कुल ठीक हूं। लिखो कि तुम कैसे हो?

तुम्हारा–

बेनी बाबू के बारे में सभी की राय बहुत अच्छी है और सब सम्मान करते हैं। बेनी बाबू ने अधिक कुछ नहीं कहा। उन्होंने संन्यासी का जिक्र किया, लेकिन मेरी विरक्ति के कार्यों में तुम्हें शामिल नहीं किया। इस मामले में भी उनकी मनुष्योचित विशेषता व्यक्त हुई है।

(15)

21–6–14

मैं कितना निर्मम हो गया हूँ। मुझे सचमुच नहीं पता कि मेरा हृदय इतना कठोर क्यों हो गया है। मेरे मन में अपने माता–पिता के लिए कोई कोमल भावना शेष ही नहीं रह गई है–वे रोते रहे और मैं मुस्कराए बिना नहीं रह सका। यह सच है कि मेरे दिल में प्यार नहीं है, क्योंकि यदि वह तनिक भी होता तो मैं उसे बिना शर्त तुम्हें दे देता। मैंने आज पिताजी से बात की। उन्होंने मुझे तीन परामर्श दिए और कहा कि जब मेरा पागलपन फिर दूर हो जाएगा तो वह अन्य बातों पर मुझ से विचार–विमर्श करेंगे। वह कोशिश कर रहे हैं कि मैं सांसारिकता का जीवन अपना लूं। मैंने उनसे आज कुछ भी नहीं कहा–मैं केवल चुपचाप रहा, जिसका तात्पर्य यह था कि मै उनकी बात मानने को तैयार नहीं हूँ। बाद में अगर

मेरी इच्छा हुई तो मैं उनसे अधिक साफ–साफ बात करूँगा। माँ से तर्क करना संभव नहीं है। वह मुझ से नाराज़ हैं। वह सोचती हैं कि मैं उनकी कतई परवाह नहीं करता।कृकृकृ

लोगों की, सामान्यतः, यह धारणा होती है कि मॉ का प्यार सबसे गहरा और निःस्वार्थ होता है और उसकी तुलना माप नहीं हो सकती। लेकिन, मेरे प्यारे दोस्त, मैं मॉ के प्यार को इतना ऊंचा स्थान नहीं देता। बेनी बाबू को शायद अपने जीवन में अन्य किसी प्रकार के प्यार का अनुभव नहीं हुआ है? मुझे नहीं मालूम, फिर भी, जब तक कोई माता सड़क पर डोलते किसी भी बच्चे को अपने ही पुत्र के समान न माने, तब तक उसके प्यार को स्वार्थरहित नहीं कहा जा सकता। उसकी आसक्ति इस तथ्य के कारण है कि उसने अपने बच्चे को स्वयं पाला–पोसा है।

लेकिन मैंने इस जीवन में जिस प्यार को चखा है, मैं अपने भीतर प्यार का जो सागर उमड़ता हुआ पाता हूं, उसकी में माता का प्यार गोखुर के समान है। इस आत्म–केन्द्रित विश्व में मनुष्य को एकमात्र शरण माँ के प्यार में मिलती है, और इसीलिए उसे इतना बढ़ा–चढ़ाकर कहा जाता है। जिसने तुम्हारा लालन–पालन किया है, उसके प्रति तुम्हें स्नेह हो ही जाता है–लेकिन इसमें कोई बड़ी बड़ाई की बात नहीं। परंतु जो व्यक्ति राह चलते किसी व्यक्ति को अपने हृदय में सर्वोच्च स्थान दे सकता है, अनुमान करो कि उसका हृदय कितना विशाल होगा और उसका प्रेम कितना महान। लेकिन लोग इस बात को समझना ही नहीं चाहते।

क्या मैं जो सोच रहा हूँ वह गलत है?

(16)

38/2 एलगिन रोड
कलकत्ता
18–7–14
शनिवार 11 बजे प्रातः

मुझे तुम्हारा पत्र अभी मिला। मैं अपने कल के पत्र में शायद यह लिखना भूल गया था कि मेरे माता–पिता और अन्य लोग सोमवार को कलकत्ता पहुँच रहे हैं। तुमको आना हो तो आ ही जाओ, क्योंकि बाद में जब मकान और लोंगो से भर जाएगा तब मुझे संदेह है कि हम मित्र बैठकर सुविधा से बात कर सकेंगे। अच्छा हो कि तुम रविवार को किसी समय आ जाओ। भगवान सदैव उपस्थित रहते हैं। यदि वह भौतिक रूप में हमारे निकट न भी हों तो भी मैं उनकी अदृश्य उपस्थिति का अनुभव हमेशा कर सकता हूँ, और उनकी सद्‌भावना ही मुझे निरंतर सन्मार्ग की ओर प्रेरित कर रही है। सेवा का एक तरीका यह भी है कि हम अपनी आत्मा और अपने प्यार के जरिए सेवा करें, यद्यपि इसे बाहर से नहीं देखा जा सकता। मुझे यह सोचकर कितनी प्रसन्नता हुई है कि तुम अपने कार्य में व्यस्त हो। प्रसंगतः मैं यह पूछ लूं कि क्या परसों तुमने दोपहर का भोजन नहीं किया था? तुम्हें अपने उपर बहुत ज्यादती नहीं करनी चाहिए। तुम्हारी तपस्या सामान्य ढंग की नहीं होगी। तुम्हें तो प्रभु की इच्छा, उसके प्यार और उसके कार्य की ओर देखना चाहिए। इससे अधिक मैं तुम्हें क्या लिखूं? तुम स्वयं समझ सकते हो कि मेरा आशय क्या है? मैं बिल्कुल ठीक हूँ। कल सवेरे न्युनतम तापमान 97^0 था और शाम को अधिकतम तापमान 100.2^0 था। आज न्यूनतम तापमान 97.4^0 था। मैं सानंद हूँ और तुम्हें कोई चिन्ता नहीं करनी चाहिए। जब हम मिलेंगे तो बातें करेंगे। रविवार को तुम सवेरे से तीसरे पहर या शाम तक यहाँ रूक सकते हो–किसकी मजाल है कि हस्तक्षेप करे? अच्छा हो कि तुम अकेले ही आओ।

(17)

कलकत्ता
शुक्रवार, सांयकाल
3–10–14

सबसे बड़ा उपहार है, अपना हृदय किसी को दे देना। जब यह किया जाता है तो और कुछ देने को शेष नहीं रहता, और जिसको वह प्राप्त होता है वह अत्यंत सौभाग्यशाली होता है। क्या कोई ऐसा है जो उससे अधिक भाग्यवान और प्रसन्न हो? लेकिन उससे अधिक कौन हो सकता है जो उस उपहार का प्रत्युत्तर नहीं दे सकता। परिणाम क्या होता है? परिणाम होता है दोनों के लिए शांति।

मेरी आंखों के सामने एक दृश्य उभर रहा है। यह दक्षिणेश्वर के काली मंदिर का दृश्य है। मैं अपने सामने माँ काली को देख रहा हूँ जिनके हाथ में खड़ग है, मुख पर प्रसन्नता है, जो शिव के आसन पर आसीन हैं और जिनके चारों ओर कमल के फूल हैं। उनके सम्मुख एक बालक है जो अपनी आयु से भी अधिक बच्चा लगता है। वह सिसकते हुए मानों किसी से अपनी अटपटी बोली में अनुरोध कर रहा है, "ओ माँ, मेरी श्रद्धांजलि स्वीकार करो। वह सब स्वीकार करो जो अच्छा है या बुरा है, निर्दोष है या दोषपूर्ण है।" लेकिन माँ की कुशल, अग्निय प्रतिमा इतनी आसानी से संतुष्ट होने वाली नहीं है; उसे भक्षण के लिए सब कुछ चाहिए–अच्छा हो या बुरा, गुणयुक्त हो या गुणशून्य। बच्चे को सब कुछ त्यागना होगा। इसके बिना उसे शांति नहीं मिल सकेगी, और माँ उसे जाने नहीं देगी।

कितनी दारूण है, यह पीड़ा। माँ को सब कुछ चाहिए। उसे कतई संतोष नहीं है। इसीलिए वह रो रहा है और बार–बार पुकार रहा है, "सब कुछ ले लो, माँ सब कुछ ले लो।" क्रमशः अश्रुपात थम जाता है। उसके गाल और उसकी छाती सूख जाती है। उसके हृदय में शांति लौट आती है। अब उसका अंतस्थल रिक्त नहीं है। उसमें उस दारूण

पीड़ा का कोई भी अंश शेष नहीं। सब कुछ शांत है। अब वह आनंदित है और उठता है। अब उसके पास अपना कहने को कुछ भी नहीं है, क्योंकि उसने अपना सर्वस्व माँ को दे दिया है। वह बालक है--रामकृष्ण।

(18)

27–3–15

मैं अप्रैल के अंत में पिताजी के साथ जाऊँगा। हमारे रहने के लिए बर्दवान के महाराजा का भवन निश्चित किया गया है। उस ठाठ–बाट और घरेलू सीमाओं के अंदर मुझे बहुत कष्ट का अनुभव होगा। लेकिन मैं किसी तरह समय गुजार दूंगा। वहाँ रहकर मैं अपना समय डट कर पढ़ने में लगाऊंगा। मैं चार भागों में अध्ययन करूँगा–

(1) मनुष्य और उसके इतिहास का अध्ययन,

(2) विज्ञानों का सामान्य अध्ययन–प्राथमिक सिद्धांत,

(3) सत्य की समस्या–मानव प्रगति का लक्ष्य अर्थात दर्शन,

(4) विश्व की महानता।

इसके अतिरिक्त मैं एक बार फिर अपने कालेज की सभी पुस्तकें पढ़ जाना चाहता हूँ। इस समय मुझे अध्ययन के प्रति बहुत उत्साह है। मैं यह पाता हूँ कि स्थिति अब एकदम उल्टी हो गई। अब जबकि परीक्षाएं समाप्त हो चुकी हैं, अध्ययन में मेरी रूचि एकदम बढ़ गई है। अब तो मेरी यह इच्छा होती है कि जिस किताब को भी पाऊं, उसे चाट जाऊं।

मैं बी. ए. की पढ़ाई के लिए दर्शनशास्त्र में आनर्स लेना चाहता हूँ और प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होना चाहता हूँ। मैंने अभी यह निश्चय नहीं किया है कि मैं बाद में संस्कृत लूंगा या अर्थशास्त्र। आज की दुनिया में हम अर्थशास्त्र की कुछ जानकारी के बिना नहीं रह सकते। संस्कृत का अध्ययन तो हम अपने आप घर में कर सकते हैं। प्रश्न अब इतना ही रह

जाता है कि हमें जो अर्थशास्त्र कालेज में पढ़ाया जाता है, क्या उसका व्यावहारिक क्षेत्र में कोई उपयोग है? मैं शीघ्र ही इस संबंध में कोई निर्णय करूँगा। यदि तुम ठीक हो तो मैं जर्मनी जाऊँगा। भविष्य में हमें यह निश्चय करने के लिए कि हमारे कर्त्तव्य क्या है और हम कैसे कदम दर कदम आगे बढ़े यह आवश्यक है कि हम एक बार मिल लें।

अगर मेरा स्वास्थ्य साथ देता है तो मैं कलकत्ता में नहीं पढ़ना चाहूँगा। कलकत्ता में अध्ययन करने से लाभ यह होगा कि वहाँ अच्छे प्रोफेसर मिल जाएँगे। उधर कटक में अध्ययन करने से सुविधा यह है कि वहाँ का मौसम अच्छा रहता है। इसके अतिरिक्त वहाँ काम करने के भी अधिक अच्छे अवसर रहते हैं, क्योंकि वहाँ की जनता पर हमारा काफी प्रभाव है। यह स्थिति कम से कम तब तक तो रहेगी ही जब तक मेरे पिताजी जीवित हैं। अगर आवश्यक होगा तो कटक या हजारीबाग में पढ़ूंगा। मैंने हजारीबाग को लिख दिया है कि मुझे प्रवेश संबंधी सूचना–पत्र भेज दिया जाए। जब मैं कर्सियांग से लौटूंगा तब यदि जरूरत हुई तो मैं कलकत्ता की पढ़ाई छोड़ दूंगा। अगर ऐसा हुआ तो तुम्हें वे पैसे मुझे चुकाने होंगे जो तुमने मुझसे उधार लिए हैं। शुरू में तुम थोड़े–थोड़े ही पैसे दे सकते हो। वह इसलिए जरूरी होगा कि मेरे पास कोई ट्यूशन पढ़ाने को नहीं रह जाएगा। और मुझे कुछ पैसे दत्त गुप्त को भी देने होंगे।

(19)

तुमको शायद मेरे पिछले दोनों पत्र मिलें होंगे। कल और परसों महत्वपूर्ण घटनाएं घटीं। उनके बारे में अभी स्पष्ट रूप से सब–कुछ नहीं लिखा जा सकता। इसके अतिरिक्त गिरीश और सुरेश दा ने मुझसे विशेष रूप से अनुरोध किया है कि मैं कुछ समय बाद तुमको इसके संबध में बताऊं। मैं एक महीने के अंदर कलकत्ता आ रहा हूँ। तभी मैं तुमसे मिलूंगा और सभी बातें बताऊंगा। एक अत्यंत विस्मयजनक मेल–मिलाप

संभव हो सका है, जिसके लिए गिरीशदा ने एक प्रकार की मध्यस्थता की है। सुरेशदा ने कहा कि उनकी राय में यह संबंध अवांछनीय है, यद्यपि अस्वास्थ्यकर नहीं। उन्होंने यह भी कहा कि उन्हें पवित्रता के संबंध में कभी रत्ती–भर भी संदेह नहीं था परंतु शेष लोगों से उन्हें हमारी एकांतिकता के बारे में जो शिकायतें मिलती रहती थीं, उनसे उन्हें बहुत पीड़ा होती थी। उन्होंने मुझसे यह भी कहा कि हमारे व्यवहार को लेकर किस प्रकार उनमें दिनोंदिन एक प्रकार के पश्चाताप की भावना बढ़ती रही। उत्तर में जो मुझे कहना था, वह मैंने कहा। गिरीशदा की आस्था और उसके चरित्र से मैं बहुत प्रभावित हूँ। उन्होंने यह भी कहा कि अगर उस पूर्व बंगाली ने अपने मन में किसी संदेह को स्थान दिया है तो वह उसे उसके मुह पर झुठा कहने को तैयार हैं। लेकिन अंत भला तो सब भला, और हमें इस अध्याय को समाप्त कर देना चाहिए। हमने केवल एक गलती की (और हमें उसके संबंध में भविष्य में बहुत सावधान रहना चाहिए) और वह यह है कि हम यह महसूस नहीं कर सके कि हमारे प्रत्येक शब्द और कार्य का इतना अधिक महत्व है। हमारे भाइयों पर उनका कितना गहरा असर पड़ा है।

सुरेशदा ने मुझ से कहा है कि हमे जनता से समानता का व्यवहार करना चाहिए, जिससे किसी को भी यह पता न चले कि एक व्यक्ति दूसरे को कितना अधिक प्यार करता है।

(20)

18–7–15

तो क्या मनुष्य के लिए निरपेक्ष सत्य की अनुभूति कर पाना संभव है? प्रत्येक व्यक्ति किसी एक सापेक्ष सत्य को अपने जीवन का निरपेक्ष सत्य बना लेता है, और फिर उसी पैमाने से इस जीवन की अच्छाई और बुराई तथा सुख–दुख को नापता है। किसी को भी यह अधिकार नहीं है कि वह किसी दूसरे के जीवन दर्शन में हस्तक्षेप करे या उसके विरूद्ध

कोई बात कहे। लेकिन यह तभी संभव है जब उस जीवन–दर्शन का आधार सच्चाई और सदाशयता हो, जैसा कि स्पेन्सर का सिद्धांत है कि, "कोई भी तब तक स्वतंत्र रूप में विचार और कार्य करने के लिए मुक्त है, जब तक वह किसी अन्य व्यक्ति की समान स्वतंत्रता में हस्तक्षेप नहीं करता।"

आरंभ में बौद्धिक तैयारी आवश्यक है। तभी चिंतन और कार्य साथ–साथ चल सकेंगे। अंत में व्यक्ति को कार्य में पूरी तरह तल्लीन होना है। आरंभ में हमें किन्हीं विशिष्ट कार्यों में संलग्न होना होगा, जिससे हम कार्य–क्षमता न गंवा दें।

देखो, जीवन के दो पक्ष होते हैं---बुद्धि और चरित्र। इतना ही काफी नहीं है कि तुम देश को केवल चरित्र अर्पित करो। तुम्हें बौद्धिक आदर्श भी दे सकना चाहिए।

इससे काम नहीं चलेगा कि हम हरफनमौला बनें। जरूरत इस बात की है कि हम अपनी समस्त जानकारी को एक व्यवस्था के अनुसार संगठित करें, और किसी एक विषय की पूरी जानकारी प्राप्त करें। केवल आत्मसात करना यथेष्ट नहीं होगा, बल्कि, आवश्यकता है रचनात्मक प्रतिभा की।

मैं अपने बौद्धिक जीवन के बारे में तुम्हें कुछ संकेत देना चाहूँगा। उसकी एक धुंधली सी तस्वीर तो मेरे मन में बन पाई है। सूत्र रूप में यह विचार बहुत महान है। लेकिन मुझे नहीं मालूम कि मैं उसे अपने जीवन में उतार सकूँगा या नहीं। अगर ऐसा न भी हो तो भी कम से कम विचार तो बहुत अच्छा है। शायद कोई और इसे कार्य रूप दे सके।

(21)

27–7–15

मेरे पास इस समय करने के लिए कुछ विशेष नहीं है सिवा अकाल राहत कोष के काम के। फिलहाल और सब काम इस समय स्थगित हैं।

(22)

29–7–15

इस समय मेरे पास कोई विशेष काम नहीं है। गरीब विद्यार्थियों की सहायता के लिए कोष, वाद–विवाद और पत्रिका का कार्य अभी आरंभ नहीं हुआ है। इस सप्ताह से मैंने पढ़ाने का काम बंद कर दिया है। उससे हमारी पढ़ाई पर असर पड़ता है। लेकिन मैं पूरक सहायता देता रहूँगा और अगर मेरी जरूरत होगी तथा आवश्यक होगा तो मैं पढ़ा दूंगा। मुझे यहाँ कालेज अकाल निधि का सचिव बनाया गया है। मुझे उसके लिए थोड़ा–बहुत काम अवश्य करना है। इसे करने वाला और कोई नहीं मिल रहा है।

मैं राहत कार्य के लिए बाहर जाने का इच्छुक हूँ। उससे मुझे व्यावहारिक अनुभव भी प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त अकाल संबंधी अनुभव ऐसा नहीं है जो हमें हर समय प्राप्त हो सके। मेरी भावना कहती है कि मुझे जाना चाहिए और मैं जाने को बहुत उत्सुक भी हूँ, लेकिन तर्क कहता है कि मैं निम्नलिखित कारणों से न जाऊं——

(1) मेरी स्वास्थ्य गिर सकता है क्योंकि जब मैं काम में जुट जाऊँगा तो आराम की बात सोच ही नहीं पाऊंगा।

(2) कालेज राहत समिति के काम को नुकसान पहुंचेगा।

(3) अगर मैं जाऊं तो मुझे कालेज संगठन की ओर से जाना पड़ेगा, क्योंकि मैं भी उस संगठन में हूँ।

मैंने उनसे कह दिया है कि मैं सोच–विचार के बाद कोई जवाब

दूंगा। अधिक संभावना यही है कि मेरा जवाब 'न' में ही होगा। क्या तुम अपनी राय लिख भेजोंगे?

यह तो मेरी बहुत इच्छा है कि मैं संसार को उस रूप में देखूं जिस रूप में वह है, लेकिन मुझे अपनी इच्छा का दमन करना ही होगा।

(23)

38/2 एलगिन रोड
कलकत्ता
31–8–15

अगले लेख में मैंने अपना दृष्टिकोण अप्रत्यक्ष रूप में व्यक्त किया है। मैंने उसे 'सर्वोपरि और उदात्त उदासीनता' कहा है। जैसे–जैसे समय बीतता जाता है, मुझे अधिकाधिक यह महसूस होता है कि मुझको जीवन में एक निश्चित कार्य करना है और मेरा जन्म उसी के निमित्त हुआ है, और मुझे नैतिक विचारों की धारा में नहीं बहना है। यह विश्व का नियम है। लोग मेरी आलोचना करेंगे, लेकिन मुझ पर मेरी उदास आत्मचेतना के कारण उनका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। अगर दुनिया के व्यवहार से मेरे दृष्टिकोण में कोई परिवर्तन आता है, अर्थात् मुझे दुख और निराशा होती है तो मुझे यह मानना होगा कि इसका कारण मेरी अपनी कमजोरी है। लेकिन जिस प्रकार आकाश को छूने की आकांक्षा रखने वाले को पथ के पर्वतों और कुओं की उपेक्षा करनी पड़ती है, उसी प्रकार जो सम्पूर्ण हृदय से सब कुछ परे हटाकर अपने मन के वांछित कार्य को पूरा करना चाहता है, उसे अन्य बातों की कतई चिंता नहीं करनी चाहिए। मुझे एक ऐसे व्यक्ति के समान गवीली आत्मचेतना के साथ आगे बढ़ना चाहिए जो एक विशिष्ट विचार से ओतप्रोत है।

मैं समझता हूँ कि अगर किसी को वास्तविक अर्थों में मनुष्य होना है तो उसके लिए तीन बातें आवश्यक हैं:

(1) अतीत को आत्मसात करना।

(2) वर्तमान की रचनात्मक उपलब्धि करना।

(3) भविष्य का मसीहा बनना।

(1) मुझे सम्पूर्ण अतीत के इतिहास को आत्मसात करना चाहिए, जिसके अंतर्गत वास्तव में विश्व की सभी पूर्व सभ्यताएं आ जाती हैं।

(2) मुझे अपने आपको समझना चाहिए तथा अपने आसपास के विश्व का अध्ययन करना चाहिए, जिसमें भारत भी शामिल है और विदेश भी, और जिसके लिए मुझे विदेश–यात्रा करना आवश्यक है।

(3) मुझे भविष्य का मसीहा होना चाहिए। मुझे खोज करनी चाहिए कि प्रगति के नियम क्या हैं तथा दोनो ही सभ्यताओं की प्रवृत्तियां क्यां है। इसके बाद ही मैं निश्चय कर सकता हूँ कि भविष्य का लक्ष्य क्या हो और मानवता की प्रगति किस प्रकार हो सकती है। इस कार्य में मेरी सहायता केवल जीवन–दर्शन कर सकता है।

(4) इस आदर्श की उपलब्धि मुझे एक राष्ट्र के माध्यम से हो सकती है और मैं भारत से शुरूआत कर सकता हूँ?

जितना ही हम आकाश की ओर दृष्टि डालेंगे, उतना ही हम उस सबको भूलेंगे जो अतीत में कटुतापूर्ण था। हमारे सामने भविष्य अपनी सम्पूर्ण गरिमा के साथ उद्घाटित होगा।

तुमने अपने स्वास्थ्य के बारे में क्यों नहीं लिखा है? कृपया शीघ्र उत्तर दो और लिखो कि तुम कैसे हो।

मुझे तुमसे बहुत–सी बातें करनी हैं। हम कब मिल सकेंगे?

(24)

16—9—15

तुम्हारा पत्र मिल गया है।

बहुत से लोग पूछते हैं कि जब दर्शन शास्त्र हमें किसी परिणाम पर नहीं पहुंचा सकता, और आकार में बढ़ता जाता है—एक व्यक्ति कतिपय सिद्धांतों का प्रतिपादन करता है, फिर दूसरा व्यक्ति सामने आता है तथा वह अपने बृहत्तर चिंतन द्वारा कुछ और विचारों को प्रस्तुत करता है। जब दर्शन शास्त्र का यह हाल है तो उसे अपनाना या दार्शनिक जीवन ग्रहण करना किस काम का? जब विश्व में पहली बार हीगेल ने अपने दार्शनिक सिद्धांत प्रस्तुत किए, तो लोगों को ऐसा प्रतीत हुआ कि अब इससे अधिक कुछ नहीं कहा जा सकता, मानों वह अंतिम निष्कर्ष हो। लेकिन यह दुनिया इतनी भाग्यशाली नहीं है। दर्शन शास्त्र अब हीगेल को पीछे छोडकर बहुत आगे बढ़ गया है। फिर भी हमें अगर जीवित रहना है तो ऐसे प्रश्नों से उलझना ही होगा। जिस प्रकार खिले हुए फूल के साथ सुगंधि अनिवार्य रूप में रहती है, (इस संबंध में कोई प्रश्न नहीं उठ सकता) उसी प्रकार जीवन में अन्वेषणकारी प्रश्नों का होना अनिवार्य है।

दर्शन शास्त्र के अध्ययन का क्या लाभ हैं? लाभ यह है कि हमें अपनी ही जिज्ञासाओं का पता चलता है, अपनी शंकाओं की जानकारी होती है। हम यह भी मालूम करते हैं कि उनके विषय में अन्य कितने ही लोगों ने क्या सोचा है। इसके बाद हम अपनी विचारधारा को संगठित करके एक दिशा में परिवर्तित कर सकते हैं।

जिस व्यक्ति में सनक नहीं होती, वह कभी महान नहीं हो सकता। लेकिन सभी सनकी व्यक्ति महान नहीं बन जाते। सभी पागल व्यक्ति प्रतिभाशाली नहीं बन जाते। आखिर क्यों? कारण यह है कि केवल पागलपन यथेष्ट नहीं है। कुछ और भी आवश्यक है। अगर तुम्हारी सनक का परिणाम यह होता है कि तुम आत्मनियंत्रण खो बैठते हो, तो तुम्हें

अपनी जिज्ञासा का कोई भी समाधान प्राप्त नहीं हो सकता। हमें भावनाओं के झंझाबात में भी शांत रहना होगा। तभी, और केवल तभी, हम अपने जीवन का निर्माण रचनात्मक आधार पर कर सकेंगे। हमें अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखना होगा और गहराई से मनन करना होगा। भावना के बिना चिंतन असंभव है। परंतु यदि हमारे पास केवल भावन की पूंजी है तो चिंतन कभी भी फलदायक नहीं हो सकता। बहुत से लोग बड़े भावुक होते हैं लेकिन वे कुछ सोचना नहीं चाहते, और कुछ लोगों को तो यही नहीं मालूम कि चिंतन करना कैसे चाहिए।

एक बार जब तुम यह जान जाते हो कि चिंतन की पद्धति क्या है तो फिर कोई भी आशंका नहीं हैं––हो सकता है कि किसी निष्कर्ष तक पहुँचना फिर भी कठिन लगे लेकिन वह असंभव नहीं होगा। इसीलिए मेरा विश्वास है कि मेरे भीतर जो कामनाएं, जिज्ञासाएं और संदेह कुलबुला रहे हैं वे व्यर्थ नहीं जाएँगें, बल्कि, उनसे मुझ कोई सुनिश्चित चीज प्राप्त होगी। तुम भी यही आशा कर सकते हो।

मेरी यह आस्था है कि अगर हमारा कोई आदर्श है तो उसे हम जीवन में उतार सकते हैं। उदाहरण के लिए अगर हमारा आदर्श पूर्णता प्राप्त करना है तो हम पूर्ण हो सकते हैं, अन्यथा पूर्णता के आदर्श का कोई मतलब ही नहीं रह जाता।

कुछ भी हो, मेरे जीवन दर्शन का आधार यही है कि हमारा जो भी आदर्श हो, उसे जीवन में रूपांतरित किया जाना चाहिए।

हमें अधीन नहीं होना चाहिए और यह आशा नहीं करनी चाहिए कि जिस प्रश्न का उत्तर खोजने में कितने ही लोगों ने अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया, उसका उत्तर हमें एक–दो दिन में मिल जाएगा।

परंतु फिर जब तक मुझे ऐसा बुनियादी सिद्धांत न मिले जिस पर मै अपने जीवन की इमारत को खड़ा कर सकूँ, तब तक मैं किसके सहारे

आगे बढ़ सकता हूँ।

क्या तुम्हें मालूम है कि कांट का दर्शन क्या हैं? वह यह मानकर चलता है कि कोई चीज सत्य है; फिर वह उस सत्य का विश्लेषण करता है और बहुत गहराई से उसकी छानबीन करता है और तब उसका पीछा छोड़ देता है। और इस प्रकार के परित्याग से वह एक उच्चतर सत्य तक पहुँचता है। फिर वह उस सत्य का भी पहले की तरह विश्लेषण और त्याग करता है तथा इस प्रकार अंत में वह उच्चतम सत्य को उपलब्ध करता है।

यह है जीवन का स्वरूप। तुम्हारे पास जो भी साधन हैं, उनको लेकर तुम एक दार्शनिक सिद्धांत का निर्माण करो, जिससे तुम अपने जीवन की समस्त वर्तमान गतिविधियों को समन्वित कर सको। फिर उस दर्शन के अनुसार आगे बढो। दूसरी ओर अपने मन के गहनतम भाग से चिंतन करते हुए तुम अपने जीवन के प्रत्येक क्षण का संहार और पुनर्निर्माण करों। जीवन शाश्वत निर्माण और संहार के जरिए प्रगति करता है। आज तुम जिस चीज का निर्माण करते हो कल उसका संहार करो और किसी अन्य चीज का निर्माण आरंभ करो और फिर उसे भी मिटा दो। और यों यह क्रम लगातार चलता रहे।

न कुछ में से कुछ का जन्म नहीं हो सकता। मनुष्य एक सत्य से एक उच्चतर सत्य की ओर बढ़ता है। हमें विरोधाभासों के बीच से होकर गुजरना होता है। वे हमारे जीवन को पूर्ण बनाते हैं।

अगर तुम भावनाओं के वेग में बह जाते हो तो तुम तर्कशक्ति एवं विश्लेषण और संश्लेषण की शक्ति खो देते हो। कारण यह है कि इन गुणों को समुचित उपयोग हम तभी कर सकते हैं जब हम शांत भाव में हों।

मेरा स्वास्थ्य ऐसा हो रहा है कि यह कल्पना भी मैं नहीं कर सकता कि मैं अपने जीवन में कोई विशेष उपलब्धि कर सकूँगा।

विवेकानन्द का यह कथन बिल्कुल सही था कि "यदि तुम्हारे पास लौह शिराएं हैं और कुशाग्र बुद्धि है तो सारे संसार को तुम अपने चरनों में झुका सकते हो।"

अगर स्थान–परिवर्तन से मुझे पूरी तरह स्वास्थ्य लाभ हो जाता है तो मैं फिर यह विश्वास करने लगूंगा कि जीवन वास्तव में जीने योग्य है।

(25)

26–9–15

मैंने अभी–अभी लाज को पढ़ा है। मैं नहीं समझ पा रहा हूँ कि तुमने जेसुइट आंदोलन के बारे में मेरे विचार क्यों जानने चाहे हैं।

उस संप्रदाय में अच्छाइयां भी है और बुराइयां भी। कुछ अच्छा है, वह वर्तमान युग में भी अच्छा बना रहेगा और जो कुछ बुरा है वह जड़ मूल से ही बुरा नहीं है—–अपने समय में वह ठीक था—–लेकिन वर्तमान युग की आवश्यकताओं के अनुकूल वह नहीं है।

तर्क क्या है? मानवीय स्वतंत्रता की धारणा अब बदल गई है। प्राचीन काल में भारतीयों के लिए स्वतंत्रता का अर्थ था आध्यात्मिक स्वतंत्रता, त्याग और वासना एवं लालसा आदि से मुक्ति। लेकिन इस स्वतंत्रता के अंतर्गत राजनैतिक और सामाजिक बंधनों से मुक्ति भी शामिल थी। अगर कोई संन्यासी चाहे तो वह एक क्षण भी सोच–विचार किए बिना सामाजिक और राजनैतिक बंधनों को झटक सकता है। यही नहीं, वह शासन के नियमों को भी बदल सकता है। परंतु आज पाश्चात्य जगत राजनैतिक और सामाजिक समस्याओं के समाधान में व्यस्त है। वहाँ वैयक्तिकता का उदय हुआ है। वे लोग गंभीरता से विचार कर रहे हैं कि व्यक्ति का समाज तथा शासक वर्ग से क्या संबंध होना चाहिए।

इस द्वंद्व ने पारस्परिक अधिकारों के सामंजस्य को आवश्यक बना दिया है। अब हम यह पाते है कि समाज में और सरकार के संबंध में

प्रत्येक व्यक्ति के कुछ अधिकार हैं। जब तक व्यक्ति उन अधिकारों का उल्लंघन या दुरूपयोग नहीं करता तब तक वह स्वतंत्र है। प्रत्येक व्यक्ति आज सचेत है कि उसका मनुष्य के रूप में अस्तित्व है और उसके कुछ अधिकार हैं, और उसकी कोई आवाज है।

हमारा जन्म इस लोकतंत्र के युग में लोकतंत्रीय वातावरण में हुआ है। अतः यदि तुम इस तथ्य को नकार दो तो वर्तमान युग में तुम कहीं भी नहीं पहुँच पाओंगे।

लेकिन व्यक्तिवाद संगठन को हानि पहुंचा सकता है तो इस उलझन को कैसे सुलझाया जाए? उत्तर फिर वही है—समंजन। कोई रास्ता है अवश्य; डरने की कोई जरूरत नहीं है। जर्मनी इस समस्या को कुछ हद तक सुलझाने की कोशिश कर रहा है। शांतिकाल में वहाँ सभी अपनी—अपनी स्वतंत्रता का उपभोग करते हैं (वहाँ विश्वविद्यालयों पर सरकार का कोई नियंत्रण नहीं है)—— लेकिन जब पुकार होती है तो सभी अपनी मर्जी से स्वतंत्रता को त्याग देते हैं और अत्यंत आज्ञाकारिता के साथ अपने अस्त्र—शस्त्रों सहित हाजिर हो जाते हैं। सभी प्रकार के सहयोगी प्रयास का यही नियम है; सामान्यतः काम—काज चलाने में सभी की आवाज सुनी जाती है।

एकतंत्रवाद के अंतर्गत योग्य व्यक्तियों की कमी हो जाती है और इससे उसके उद्देश्य को क्षति पहुंचती है। यह स्वाभाविक है और संवैधानिक भी कि जो ज्ञान, विवेक, अनुभव आदि में श्रेष्ठ है उसकी आवाज परिषद में अधिक सुनी जाएगी और शेष लोग उसके विचारों के प्रति अधिक ध्यान देंगे। लेकिन वे उसके परामर्श को तात्विक मूल्य के कारण ही स्वीकार करेंगे और तदनुसार कार्य करेंगे, न कि इसलिए कि वह उस व्यक्ति की सलाह है।

यदि किसी संगठन की परख करने की कसौटी यह है तो जेसुइट संप्रदाय की आलोचना करना कोई कठिन कार्य नहीं है। अब हम समानताओं पर एक दृष्टि डालें:

1. प्रोटेस्टेंटवाद—पाश्चात्य सभ्यता और पाश्चात्य प्रभाव।

2. प्रति–सुधार आंदोलन—राष्ट्रीय और आध्यात्मिक जीवन में भारतीय पुनरूत्थान।

3. लोयोला–कर्म निष्ठ व्यक्ति के रूप में आरंभ, धार्मिक व्यक्ति के रूप में अंत।

4. पेरिस!

5. गिरजाघर—धार्मिक और ग्राम्य।

6. ब्रह्मचर्य—गरीबी और आज्ञाकारिता (सम्पूर्ण)

7. सामान्य—सम्पूर्ण कमांडर।

8. जीवन के सामान्य कर्त्तव्यों से मुक्ति।

प्रत्येक संप्रदाय या भ्रातृसंघ का इतिहास लगभग एक जैसा है।

उनका आदर्श वाक्य कुल मिलाकर बुरा नहीं। ब्रह्मचर्य और गरीबी अनिवार्यतः अंगीकार्य होते हैं। मैंने आज्ञाकारिता का जिक्र कर ही दिया है। हमें युग की मांग के अनुसार अपने आपको ढालना और कार्य करना है। यदि इसे ध्यान में रखा जाए तो आज के और अतीत के युगों में बहुत कुछ समानता है। यह स्वाभाविक है कि इसने तुम्हारा ध्यान आकर्षित किया है।

मंगलवार

तुम्हारा पत्र मुझे कल मिला। मैं अब काफी अच्छा हूँ। अभी तक यह निश्चय नहीं हो पाया कि मैं कहाँ जाऊँगा। बहुत संभव है कि मैं कर्सियांग जाऊं, क्योंकि पिताजी भी वहाँ जाने की बात सोच रहे हैं। पिताजी का स्वास्थ्य पहले से अच्छा है, लेकिन उनके पूर्ण स्वस्थ होने में कुछ समय लग जाएगा। वह अगर काम छोड़ दें तो अच्छा ही होगा, लेकिन तब कठिनाई यह होगी कि परिवार की आजीविका कैसे चले?

सद्भावपूर्वक

(26)

26—9—15

मेरे मन पर निराशावादी छाया कभी—कभी पड़ती है, लेकिन आशा फिर लौट आती है, जैसे आकाश में बिजली कौंध जाए, उसे कौन दबा सकता है? वह आलोक जीवन को एक बार फिर वांछनीय बना देता है और मैं नए सिरे से पाता हूँ कि जीवन जीने योग्य है।

(27)

3—10—15

शनिवार

एक ओर तो हमें ब्रह्मानन्द का संदेश आता है, दूसरी ओर यह पाश्चात्य आदर्श है कि क्रियाशीलता ही जीवन है। एक ओर तो अंतर्मुखी व्यक्ति का निस्व और शांत जीवन है यह योगी है जिसने संसार की व्यर्थता का अनुभव कर लिया है; दूसरी ओर मैं पश्चिम की महान प्रयोगशालाओं को, वहाँ के वैज्ञानिक जीवन को, आश्चर्यजनक आविष्कारों को, खोज और ज्ञान—विज्ञान को देखता हूँ। और तब मुझे लगता है कि मैं उनके महाद्वीप में जाऊं और वहाँ ज्ञान की उपलब्धि में दस बारह वर्ष बिताऊ; आखिरकार जिसने कुछ कमाया है वही तो कुछ देने की स्थिति में होगा। मुझे भी यह अभिलाषा है कि मैं एक बार उनकी कर्मनिष्ठ जीवन धारा में छलांग लगाकर देखूं कि क्या मैं उस धारा में वह जाऊँगा या उसे स्वयं कोई दिशा दे सकूँगा....

(28)

19—10—15

श्रीमान भावुक जी,

तुम्हारा पत्र मुझे कल मिला। अब मेरा वजन एक मन साढ़े इक्कीस सेर है। इस पर मुझे कुछ आश्चर्य ही हुआ है, क्योंकि कटक में मेरा वजन एक मन साढ़े सोलह सेर था। जो कुछ भी हो, अगर मैं यहाँ

एक महीना और रहूँगा तो मुझे आशा है कि मेरा वजन पांच सेर और बढ़ जाएगा।

यहाँ आने के बाद मैं हर तरह से चंगा होता गया हूँ। इसीलिए मुझे पर्वत इतने पसंद हैं । कभी–कभी हमें वर्षा से कुछ परेशानी होती है—–लेकिन इसके सिवा और कोई कष्ट नहीं है। खिली हुई धूप और सूखा कोहरा मिलकर आदर्श मौसम प्रस्तुत करते हैं। अभी तक मैं कुछ पढ़–लिख नहीं पाया हूँ। देखना है कि आगे कुछ अधिक सफलता मिलती है या नहीं।

पर्वतों की शोभा अत्यंत विस्मयकारी है। मैं सोचता हूँ कि ये ढलानें वीर आर्यों के सर्वोत्तम निवास स्थान हैं। विकृत मैदानों में किसी को नहीं रहना चाहिए। निस्संदेह, केवल यह कहना पर्याप्त नहीं है क्योंकि वैसा कर सकना संभव नहीं है। लेकिन कलकत्ता में पचास हजार रूपये खर्च करके एक या दो कट्ठा जमीन खरीदने की अपेक्षा पर्वत पर मकान बनाना कहीं अच्छा है। आमिषाहार और पर्वतारोहण से बढ़कर अपने आर्य रक्त को फिर से सक्रिय करने का और कोई बेहतर उपाय नहीं है।

उस विशुद्ध आर्य रक्त का संचार हमारी शिराओं में नहीं हो रहा है। हमारा सम्पूर्ण अस्तित्व सबलता की भावना से ओत–प्रोत होना चाहिए। हमें फिर पर्वतों को लांघना है; जब आर्यों ने यह सब किया था तभी वे हमें वेद दे पाए थे।

हिन्दू जाति में अब वह विशुद्ध पवित्रता—–वह युवकोचित ऊर्जा और वे अद्वितीय मानवीय गुण नहीं रह गए हैं। अगर हमें उनको फिर से प्राप्त करने की आकांक्षा है तो हमें अपने जन्म–स्थान–पवित्र हिमालय से श्रीगणेश करना होगा। अगर भारत के पास कोई बहुमूल्य, कोई महान, कोई गौरवशाली वस्तु है तो उस सबकी स्मृति ही है जिसका संबंध किसी न किसी रूप में हिमालय से है। इसीलिए जब हम हिमालय के समक्ष होते हैं तो ऐसी स्मृतियां हमारे मनःपटल पर कौंध जाती हैं।

....तुम्हारा युक्तिवादी

(29)

हाक्स नेस्ट,
कर्सियांग
21—10—15
बृहस्पतिवार

तुम्हारा पत्र मुझे कल मिला।

तुम अस्वस्थ मन लेकर पहाडों पर गए। इसीलिए तुम उनका आनंद नहीं उठा सके। जब तुम्हारा मन शांत हो, तब तुम्हें एक बार फिर वहाँ जाना चाहिए।

पहाड़ों पर शारीरिक स्फूर्ति बहुत अधिक बढ़ जाती है और मन पूर्णतः शांत हो जाता है। पर्वतों के नीरस एकांत में जीवन स्वप्नवत बिताया जा सकता है—पर्वतों पर पड़ा कोहरीला पर्दा सुंदर कविता का ही स्वप्निल अवगुंठन है। यह पंक्ति पोप की या शायद किसी अन्य कवि की है;

'यों मुझे अनदेखा और अज्ञात रहने दो', आदि, आदि

और.........

'यों जब मैं न रहूँ तो मेरे लिए कोई शोकाकुल न हो
यों मैं दुनिया की आंख बचाकर कूच कर जाऊं
और कब्र का कोई भी पत्थर न कह सके कि मैं कहाँ सोया हूँ।

जब तुम पहाड़ों पर आओ, तभी उपर्युक्त उद्‌गारो के बीच सुप्त भावना को तुम समझ सकते हो। लेकिन हमें यह स्वीकार करना होगा कि इस प्रकार मानव जीवन का केवल एक ही पक्ष उजागर होता है, और दूसरा पक्ष, अर्थात् अथक और प्रचंड सक्रियता और गत्यात्मकता, जिसे तुम कलकत्ता में देखते हो, ढका—मुंदा रह जाता है। कलकत्ता में मेरा मन किसी न किसी चिंतन में हमेशा व्यस्त रहता है। ऐसा लगता है कि मन को व्यस्त रहता है। ऐसा लगता है कि मन को व्यस्त होने के लिए विवश किया जा रहा हो। जीवन की गंभीरता——जटिलता और विविधता तुम्हारे

समक्ष स्पष्टतः आ जाती है; जीवन की समस्याएं मन पर बोझ बनी रहती हैं। लेकिन यहाँ तुम कुछ समय के लिए स्वप्न–विलासी बन जाते हो—–और सोचने लगते हो कि सारा का सारा ही जीवन श्रमसाध्य क्यों बन जाए?

तुम्हारा,

युक्तिवादी

(30)

26—10—15

मेरा अधिकांश चिंतन अपने ही बारे में होता है।

मुझे यह देखकर अचंभा होता है कि किस प्रकार इतनी अधिक परंपराविरोधी कामनाएं और उद्देश्य मनुष्य के जीवन को प्रभावित करते रहते हैं। इतनी बहुतायत से इच्छाएं आती हैं और फिर कुछ समय बाद विलीन हो जाती हैं। मैं नहीं कह सकता कि वे कहाँ से आती हैं और क्यों आती हैं। मानव जीवन का पहला अध्याय पूर्णतः अतर्क्य है। हम यह कहते हुए बहुत गर्व का अनुभव करते हैं कि मनुष्य बड़ा बुद्धिसंगत प्राणी है– लेकिन वह बुद्धिसंगत कम, और अतर्क्य अधिक है। वह पषुओं के समान वृत्ति और भावना से प्रेरित होकर कार्य करता है न कि तर्क–बुद्धि से। मैं मनुष्य के अनगिनत कृत्यों का कोई भी कारण या अर्थ नहीं समझ पाता। यह कैसी विचित्रता है।

आज मुझे एक ऐसे प्रश्न का समाधान मिल गया जो मेरे मन में बहुत समय से अनुतरित पड़ा था। जब मंदिर में चिंतन–मग्न था, तभी मुझे उत्तर मिला।

तुम्हारा,

पाश्चात्य दार्शनिक

(31)

29—10—15

मैंने जेसुइटों के इतिहास की मोटी—मोटी जानकारी बातचीत के जरिए प्राप्त की है। उस सबकों पत्र में लिख पाना आसान नहीं है। इसलिए मैं तुम्हे तब बताऊंगा, जब हम मिलेंगे। उनको बड़ी शिकायत है कि उन्हें आधुनिक इतिहास में बहुत घटिया स्थान दिया गया है, क्योंकि अधिकांश इतिहासकार प्रोटेस्टेंट हैं और सम्राट भी उसी संप्रदाय के हैं। इसके अलावा उन्हें दर्शनशास्त्र के इतिहास में भी स्थान नहीं मिला है। श्वेगलर की 'हिस्ट्री आफ फिलासफी' (दर्शनशास्त्र का इतिहास) में, जिसे हम पढ़ते हैं, मध्ययुगीन दर्शन को अधिकांशतः छोड़ दिया गया है।

मेरी इच्छा थी कि मैं मध्ययुगीन दर्शन अथवा धर्मविज्ञान को कुछ बहुत पढ़ूं लेकिन जब मुझे पता चला कि 'डाक्टर आफ डिविनिटी' की डिग्री के लिए चार साल तक धर्मविज्ञान की पढ़ाई करनी होती है, तो मैंने वह कोशिश छोड़ दी। इसके अलावा समय की कमी के कारण अब वैसा करना संभव नहीं है।

जेसुइटों का कहना है कि मध्य युग में जो भी दर्शन था, वह सब का सब धर्मविज्ञान था और जेसुइट ही सभी साहित्यिक तथा शैक्षणिक गतिविधियों में अग्रिम पंक्ति पर थे। सम्पूर्ण यूरोप में शिक्षा उन्हीं का दायित्व थी।

उनके सिद्धांत और सूत्र अत्यंत मताग्रही हैं। मैं उनके बारे में तुम्हें बाद में बताऊंगा। लेकिन एक विशिष्ट दृष्टि से उनका संगठन बहुत आकर्षक है। वे अपने संस्थापक की पूजा नहीं करते, और उनका संगठन धर्मान्धता से अछूता है। उनका मताग्रह परिमाणात्मक दृष्टि से औरों से भिन्न नहीं हैकृकृकृकृ वह सुपरिभाषित है। जो उनके परिभाषित सिद्धांतों को स्वीकार नहीं कर सकता, उसके लिए उनके बीच कोई स्थान नहीं है।

तुम्हारा,

युक्तिवादी

(32)

विश्राम कुटीर
कर्सियांग

मेरे प्यारे कवि,

मुझे तुम्हारा पत्र पाकर दुःख हुआ, क्योंकि तुमने मुझे शरारती व्यक्ति सिद्ध किया है। तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं हमेशा एक अच्छा लड़का रहा हूँकृकृ क्या मैं कोई शरारत करने के लिए सक्षम हूँ? इसलिए तुम्हारे इस आरोप का क्या अर्थ है? क्या जो हमेशा ही एक 'अच्छा लड़का' रहा है, वह कभी भी दुष्ट हो सकता है? इसलिए मैं 'शरारती लड़का' नहीं हो सकता और यह असंभव है कि मैं कोई दुष्टता करूँ।

मैं विचारक कतई नहीं हूँ, न मैं कवि हूँ। अतः मैं कविता के सार–तत्व या गीत की भावना को कैसे समझ सकता हूँ? तुम्हारी सर्वांगपूर्ण, अत्यंत अंतर्मुखी और महान कविताओं के पृष्ठों में छिपे विचारों को समझने में असमर्थ रहने के कारण मैंने, बस, उनके बाह्य रूप की आलोचना की है। जिनमें सुकुमार संवेदनाएं नहीं हैं और जो पारखी नहीं हैं, वे वाल्मीकि के चारों ओर द्रीपकों की बांबी; मधुसूदन दत्त की कविताओं में मुक्त छंद की प्रचंडता, रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कविताओं में कलकतिया भाषा और अवनीन्द्रनाथ के चित्रों में कंकालीय बिंब ही देख पाते हैं। अतः इसमें क्या कोई अचंभे की बात है कि इस वर्ग का पाठक तुम्हारी विचारपूर्ण कविताओं में तुकों का बेतुकापन देखे.....। यदि मैंने कोई अपराध किया है तो उसके लिए मेरी अपर्याप्त विवेचना–शक्ति और परख करने की अयथेष्ट क्षमता दोषी है, और मैं अपनी बुद्धि के इस दिवालियापन के लिए तुमसे क्षमा प्रार्थी हूँ।

प्रोफेसर प्रफुल्ल चन्द्र दास चले गए हैं। मेरी उनसे कुछ बातें हुईं जिनके बारे में आगे कभी बताऊंगा।

तुम अगर अपनी जीवन–पद्धति के बारे में लेख लिखते हो तो

तुम्हे औरों की राय की चिंता छोड़ देनी होगी। तुम्हें जो कहना है, वह कहना ही है, चाहे दूसरे जो कुछ भी सोचें।

जहाँ तक मेरे लेख का संबंध है अगर किसी को यह नहीं मालूम हो कि मैंने उसे क्यों और किस भावना से प्रेरित होकर लिखा है तो वह निरर्थक लगेगा। आश्चर्य नहीं कि कुछ लोगों को वह ऐसा ही लगे। लेकिन उससे क्या आना–जाना है।

ऐसी व्यवस्था या समाज में किसी एक व्यक्ति को बहुत ऊंचा स्थान प्राप्त हो सकता है; लेकिन अब मैं अच्छी तरह समझ गया हूँ कि एक भिन्न व्यवस्था में उसका स्थान एकदम सतह में हो सकता है; चीजों की हमारी परख हमारे अपने विचारों और किसी व्यक्ति के बारे में हमारे आकलन पर निर्भर है।

इसलिए, अन्य लोगों की सराहना या आलोचना का प्रभाव तुम पर कैसे पड़ सकता है? हाँ, तुम्हारा यह कहना ठीक है कि तुम्हें अपने आंतरिक प्रकाश के निर्देश पर चलना चाहिए।

तुम्हारा,
मूर्ख और बेचारा पत्र लेखक

(33)

विश्राम कुटीर
कर्सियांग
17 नवंबर (1915)

तुम्हारे लिए भगवान बुद्ध के उपदेशों से प्रभावित होना स्वाभाविक है–लेकिन मुझे तभी प्रसन्नता होगी जब तुम उन पर अक्षरशः चल सको। क्या तुम ऐसा करोगे?

मैंने अपने जीवन की समस्या का बहुत हद तक समाधान कर लिया है। मुझे उत्तर आज अचानक ही प्राप्त हुआ। मैंने बौद्धिक स्तर पर हल पा लिया है– मुख्य सिद्धांत निश्चित कर लिए हैं, यद्यपि कुछ ब्यौरे

की बातों पर विचार करना शेष है। मुझे अब लौह इच्छा–शक्ति की जरूरत है, जिससे मैं अपनी योजना को ब्यौरेवार व्यवस्थित कर सकूँ। व्यवस्था की मुझ में कमी है–मैं व्यवस्थित ढंग से काम नहीं कर पाता। मुझे प्रयास और अभ्यास द्वारा इस त्रुटि को दूर करना है। हम संभवतः कल सवेरे दार्जिलिंग जा रहे हैं। वहाँ से हम सेंचल हिल जाना चाहते हैं। जब मौसम साफ हो तो सेंचल हिल से एवरेस्ट शिखर को देखा जा सकता है। हम दो या तीन दिन में लौट आएंगे।

(34)

क्रेग माउंट
दार्जिलिंग
20–11–15

हम यहाँ परसों पहुंचे। एक प्रकार से यह जगह कर्सियांग से अच्छी है। यहाँ खाने पहनने के लिए अधिक अच्छी चीजें मिलती हैं और प्रकृति का दृश्य अधिक मनोरम है। इसके अतिरिक्त अनेक दर्शनीय स्थल भी हैं जहाँ जाया जा सकता है। हम आब्जर्वेटरी हिल, बोटैनिकल गार्डन, संग्रहालय, रेस कोर्स, सैनिक बैरकें और माउंट सेंचल देखने जा चुके हैं। कंचनजंघा माउंट सेंचल से बहुत साफ दिखाई देता है और हमने एवरेस्ट शिखर भी देखा। सेंचल लगभग 8400 फुट की ऊंचाई पर है—हम वहाँ आज सवेरे गए। वहाँ तक पहुंचने के लिए लगभग छः मील की चढ़ाई पड़ती है। सौभाग्य से आकाश साफ था और हमें एवरेस्ट का अच्छा दृश्य देखने को मिला।

लेकिन, यह नगर 'पहाड़ों में स्थानांतरित कलकत्ता 'जैसा है और यही इसकी कमी है। परंतु अब यहाँ अधिक भीड़ नहीं है, क्योंकि लोग मैदान के लिए चले गए हैं। इसलिए मुझे काफी अच्छा लग रहा है।

हमें अपने बरामदे से बर्फ का दृश्य साफ दिखाई देता है। हमारे चारो ओर पर्वतश्रेणियां हैं और कंचनजंघा की हिमाच्छादित गगनचुम्बी

चोटी चमकती रहती है। कितना मोहक है यह स्थान। इसे देखकर अपनी भावनाओं पर वश पाना प्रायः असंभव हो जाता है। क्षितिज के एक छोर से दूसरे छोर तक हिममंडित पर्वतश्रेणियां हैं, जैसे लहरें आकाश से टकरा रही हों और दूर–बहुत दूर, पर्वतों की ढलानों में दुबके बौद्ध लामाओं के मठ हैं। यदि किसी को नितांत वैयक्तिक जीवन बिताना है तो उसके लिए परिव्राजक के जीवन से बढ़कर और कोई जीवन नहीं है। मेरा मन होता है कि मैं इन पर्वतों को पार केर सिक्किम और नेपाल जाऊं। यहाँ से तिब्बत के लिए भी मार्ग जाता है। उससे होकर व्यापारी आते–जाते हैं।

लेकिन वर्तमान युग में परिव्राजक का जीवन बंगाली युवाओं के लिए नहीं है। उसे बड़े ही गंभीर दायित्व वहन करने हैं।

कर्सियांग में एक व्यक्ति ने मुझसे मूछा कि मुझे वहाँ अच्छा लग रहा है या नहीं? शिष्टाचार के नाते मैंने कहा कि बहुत अच्छा लग रहा है। लेकिन मैंने मनही मन महसूस किया कि प्रसन्नता–प्राप्ति के दिन बीत गए। मुझे आठ वर्ष पहले के वे दिन याद आए, जब हम पूजा की छुट्टियों में दार्जिलिंग आए थे और हमें अपार प्रसन्नता का अनुभव हुआ था। तब हम आए ही इसलिए थे कि यहाँ का आनंद लें। लेकिन मैं कितना बदल गया हूँ। उस समय मैंने बाल–सुलभ भावुकतावश कहा था, "मेरे जीवन का सबसे सुखद दिन वह होगा जब मैं स्वाधीन हो जाऊँगा, और मुझे उस दिन और भी अधिक प्रसन्नता होगी जब मैं दार्जिलिंग जाऊँगा।"

लेकिन आज मेरा जीवन मेरे अपने आनंद के लिए नहीं है। मेरे जीवन में आनंद का अभाव तो नहीं है, लेकिन वह उपयोग के लिए नहीं है क्योंकि मेरा जीवन एक मिशन है, एक कर्त्तव्य है। वह महाशय, जिन्होंने मुझसे पूछा था कि मुझे कैसा लग रहा है, शायद मौज–मजे के लिए ही वहाँ आए थे, लेकिन मैं शारीरिक तथा नैतिक सुधार के लिए आया हूँ। इन पर्वतों को छोड़कर मैं नही जाना चाहता। निःसंदेह, बंगाल में अन्य आकर्षण भी हैं, लेकिन उनके अलावा यह पार्वत्य ग्राम–प्रदेश अतुलनीय है। यह सच ही है कि हिमालय में देवताओं का वास है—और

स्वर्ग–लोक यही कहीं है। हमारे अपढ़ ब्राह्मण रसोइए ने कंचनजंघा की ओर इशारा करते हुए कहा, "स्वर्ग लोक उस ओर है।" उसकी बात पर और सब लोग हँस पड़े। लेकिन मैंने महसूस किया कि उसके शब्दों में लाक्षणिक सच्चाई है।

लेकिन अगर मैं इसी तरह सब कुछ कहता जाऊं तो यह पत्र कभी समाप्त नहीं हो पाएगा।

यहाँ मैं एक धनी रिश्तेदार के साथ रह रहा हूँ। वह मेरी बहुत अच्छी तरह से देखभाल कर रहे हैं—आशा से कहीं अधिक। यहाँ मैं अपने एक मामा के साथ आया हूँ। यहाँ वालों को मेरे सनकीपन की जानकारी थी, और अब जबकि उन्होंने मुझे प्रत्यक्ष देख लिया है, वे मेरी सनक के बारे में और भी बहुत कुछ जान गए हैं।

मैं अपने विषय में बहुत कुछ लिख गया हूँ। हम कल कर्सियांग लौट जाएँगे, और परसों कलकत्ता के लिए रवाना हो जाएँगे। उसके एक दिन बाद हम सवेरे 11 बजे सियालदह पहुँच जांएगे। मैं उसी दिन कालेज जाने का प्रयत्न करूँगा।

जब मैं तुमसे मिलूंगा तो मुझे तुम्हारे बारे में एक प्रकार की न्यायिक जांच करनी होगी। मुझे पता लगाना होगा कि तुम अपनी तंदरूस्ती की ओर से इतने लापरवाह क्यों रहते हो।

मुझे तुम्हारे पत्र तो मिलते रहते हैं, लेकिन तुम अपने बारे में कभी शायद ही कुछ लिखते हो। उसकी भी सफाई तुम्हें देनी है।

(35)

बुधवार, सायंकाल

8–12–15

आज जगदीश चन्द्र के अभिनंदन के लिए यूनिवर्सिटी इंस्टिच्यूट में एक सभा हुई। मैं वहाँ इस बात की बहुत अधिक आशा लेकर गया कि मुझे वहाँ जगदीश चन्द्र को देखने और उनके मुख से निकले कुछ शब्द सुनने का सौभाग्य मिलेगा। मैं नहीं जानता कि क्यों बचपन से ही मेरे मन में दो व्यक्तियों के प्रति बहुत गहरी श्रद्धा रही है—ये हैं जगदीश चन्द्र और विवेकानन्द। मैं उनकी ओर उनके चित्रों को देखने के बाद और उनके संबंध में औरों से कुछ सुनकर आकर्षित हुआ था। उस सभा का ऊपरी तौर पर निःसंदेह, यह उद्देश्य था कि अभिनंदन का आयोजन करके उनका सम्मान किया जाए। लेकिन बंगालियों ने, और सबसे अधिक बंगाली विद्यार्थियों ने उनका कितना अपमान किया है, इसे वही व्यक्ति समझ सकता है जो हृदय से देशभक्त है। मनोरंजक कार्यक्रम, जैसे संगीत, स्थानीय वाद्य संगीत, काव्य पाठ काफी अच्छा था। लेकिन कार्यक्रम के अंतर्गत अंग्रेजी में एक नाटक भी खेला गया। उसमें अभिनय करने वाले सब के सब विद्यार्थी थे और तुम कल्पना कर सकते हो कि उसका विषय क्या रहा होगा। और उसके अंत में 'गाडसेव दा किंग' (भगवान सम्राट की रक्षा करें) गाया गया। जब मैंने देखा कि कार्यक्रम के अंतर्गत नाटक का भी अभिनय है तो एक बार तो मेरे मन में आया कि मैं उठकर चल दूं, लेकिन इस आशा को पाले हुए कि मैं उन्हें बोलते हुए सुन सकूँगा, मैंने कोशिश की कि नाटक की अवधि में मैं झपकी ले लूं। शोरगुल मचाते युवकों के बीच में मैं एक कठोर तपस्वी की तरह आंखे बंद किए बैठा रहा। सभा समाप्त होने को आई, लेकिन मेरी आशा पूरी नहीं हो सकी। मैं टूटे हुए दिल के साथ लौट आया और मैंने मन में सोचा कि जब तक हम लोग अपने यहाँ के महान लोगों का सम्मान उचित ढंग से करना नहीं सीखेंगे, तब तक बंगालियों के लिए, और पूरे भारत के लिए मुक्ति की आशा करना व्यर्थ है। एक महान व्यक्ति का नाटक के अभिनय

द्वारा सम्मान। लज्जास्पद! हा हन्त् भारत! और बंगालियों तुम पतन के कितने गहरे गर्त में गिर चुके हो।

मुझे उक्त घटना से बहुत–पीड़ा हुई। मैं बार–बार एक सभा में कहे गए परम श्रद्धेय धर्मपाल के इन शब्दों की याद करता हूँ, "जब तक लोग इन्द्रिय–सुखों की ओर दौड़ेंगे तब तक भारत ऊंचा नहीं उठ सकता।" मुझे उनके शब्द ठीक–ठीक तो नहीं याद, लेकिन उनके भाषण का निचोड़ यही था। मैंने पाया कि (बंगालियों में इन्द्रिय सुख की कामना बहुत गहरी समाई हुई है। और यही कारण है कि वे कुशाग्र बुद्धि होते हुए भी इतने कमजोर हैं)।

इस स्थिति को दूर करने का रास्ता क्या है? मैं समझता हूँ कि इसके लिए हमारे पास पवित्र और कठोर सिद्धांतों वाले श्रेष्ठ नवयुवकों का एक दल होना चाहिए। हमारे देशवासियों की आंखें खुलनी चाहिए। वास्तव में रामकृष्ण हमारे राष्ट्रीय चरित्र की जड़ को पहचान गए थे।

मैं नहीं जानता कि जगदीश चन्द्र ने अपने अभिनंदन को किस रूप में लिया। एक देश भक्त के रूप में जगदीश चन्द्र वह सब कुछ स्वीकार कर लेंगे, जो उनका देश उन्हें अर्पित करता है–चाहे वह सुगंधित फूल हों या निर्जीव भस्म। पर इसमें कोई संदेह नहीं कि मुझे उस अभिनंदन से बहुत दुःख हुआ।

मैं अपने वाद–विवाद क्लब के लिए 'अगले सोमवार का वाचन स्तंभ' के अंतर्गत एक लेख लिख रहा हूँ, जिसका विषय है 'बौद्धिक और पौराणिक युग में भारतीय सभ्यता'। अगर तुम इस बीच मुझे एक–दो पुस्तकें भेज दो या पुस्तकों के नाम बता सकों अथवा अपने कुछ नोट भेज दो तो मुझे बड़ी सहायता मिलेगी।

(36)

रविवार

19–12–15

इन दिनों मैं बहुत तार्किक और बौद्धिक हो गया हूँ। मेरी समस्त भावनाएं लगभग मृतप्रायः हो चुकी हैं और एक तितिक्षु की कठोरता मुझे जकड़ती जा रही है। जैसे–जैसे दिन बीतते जा रहे हैं, जीवन के आदर्श का स्वरूप और अधिक स्पष्ट होता जा रहा है, लेकिन उसे जीवन में कार्यान्वित करने की अपेक्षित शक्ति मुझ में नही है।

अगर किसी को इस संसार में सभी से मिलना–जुलना है तो उसे अपने खोल के बाहर आना होगा। क्या मैं ऐसा करने में सफल हुआ हूँ?

(37)

शुक्रवार

27–12–15

दिसंबर में हम एक बार फिर वापस आ गए हैं और जनवरी अब कोई दूर नहीं है। दो वर्ष पहले इन्हीं दिनों हम शान्तिपुर में थे। मुझे शान्तिपुर के संन्यासियों के दल की बड़ी सुखद याद आ रही है।

भारत ने अपना सब कुछ खो दिया—उसने अपनी आत्मा तक खो दी है। लेकिन हमें फिर भी चिंतित नहीं होना चाहिए और आशा नहीं छोड़नी चाहिए। किसी कवि ने कहा है, "तुम को अपना पौरूष फिर से प्राप्त करना है।" हाँ, हमें अवश्य ही फिर से मनुष्य बनना है। इस सुंदर भारत देश में इस समय ऐसे लोग विचर रहे हैं जो निर्जीव अतीत की प्रेतात्माओं के समान हैं। चारों ओर निराशा है, मौत है, आरामतलबी है, बीमारी है, अट्ट दुःख है– "भारत के सम्पूर्ण क्षितिज पर दुर्भाग्य के बादल छा गए है।" लेकिन इस सम्पूर्ण निराशा, जड़ता, निर्धनता और भुखमरी के होते हुए भी तथा एक और भूख से पीड़ित लोगों की चीख–पुकार को डुबोते हुए, दूसरी ओर विलासिता के दलदल में फंसे लोगों की पाखंडपूर्ण खिलखिलाहट को अनसुनी करते हुए, हमें दुबारा भारत का राष्ट्रीय संगीत छेड़ना है और वह है "उत्तिष्ठ, जाग्रत।"–उठो, जागो।

(38)

बुधवार, सायंकाल
2–2–15

कृपया अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखो।

तुम्हें समुचित व्यायाम करना चाहिए, सवेरे घूमना चाहिए, दूध और अंडे खाने चाहिए और अपने आप को जरूरत से ज्यादा नहीं थकाना चाहिए। तुम्हारे सामने तुम्हारा पूरा जीवन पड़ा है। तुम्हें समय का उचित उपयोग करने के नाम पर जरूरत से ज्यादा काम करने की मूर्खता दिखाने की कोई आवश्यकता नहीं है।

सुरेश कल चले गए। उन्हें दुःख था कि वह तुमसे नहीं मिल सके। उन्हें कुछ जरूरी काम से जाना पड़ा होस्टल अब एक नई जगह चला गया है—–2/11 से 45/1 अमहर्स्ट स्ट्रीट पर। पहले वाले स्थान में बहुत नमी थी, इसीलिए उसे छोड़ना पड़ा। कलकत्ता के उस मेस में रहने वालों में से एक या दो को छोड़कर सभी को ग्रसनीशोध रोग होने लगा है। सुरेश दा को शक है कि तुममें भी इस रोग के चिन्ह प्रकट हो रहे हैं। (मैं नहीं जानता कि मैंने इस रोग का नाम वर्तनी के अनुसार ठीक ही लिखा है) क्या तुम्हारे कंठ से अब भी रक्तस्त्राव होता है? मेरा तुमसे अनुरोध है कि तुम इसके लिए और पेचिश के लिए भी अपनी चिकित्सा करा लो। तुम्हारी डाक्टरी परीक्षा ज्ञानदा या कोई अन्य कर सकता है। फिर जो दवा जरूरी हो लेते रहो। इस संबंध में कोई लापरवाही न बरतना।

तुम्हारी बीमारी की खबर अरविंद सब जगह फैला रहा है। मुझसे कई लोगों ने तुम्हारे बारे में पूछा है। अगर तुम अरविंद को सबक सिखाना चाहते हो, और चाहते हो कि तुम्हें परेशानी न झेलनी पड़े, तो तुम तुरंत अपना रोड़ा दूर कर लो। उस स्थिति में जब लोग तुम्हें देखने आएंगे तब वे तुम्हारे स्वास्थ्य को अच्छा पाएंगे।

मैंने विधु से सुना है कि सुरेश दा को भी ग्रसनीशोध है। इससे

कम से कम यह बात तो सिद्ध हो ही गई है कि जिसमें बहुत अधिक शारीरिक मजबूती है, उस पर भी अस्वास्थ्य कर परिस्थितियों में आवश्यकता से अधिक काम करने का बुरा असर पड़ सकता है।

तुम्हारी एक बुरी आदत यह है कि तुम इच्छा शक्ति द्वारा शारीरिक बीमारी को दबा देने की कोशिश करते रहते हो। इसी कारण तुम पिछली बार इतने गंभीर रूप में बीमार हो गए थे। अगर तुमने सावधानी नहीं बरती तो तुम इस बार भी बीमार पड़ सकते हो। इसलिए तुमसे अनुरोध है कि तुम समय रहते अपने स्वास्थ्य की चिंता करो।

(अगले दो पत्रों में कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कालेज की ओटेन–घटना का उल्लेख है जिसकी चर्चा नेताजी ने अपनी आत्मकथा में की हैं।

–संपादक)

(39)

38/2, एल्गिन रोड,
कलकत्ता
29–2–16

हेमन्त कुमार,

मैंने एक दो दिन तक तुम्हें कुछ नहीं लिखा, क्योंकि लिखने के लिए कुछ विशेष था ही नहीं। मुझको लेकर तुम्हें अधीर या बेचैन नहीं होना चाहिए। हमें कुछ समय तक धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करनी चाहिए।

सिंडीकेट में मेरे प्रतिवेदन को देखते हुए अब वे लोग मेरे मामले में कोई आदेश नहीं निकालेंगे और, संभवतः समिति की रिपोर्ट जारी होने की प्रतीक्षा करेंगे। आज मैंने समिति को आवेदन देकर उससे अनुरोध किया है कि वह मेरी गवाही ले और मेरे मामले पर फिर से विचार करे। समिति इस समय प्रोफेसरों की गवाही दर्ज कर रही है। मैं समझता हूँ कि उनकी गवाही तीन–चार दिन में खत्म हो जाएगी और तब लड़कों को

बुलाया जाएगा। तब हम उपस्थित होंगे और गवाही देंगे। समिति देंगे। समिति के विचारार्थ विषय काफी विस्तृत हैं। वे निम्नलिखित बातों पर विचार करेंगे–

(1) प्रेसीडेंसी कालेज में यूरोपीय और भारतीय प्रोफेसरों के बीच संबंध।

(2) यूरोपीय प्रोफेसरों और भारतीय विद्यार्थियों के बीच संबंध।

(3) भारतीय प्रोफेसरों और भारतीय विद्यार्थियों के बीच संबंध।

(4) उस अनुशासनहीनता का कारण जिसकी परिणति हड़ताल में हुई।

(5) उस अनुशासनहीनता का कारण जिसकी परिणति हमले में हुई।

सरकार , संभवतः कोशिश करेगी कि कतिपय सुधार किए जाएं और प्रेसीडेंसी कालेज का संचालन उन नए नियमों के अंतर्गत किया जाए जिनमी सिफारिश समिति करे। ऐसा भविष्य में किसी तरह की गड़बड़ी की आशंका समाप्त करने के विचार से किया जाएगा। इसीलिए तुम भलीभांति समझ सकते हो कि मामला काफी गंभीर है। आशु बाबू के होते हुए हमें आशा है कि विद्यार्थियो के अधिकार सुरक्षित रहेंगे। यदि समिति ने हमें निर्दोष पाया या संदेह का लाभ दिया तो हम सिंडीकेट को आवेदन देंगे कि हमें फिर प्रेसीडेंसी कालेज का विद्यार्थी बनाया जाए। दिया तो हम सिंडीकेट को आवेदन देंगे कि हमें फिर प्रेसीडेंसी कालेज का विद्यार्थी बनाया जाए। अगर हमें दुबारा नहीं प्रवेश दिया जाता तो हम स्थानांतरण के लिए कहेंगे। यदि हमें स्थानांतरण प्रमाण–पत्र दे दिया जाता है तो अन्य कालेजों में प्रवेश लेने में कोई कठिनाई नहीं होगी। लेकिन अगर हमें इसमें सफलता नही मिली तो मेरा लगभग निष्कासन जैसा हो जाएगा। परंतु ऐसे मामलों में वे लोग एक वर्ष से अधिक समय के लिए नाम नहीं काटते। अत्यंत गंभीर अपराधों के लिए आजीवन निष्कासन का आदेश हो सकता है जिसका अर्थ यह होगा कि पढ़ाई का अंत हो गया।

लेकिन मेरे पक्ष में बहुत सी बातें हैं। मैं एक 'अच्छे विद्यार्थी' के रूप में विख्यात हूँ, कम से कम मेरा नाम उच्च हल्कों को विदित है, जनता के अधिकांश भाग का विचार है कि मैं निर्दोष हूँ। आशु बाबू मुझे व्यक्तिगत रूप से जानते हैं, और मेरे विरूद्ध अर्दली की गवाही बहुत लचर है। इसलिए इस बात की पूरी संभावना है कि मुझे निर्दोष पाया जाए और कोई दंड न दिया जाए। कम से कम मुझे स्थानांतरण की सुविधा तो दे ही दी जाएगी।

लेकिन अगर आखिर में कोई सफलता नहीं मिली तो हम अदालत का सहारा ले सकते हैं।

(40)

38/2 एल्गिन रोड, कलकत्ता
6–3–16 सोमवार

हेमन्त

मुझे तुम्हारा पत्र नहीं मिला है और इसलिए चिंता हो रही है। क्या तुम्हें मेरा पत्र नहीं मिला? हमारे पत्र गुप्त रूप से पढ़े जाते हैं। मैं समझता हूँ कि मैंने पिछला पत्र समिति के समक्ष जाने के एक दिन बाद लिखा था। तुमने सुना होगा कि होस्टल बंद कर दिया गया है, और कालेज की छुट्टियां समाप्त होने से पहले, संभवतः, नहीं खुलेगा। लगता है कि हमारे प्रति समिति का रूख अनुकूल है, और हमें आशा है कि अगर हमें निर्दोष घोषित नही भी किया गया, तो भी हमें संदेह का लाभ दिया जाएगा। कुछ भी हो, अभी तो हमें प्रतीक्षा करनी है कि क्या होगा। तुम्हारे लिए यह अच्छा होगा कि तुम मेरे पत्र नष्ट कर दो।

कृपया सभी समाचार लिख भेजो। पिछले दिनों बेनी बाबू से मेरा विचार–विमर्श हुआ। उन्होंने लड़कों की कड़ी आलोचना की और श्री जेम्स से सहानुभूति व्यक्त की।

तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है? कृपया लिखो कि तुम कैसे हो। मुझे आशा है कि तुम अपनी समुचित चिंता कर रहे हो और इसके बारे में मुझे फिर याद नहीं दिलाना पड़ेगा। कृपया जल्द उत्तर दो।

तुम्हारा

सुभाष चन्द्र

(41)

मंगलवार

4–7–16

जब मैं तुम्हारे पास से आया तो मैं समझ गया था कि तुम्हारी मानसिक स्थिति कुछ अच्छी नहीं है। फिर भी मुझे आना पड़ा। पिछले कुछ दिनों से मैंने तुम्हें पत्र नहीं लिखा, लेकिन क्या तुम्हें भी इसी कारण नहीं लिखना चाहिए था? अगली प्रातः मैं तुमसे मिलने की बात सोच रहा था लेकिन कुछ विशेष कारण से वैसा नहीं कर सका। जो भी हो अब विस्तार से लिखो कि तुम कैसे हो? मैं जानना चाहूँगा कि लोग तुम्हारे स्वास्थ्य के बारे में किस प्रकार की टीका–टिप्पणी कर रहे हैं।

ऐसा लगता है कि मुझे अपनी पढ़ाई छोडनी पड़ेगी। मेरे सामने गंभीर समस्या है। अभी तक मैं जो भी मिला उससे सलाह लेता रहा हूँ। लेकिन अब मैं अनुभव कर रहा हूँ कि समाधान मुझे अपने भीतर ही खोजना है। इसके अलावा मेरी मानसिक स्थिति इन दिनों अच्छी नहीं है। मैं नही जानता कि मैं इस संकट से अछूता निकल सकूँगा। फिर भी, मेरे जीवन के अनुभवों में एक यह भी रहा है कि मुझे आशा की कोई न कोई झलक उबार लेती है और जीवन से दूर नहीं भटकने देती। क्या आश्चर्य कि यह केवल मायाजाल हो। मेरे जीवन में संकट की जो यह घड़ी आई है, उसमें क्या तुम मुझसे मुंह मोड़ लोगे?

मैं यह कल्पना कभी नहीं कर सकता था कि जिस समस्या का सामना मैं आज कर रहा हूँ वह इतनी अधिक कठिन होगी।

इससे अधिक मैं और क्या लिखूं? कृपया मुझे विस्तार से लिखो। वहाँ के हाल चाल क्या है?

(42)

शुक्रवार

(1917)

प्रिय हेमन्त

मुझे तुम्हारा पत्र अभी मिला। मैं अतुल बाबू से मिला था—वह मेरे लिए समुचित निवास की खोज नहीं कर सकें। कुछ यह भी आशा है कि विश्वविद्यालय एक नया मेस खोले। उसके लिए प्रतीक्षा करने के सिवा मुझे कोई और रास्ता दिखाई नहीं देता। जिन जगहों का पता अतुल बाबू ने लगाया, वे कतई सुविधाजनक नहीं हैं। शंभू चटर्जी स्ट्रीट पर मेस के ऊपर पहली मंजिल में एक कमरा मिल रहा है, लेकिन उसमें न काफी रोशनी है, न हवा आने जाने की समुचित व्यवस्था है। इसिलए उसे नहीं लिया जा सकता।

मैंने स्काटिश चर्च कालेज में तीसरे वर्ष में प्रवेश ले लिया है।

मैं तुम्हारे पत्र का उद्देश्य ठीक–ठीक नहीं समझ सका। मैं गरीब परिवार में नहीं जन्मा था, यह बात बिल्कुल सच है–लेकिन क्या इसके लिए मैं जिम्मेवार हूँ? इसके लिए मुझे क्या प्रायश्चित करना होगा? मुझे इसके सिवा और कोई रास्ता नहीं दिखाई देता कि हम जिस घरेलू और सामाजिक परिवेश में जन्मे हैं, उसका पूरा फायदा उठाएं। उनका मामला निस्संदेह भिन्न है जो पूर्णतः संन्यासी हैं। मैं उनमें से एक नहीं हूँ। और फिर, मैं अपने में कोई तबदीली नहीं देखता। ऊपरी तौर पर देखने से अनिवार्यतावश कुछ परिवर्तन शायद हुआ हो, लेकिन भीतर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ है। हाँ युवकोचित अत्युत्साह अब शांत हो रहा है। चढ़ती हुई उम्र और बढ़ते हुए अनुभव के साथ हमारा मन भी अधिक स्थिर

होता जाता है। मेरे साथ भी शायद यही हो रहा है। जो विचार किशोरावस्था में सभी अवरोधों से टक्कर लेते हुए संघर्ष के बीच अपनी राह बनाने के लिए कसमसाते रहते हैं, वे ही उम्र बढ़ने के साथ गंभीर बनते जाते हैं।

निस्संदेह, एक और भी बात होती है। अगर किसी को विश्वास हो जाए कि किसी अन्य व्यक्ति की मानसिकता में परिवर्तन हो गया है तो उसे समझा बुझाकार या जोर डालकर यह यकीन नहीं दिलाया जा सकता कि ऐसा नहीं हुआ है। ऐसी स्थिति में अगर कोई अपनी सफाई देने की जरूरत से ज्यादा कोशिश करता है तो दूसरे लोग उससे उल्टी बात पर विश्वास करने की और भी दृढ़ प्रवृत्ति दिखाते हैं। इस विषय में, बस, इतना ही कहना चाहूँगा।

अगर किसी को विश्वास है कि मेरे मानसिक दृष्टिकोण में परिवर्तन आ गया है, और मैं अब वह नहीं हूँ जो पहले था, तो यह मेरे लिए बड़े दुख और दुर्भाग्य की बात है। मैंने कभी नहीं सोचा था कि तुम ऐसा करोगे।

हम जिस युग और विश्व में रहते हैं, उसमें हम अपनी सभी भावनाओं को पूर्णतः और बिना सोच विचार के अभिव्यक्त नहीं कर सकते। हमें उनको अपने अंदर रखना होता है। सम्पूर्ण प्रकृति हमें ऐसा करने को विवश कर रही है।

मूल बात तो यह है कि रोग हमारा ही है, किसी अन्य का नहीं। और एक प्रकार की मानसिक विकृति होती है, जिसके विषय में मैं तुमको काफी समय से सचेत करता रहा हूँ, और जिसका मैं यथाशक्ति उपचार करता रहा हूँ। जब तक तुम इससे छुटकारा नहीं पाओंगे, तब तक केवल मैं ही क्यों, यह समस्त संसार तुम्हें अस्वाभाविक लगेगा।

क्या तुम्हें प्रेसीडेंसी कालेज से कोई उत्तर मिला है?

तुम्हारा,
सुभाष

(अगले दो पत्रों में नेताजी ने 1917–18 में इंडिया डिफेंस फोर्स (भारत रक्षा सेना) की कलकत्ता विश्वविद्यालय यूनिट के बारे में अपने अनुभव व्यक्त किए हैं। इस संबंध में उनकी आत्मकथा में उल्लेख 8वें अध्याय में किया गया है।

–संपादक)

(43)

वाई. एम. सी.ए.
कलकत्ता यूनिवर्सिटी इन्फैंट्री
शूटिंग कैम्प,
बेलघरिया, ई, बी, रेलवे
5–4–18

मुझे तुम्हारा पत्र मिल गया है। मैं उस दिन यूनिवर्सिटी इंस्टीच्यूट नहीं गया था, क्योंकि मुझे कैम्प में जाना था। लेकिन डाक्टर की सलाह न होने के कारण मैं कैम्प में भी नहीं गया। हम यहाँ परसों आए थे और दो से तीन सप्ताह तक यहाँ रहेंगे। राइफल चलाने का अभ्यास आज आंरभ हो गया। यह मुझे बहुत दिल चस्प लगता है। मुझे आशा नहीं है कि हमें 24 अप्रैल से पहले छुट्टी मिल पाएगी। इसलिए मैं उस दिन, जिसका उल्लेख तुमने किया है, कृष्णा नगर के नाइट स्कूल की वार्षिक बैठक में नहीं आ पाऊंगा।

मैं काफी ठीक चल रहा हूँ। शेष सब कुशल है। तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है?

सुभाष

(44)

कलकत्ता
बृहस्पतिवार
30–4–18

हेमन्त,

तुम्हारा पत्र यथासमय मिल गया। हम सब गत शुक्रवार को घर लौटै। मैं ठीक हूँ। मैं नहीं सोचता कि मेरे लिए अवकाश के दिनों में अधिक काम होगा, क्योंकि उन दिनों कलकत्ता में बहुत कम लोग रह जाएँगे। लेकिन मैं नही कह सकता कि पूजा के बाद क्या होगा। मैं समझता हूँ कि हम दिल्ली की बड़ी असेंबली की कार्रवाई से रूख का पता लगा सकेंगें।

अगली पहली मैं शायद कलकत्ता में ही रहूँगा। लेकिन जब–तब मुझे पूरी जाने की इच्छा होती है। मैं तुम्हारे यहाँ भी जाना चाहता हूँ।

मैं ठीक ही हूँ। मैंने अपनी पढ़ाई अभी शुरू नहीं की है। मैं कालेज पत्रिका के लिए कैम्प जीवन पर एक लेख लिखूंगा। जब वह पूरा हो जाएगा तो मैं उसे तुमको दिखाऊंगा। कृपया उत्तर शीघ्र देना।

सुभाष

पुनश्च—तुमने मेरी पदोन्नति के बारे में पूछा है। मुझे कोई पदोन्नति नहीं मिली। मैं आखिरी समय तक प्राइवेट ही रहा। इसका एक कारण यह था कि कैप्टेन ग्रे के आदेशों के अंतर्गत एन. सी. ओ. लोगों को उनके फीतों से वंचित कर दिया गया और मनोनयन की जगह वोट द्वारा ताजा चुनाव कराए गए। उस समय मैं अनुपस्थित (बीमार) था। और सभी स्थान भर लिए गए थे।

अगला पत्र भोलानाथ राय को लिखा गया था जो सहपाठी और मित्र थे।

(45)

38/2, एल्गिन रोड
कलकत्ता
12–4–19

प्रिय भोलानाथ बाबू,

मुझे आपको पहले ही खबर करनी चाहिए थी कि मेरी परीक्षा कैसी रही है। लेकिन देर आये दुरूस्त आये।

मेरे पहले चार प्रश्न–पत्र तो अच्छे हो गए हैं, लेकिन अंतिम दो (अर्थात् दर्शनशास्त्र का इतिहास और निबंध) संतोषजनक नहीं हुए हैं। उनमें आए हुए प्रश्न अनुकूल नहीं थे।

मुझे यह कहने की आवश्यकता नहीं कि आपने जो सुझाव भेजे थे परीक्षा भवन के लिए मुझे बहुमूल्य लगे। मुझे आपका निबंध (धर्म और नैतिकता) समय से मिल गया था। राजेन बाबू ने दया करके उसे डाक द्वारा भेज दिया था। काम पूरा हो जाने पर मैं उसे उनको वापस भेज दूंगा।

आशा है आप सकुशल होंगे। हमस ब यहाँ अधिकांशतः ठीक हैं।

आपका सस्नेह,
सुभाष

पुनश्च–

नीतिशास्त्र के पर्चे में एक प्रश्न धर्म और नीतिशास्त्र के संबंध के बारे में था।

सुभाष चन्द्र बोस

भोलानाथ राय महाशय, एम, ए,
18, राम मुखर्जी लेन,
शिवपुर।

अगला पत्र हेमन्त कुमार सरकार को लिखा गया था।

(46)

38/2, एल्गिन रोग
कलकत्ता
26–8–19

मेरे सामने एक सबसे अधिक गंभीर समस्या है। कल मेरे परिवार ने मुझे इंग्लैंड भेजने का प्रस्ताव किया। मुझे तुरंत वहॉ के लिए रवाना हो जाना है। फिलहाल, इंग्लैड के किसी अच्छे विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने के कोई आसार नहीं हैं। इन लोगों की इच्छा है कि मैं कुछ महीने तक अध्ययन करूँ और सिविल सर्विस परीक्षा में बैठूं। मेरा यह मत है कि सिविल सर्विस परीक्षा में मेरे उत्तीर्ण होने की कोई संभावना नहीं है। बाकी लोगों की राय है कि अगर मैं परीक्षा में अनुत्तीर्ण भी रहा तो भी मैं आगामी अक्तूबर तक लंदन या कैम्ब्रिज में प्रवेश पा सकता हूॅ। मेरी सर्वोपरी इच्छा है इंग्लैंड से विश्वविद्यालय की डिग्री प्राप्त करना, अन्यथा मैं शिक्षा जगत में स्थान नहीं बना सकता। यदि मैं इस समय सिविल सर्विस के लिए अध्ययन से इन्कार करूँ तो मुझे इंग्लैंड भेजने का प्रस्ताव फिलहाल (और हमेशा के लिए) खत्म हो जाएगा। मैं नहीं जानता कि भविष्य में फिर ऐसा मौका आएगा या नहीं। इनं परिस्थितियों में क्या मैं इस अवसर को गंवा दूं? दूसरी ओर अगर मैं किसी तरह सिविल सर्विस परीक्षा पास कर लूंगा तो एक बड़ा खतरा उपस्थित हो जाएगा। उसका अर्थ होगा अपने जीवन का लक्ष्य त्याग देना। पिताजी कलकत्ता आए थे। उन्होंने कल यह प्रस्ताव किया और मुझे कल ही उत्तर देना था। कल वह कटक चले गए। मैंने इंग्लैंड जाने के लिए सहमति प्रकट कर दी है लेकिन मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि मेरा कर्त्तव्य क्या है, और तुम से विचार–विमर्श करना अत्यंत आवश्यक है। अगर तुम कलकत्ता आ सको तो निश्चय ही बहुत अच्छा होगा। मैंने सुना है कि तुम यहाँ 4 तारीख को आने वाले हो। लेकिन उससे इस मामले में अनावश्यक देरी हो जाएगी।

अगला पत्र भोलानाथ राय को लिखा गया था।

(47)

38/2, एल्गिन रोड
1–9–19

प्रिय भोलानाथ बाबू,

आपका पत्र 20 अगस्त को मिला और मैं श्वेगलर की पुस्तक अपने एक मित्र को दे चुका था कि वह उसे आपको दे दे। इस बीच घटना–चक्र कुछ ऐसा चला कि मुझे वह पुस्तक उससे वापस लेनी पड़ी। आपको यह जानकर, निस्संदेह, आश्चर्य होगा कि मैं खिदिरपुर डाक से 11 सितबर को इंग्लैंड के लिए रवाना हो रहा हूँ। मैं आई. सी. एस. के लिए कोशिश करने जा रहा हूँ, और उसमें असफल होने पर कैम्ब्रिज में पढ़ूंगा। यह आवश्यक है कि मैं कैम्ब्रिज अक्तूबर, 1920 से पहले नहीं जा पाऊंगा और अभी लंदन में रहूँगा। मैं चूंकि आई. सी. एस. में तथा कैम्ब्रिज में भी दर्शनशास्त्र लेना चाहता हूँ, अतः मैंने उचित समझा कि मैं दर्शनशास्त्र की किताबें अपने साथ लेता चलूं, और संभव हो सके तो जहाज पर थोड़ी–बहुत पढ़ाई कर लूं। क्या मुझे प्रस्थान से पूर्व आपसे मिलने का सौभाग्य नहीं प्राप्त होगा? मैं आज कालेज गया था, पर आप नहीं मिल सके।

सप्रेम

आपका सस्नेह
सुभाष

भोलानाथ राय
18, राम मुखर्जी लेन,
शिवपुर।

अगला पत्र हेमन्त सरकार को लिखा गया था।

(48)

38/2, एल्गिन रोग
कलकत्ता
3–9–19

पिछले कुछ दिनों से मैं विचार मंथन से होकर गुजरा हूँ। मैं बड़े मानसिक संघर्ष के बाद विदेश जाने के लिए सहमत हुआ था, फिर भी मैं अपने को आश्वस्त नहीं कर पाया था कि मेरा निर्णय उचित है। कुछ भी हो, तुम्हारा पत्र पाकर मुझे बहुत राहत मिली।

कल मैं बहुत व्यस्त था और इसीलिए तुम्हें नहीं लिख सका। मैं 11 सिंतबर की प्रातः कलकत्ता से रवाना होऊंगा बशर्ते कि तब तक सभी आवश्यक औपचारिकताएं पूरी हो जाएं।

मैं तुमसे आमने सामने बातें करने के बाद ही निश्चयपूर्वक बता सकूँगा कि परिचय पत्रों की आवश्यकता होगी या नहीं। मुझे तुमसे अपनी पढ़ाई के बारे में भी विचार–विमर्श करना है। तुम यहाँ आ जाओ तो वे सभी बातें हो जाएंगी। 'तुम्हें बहुत अधिक जल्दी नहीं करनी चाहिए, क्योंकि अगले दो या तीन तक मुझे लगातार इधर–उधर आना–जाना पड़ेगा। मुझे आशा है कि कुछ अवकाश तो मुझे मिल ही जाएगा। तुम्हारी आसन्न परीक्षाएं तुम्हारे लिए कठिनाई पैदा कर रही होंगी।

निम्नलिखित पत्र जोगेन्द्र नारायण मित्रा को लिखा गया था।

(49)

सिटी आफ कैलकटा
हिन्द महासागर से
20 सितंबर, 1919

मान्यवर

आपने मेरे लिए जो कुछ किया उसके बाद मेरा आपसे कलकत्ता छोड़ने से पहले एक बार भी न मिलना निश्चय ही अशोभनीय लगा होगा और अकृतज्ञता प्रतीत हुई होगी। लेकिन मुझे आशा है कि आपने यह सोचकर मुझे क्षमा कर दिया होगा कि मेरा जाने से ठीक पहले अत्यधिक व्यस्त हो जाना स्वाभाविक था। मैं आपको यहाँ के लिए रवाना होने से पहले ही लिखता, लेकिन आखिरी वक्त तक मुझे आशा थी कि मैं आपके यहाँ जाकर आपसे मिलूंगा और जब मैं ऐसा नहीं कर सका तो इतना समय नहीं रह गया था कि आपको लिख पाता। आप अवश्य ही यह जानने को उत्सुक होंगे कि मुझे जिस प्रमाण–पत्र और पासपोर्ट की इतनी अधिक आवश्यकता थी, उनका क्या हुआ? यह मेरी बड़ी ही अभद्रता थी कि आप तो इस प्रकार चिंतित हो रहे थे, और मैं आपको ऐसे दो शब्द भी नहीं लिख सका जिनसे आपकी चिंता दूर हो पाती। अब तो काफी देर हो चुकी है, लेकिन फिर भी आपको यह सुनकर प्रसन्नता होगी कि मुझे आयु संबंधी प्रमाण–पत्र समय से कमिश्नर से मिल गया था और उनके निजी सहायक श्री एम. एम. मुखर्जी मेरे प्रति बहुत कृपालु रहे। उन्होंने पूरा प्रयास किया कि मुझे प्रमाण–पत्र जल्द मिल जाएं। यदि आप भविष्य में उनसे मिलें तो कृपया उनके प्रति मेरा हार्दिक आभार प्रकट कर दें। मुझे पासपोर्ट भी ठीक समय से मिल गया था और इसके लिए मैं सहायक कमिश्नर श्री जे. एम. बोस तथा अन्य महानुभावों का आभारी हूँ। मेरे पास कहने को शब्द नहीं हैं कि उन्होंने संकट की घड़ी में मेरी कितनी अधिक सहायता की। समुद्र यात्रा में मुझे कोई विशेष कठिनाई नहीं हुई है और रवाना होने के बाद मैं बीमार नहीं पड़ा हूँ। जहाज़ पर हम सब लगभग एक दर्जन बंगाली विद्यार्थी हैं और हमारी आपस में मित्रता स्थापित हो गई है। उनका साथ न होता तो मैं अकेलापन और बेचैनी महसूस करता।

हम आज दिन में कोलंबो पहुँच रहे हैं और कुल मिलाकर हमें लंदन पहुँचने में 30 दिन लगेंगे। जब मैं लंदन पहुंचूंगा तो मैं आपको फिर

लिखने की सोच रहा हूँ।

जहाज पर मैं बिल्कुल ठीक हूँ। आशा है आप सर्वथा स्वस्थ होंगे। समाप्ति से पूर्व एक बार फिर मुझे आभार प्रकट करने और सम्मान अर्पित करने की अनुमति दें।

आपका कृपाकांक्षी
सुभाष चन्द्र बोस

मैं जानने को उत्सुक हूँ कि क्या यह पत्र आपको मिल गया है। यदि आपको समय हो तो कृपया सुविधानुसार दो शब्द लिखकर भेज दें। मेरा पता फिलहाल इस प्रकार है–

द्वारा टामस कुक एंड संस
लडगेट सर्कस
लंदन

सुभाष

श्रीयुत जोगेन्द्र नारायण मित्रा
डिप्टी मजिस्ट्रेट एवं डिप्टी कलक्टर,
अलीपुर,
4, कार्तिक बोस लेन
आफ ग्रे स्ट्रीट
कलकत्ता

अगले दो पत्र हेमन्त कुमार सरकार को लिखे गए थे।

(50)

8, ग्लेनमोर रोडद्व
बेल्साइज पार्क
लंदन एन, डब्ल्यू. 3
कोई तिथि नहीं (1919)

हेमन्त,

मैं तुम्हें एक लंबा, विस्तृत पत्र लिख रहा हूँ। लेकिन अभी वह पूरा नहीं हो पाया है। यह पत्र मैं तुम्हें अपने सकुशल यहाँ पहुंचने और पते की सूचना देने के लिए लिख रहा हूँ। मैं इस समय बहुत व्यस्त हूँ क्योंकि मैं अपने अध्ययन के बारे में कोई व्यवस्था अभी नहीं कर पाया हूँ। मैं विस्तार से डाक द्वारा लिखूंगा। मेरे बड़े भाई भी इसी घर में रह रहें है। मैं 20 अक्तूबर को लंदन पहुँचा था। कृपया प्रमथ को बता देना कि जुगल दा अभी भी मार्सीलिज में हैं। वह अपने रेजिमेंट के साथ नवंबर या दिसंबर में भारत जाएँगे। उनका वहॉ, संभवतः, अप्रैल 1920 में विघटन होगा। यह सूचना मुझे धीरेन के पिता श्री एम. एम. धर से मिली हैं मैं स्वयं जुगल दा को जानकारी देने के लिए लिखूंगा और तब तुम्हें सूचित करूँगा।

श्री भारत चन्द्र धर का पुत्र भी इसी मकान में रह रहा है। वह लंदन में बी. काम. के लिए पढ़ने आया है। यहाँ मुझे मौसम बहुत सर्द लग रहा है। आज मैं यहाँ रूकूंगा। शीघ्रता में–

तुम्हारा
सुभाष

(51)

फिट्ज़ विलियम हाल
कैम्ब्रिज
1–11–19

जिनसे मुझे पत्र पाने की आशा नहीं थी उन्होंने तो मुझे पत्र लिखे

हैं लेकिन तुमने कोई पत्र नहीं भेजा। कोई बात नहीं। मुझे आशा है कि तुम अब लिखोगे।

मैंने अपने पिछले पत्र में तुमसे कहा था कि मुझे कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में प्रवेश मिल गया है और मैं यहाँ पहुँच गया हूँ। एक मित्र की सहायता से मुझे स्थान मिला। अंशतः भारतीय रक्षा सेवा में मेरी सेवा के कारण भी ऐसा संभव हुआ। स्थान की कमी होते हुए भी मुझे रहने के लिए भी जगह मिल गई है।

मैं अगले वर्ष सिविल सर्विल परीक्षा देने की, और चाहे मैं पास होऊं या फेल, मई 1921 में नैतिक विज्ञान ट्रिपोज की परीक्षा देने की योजना बना रहा हूँ।

मुझे यहाँ कोई डिग्री लेनी ही है क्योंकि वह भविष्य में मेरे बहुत काम आएगी। यहाँ भारतीयों की एक संस्था है जिसे 'इंडियन मजलिस' कहा जाता है। उसकी सामूहिक बैठकें होती रहती हैं और समय–समय पर बाहर से अच्छे वक्ता आते रहते हैं। एक बार श्रीमती सरोजनी नायडू ने 'युवाओं का साम्राज्य' विषय दिया था। श्री ऐन्ड्रयूज 'गिरमिटिया मजदूर प्रथा' पर तथा फिजी द्वीप समूह में रहने वाले भारतीयों की वर्तमान शिकायतों पर बोल चुके हैं। इंडियन हाउस ने कोशिश की कि वे न आ सकें लेकिन उसे सफलता नहीं मिली। यहाँ भारतीय उग्रवादी विचारों के हैं और उनके नरम भाषण पर अप्रसन्नता प्रकट की गई।

पिछले दो दिनों से यहाँ बर्फ पड़ रही है। कोई चाहे या न चाहे, इस देश का मौसम लोगों को फुर्तीला बना देता है। यहाँ लोगों को काम में व्यस्त देखना बहुत अच्छा लगता है। प्रत्येक व्यक्ति समय के मूल्य के प्रति सचेत है और जो कुछ होता रहता है उसके पीछे एक योजना होती है। मेरे लिए प्रसन्नता की इससे अधिक और कोई बात नहीं हो सकती कि गोरे लोग मेरी सेवा में लगे हुए हों उन्हें मैं अपने जूतों पर पालिश करते हुए देखूं। यहाँ विद्यार्थियों की एक हैसियत है और उनके प्रति प्रोफेसरों का व्यवहार हमारे यहाँ से भिन्न है। यहाँ हम देख सकते हैं कि

आदमी को आदमी से कैसे व्यवहार करना चाहिए। इनमें बहुत से दोष हैं लेकिन बहुत से मामलों में उनके गुणों के कारण हमें उनका आदर करना पड़ता है। तुम कैसे हो? परीक्षा में तुमने कैसा किया? मुझे जानने की उत्सुकता है कि तुम्हारी अगली योजना क्या है। मुझे विस्तार से लिखों। सुनीति बाबू लंदन में शोध कार्य कर रहे हैं। मैं ठीक हूँ। जुगल दा फ्रांस में हैं।

अगला पत्र जोगेन्द्र नारायण मित्रा को लिखा गया था।

(52)

फिट्ज़ विलियम हाल
कैम्ब्रिज
19–11–19

मान्यवर,

लंदन आते हुए मैंने एक बंदरगाह पर आपको एक पत्र डाला था। मुझे आशा है कि वह पत्र आपको यथासमय मिल गया होगा।

आपने जो कुछ मेरे लिए किया उसके बाद कलकत्ता छोड़ने से पूर्व मेरा आप से न मिलना और आपको नमस्कार न कह पाना मुझे बहुत अभद्र लगा है। मैं एक बार फिर आपके समक्ष क्षमा प्रार्थी हूँ और मुझे आशा है कि आप यह सोच कर क्षमा कर देंगे कि मैं उस समय बहुत व्यस्त था। मैं आखिरी दिन तक आशा लगाए था कि मुझे आपसे मिलने का समय रहेगा लेकिन मैं समय नहीं निकाल सका।

मेरी जहाज की यात्रा सुखद थी हालांकि कुछ लंबी और नीरस थी। मैं 20 अक्तूबर को लंदन पहुँचा और वहाँ अपने भाई के साथ कुछ दिन रहा। मुझे वहाँ कई लोगों ने सलाह दी कि मैं लंदन की बजाय

कैम्ब्रिज को प्राथमिकता दूं और इसीलिए मैं यहाँ आ गया। मेरा इरादा अगस्त, 1920 में आई.सीकृएस की परीक्षा में बैठने का और 1921 में नैतिक विज्ञान ट्रिपोज़ परीक्षा देने का है।

मैं यहाँ बिल्कुल ठीक और आराम से हूँ। आशा है आप पूर्ण स्वस्थ होंगे।

सम्पूर्ण आदर सहित,
मैं हूँ,
आपका कृपाकांक्षी
सुभाष चन्द्र बोस

अगला पत्र हेमन्त कुमार सरकार को लिखे गए थे।

(53)

फिट्ज़ विलियम हाल
कैम्ब्रिज
7—1—10

हेमन्त,

तुम्हारा (27 नवंबर का) पत्र मुझे कुछ दिन पहले मिला। तुमने इतने दिन तक मुझे क्यों नहीं लिखा था?

तुम्हें अब तक मेरे पत्र से पता चल चुका होगा कि मैं कैम्ब्रिज आ रहा हूँ। मैंने इस जगह को अध्ययन के अनुकूल पाया इसलिए मैंने यहाँ आने का फैसला किया। यहाँ स्थान पाने के लिए भाग्य ने साथ दिया—अंशतः यह विश्वविद्यालय के मेरे परीक्षा–परिणाम के कारण हुआ लेकिन मुख्यतः एक मित्र की सहायता से, जिसके प्रति मैं आभारी हूँ।

प्रफूल्ल अब क्या करेंगे? कृपया 'भारतवर्ष' में प्रकाशित हो जाने

के बाद मुझे लेख की एक प्रति भेजो।

क्या प्रफूल्लदा अभी भी प्रेसीडेंसी कालेज में काम कर रहे हैं या उनका कहीं और तबादला कर दिया गया है? कृपया सुरेश दा से अपनी बातचीत के बारे में मुझे विस्तार से लिखों। उनका कहना है कि वे एक स्कूल खोलना चाहते हैं पर क्या उन्हें उनकी नौकरी से छुटकारा मिल जाएगा। लेकिन मुझे कोई संकेत नहीं दिखते हैं कि वैसा हो सकेगा।

सुरेश दा ने एक प्रकार से सोच लिया है कि मैं उनके हाथ से निकल गया। अगर मैं सर्विस में प्रविष्ट नहीं होता तो उनसे फिर सहयोग की संभावना है। मैं सर्विस में रहूँ या नहीं, मुझे यह समझ में नहीं आता कि उससे आदमी–आदमी के बीच संबंध कैसे समाप्त हो सकते हैं? क्या दुकानदारी की यह मनोवृत्ति उचित है? जो कुछ हो, मैं किसी से तकरार नहीं चाहता। मैं अपना कर्त्तव्य करता रहूँगा और ऐसा करते हुए अगर मैं अन्य व्यक्तियों के निकट संपर्क में आ सका तो बहुत अच्छा होगा और अगर नहीं आ सका तो मै कुछ भी गंवाऊंगा नहीं।

लंदन में मैं सुनीति बाबू से मिला था।

बेनी बाबू कैसे हैं? कृपया वहाँ के समाचार विस्तार से लिखो और अपने विचार भी बताओ।

तुम्हारे पत्र में मुझे किसी गहरी वेदना का दुखद आभास मिला। यह वेदना किसलिए?

मैं बिल्कुल ठीक हूँ। यदि तुम प्रमथ, हेमेन्दु या चारू से मिलो तो उनसे कहना कि वे मुझे पत्र लिखें। जब तुम्हें प्रियरंजन मिलें तो उनसे कहना कि मुझे उनका पत्र मिल गया हैं मैं उन्हें अगली डाक से जवाब दूंगा।

तुम्हारा
सुभाष

(54)

कैम्ब्रिज
सोमवार
19 जनवरी 1920

हेमन्त,

मुझे तुम्हारा पत्र पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई। मुझे लगा है कि तुमने एक ही समय में बहुत सा काम अपने ऊपर ले रखा है। विश्वविद्यालय में पढ़ाने के लिए काफी मेहनत करनी होती है, फिर दुकान है तथा इस सबके बाद बहुत कुछ और भी। जब तुम समझते हो कि तुम्हारा स्वास्थ्य दिनों–दिन गिर रहा है तो इस प्रकार के व्यवहार का कोई औचित्य नहीं है। हमारे देश में यह जीवन–प्रणाली का ही दोष है कि जो काम नहीं करना चाहते वे कुछ भी नहीं करते और जो करना चाहते हैं वे आवश्यकता से अधिक काम करने लगते हैं और एक ही दिन में सब कुछ उपलब्ध कर लेने के फेर में अपना स्वास्थ्य और सब कुछ गंवा बैठते हैं। अगर तुम्हारी मूल योजना पी. आर. एस. के लिए कोशिश करने की और साथ–साथ कुछ शिक्षण कार्य भी करते रहने की थी तो अच्छा होता कि तुम दुकान का काम न पकड़ते। अगर किसी को कुछ स्थायी उपलब्धि करनी है तो उसे उस दिशा में वर्षो तक व्यस्त रहना होगा क्योंकि एक या दो वर्षो में वैसा करना संभव नहीं होगा। इसलिए अगर तुम देश के लिए कुछ स्थायी कार्य करना चाहते हो तो तुम्हें इस ढंग से चलना होगा कि तुममें कई वर्ष तक काम करने की क्षमता बनी रहे। यह सच है कि कोई नहीं कह सकता कि अंतिम प्रस्थान का क्षण कब आ जाएगा लेकिन फिर भी आत्म–हनन से या बूते से बाहर काम करके अपना स्वास्थ्य खराब करने से कुछ फायदा नहीं होगा। मैं बहुत कठोर शब्दों में यह सब लिख रहा हूँ। लेकिन मुझे विश्वास है कि तुम्हें गलतफहमी नहीं होगी। यह खेदजनक है कि तुम अपने ऊपर काम का इतना बोझ ले लेते हो और जब तुम्हारा स्वास्थ्य गिर भी रहा होता है तो भी अपनी इच्छा शक्ति से वह काम पूरा करते रहते हो। यह किसी भी प्रकार से वांछनीय स्थिति

नहीं है।

बुधवार 21 जनवरी

तुम्हारी परीक्षा के परिणामों का ब्यौरा पाकर मुझे प्रसन्नता हुई। मुझे इस बात से और भी खुशी हुई कि तुम्हें विश्वविद्यालय में विभिन्न दायित्व सौंपे गए हैं। मुझे विश्वास है कि इस सब काम को तुम बहुत अच्छी तरह करोगे लेकिन मुझे एकमात्र चिंता तुम्हारे स्वास्थ्य की है।

इस देश के 'देसो' लोगों में कुछ गुण हैं जिनके कारण वे इतने ऊंचे उठ सके हैं। प्रथमतः, वे घड़ी की सुई के साथ समय की पाबंदी रखते हुए हर काम पूरा करते हैं, द्वितीय, उनमें अदम्य आशावादिता है, जबकि हम जीवन के दुखों की बात सोचते रहते हैं वे जीवन के सुखपूर्ण और चमकदार पक्ष के बारे में अधिक सोचते हैं। इसके साथ उनमें प्रबल सहज बुद्धि होती है और वे अपने राष्ट्रीय हितों को भली भांति समझते हैं। सारांशतः, हम जिस हवा में सांस लेते हैं उसमें कुछ न कुछ गड़बड़ी है––हमें उसमें परिवर्तन लाना होगा।

तुम अपनी और अपने स्वास्थ्य की जो उपेक्षा करते रहते हो उसका मुख्य कारण भी वही है––पौर्वात्य उदासीनता।

'जो शरीर क्षण भंगुर है और जिसे अंततः मिट्टी में मिल जाना है उसकी चिंता करने से क्या लाभ?'––श्रमवीर के लिए उदासीनता का यह दृष्टिकोण अत्यंत अवांछनीय है। तुम्हें पश्चिम की हवा का कुछ अंश चाहिए जिससे तुममें सबल आशावाद का संचार हो सके।

मैंने बेनी बाबू को एक पत्र लिखा है। दत्त गुप्त को मैं अभी नहीं लिख पाया हूँ।

और मुझे कुछ नहीं कहना है। अगर इतनी कम आयु में तुम अपनी ही लापरवाही से स्वास्थ्य खो देते हो तो इसमें दोष केवल तुम्हारा है। बहुत सी बातें मनुष्य के वश के बाहर है लेकिन इसके बावजूद अपने स्वास्थ्य के प्रति उपेक्षा एक अपराध है––न केवल अपने प्रति, बल्कि औरों

के तथा अपने देश के प्रति भी। अगर हमारे देश के युवजन आरंभिक अवस्था में ही अपना स्वास्थ्य गंवा दे तो कहना पड़ेगा कि उनके आदर्श में कहीं कुछ भूल या छोटापन है। तुम्हारा शरीर तुम्हारा अपना नहीं है—तुम तो केवल उसके न्यासी हो। इसीलिए मैं यह सब इतनी निर्ममता से लिख रहा हूँ। मुझे आशा है कि तुम न्यासी के रूप में अपने कर्त्तव्य के प्रति उपेक्षा नहीं दिखाओगे।

मैं विस्तृत पत्र नहीं लिख सका हूँ—शायद वह नहीं लिखा जा सकेगा। मेरा यह सोचना गलत था कि इंग्लैंड पहुंचने के बाद मेरे पास विस्तृत पत्र लिखने का समय निकल आएगा। फिलहाल तो समय निकालना बहुत ही कठिन है।

मुझे अभी भी पता नहीं है कि मैं अपने आदर्श से दूर हट गया हूँ। मैं अपने आपको धोखे में नहीं रखना चाहता और यह नहीं कहना चाहता कि सिविल सर्विस के लिए पढ़ाई करना कोई अच्छी बात है। मैंने इससे हमेशा घृणा की है—शायद अब भी करता हूँ—तथा मैं नहीं जानता कि वर्तमान परिस्थितियों में सिविल सर्विस की तैयारी करना मेरी कमजोरी की निशानी है या अच्छे भविष्य का सूचक। मेरी एकमात्र प्रार्थना यही है कि मेरे शुभाकांक्षी मेरे बारे में जल्दबाजी में कोई राय न बनाएं।

अनेक घटनाओं के अर्थ का आकलन अंत तक नहीं हो पाता। क्या मेरे मामले में भी यही सच नहीं हो सकता।

तुम्हारा
सुभाष

(55)

कैम्ब्रिज
4 फरवरी, 1920

हेमन्त,

मुझे तुम्हारा पत्र पाकर प्रसन्नता हुई। हमारे देश के प्रायः सभी समाचार पत्र और महत्वपूर्ण मासिक पत्र यहाँ आते हैं लेकिन उन्हें पढ़ने

का समय नहीं मिल पाता। मुझे स्वदेश के समाचार अपने मित्रों से मिलते रहते हैं।

प्रफुल्ल के विषय में जानकर मुझे प्रसन्नता हुई। क्या यह सच है कि सुहृद का मनोनयन हो गया है?

तुम्हें विस्तृत पत्र लिखने की बात मेरे मन में अभी भी घुमड़ रही है। उसे मैंने अंशतः लिख भी लिया है। मैं उसे कमोबेश 'यात्रा–डायरी' के रूप में लिखना चाहता था। फिलहाल समयाभाव के कारण यह संभव नहीं हो पाएगा।

तुम अपने ऊपर एक साथ कितना काम लोगे? दुकान, अध्यापन, अध्ययन, रात्रि पाठशाला, और भी बहुत कुछ! इसका परिणाम क्या होगा? तुम अपनी तंदरूस्ती चौपट कर दोगे और बहुत शीघ्र किसी काम के नहीं रहोगे। हमारे यहाँ की जलवायु में कुछ ऐसी कमी है कि हम मिताचार और अत्युत्साह में संतुलन स्थापित नहीं कर पाते। जहाँ उत्साह है वहाँ मिताचार नहीं है और जहाँ मिताचार है वहाँ उत्साह या स्फूर्ति नहीं है। तुम अपने को चाहे जितना व्यावहारिक क्यों न समझो, तुमने अभी तक ऐसे मामलों में व्यावहारिक होना नहीं सीखा है।

तुम अब कैसे हो? मैं बिल्कुल ठीक हूँ। मैं दत्त गुप्त को अभी नहीं लिख पाया हूँ। शायद अगली डाक में मैं उसे पत्र भेज सकूँ।

तुम्हारा
सुभाष

(56)

फ़िट्स विलियम हाल
कैम्ब्रिज
2मार्च, 1920

हेमन्त,

मुझे कुछ समय से तुम्हारे समाचार नहीं मिले हैं, न मैंने ही तुम्हें

पत्र लिखा है। जब तुम्हारे पास सीमित समय हो तो तुम ऐसे ही लोगों को लिख सकते हो जिन्हें कुछ ही पंक्तियां लिखने से काम चल जाए।

अभी पिछले दिनों यहाँ भारतीय मजलिस का वार्षिक भोज था। श्री हार्निमैन उसमें हमारे मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। कुछ स्थानीय विदेशी मित्र भी आए। पिछले इतवार को श्रीमती राय ने इंडियन मजलिस में 'भारतीय माताओं के अधिकार' विषय पर भाषण दिया। सचमुच, भारतीय नारियां कब फिर समाज की शिक्षिकाओं के रूप में अपना स्थान ग्रहण करेंगी? जब तक भारतीय नारियां नहीं जागेगी, भारत नहीं जाग सकता। जब पिछले दिनों मैंने यहाँ श्रीमती सरोजनी नायडू को बोलते हुए सुना तो मेरे मन में आनंद की जो धारा बहने लगी उसे रोकना असंभव था। उस दिन मैं देख सका कि आज भी भारत की कोई नारी इतनी विदुषी, प्रेरक, गुणवान और चरित्रवान हो सकती है कि वह पाश्चात्य संसार का सामना कर सके और अपने आपको अभिव्यक्त कर सके। बाद में मैं लंदन में डा. मृगेन मित्रा की पत्नी के परिचय में आया। मैंने देखा कि डा. मित्रा राजनीति में नरम विचारों के हैं और श्रीमती मित्रा गरम विचारों की, और मेरी प्रसन्नता की सीमा न रही। और फिर मेरा परिचय गिरीशदा की मातां श्रीमती धर से हुआ। वे भी उग्रवादी हैं यह सब देखने के बाद मुझे यह विश्वास हो गया है कि जिस देश में इतने ऊंचे आदर्शों वाली महिलाएं है वह प्रगति करके रहेगा। मेरा विश्वास है कि जो भारतीय महिलाएं इस देश में आती हैं उनमें देशभक्ति की गहरी भावना हिलोरें लेने लगती है क्योंकि माँ का हृदय बहुत संवेदनशील और गंभीर होता है।

इस विषय पर बस इतना ही मेरे मन में जो आया, मैं लिख गया। क्या तुम गिरीश दा से मिलते हो, वह कहाँ हैं और क्या कर रहे हैं? जब तुम उनसे मिलों तो कहना कि वे मुझे पत्र लिखें। दुकान के और क्या समाचार हैं? मैंने सुना है कि जगदीश बाबू एफ. आर. एस. हो गए हैं। श्रमिक नेताओं ने उनसे कहा था– "जो देश अमृतसर के हत्याकांड को

सहन कर सकता है वह इसी के योग्य है।" हार्निमैन भारत के सच्चे मित्र हैं। वे अपने दत्तक देश को वापस जाने के लिए बहुत उत्सुक हैं। उन्हें पासपोर्ट नहीं मिल पा रहा है।

मैं नही जानता कि मैं किधर बह रहा हूँ। न मुझे यही मालूम है कि किस तह पर मेरी नैया जा लगेगी। लेकिन मुझे विश्वास है कि यदि तुम सब मुझे अपने प्रेम और शुभाशीष से वंचित नहीं करोगे तो मैं विपथ नहीं बनूंगा।

मेरा हस्तलेख शायद दिनों–दिन और खराब होता जा रहा है। आज बस इतना ही। अपने सभी समाचार दो।

(57)

कैम्ब्रिज
10 मार्च (1920)

हेमन्त,

मुझे तुम्हार लंबा पत्र मिल गया है। उसे मैं जब तक कई बार न पढ़ लूं तब तक मैं उसका उत्तर नहीं दे सकूँगा। इसलिए मैं इस डाक से उसका जवाब नहीं भेज रहा हूँ। मैं नित्यप्रति के कामकाज तक सीमित रहूंगा।

1. खर्च के विषय में–

अगर हम कपड़ों या व्यक्तिगत जरूरत की चीजों को छोड़ दे ंतो मै। समझता हूँ कि किसी का भी काम 250 पौंड में चल सकता है। मेरा विचार है कि तुम्हें सामान्य विद्यार्थी के रूप में प्रवेश नहीं मिलेगा इसलिए लेक्चर फीस की जरूरत नहीं होगी। किसी सामान्य विद्यार्थी के लिए यहाँ काम चलाना काफी कठिन होता है लेकिन मेरा विश्वास है कि शोध के विद्यार्थी के लिए कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। यहाँ साल में तीन

सत्र होते हैं।

गंभीरता से विचार करने के बाद मैं महसूस करता हूँ कि कहना बहुत मुश्किल है कि 250 पौंड यथेष्ट होंगे। यहाँ चार सप्ताह में (तुम इस एक महीना भी मान सके हो) रहने और भोजन की व्यवस्था पन्द्रह या सोलह पौंड से कम में होनी असंभव है। कुछ कालेजों में खर्च इससे कहीं अधिक आता है। फिर विश्वविद्यालय की फीस और किताबों का खर्च है। तुम्हें एक सुविधा यह होगी कि तुम्हारी लेक्चर फीस सामान्य विद्यार्थियो की अपेक्षा कम होगी। यहाँ विश्वविद्यालय से संबद्ध सभी व्यय सत्र की समाप्ति पर लिए जाते हैं। साल में तीन सत्र होते हैं और सत्रोपरांत बिल कुछ अधिक ही होता है और कुछ कालेजों में तो बहुत अधिक। सत्र के दौरान तुम्हारे लिए 21 पौंड से काम चलाना संभव नहीं है। लेकिन एक आशापूर्ण स्थिति यह है कि सत्र केवल छह महीने के होते हैं। शेष छह महीनों में रहने और खाने के खर्च के अलावा और कोई खर्च नहीं होता। अतः उस अवधि में खर्च 15 पौंड प्रति माह से अधिक नहीं होना चाहिए। इसलिए साल के अंत में 250 पौंड से काम चल जाना चाहिए। लेकिन ऐसा होगा ही, यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता है। मेरी निजी राय यह है कि तुम्हें कुछ और धन की व्यवस्था रखनी चहिये जिससे वह जरूरत पर काम आ सके। शायद हेम बाबू (दत्त गुप्त) तुम्हें नहीं पड़ेगी तो उन्हें ब्याज सहित उनका पैसा वापस मिल जाएगा और अगर वह खर्च हो गया तो बाद में तुम अपनी कमाई से उसे लौटा दोगे।

2. अध्ययन के विषय में—

पढ़ाई के मामले में इंग्लैंड में तुम्हारे सामने तीन विकल्प हैं—लंदन में डी. लिट् या आक्सफोर्ड की डिग्री अथवा कैम्ब्रिज की डिग्री। मुझे आक्सफोर्ड के विषय में अधिक कुछ पता नही है। मैं पता करके तुम्हें लिखूंगा। कैम्ब्रिज में इस समय केवल बी.ए. की डिग्री है। उसे तुम या तो सामान्य विद्यार्थी की तरह परीक्षा में बैठकर पा सकते हो या शोधकर्ता के रूप में शोधप्रबंध देकर।

तुम निस्संदेह शोध के छात्र रहोगे। एक नया प्रस्ताव विचाराधीन है कि इस साल से कैम्ब्रिज में पी. एच. डी डिग्री दी जाए। मैं समझता हूँ कि अक्तूबर के सत्र से पहले इसके लिए सभी आवश्यक तैयारियां हो जाएंगी। डा. तारापोरवाला तुम्हें बता सकेंगे कि लंदन, आक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज में से कौन सी जगह तुम्हारे काम के लिए सबसे अधिक अनुकूल रहेगी। लेकिन लंदन विश्वविद्यालय में अक्सर एम. ए. डिग्री से छूट नहीं दी जाती और एम. ए. के लिए पढ़ाई का मतलब होगा ढेर सी परेशानी मोल लेना। सुनीति बाबू को छूट मिल गई थी लेकिन सुशील डे को नहीं मिल सकी थी। लंदन में पढ़ाई के लिए वातावरण कतई अच्छा नहीं है। मेरी यह राह है कि आक्सफोर्ड या कैम्ब्रिज में पी. एच. डी. के लिए कार्य करना सर्वोत्तम होगा और मुझे आशा है कि अक्तूबर से पहले ही पी. एच. डी. के लिए प्रबंध पूरे हो जाएँगे।

तुम चूंकि सरकार की ओर से भेजे जाने वाले छात्र हो इसलिए तुम्हें प्रोफेसर कोजाजी के जरिए तीनों ही स्थानों के लिए आवेदन करना चाहिए। आजकल आक्सफोर्ड या कैम्ब्रिज में प्रवेश पाना कठिन होता है लेकिन मेरा विश्वास है कि शोध के विद्यार्थी के लिए कोई कठिनाई नहीं होगीं। सुनीति बाबू तुम्हें कह सकेंगे कि लंदन की सुविधाएं या असुविधाएं क्या थीं।

चूंकि माइकेलमास सत्र की शुरूआत अक्तूबर से होती है इसलिए यहॉ बहुत जल्द आने से कोई लाभ नहीं होगा। जून के बाद यहाँ लंबी छुट्‌टी होती हैं। इसलिए अगर तुम अप्रैल सत्र के लिए न आ सको तो अच्छा होगा कि अक्तूबर सत्र के लिए आओ। आज बस इतना ही।

तुम्हारा

सुभाष

(58)

कैम्ब्रिज

23–3–20

मुझे जानकार प्रसन्नता है कि तुम यहाँ सरकारी छात्रवृत्ति पर आ रहे हो। जो भी हो, तुम्हें जल्द निर्णय कर लेना चाहिए कि तुम कहाँ प्रवेश लेना चाहते हो और वहां के लिए आवेदन भेज दो। फिर पैसों का सवाल है कि तुम्हें उसकी जरूरत न पड़े–लेकिन अधिक संभावना यही है कि जरूरत होगी। फिर कपड़े आदि का प्रश्न है। मैंने सुना है कि सरकारी वजीफे के अंतर्गत उसकी व्यवस्था नहीं होती। मैं समझता हूँ कि पहनने–ओढ़ने की चीजों पर लगभग एक हजार रूपया लग जाएगा जिसमें सभी कुछ शामिल है।

तुमने एम. ए. की जो सूची मुझे भेजी है वह मुझे यथासमय मिल गई थी।

तुम्हारे लंबे पत्र में बहुत सी सच्ची बातें हैं। लेकिन दो बातों के बारे में तुम सही नहीं सोच सके हो। आगर मुझे कोई संन्यासी कहे तो अब भी मुझे बुरा नहीं लगता। हो सकता है कि मैं अब संन्यासी कहलाने योग्य न होऊं लेकिन अगर क्रोई मुझे वैसा कहता है तो अब भी मुझे पहले की तरह गर्व का अनुभव होता है।

दूसरी बात यह है कि मैंने किसी को भी यह नहीं कहा है कि मैं आई. सी. एस. में उत्तीर्ण होने के बाद बंगाल नहीं लौटूंगा।

मैं तुम्हारे पत्र की प्रायः प्रत्येक बात का अनुमोदन करता हूँ। अगर मै। उत्तर लिखने बैठूं तो वह बहुत लंबा हो जाएगा। अब जबकि तुम यहाँ आ ही रहे हो, हम्म आमने सामने बातें करके निर्णय कर लेंगे। फिलहाल हम इसे स्थगित रखें।

मैं काफी अच्छी तरह हूँ। तुम कैसे हो?

यह अगला पत्र नेताजी ने अपने एक सहपाठी और मित्र श्री चारू चन्द्र गांगुली को लिखा था।

——संपादक

(59)

कैम्ब्रिज
23 मार्च (1920)

चारू,

मुझे तुम्हारा पत्र पाकर और तुम्हारे परीक्षाफल को जानकर प्रसन्नता हुई। अब तुम्हें जीवन की अग्निपरीक्षा से होकर गुज़रना है। मुझे आशा है कि तुम जीवन की सभी भावी परीक्षाओं में भी इसी तरह सफल होंगे।

अभी तक मुझे बहुत ज्यादा लोगों से मिलने—जुलने का मौका नहीं मिला है। मुझे आशा है कि अगस्त की परीक्षा के बाद मेरे पास काफी अवकाश हो सकेगा। नीलमणि, सत्येन धर और अन्य सभी सकुशल हैं। प्राणकृष्ण परीजा यहाँ अच्छा शोध—कार्य कर रहे हैं। उनका विषय वनस्पति विज्ञान है।

क्या तुम्हारे विदेश जाने की कोई संभावना नहीं है? भारत के बारे में काफी विचार—विनिमय भी होता रहता है। अगर किसी ने अपने देश के बारे में कुछ भी न सोचा हो तो भी, यहाँ आकर वह सोचे बिना नहीं रह सकता।

मेरी तुम से एक शिकायत है। तुमने मेरे सभी पत्रों का उत्तर नहीं दिया है और, यदि मेरा पत्र न भी मिले तो क्या तुमको पत्र नहीं भेजना चाहिए?

तुम्हें मेरा एक काम करना होगा। मैं वे पैम्फलेट चाहता हूँ जो डा. पी. के. राय ने डा. वार्ड के मनोविज्ञान पर लिखे हैं। इसके अतिरिक्त मैं तुम्हारे एम. ए. मनोविज्ञान के नोट चाहता हूँ। मुझे अब किताबें पढ़ने का समय नहीं है इसलिए मुझे नोटों पर निर्भर रहना पड़ रहा है। यहाँ आने,

यहाँ के लोगों को दिखाने–सुनने और उनकी कार्य–पद्धति की जानकारी पाने के बाद मैं महसूस करता रहा हूँ कि हमारे देश में दो बातों की विशेष रूप से आवश्यकता है—–

(1) सामान्य लोगों में शिक्षा का प्रसार, तथा (2) मजदूर आंदोलन

स्वामी विवेकानन्द कहा करते थे कि भारत की प्रगति केवल किसान, धोबी, चर्मकार और मेहतर द्वारा संभव बनेगी। यह शब्द बिल्कुल सत्य हैं। पाश्चात्य संसार ने दिखा दिया है कि 'जन शक्ति' से क्या कुछ उपलब्ध हो सकता है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण है विश्व का प्रथम समाजवादी लोकराज, अर्थात रूस। अगर भारत फिर ऊंचा उठेगा तो जनशक्ति के द्वारा ही।

आधुनिक विश्व के सभी देशों में, जिन्होंने प्रगति की है, जनशक्ति उभर कर सामने आई है।

स्वामी विवेकानन्द ने अपने 'वर्तमान भारत' में कहा है—–तीन वर्णों–ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य का प्राधान्य अब अतीत की बात हो गई है। पश्चिम के लोगों में वैश्य जाति के अंतर्गत पूंजीपति और उद्योगपति आते हैं जिनके दिन लद चुके हैं। 'शूद्र' अथवा भारत के अछूत कहे जाने वाले लोग मजदूर दल के संघटक हैं। अभी तक इन लोगों को केवल प्रताड़ना ही मिली है। उनकी शंक्ति और उनका उत्सर्ग भारत की प्रगति को संभव बनाएगा। इसीलिए हमे अब सार्वजनिक शिक्षा और श्रम संगठन की जरूरत है।

मुझे आज इतना ही लिखकर बस करना होगा क्योंकि और अधिक लिखने का समय नहीं है। कृपया पुस्तकें अवश्य ही भेजना। मैं काफी अच्छी तरह हूँ। मुझे आशा हैं कि तुम सब स्वस्थ होंगे।

तुम्हारा

सुभाष

निम्नलिखित पत्र शरतचन्द्र बोस को लिखा गया था।

(60)

ली–आन–सी

22–9–20

प्रिय दादा,

आपका बधाई का तार पाकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। मुझे नहीं मालूम कि आई. सी. एस. परीक्षा पास करके मैंने सचमुच कोई ठोस उपलब्धि की है लेकिन यह सोचकर बहुत सुख मिलता है कि इस समाचार ने इतने अधिक लोगों को आनंदित किया है और विशेषतः माँ और पिताजी को इन अंधकारपूर्ण दिनों में खुशी हुई है।

मैं यहाँ श्री बेट्स के परिवार में सशुल्क अतिथि हूँ। श्री बेट्स अंग्रेजी के चारित्रिक गुणों के एक सर्वोत्तम प्रतिनिधि हैं। अपने विचारों में वे सुसंस्कृत और उदार हैं और विश्व बन्धुत्व की भावना से ओत–प्रोत हैं। वे उन सामान्य अंग्रेजों से बिल्कुल भिन्न हैं जो अभिमानी, उद्धत और दम्भी होते हैं और जिनकी दृष्टि में वह प्रत्येक वस्तु बुरी है जो ब्रिटेन की नहीं है। श्री बेट्स के मित्रों में रूसी, पोलिश, लिथुवानिआई, आयरिश और अन्य राष्ट्रों के राष्ट्रिक हैं। वे रूसी, आयरिश और भारतीय साहित्यों में बड़ी रूचि लेते हैं और रमेश दत्त रवीन्द्रनाथ ठाकुर की रचनाओं की सराहना करते हैं।

मैं उन्हें कुछ ऐसी चीज उपहार में देने की बात सोच रहा हूँ जो भारतीय कला और संस्कृति की प्रतीक हो। मुझे लगता है कि यदि उन्हें छोटे आकार का ताजमहल भेंट किया जाए तो अच्छा होगा। ताजमहल निस्संदेह हमारी कला का एक सर्वोच्च नमूना है और मुझे विश्वास है कि उस भेंट का वे हृदय से स्वागत करेंगें । लेकिन ऐसी सुकुमार वस्तु को भेजने में कठिनाई यह है कि उसे किस ढंग से पैक किया जाए जिससे

उसको किसी भी प्रकार की क्षति न पहुंचे। ताज के छोटे आकार के नमूने कलकत्ता में खरीदे जा सकते हैं लेकिन अगर वे उपलब्ध न हो तो क्या आप ताजमहल का आर्डर जयपुर आर्ट स्कूल को दे देंगे? मुझे उसके मूल्य का कोई अनुमान नहीं है लेकिन बड़े दादा ने मुझे बताया है कि बीस या तीस रूपये से ज्यादा का नहीं होगा। अगर दाम बहुत अधिक न हों अर्थात चालीस रूपये से कम हों तो क्या आप आर्डर दे सकेंगे कि उसे श्री बेट्स को भेज दिया जाए? सर्वोत्तम शायद यही होगा कि उसे मुझको भेजने की बजाय सीधे श्री बेट्स को भेजा जाए। लेकिन अगर उसे सप्लाई करने वाले यह गारंटी न दे सकें कि रास्ते में उसे कोई क्षति नहीं होगी, तो उसे भेजना व्यर्थ होगा।

हमें जो प्राप्तांक भेजे गए हैं उसकी एक प्रति मैंने पिताजी को भेज दी है। मैंने उनसे अनुरोध किया है कि वे उसे देखने के बाद आपके पास भेज दें।

मैं 24 तारीख को लंदन लौट रहा हूँ। कैम्ब्रिज में 7 अक्तूबर के आस–पास पहुँच रहा हूँ। मेरी वर्तमान योजना मई या जून में नैतिक विज्ञान ट्रिपोज के लिए तैयारी करने की है। मुझे आई.सी.एस की अंतिम परीक्षा के लिए हिन्दुस्तानी, घुड़सवारी आदि की तैयारी भी करनी है। यह परीक्षा आगामी सितंबर में होगी।

प्रतियोगिता परीक्षा में चौथा स्थान मिलने के कारण मुझे ढेरों बधाइयां मिल रही हैं। लेकिन मैं नहीं कह सकता कि आई. सी. एस. की श्रेणी में सम्मिलित होने की आशा से मुझे कोई प्रसन्नता है। अगर मैं इस सर्विस में प्रविष्ट होता हूँ तो उसी अनमनेमन के साथ होऊंगा जिसमें मैं आई. सी. एस. की परीक्षा के लिए पढ़ाई करने में संलग्न हुआ था। मुझे निस्संदेह एक मोटी तनख्वाह और सेवानिवृत्त होने पर बढ़िया पेंशन मिलेगी। यदि मैं काफी क्रीत–भाव दिखा सकूँ तो शायद कमिश्नर भी हो सकता हूँ। जो प्रतिभाशाली और ऊपर वालों की खुशामद कर सकता है वह प्रातीय सरकार का मुख्य सचिव तक बन सकता है। लेकिन क्या

राजकीय सेवा मेरे जीवन का चरम लक्ष्य है? सिविल सर्विस से किसी को भी सभी तरह की सांसारिक सुख सुविधाएं मिल सकती हैं। लेकिन क्या इन उपलब्धियों के लिए हमें अपनी आत्मा नहीं बेचनी पड़ेगी? मैं समझता हूँ कि यह धारणा कोरा पाखंड है कि किसी के जीवन के सर्वोच्च आदर्शों में तथा आई. सी. एस. वालों द्वारा अंगीकृत सेवा की शर्तों के अंतर्गत मातहती में कोई संगति हो सकती है।

आप मेरी मनःस्थिति को असानी से समझ सकते है। क्योंकि मैं एक ऐसी दहलीज पर खड़ा हूँ जिसे सामान्य जन एक होनहार जीवन की दहलीज कहेंगे। ऐसी सर्विस में शामिल होने के पक्ष में बहुत कुछ कहा जा सकता है। इससे एक ही बार में वह समस्या हल हो जाती है जो हममें से प्रत्येक के लिए सर्वोपरि है, अर्थात आजीविका की समस्या। ऐसा करके किसी को भी जिन्दगी के खतरों का सामना करने की चिंता नहीं रहेगी, न असफलता और सफलता का द्वंद्व शेष रहेगा। लेकिन मेरे जैसे स्वभाव के व्यक्ति के लिए, जो ऐसे विचारों से पुष्टि पाता रहा है, जिन्हें शायद सनक कहा जाएगा, न्यूनतम अवरोध का मार्ग सर्वोत्तम मार्ग नहीं है। अगर संघर्ष न रहे—अगर किसी भी खतरे का सामना न करना पड़े—तो जीवन का आधा स्वाद समाप्त हो जाता है। जिस व्यक्ति की कोई सांसारिक महत्वाकांक्षा नहीं है उसके लिए जीवन की अनिश्चितताएं भयप्रद नहीं हैं। इसके अलावा, अगर कोई अपने को सिविल सर्विस की जंजीरों में जकड़ ले तो उसके लिए सर्वोत्तम रूप में तथा पूरी तरह अपने देश की सेवा करना संभव नहीं है। संक्षेप में, राष्ट्रीय और आध्यात्मिक आंकाक्षाओं की, सिविल सर्विस की शर्तो में निहित अधीनता से कोई संगति नहीं हो सकती।

मैं महसूस करता हूँ कि मेरे लिए इस प्रकार की बातें करना व्यर्थ है क्योंकि मैं अपनी इच्छा का पूरी तरह स्वामी नहीं हूँ। मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि आपके लिए सिविल सर्विस में कोई आकर्षण नहीं है लेकिन पिताजी निश्चय ही मेरे इस सेवा को न स्वीकार करने के

विरूद्ध होंगे। वे चाह रहे होंगे कि मैं जितना शीघ्र हो सके, जम जाऊं। इसके अलावा यदि मैं किसी अन्य प्रकार के काम के लिए अपने आपको तैयार करूँ तो उससे आप पर वर्तमान वित्तीय बोझ के साथ-साथ और भी अधिक भार पड़ेगा और मैं इतना हृदयहीन नहीं हूँ कि यह अनुभव न करूँ कि उस अतिरिक्त भार से आपको कितना कष्ट पहुंचेगा। इसलिए मैं पाता हूँ कि भावनात्मक और आर्थिक कारणों से मैं अपनी इच्छा का एकमात्र नियामक नहीं हूँ। लेकिन मैं बिना किसी झिझक के कह सकता हूँ कि यदि मेरे सामने विकल्प हो तो मैं इंडियन सिविल सर्विस में हर्गिज नहीं शामिल होना चाहूँगा।

आप कहेंगे और शायद ठीक ही कहेंगे कि मुझे इस सेवा में प्रविष्ट होकर इसकी बुराइयां दूर करने के लिए संघर्ष करना चाहिए। लेकिन अगर मैं ऐसा करूँ भी तो मेरी स्थिति किसी भी दिन ऐसी असह्य हो सकती है कि मैं इस्तीफा देने के लिए विवश हो जाऊं। अगर इस प्रकार की आपात स्थिति आज से पांच या दस वर्ष बाद आती है तो मैं अपने लिए एक नए जीवन को अपनाने की स्थिति में नहीं रहूँगा जबकि आज मुझे एक अन्य जीवन के लिए अपने आपको तैयार करने का उपयुक्त समय है।

अगर कोई अविश्वासी प्रकृति का व्यक्ति हो तो वह यही कहेगा कि भावुकता का यह उफ़ान मेरे सिविल सर्विस की सुरक्षित बांहों में पहुँचते ही ठंडा पड़ जाएगा। लेकिन मेरा यह दृढ़ निश्चय है कि मैं उस अस्वस्थ प्रभाव के आगे घुटने न टेकूं। मैंने विवाह न करने का निश्चय किया है। इसलिए अगर मैं एक विशिष्ट प्रकार के जीवन को अपने लिए सर्वथा उचित मानकर उसे अपनाना चाहूं तो सांसारिक बुद्धिमता का विचार मेरे आड़े नहीं आएगा।

मेरे व्यक्तित्व का जिस प्रकार निर्माण हुआ है उसे देखते हुए मुझे सचमुच संदेह है कि मैं सिविल सर्विस के लिए एक उपयुक्त व्यक्ति बन सकूँगा और मैं सोचता हूँ कि जो कुछ भी थोड़ा बहुत क्षमता मुझमें है

उसका अधिक अच्छा उपयोग स्वयं मेरी भलाई के लिए और देश के हित में भी अन्य दिशाओं में ही किया जा सकता है।

मैं इस संबंध में आपकी राय जानना चाहूंगा। मैंने इसके बारे में पिताजी को कुछ नहीं लिखा है—मैं नहीं जानता कि क्यों? अच्छा होता कि मुझे उनकी राय भी मालूम हो जाती।

यदि 'घटक' (विवाह तय कराने वाले—संपा.) आपको फिर तंग करने आएं तो आप सीधे कह सकते हैं कि वे मुंह फेरें और रास्ता नापें।

मैं यहाँ काफी अच्छी तरह हूँ। आप सब कैसे हैं? पिताजी और माँ कहाँ हैं?

आपका स्नेहाकांक्षी,
सुभाष

अगले दो पत्र नेता जी ने देशबन्धु चितरंजनदास को लिखे थे और उनको हाथों हाथ सौंपने के लिए उन्हें एक मित्र के जरिए भेजा था। कैम्ब्रिज से शरतचन्द्र बोस को 28 अप्रैल, 1921 को लिए गए अपने पत्र में नेताजी ने देशबन्धु को भेजे गए एक पत्र के उत्तर का उल्लेख किया था। इन पत्रों का अनुवाद मूल बंगला से किया गया है। मूल बंगला पत्र में प्रयुक्त संबोधन का शाब्दिक अनुवाद कुछ इस प्रकार होंगा, 'अभिवादनपूर्वक मेरा सविनय निवेदन है।' परन्तु सामान्य अनुवाद के अंतर्गत 'मान्यवर' का प्रयोग किया गया है।

—संपादक

(61)

द यूनियन सोसायटी
कैम्ब्रिज
16 फरवरी (1921)

मान्यवर,

......

मैं आपके लिए संभवतः एक अजनबी हूँ। लेकिन यदि मैं बताऊं कि मैं कौन हूँ तो आप शयद मुझे पहचान लेंगे। मैं आपको यह पत्र एक बहुत महत्वपूर्ण मसले के बारे में लिख रहा हूँ। लेकिन उसकी चर्चा करने से पहले मैं आपको अपनी नेकनीयती के विषय में आश्वस्त कर देना चाहूँगा।

मेरे पिता श्री जानकीनाथ बोस कटक में वकालत कर रहे हैं और कुछ वर्ष पूर्व वहाँ सरकारी वकील थे। मेरे एक बड़े भाई श्री शरद् चन्द्र बोस हैं जो कलकत्ता हाई कोर्ट में बैरिस्टर हैं। आप शायद मेरे पिताजी को जानते हों और मेरे बड़े भाई को तो अवश्य ही जानते होंगे।

पांच वर्ष पूर्व मैं प्रेसीडेंसी कालेज का विद्यार्थी था। 1916 की गड़बड़ी के दौरान मुझे विश्वविद्यालय से निकाल दिया गया था। दो वर्ष गंवाने के बाद मुझे कालेज में फिर प्रवेश लेने की अनुमति मिली। इसके बाद 1919 में मैंने बी. ए. की परीक्षा दी और आनर्स में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ।

मैं यहाँ 1919 के अक्तूबर महीने में आया। अगस्त 1920 में मैंने सिविल सर्विस परीक्षा पास की और मुझे चौथा स्थान मिला। इस वर्ष जून में मैं नैतिक विज्ञान ट्रिपोस में परीक्षा दूंगा। उसी महीने मुझे बी. ए. की डिग्री मिलेगी।

अब मुझे काम की बात लिखने की अनुमति दें। मुझे सरकारी नौकरी करने की कोई इच्छा नहीं है। मैंने घर में अपने पिताजी और भाई को लिख दिया है कि मैं 'सर्विस' छोड़ देना चाहता हूँ। मुझे अभी उनका उत्तर नहीं मिला है। उनकी सहमति प्राप्त करने के लिए मुझे उनको आश्वस्त करना होगा कि मैं 'सर्विस' छोडने के बाद क्या ठोस कार्य करना चाहता हूँ। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि यदि 'सर्विस' छोड़ने के बाद मैं दृढ़संकल्प के साथ राष्ट्र की सेवा में समर्पित हो जाऊं तो मुझे करने के

लिए बहुत कुछ होगा, जैसे नेशनल कालेज में अध्यापन, पुस्तकों और समाचार पत्रों का लेखन और प्रकाशन, ग्राम समितियों का संगठन, सर्वसामान्य लोगों में शिक्षा का प्रसार आदि। लेकिन अगर मैं अब अपने परिवार को बता सकूँ कि मैं क्या ठोस कार्य करना चाहता हूँ तो शायद उनकी अनुमति प्राप्त करना मेरे लिए बहुत आसान हो जाएगा। यदि मैं उनकी सहमति से 'सर्विस' का परित्याग कर सकूँ तो उनकी इच्छा के विरूद्ध कुछ करने की आवश्यकता नहीं रहेगी।

देश में क्या स्थिति है, इसे आप सबसे अधिक अच्छी तरह जानते हैं। मैंने सुना था कि आपने कलकत्ता और ढाका में राष्ट्रीय कालेजों की स्थापना की है और आप अंग्रेज़ी ओर बंगला में 'स्वराज' नामक समाचार पत्र निकालना चाहते हैं। मैंने यह भी सुना है कि बंगाल के विभिन्न स्थानों में ग्राम समितियों की स्थापना की गई है।

मैं जानना चाहूंगा कि राष्ट्रीय सेवा के इस महान कार्यक्रम के अंतर्गत आप मुझे क्या काम सौंप सकेंगे। मैं बहुत शिक्षित और प्रतिभाशाली तो नहीं हूँ लेकिन मैं समझता हूँ कि मुझमें युवकोचित उत्साह की कमी नहीं है। मैं अविवाहित हूँ। जहॉ तक मेरी शिक्षा का प्रश्न है, मैंने दर्शनशास्त्र का कुछ अध्ययन किया है। क्योंकि कलकत्ता में आनर्स के लिए मैंने यह विषय लिया था और मैं यहाँ अपने ट्रिपोज के लिए इसी विषय को पढ़ रहा हूँ। सिविल सर्विस परीक्षा की तैयारी के सिलसिले में मुझे अर्थशास्त्र, राजनीतिविज्ञान, ब्रिटिश और यूरोपीय इतिहास, ब्रिटिश कानून, संस्कृत, भूगोल, आदि विषयों की एक विशेष स्तर तक की शिक्षा प्राप्त हो चुकी है।

मेरा विश्वास है कि यदि मैं उक्त कार्य में शामिल हो सकूँ तो मैं अपने साथ यहाँ से एक या दो बंगाली मित्रों को भी ला सकता हूँ। लेकिन जब तक मैं स्वयं क्षेत्र में न उतरूं तब तक मैं किसी अन्य को उसमें नहीं भेजना चाहता।

मैं यहाँ रहते हुए कल्पना नहीं कर सकता कि हमारे देश में इस

समय कौन से उपयुक्त कार्य–क्षेत्र हैं। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि स्वदेश लौटने के बाद मैं दो तरह के काम हाथ में ले सकता हूँ–एक तो कालेज में पढ़ाने का काम और दूसरा अखबारों में लिखने का काम। मैं सर्विस त्यागने से पहले आगे की स्पष्ट योजना बता देना चाहता हूँ। अगर मैं ऐसा कर सकूँ तो मुझे सोच–विचार में समय नहीं नष्ट करना होगा और मैं सर्विस को ठुकराने के बाद तुरंत नए कार्य–क्षेत्र में उतार सकूँगा।

आप आजकल बंगाल में राष्ट्र–सेवा– यज्ञ के प्रमुख पुरोधा हैं, इसीलिए यह पत्र मैं आपको लिख रहा हूँ। पत्रों और समाचार–पत्रों के द्वारा उस महान अभियान की गूंज यहाँ तक भी पहुँची है जिसे आपने भारत में छेड़ा है। इस प्रकार मातृभूमि की पुकार यहाँ भी सुनाई दी है। आक्सफोर्ड में पढ़ने वाला एक मद्रासी विद्यार्थी फिलहाल अपनी पढ़ाई स्थगित कर रहा है और स्वदेश लौट रहा हैं जिससे वहाँ कार्य आरंभ कर सके। कैम्ब्रिज में अभी बहुत ज्यादा काम नहीं हो पाया है यद्यपि असहयोग के बारे में काफी विचार–विमर्श होता रहा है। मैं समझता हूँ कि अगर कोई एक भी व्यक्ति राह दिखाता है तो अन्य लोग उसके पीछे चलने को तैयार हैं।

आप बंगाल में हमारे राष्ट्र सेवा कार्यक्रम के अग्रणी हैं और इसीलिए मेरे पास जितनी भी शिक्षा है, बुद्धि है, शक्ति और उत्साह है उसको लेकर मैं आज आपके पास आया हूँ। मातृभूमि की वेदी पर मैं कुछ अधिक समर्पित नहीं कर सकता क्योंकि मेरे पास केवल मेरी अपनी नैतिक चेतना और मेरा कमजोर शरीर ही है।

यह पत्र लिखने का मेरा उद्देश्य यह है कि में आपसे पूछूं कि राष्ट्र सेवा के विशाल कार्यक्रम में आप मुझे क्या काम सौप सकते हैं। अगर मै। यह जान सकूँ तो मैं उसकी सूचना स्वदेश में अपने पिता और माँ को दे सकूँगा अैर तदनुसार अपने मन को तैयार कर सकूँगा।

मैं एक प्रकार से सरकारी कर्मचारी हूँ क्योंकि अब मैं आई. सी. एस. का एक प्रोबेशनर हूँ। मैं आपको सीधे–लिखने का साहस नहीं जुटा

पाया क्योंकि मुझे आशंका थी कि मेरा पत्र सेंसर किया जाएगा। मैं यह पत्र अपने एक विश्वस्त साथी के जरिए भेज रहा हूँ, जिनका नाम श्री प्रमथ नाथ सरकार है। वे यह पत्र आपको हाथों हाथ देंगे। जब कभी भी मैं आपको पत्र भेजना चाहूँगा तो इसी प्रकार से भेजूंगा। आप मुझे सीधे लिख सकते हैं क्योंकि यहाँ पत्रों के सेंसर होने की कोई आशंका नहीं है।

मैंने यहाँ अपने इरादे के बारे में किसी को नहीं बताया है। मैंने केवल स्वदेश में अपने पिताजी और बड़े भाई को सूचित किया है। अब मैं एक सरकारी कर्मचारी हूँ और इसीलिए मुझे आशा है कि जब तक मैं सर्विस से त्याग पत्र न दे दूं तब तक आप इस संबंध में किसी से कुछ जिक्र नहीं करेंगे। इससे अधिक मुझे कुछ नहीं कहना है। मैं अपनी ओर से तैयार हूँ। आपको केवल आदेश देना है कि मैं कार्य क्षेत्र में कदम बढ़ाऊं।

निजी तौर पर मैं महसूस करता हूँ कि अगर आप 'स्वराज' का अंग्रेजी संस्करण आरंभ करें तो मैं उसमें एक उपसंपादक के रूप में काम कर सकता हूँ। इसके अलावा मैं नेशनल कालेज में जूनियर काक्षाआं को पढ़ा भी सकता हूँ।

कांग्रेस के संबंध में मेरे मन में बहुत से विचार हैं। मैं समझता हूँ कि कांग्रेस के लिए बैठकें करने का कोई स्थायी स्थान होना चाहिए। इसके लिए हमारे पास एक भवन होना चाहिए। इसमें शोधकर्ताओं का एक दल होना चाहिए जो विभिन्न राष्ट्रीय समस्याओं पर अनुसंधान करता रहे। जहाँ तक मुझे मालूम है कांग्रेस ने भारतीय मुद्रा और मुद्रा विनिमय के बारे में अपनी कोई निश्चित नीति नहीं बनाई है। यह भी निश्चय संभवतः नहीं किया गया है कि कांग्रेस को देशी राज्यों के प्रति क्या रूख अपनाना चाहिए। लोगों को यह भी पता नहीं है कि मताधिकार (पुरूषों और स्त्रियों के लिए) के संबंध में कांग्रेस का दृष्टिकोण क्या है। इसके अतिरिक्त कांग्रेस संभवतः यह भी नहीं सोच पाई है कि दलित वर्गों के प्रति उसे क्या करना है। इस संबंध में प्रयास के अभाव के कारण मद्रास के सभी गैर

ब्राह्मण लोग सरकार के पक्षपाती और राष्ट्र विरोधी बन गए हैं। मेरी निजी राय है कि कांग्रेज के पास स्थायी कर्मचारी होने चाहिए। उन्हें अलग–अलग समस्याओं पर शोध करनी होगी। प्रत्येक व्यक्ति ताजा आंकड़े एकत्र करेगा और उनके आधार पर कांग्रेस कमेटी प्रत्येक समस्या के संबंध में अपनी नीति निर्धारित करेगी। आज अनेक राष्ट्रीय समस्याओं के बारे में कांग्रेस की कोई निश्चित नीति नहीं है। इसीलिए मैं सोचता हूँ कि कांग्रेस का अपना स्थायी भवन और शोधकर्त्ताओं की स्थायी टोली होनी चाहिए।

इसके अतिरक्त कांग्रेस को एक सूचना विभाग खोलना चाहिए। उसकी व्यवस्था ऐसे ढंग से की जानी चाहिए जिससे देश के बारे में सभी ताजे से ताजे समाचार और तथ्य उपलब्ध होते रहें। प्रचार विभाग द्वारा प्रत्येक प्रांतीय भाषा में पुस्तिकाएं प्रकाशित की जाएं और उन्हें जनता में निःशुल्क बांटा जाए। इसके अतिरिक्त प्रचार विभाग द्वारा हमारे राष्ट्रीय जीवन के प्रत्येक प्रश्न पर एक किताब प्रकाशित की जाए। उस किताब में कांग्रेस की नीति स्पष्ट की जाए और यह भी बताया जाए कि किस आधार पर कोई नीति तैयार की गई है। मैं बहुत अधिक लिख गया हूँ। आपके लिए यह सब प्रश्न नए नहीं हैं, मैं इन्हें लिखे बिना नही रह सका क्योंकि मुझे वह बिल्कुल नंए लगे। मैं महसूस करता हूँ कि कांग्रेस के संबंध में हमारें सामने बहुत अधिक काम करने को शेष हैं । अगर आप चाहें तो मैं इस संबंध में भी शायद कुछ योगदान दे सकूँगा।

मैं आपके विचारों की प्रतीक्षा करूँगा। मैं यह जानने को उत्सुक हूँ कि वे कौन से विभिन्न कार्य हैं जो आप मुझे दे सकेंगें। अगर आप किसी को पत्रकारिता की शिक्षा के लिए इंग्लैंड भेजना चाहते हैं तो मैं इसके लिए अपने आप को प्रस्तुत करता हूँ। अगर मुझे यह काम सौंपा जाए तो आने–जाने का किराया और कपड़े–लत्ते का खर्च बच जाएगा। निःसंदेह इस काम को लेने से पहले मैं सर्विस से त्यागपत्र दे दूंगा। आपको मेरे रहने और खाने का खर्च अवश्य देना होगा क्योंकि सर्विस छोड़ने के बाद मेरे लिए घर से पैसा लेना उचित नहीं होगा।

मेरी निजी इच्छा यह है कि मैं अगर सर्विस छोड़ता हूँ तो मैं जून के महीने में स्वदेश वापस जाऊं। लेकिन अगर आवश्यक हुआ तो मैं अपनी उस इच्छा को त्यागने के लिए तैयार हूँ।

इस लंबे पत्र के लिए आप मुझे क्षमा करेंगे। मुझे आशा है कि आप यथाशीघ्र उत्तर देंगे। कृपया मेरे प्रणाम स्वीकार करें।

सादर आपका,
सुभाष चन्द्र बोस

मेरा पताः
फिट्ज विलियम हाल
कैम्ब्रिज

(62)

द यूनियन सोसाइटी
कैम्ब्रिज
2 मार्च, 1921

मान्यवर,

मैंने आपको कुछ दिन पूर्व एक पत्र भेजा था। मुझे आशा है कि वह आपको यथासमय मिल गया होगा।

मुझे आशा है कि आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मैंने सर्विस से त्यागपत्र देने का पूरा इरादा कर लिया है। मैं आप से अपने पिछले पत्र में बता चुका हूँ कि कौन–कौन से विभिन्न कार्यो मैं कर सकूँगा। मैं यहाँ रहते हुए स्पष्ट रूप में कल्पना नहीं कर सकता कि कौन से काम मैं सर्वोत्तम ढंग से कर सकूँगा। आप सेवा के क्षेत्र में सक्रिय हैं। अतः आपको भलीभांति मालूम होगा कि किस काम की सबसे अधिक संभावनाएं हैं और कैसे कार्यकर्त्ताओं की आज जरूरत है।

मेरा आपसे अनुरोध है किः

कृपया आप तब तक इस विषय में किसी को कुछ न बताएं जब तक कि आपको सर्विस से मेरे इस्तीफे का समाचार न मिल जाए। यदि मैं सर्विस छोड़ देता हूँ तो अगर मुझे समय से जहाज में स्थान मिल गया तो मैं जून के अंत तक स्वेदश वापस जाना चाहता हूँ। मैं यह जानने को उत्सुक हूँ कि किस प्रकार का कार्य वहाँ मेरी प्रतीक्षा कर रहा है। जिससे मैं अपने मन को तदनुसार बना लूं। इसके अलावा, मैं जैसा काम वहाँ करूँगा उसके अनुरूप यहाँ अध्ययन करना भी संभव होगा। मुझे आशा है कि आप यथाशीघ्र इस मामले में उत्तर देंगे।

(1) मैं नेशनल कालेज में पढ़ाने का काम कर सकता हूँ। मैंने पाश्चात्य दर्शन का कुछ अध्ययन किया है।

(2) अगर आप अंग्रेजी में दैनिक पत्र निकालें तो मैं उसके एक उपसंपादक के रूप में काम कर सकता हूँ।

(3) यदि आप कांग्रेस के लिए शोध विभाग खोलें तो मैं उसमें भी काम कर सकता हूँ। मैंने इसके बारे में अपने पिछले पत्र में कुछ विस्तार से लिखा है। मैं समझता हूँ कि हमें शोधकर्त्ताओं की एक टोली की आवश्यकता है। वे हमारे राष्ट्रीय जीवन की अलग–अलग समस्याओं पर शोध करेंगे और उनके बारे में तथ्य एकत्र करेंगे। फिर कांग्रेस एक समिति नियुक्त करेगी और वह समिति ऐसे सभी तथ्यों पर विचार करके प्रत्येक प्रश्न पर कांग्रेस की नीति निर्धारित करेगी।

हमारी कांग्रेस की मुद्रा और मुद्रा विनिमय के बारे में कोई स्पष्ट नीति नहीं है। न श्रम तथा कारखाना कानूनों के बारे में उसकी कोई साफ–साफ नीति है। इसी प्रकार आवारागर्दी और गरीबों को राहत देने के विषय में भी कांग्रेस की स्पष्ट नीति नहीं है और कांग्रेस की ऐसे संविधान के संबंध में भी संभवतः कोई निश्चित नीति नहीं है जिसे वह स्वराज्य प्राप्ति के बाद अपनाएगी। मेरी राय में कांग्रेस लीग योजना एकदम असामयिक हो चुकी है। अब हमें स्वराज्य के आधार पर भारत का संविधान बनाना चाहिए।

आप कह सकते हैं कि कांग्रेस फिलहाल वर्तमान व्यवस्था को तोड़ने में व्यस्त है और जब तक यह कार्य पूरा नहीं हो जाता तब तक रचनात्मक कार्यों को आरंभ नहीं किया जा सकता। लेकिन मेरी समझ से हमें अभी से, जब कि संहार का कार्य चल रहा है, निर्माण का भी श्रीगणेश कर देना चाहिए। राष्ट्रीय जीवन की किसी भी समस्या के बारे में नीति निर्धारण के लिए दीर्घकालीन चिंतन और अनुसंधान की अपेक्षा होगी। अगर कांग्रेस पूरा-पूरा कार्यक्रम बना सकती है तो जब हमें स्वराज्य मिल जाएगा तो हमें किसी भी प्रश्न के बारे में नीति की चिंता नहीं करनी होगी।

और कांग्रेस का एक सूचना विभाग भी होना चाहिए जिसमें देश संबंधी सभी जानकारी उपलब्ध हो। इस विभाग को पुस्तिकाएं प्रकाशित करना आवश्यक होगा। एक किताब में एक ही विशिष्ट समस्या की चर्चा होगी, यथा पिछले दशक में जन्म और मृत्यु-दर तथा विभिन्न बीमारियों के कारण मृत्यु की अलग-अलग दरें।

एक अन्य पुस्तक में राजस्व और व्यय संबंधी भारत की स्थिति का विवरण होगा और वह बताया जाएगा कि राजस्व के क्या स्त्रोत है और व्यय की कौन सी मदें रही हैं। इस प्रकार छोटी-छोटी पुस्तिकाएं प्रकाशित करके हमें देश भर में अपने राष्ट्रीय जीवन के सभी पक्षों पर जानकारी फैलानी होगी।

(4) सामान्य लोगों में शिक्षा का प्रसार करने के कार्य के लिए बहुत गुंजाइश है। इस काम के साथ-साथ सहकारी बैंक स्थापित करना भी जरूरी होगा।

(5) समाज सेवा।

मेरा यह विचार है कि उक्त दिशाओं में काम करने की गुंजाइश है। लेकिन यह आपको सोचना होगा कि आप मुझे किस विभाग में काम देना चाहेंगे। निस्संदेह अध्यापन और पत्रकारिता ऐसे क्षेत्र हैं जो मुझे पसंद हैं। फिलहाल मैं इनसे शुरूआत कर सकता हूँ और फिर जैसे-जैसे

अन्य अवसर आते जाएँगे, अन्य कार्यों में भी भाग लेता रहूंगा। मेरे लिए 'सर्विस' छोड़ने का अर्थ गरीबी की प्रतिज्ञा लेना है, इसलिए मैं यह कतई जिक्र नहीं करूँगा कि मुझे क्या वेतन मिले, बस, उतनी रकम काफी होगी जिससे गुजारा हो जाए।

यदि मैं पूरे निश्चय के साथ काम ले सकूँ तो मुझे विश्वास है कि मैं कार्यक्षेत्र में यहाँ के एक दो बंगालियों को भी खींच सकता हूँ।

बंगाल में राष्ट्रीय सेवा आंदोलन के, जो इन दिनों संगठित किया जा रहा है, आप प्रमुख पुरोधा है। मुझे जो कुछ कहना था, मैंने कह दिया है। अब यह आप पर है कि आप मुझे अपने महान कार्य में भागीदार बनने दें।

जैसे ही मैं सर्विस छोड़ूंगा, मुझसे लोग यहाँ पूछगें कि मैं स्वदेश वापस जाकर क्या करूँगा। इसलिए, स्वयं संतोष के लिए और दूसरों को समझाने की दृष्टि से मैं यह जानने के लिए अत्यंत उत्सुक हूँ कि आप मेरी सेवाओं का उपयोग किस प्रकार करेंगे।

मुझे आशा है कि फिलहाल आप इन सब बातों को गोपनीय रखेंगे।

मेरा प्रणाम स्वीकार करें।

सम्मानपूर्वक आपका,

सुभाष चन्द्र बोस

अगले चार पत्र शरतचंद्र को लिखे गए हैं।

(63)

कैम्ब्रिज
16–2–21
बुधवार

प्रिय दादा,

मैं शिलांग में लिए गए चित्रों की प्रतियां प्राप्त किए जाने की आशा लगाए हुए था। मैं समझता हूँ कि वे भेजी जा चुकी हैं। क्या सरोज बाबू ने अपनी अलग कंपनी कायम कर ली है? उन्होंने मुझे जो पत्र लिखा है उससे ऐसा ही प्रतीत होता है।

आपका 20 जनवरी का पत्र मुझे गत शनिवार को मिला। मुझे जानकर प्रसन्नता हुई कि बच्चे किस प्रकार चल रहे हैं। मुझे बताया गया है कि अशोक हॉल में काफी सुधार हो गया है। मुझे बोलपुर स्कूल के विषय में जो कुछ मालूम है उसे देखते हुए मैं समझता हूँ कि विमल को वहाँ भेजने का विचार बहुत अच्छा है। मुझे आशा है कि बड़ी दीदी इस योजना का अनुमोदन कर देंगी।

आपको अब तक मेरा 'विस्फोटक' पत्र मिल चुका होगा। मैंने इस विषय में और भी विचार किया है और उससे उक्त पत्र में निर्दिष्ट मेरी योजना की मेरे मन ने पुष्टि की है। एकमात्र कठिनाई यह है जिसे मैं सामाजिक विरोध कह सकता हूँ। मेरे उतावले उपक्रम का अनुमोदन कोई भी सांसारिक व्यक्ति नहीं कर सकता। सामान्य व्यक्ति में वह आदर्शवाद नहीं होता जिससे प्रेरित होकर वह किसी ऐसे जीवन की कल्पना कर सके जो सामान्यतः जिए जाने वाले जीवन से भिन्न हो। मुझे विश्वास है कि आप मेरा समर्थन करेंगे। अगर चितरंजनदास अपनी वर्तमान आयु में सब कुछ त्याग सकते हैं और जीवन की अनिश्चितताओं का सामना कर सकते हैं तो मुझे विश्वास है कि मेरे जैसा नवयुवक, जिसे परेशान करने

वाली कोई भी सांसारिक चिंता नहीं है, वैसा कदम उठाने के लिए और भी सक्षमहै। अगर मैं 'सर्विस' से इस्तीफा भी दे देता हूँ तो भी मुझे व्यस्त रहने के लिए काम की कोई कमी नहीं होगी। अध्यापन, समाज सेवा, सहकारी ऋण कार्य, पत्रकारिता, ग्राम संगठन आदि अनेक ऐसे काम हैं जिनमें हजारों की संख्या में उत्साही नवयुवक व्यस्त हो सकते हैं। जहाँ तक मेरा अपना सवाल है, मैं इस समय अध्यापन और पत्रकारिता का काम करना चाहूँगा। नेशनल काँलेज और नए पत्र 'स्वराज' में मेरे लिए काफी काम की गुंजाइश होगी।

जहाँ तक मेरी आजीविका का प्रश्न है, मुझे आशा है कि मैं या तो नेशनल कालेज में अध्यापक के रूप में या किसी भी राष्ट्रीय समाचार–पत्र के संपादकीय विभाग में अथवा दोनों ही काम साथ–साथ करते हुए अपनी गुज़र–बसर के लिए काफ़ी कमा सकूँगा। मेरी आवश्यकताएं न्यूनतम हैं और मैं थोड़े पैसों से ही संतुष्ट रहूँगा। जब मैंने कुछ महीना पहले अपने आपको राजी किया था कि मैं फिलहाल 'सर्विस' स्वीकार कर लूं तो मेरा विचार था कि मैं मोटे तौर पर उतना पैसा बचा लूंगा जितना मुझ पर खर्च किया गया है और तब सर्विस से इस्तीफा देकर सार्वजनिक सेवा के क्षेत्र में उतरूंगा। मैं वह पैसा गोपाली या सती की उच्च शिक्षा के लिए अथवा बड़ी दीदी के बच्चों के पालन– पोषण के लिए अलग रखना चाहता था। मैं महसूस करता था (और अब भी करता हूँ) कि मेरा परिवार के सदस्यों के प्रति, खास तौर से यहां विदेश में शिक्षा का लाभ उठाने के बाद, कुछ कर्त्तव्य है। लेकिन अब मुझे संदेह होने लगा हैं कि जो नैतिक जिम्मेदारी मेरे कंधों पर है, उसका निर्वाह करने का क्या वह सर्वोत्तम उपाय होगा। मैं यह भी सोचने लगा हूँ कि कुल मिलाकर मैं यदि सर्विस में बना रहूं और पैसे बचाता रहूँ तो उसकी अपेक्षा मैं उससे इस्तीफा देकर कहीं अधिक हित कर सकता हूँ। यह निर्णय आपको देना है कि मैं सर्विस में रहकर अपना नैतिक दायित्व अधिक अच्छी तरह पूरा कर सकता हूँ या उससे इस्तीफा देकर। निजी तौर पर मुझे कोई संदेह नहीं है कि मैं अगर सर्विस में न रहूँ तो उस दायित्व का कहीं अधिक

अच्छा निर्वाह कर सकता हूँ। मेरी परिकल्पना और मेरी रूझान के अनुकूल आकर्षण के केन्द्र हैं—आरंभ से ही त्यागी की वृत्ति, सादा जीवन और उच्च विचार तथा देश—सेवा के लिए हार्दिक अनुरक्ति। इसके अतिरिक्त एक विदेशी नौकरशाही के अधीन सेवा का सिद्धांत मेरे लिए नितांत त्याज्य है। मेरी दृष्टि में अरविंद घोष का मार्ग कहीं अधिक महान और प्रेरणादायक है, कहीं अधिक उदात्त और निस्वार्थ, हालांकि रमेशदत्त के मार्ग की अपेक्षा वह कहीं अधिक कंटकाकीर्ण है।

मैंने पिताजी को और माँ को लिख दिया है कि मुझे गरीबी और सेवा का व्रत लेने की अनुमति दें। संभवतः वे इस विचार से आशंकित होंगे कि जो मार्ग मैं चुन रहा हूँ उस पर मुझे भविष्य में बड़े कष्टों का सामना करना होगा। जहाँ तक मेरा अपना संबंध है, मैं कष्टों से घबराता नहीं हूँ। मैं उनसे दूर भागने की बजाय उनका स्वागत ही करूँगा।

मैं यहाँ अच्छी तरह से हूँ। आप सब कैसे हैं?

जब तक कोई निर्णय न हो जाए, मैं ये सब बातें गोपनीय रखूंगा।

आपका स्नेहाकांक्षी

सुभाष

पुनश्च—अगर मैं इस्तीफा देता हूँ तो मैं जितना शीघ्र हो सकेगा, स्वेदश वापस जाना चाहूंगा। ट्रिपोज जून के आरंभ में आएगा और परीक्षा का परिणाम एक पखवाड़े के अंदर—अंदर घोषित कर दिया जाएगा। इसलिए मैं बड़े दादा के साथ जून में लौट सकूँगा। निस्संदेह, मुझे तब तक भत्ते के रूप में प्राप्त धन इंडिया आफिस को लौटाना होगा। मुझे भत्ते की दूसरी किश्त (50 पौंड) मार्च के अंत तक मिलेगी और तीसरी किश्त जून के अंत तक मिलेगी।

सुभाष चन्द्र बोस

(66)

कैम्ब्रिज

23-2-21

प्रिय दादा,

मुझे पिछली डाक से आपका पत्र नहीं मिला। मैं समझता हूँ कि आप बहुत व्यस्त रहे होंगे।

मैं आपको एक बार से अधिक लिख चुका हूँ कि मेरा इरादा सिविल सर्विस से इस्तीफा देने और सार्वजनिक सेवा के क्षेत्र में प्रवेश करने का है। मैंने अपनी इस आकांक्षा का कठोरता से विश्लेषण किया और उस पर गंभीर विचार किया है। मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि मैं इस निर्णय पर किसी मानसिक आवेश के कारण नहीं पहुंचा हूँ। एक दृष्टि से यह निर्णय खेदजनक हो सकता हैं लेकिन वह जीवन के प्रति मेरी समग्र दृष्टि पर आधारित है। जब से आई. सी. एस. परीक्षा का परिणाम घोषित किया गया, तभी से मैं अपने आपसे पूछता रहा हूँ कि मैं अपने देश के लिए इस सर्विस में रहकर अधिक उपयोगी बनूंगा या इससे बाहर रहकर। अब मुझे पक्का विश्वास हो गया है कि अगर मैं नौकरशाही का एक सदस्य न होकर सामान्य व्यक्ति बना रहूँ तो मैं अपने देश की सेवा अधिक अच्छी तरह कर सकता हूँ। मैं इस बात से इन्कार नहीं करता कि 'सर्विस में रहते हुए भी कोई व्यक्ति कुछ हद तक अच्छे काम कर सकता है लेकिन नौकरशाही की जंजीरों से मुक्त होकर वह जितनी भलाई कर सकता है उतनी बंधनग्रस्त होकर कदापि नहीं कर सकता। इसके अतिरिक्त, जैसा कि मैंने अपने एक पत्र में कहा है, यह प्रश्न मुख्यतः सिद्धांत का है। एक विदेशी नौकरशाही की सेवा करने के सिद्धांत से मैं समझौता नहीं कर सकता। इनके अलावा, सार्वजनिक सेवा के लिए अपने आपको तैयार करने की दिशा में पहला कदम है अपने सभी सांसारिक हितों का परित्याग और उस क्षेत्र से पीछे हटने के सभी रास्तों को खत्म कर देना तथा राष्ट्र सेवा में पूरी हार्दिकता से जुट जाना।

आप महसूस करेंगे कि जिन परिस्थितियों में आई.सी.एस. के किसी सदस्य को रहना और काम करना होता है वे मेरे स्वभाव से, शिक्षा–दीक्षा से एवं जीवन के प्रति सामान्य दृष्टिकोण से मेल नहीं खा सकतीं। इस हालत में मेरे लिए उन स्थितियों को स्वीकार करना बहुत अविवेकपूर्ण होगा जिनमें मैं निश्चय ही बहुत दुखी होऊंगा। दूसरी ओर मैं जानता हूँ कि त्याग, कष्ट और गरीबी तक के जीवन का, यदि वह राष्ट्रीय हित में हो, मैं स्वागत करूँगा।

मैं एकाधिक बार कह चुका हूँ कि मैं जीवन की अनिश्चितताओं से कतई घबराता नहीं हूँ। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि मैं जानबूझ कर आर्थिक हानि और शारीरिक असुविधा को गले लगा रहा हूँ। लेकिन मैं अपने कार्य के कष्टदायक परिणामें को सहने के लिए–चाहे वे तात्कालिक हों या दीर्घकालीन, तैयार हूँ।

अरविंद घोष का ज्वलंत उदाहरण मेरे सामने है। मुझे लगता है कि मुझे भी वैसा ही त्याग करना चाहिए जिसका उदाहरण उन्होंने प्रस्तुत किया है। मेरी परिस्थितियां भी उन्ही की तरह अनुकूल हैं। हमारा परिवार काफी समृद्ध है। (बड़ी दीदी और उनके बच्चों छोड़कर) और मेरे ऊपर किसी तरह की सांसारिक जिम्मेवारियों का दबाव नहीं है। मैं समझता हूँ कि मेरी मनःस्थिति वैराग्य की है जो मुझे भविष्य में आने वाले किसी दुर्भाग्य को धैर्यपूर्वक सहन करने की क्षमता देगी और अंतिम बात यह है कि मैं अविवाहित हूँ और अविवाहित ही रहना चाहता हूँ। किसी के भी लिए इन सबसे अधिक अनुकूल परिस्थितियां और क्या हो सकती हैं?

मेरी योजना यह है कि मैं डिग्री लेने के बाद जून में स्वदेश लौटूं, संभव हो तो बड़े दादा के साथ कलकत्ता पहुंचकर मैं नेशनल कालेज में अध्यापन कार्य शुरू करना चाहता हूँ। इसके अतिरिक्त मैं कलकत्ता में एक राष्ट्रवादी समाचार पत्र के संपादकीय विभाग में काम करना चाहता हूँ। मेरे मन में अन्य योजनाए भी हैं, यथा, समाज सेवा, सार्वजनिक शिक्षा, सहकारी ऋण समिति और राष्ट्रीय कांग्रेस के सिलसिले में राजनैतिक

तथा आर्थिक समस्याओं पर शोध–कार्य। लेकिन ये योजनाएं बाद में शुरू की जाएंगी जब व्यक्तियों और पैसों का प्रबंध हो सकेगा। जो कुछ भी हो, मैं जब भारत लौटूंगा तो मेरे पास काफी कुछ करने को रहेगा।

मुझे विश्वास है कि आप मेरे इस प्रस्ताव के प्रति अनुकूल रवैया दिखाएंगे। एकमात्र बाधा यह है कि हमारे रिश्तेदारों में से शायद ही कोई अन्य ऐसा हो जो मेरी इन योजनाओं का, जिन्हें वह मेरी सनक कहेगा, अनुमोदन करे। सभी जगह इस पर बहुत शोरगुल मचेगा लेकिन अगर हम अपनी सच्चाई पर दृढ़ रहे तो मैं नहीं समझता कि हमें उससे कोई घबराहट होगी।

आपने मेरे लिए वह सब कुछ किया है जो आप कर सकते थे और जिसकी मैं आपसे आशा कर सकता था और आपने यह सब बिना इस प्रतीक्षा के किया है कि आपसे कुछ करने को कहा जाए। मुझे लगता है कि मैं नैतिक आभार की एक ऐसी स्थिति में हूँ जिसके अर्थ और गहराई को मैं यथेष्ट रूप से नहीं समझ पा रहा हूँ। इसी से मुझे महसूस होता है कि मेरा इस्तीफ़ा देने का प्रस्ताव कम से कम निर्दय तो दिखता ही है। इस प्रस्ताव का अर्थ यह होगा कि मेरे लिए जो 10 हजार रूपये खर्च किए गए हैं उनका कोई भी प्रतिलाभ नहीं होगा। लेकिन जब मैं आपसे अपील कर रहा हूँ कि आप मुझे त्यागपत्र देने की अनुमति दे तो मैं आपका अनुग्रह अपने लाभ के लिए नहीं बल्कि अपने अभागे देश के लिए चाहता हूँ, जिसको पूर्णतः बनाने की बहुत अधिक आवश्यकता है। आपको यह मानकर चलना होगा कि मेरे लिए जो पैसा खर्च किया गया है वह मातृभूमि के चरणों में अर्पित किया गया है और उससे किसी प्रतिफल की आशा नहीं करनी चाहिए।

मेरे त्यागपत्र के बारे में यह आपको मेरा अंतिम पत्र होगा। मैं पिताजी और माँ से भी ऐसी ही अपील कर रहा हूँ। मुझे विश्वास है कि मुझे आपकी सहमति मिल सकेगी। घुड़सवारी की अगली परीक्षा 23 अप्रैल या उसके आस–पास होगी। मुझे आशा है कि इस पत्र का उत्तर मुझे

उस तिथि से पहले मिल जाएगा और अधिक संभव यही है कि मुझे घुड़सवारी की अगली परीक्षा नहीं देनी पड़ेगी। मैं महसूस करता हूँ कि मुझे इस प्रस्ताव तक पहुँचने में मन की जितनी मजबूती चाहिए थी उससे अधिक की आवश्यकता आपको इस प्रस्ताव को स्वीकृति देने के लिए पड़ेगी। लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि आपमें ऐसी दृढ़ इच्छा शक्ति है। मुझे विश्वास है कि यदि आप मेरे प्रस्ताव के औचित्य के प्रति आश्वस्त होंगे तो अन्य किसी भी कारण को बीज में न आने देकर मुझे अनुमति दे देंगे।

अरविंद घोष मेरे आध्यात्मिक गुरू हैं। उन्हें और उनके कार्य के लिए मैंने अपना जीवन समर्पित किया है। मेरा निर्णय अंतिम और अपरिवर्तनीय है, लेकिन मेरे भाग्य का निबटारा इस समय आपके हाथों में हैं।

क्या मैं उत्तर में आपके आशीर्वाद की आशा नहीं कर सकता? और क्या आप मेरे नए और साहसिक जीवन–क्षेत्र के लिए मंगल की कामना नहीं करेंगे?

आपका स्नेहाकांक्षी,
सुभाष

पुनश्च– आपका 2 तारीख का पत्र पाकर और यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप सकुशल हैं।

हम सब यहाँ ठीक हैं। आप सब वहाँ कैसे हैं?

सुभाष

(65)

आक्सफोर्ड
6 अप्रैल 21

प्रिय दादा,

आपका 12 मार्च का पत्र यथासमय मिल गया था। उस पत्र में

व्यक्त भावनाओं से मैं बहुत प्रभावित हुआ। मुझे यह जानकर संतोष हुआ कि आप मेरे दृष्टिकोण से सहमत हैं। यद्यपि आप मेरे निष्कर्ष को स्वीकार नहीं करते।

गत 15 अगस्त से मेरे मन में एक ही विचार घुमड़ रहा है। पिताजी और माँ के प्रति अपने दायित्व तथा अपने प्रति कर्त्तव्य के बीच कैसे सामंजस्य स्थापित किया जाए। मैं शुरू से ही सोच रहा था कि पिताजी मेरे प्रस्ताव के विरूद्ध होंगे। इतना ही नहीं, उन्हें मेरा विचार अनर्गल लगेगा। इसलिए जब मैंने आपसे अनुरोध किया था कि आप मेरे इरादे की सूचना पिताजी को दे दें तो इस विचार से मैं कांप उठा था कि इस सूचना से उन्हें कितनी पीड़ा पहुँचेगी। वास्तव में तब मुझे सीधे उन्हें लिखने का साहस नहीं हुआ था। यह गत सिंतबर की बात है और आप अच्छी तरह जानते हैं कि उस प्रयास का फल क्या हुआ था।

तब से मेरे मन में यह संघर्ष चलता रहा है और उससे जो प्रश्न संबद्ध हैं उनके कारण यह एक बहुत ही व्यथाजनक और तीव्र संघर्ष रहा है। मैं किस सामंजस्य तक पहुंचने में असफल रहा हूँ। हम, जो सौभाग्य या दुर्भाग्य से एक ओर तो स्वामी विवेकानंद के और दूसरी और अरविंद घोष के प्रभाव में बढ़ते रहे हैं, ऐसी मनोवृत्ति विकसित कर चुके हैं जो एक दूसरे से इतने अधिक भिन्न दृष्टिकोण में कोई समझौता नहीं स्वीकार कर पाती। यह संभव हो सकता है कि मेरे व्यक्तित्व का निर्माण एक गलत दर्शन के द्वारा हुआ है। लेकिन युवा मानस की यह विशिष्टता होती है कि वह औरो की बजाय अपने में अधिक विश्वास रखता है। यह शायद एक दुर्भाग्यपूर्ण तथ्य है, पर यह एक सच्चाई है, इसमें कोई शक नहीं।

आप भली भाँति जानते हैं कि अतीत में माँ न केवल पिताजी को, मों को और आपको बल्कि अन्य बहुत से लोगों को बहुत दुख दे चुका हूँ। उसके लिए मैने अपने आपको कभी क्षमा नहीं किया है और कभी नहीं करूँगा। फिर भी अपनी प्रवृत्ति और परिस्थितियों के दबाव के कारण मेरे लिए बौद्धिक एवं नैतिक विद्रोह से बच सकना असम्भव था। उस समय

मेरी एकमात्र आकांक्षा थी ऐसी स्वतंत्रता की उपलब्धि, जो मुझे अपने चरित्र का अपने आदर्शों के अनुकूल निर्माण करने तथा अपनी नियति को अपने सम्मान के अनुसार स्वरूप देने के लिए अपेक्षित हो।

तब से परिस्थितियाँ बहुत बदल चुकी हैं। एक के बाद एक निधन का शोक हमें सहना पड़ा है। पिताजी और माँ का स्वास्थ्य वैसा नहीं है जैसा कुछ वर्ष पूर्व था। उनकी वर्तमान मनःस्थिति और स्वास्थ्य को देखते हुए यह मेरी अत्यधिक क्रूरता होगी कि उन्हें मैं गहरी पीड़ा पहुँचाऊँ। मैं जानता हूँ कि मैं अपने आपको जीवन भर क्षमा नहीं कर सकूँगा कि मैंने इतनी पीड़ा और चिंता के बीज बोए हैं। लेकिन मैं करूँ तो क्या करूँ? क्या मैं अपना दृष्टिकोण त्याग दूं?

मैं महसूस करता हूँ कि अपने अन्यथा शांत परिवार में इतनी विसंगति फैलाने के लिए एकमात्र मैं ही लगातार जिम्मेवार रहा हूँ। इसका कारण यह है कि कुछ विचार मेरे मन में गहराई से जड़ें जमा चुके हैं और ये विचार दुर्भाग्य से औरों को स्वीकार्य नहीं हैं। पिताजी सोचते हैं कि नई व्यवस्था के अंतर्गत आत्मसम्मान रखने वाले सिविल सर्वेंट का जीवन असहय नहीं होगा और हमें अगले दस वर्षों में 'होमरूल' मिल जाएगा। लेकिन मेरे सामने प्रश्न यह नहीं है कि नई व्यवस्था में मेरा जीवन सहय होगा या असहय। वास्तव में मेरा विश्वास है कि अगर मैं सिविल सर्विस में भी रहूं तो भी कुछ उपयोगी कार्य कर सकता हूँ। लेकिन मुख्य प्रश्न सिद्धांत का है अर्थात यह कि क्या हमें एक विदेशी नौकरशाही के प्रति आज की परिस्थितियों में निष्ठावान होना चाहिए और अपने आपको चाँदी के चंद टुकडों के लिए बेच देना चाहिए? जो लोग सर्विस में हैं और जो ऐसी स्थिति में नहीं हैं कि सर्विस में प्रविष्ट होने से इन्कार कर सकें वे ऐसा कर सकते हैं। लेकिन मैं जो कई तरह से अनुकूल स्थिति में हूँ, इस प्रकार की निष्ठा से स्वेच्छापूर्वक क्यों बंध जाऊं? जिस दिन मैं संविदा पर हस्ताक्षर करूँगा उसी दिन से मैं अपनी स्वाधीनता खो दूंगा।

मुझे विश्वास है कि हमें दस वर्ष में होमरूल मिल जाएगा और

अगर हम कीमत चुकाने को तैयार हैं तो निश्चय ही उससे पहले भी मिल सकता है। यह कीमत है त्याग और कष्ट–सहिष्णुता। केवल त्याग और कष्ट–सहन की धरती पर ही राष्ट्र के उत्थान की नींव डाली जा सकती है। अगर हम सब अपनी–अपनी नौकरियों से चिपके रहें और केवल अपने ही हितों के प्रति सजग रहें तो मैं नहीं समझता कि हमें पचास वर्षों में भी होमरूल मिल सकता है। अगर प्रत्येक व्यक्ति नहीं तो कम से कम प्रत्येक परिवार को तो अब मातृभूमि के चरणों में अपनी श्रद्धा के सुमन अर्पित करने ही होंगे। पिताजी चाहते हैं कि मैं इस प्रकार के त्याग से बच सकूँ। मैं इतना निर्मम नहीं हूँ कि यह न समझ सकूँ कि वे मेरे ही हित में और मेरे प्रति स्नेह और प्यार से प्रेरित होकर मुझे इस त्याग से विचलित करना चाहते हैं। स्वाभाविक है कि उन्हें यह भय है कि मैं जल्दबाजी में अथवा युवकोचित अत्युत्साह से प्रेरित होकर यह निर्णय ले रहा हूँ। परंतु मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस प्रकार का त्याग नितांत अपेक्षित है, चाहे उसे कोई भी क्यों न करे।

अगर कोई और इस प्रकार का त्याग करने के लिए आगे आया होता तो शायद मेरे लिए पीछे हट जाने या प्रतीक्षा करने का कोई औचित्य होता। दुर्भाग्यवश अभी तक ऐसा कोई भी व्यक्ति सामने नहीं आया है और बहुमूल्य समय तेजी से भागता जा रहा है। यद्यपि भारत में आंदोलन हो रहा है, यह बात सही है लेकिन सिविल सर्विस के एक भी सदस्य ने अपनी नौकरी छोड़कर जन–आंदोलन में भाग लेने का साहस नहीं दिखाया है। भारत के सामने यह एक चुनौती है और भारत ने अभी तक इसका उत्तर नहीं दिया है। मैं इससे भी आगे बढ़कर यह कह सकता हूँ कि ब्रिटिश भारत के पूरे इतिहास में एक भी भारतीय ने देशभक्ति की भावना से प्रेरित होकर सिविल सर्विस का त्याग स्वेच्छा से नहीं किया है। जब प्रशासनिक सेवाओं के सदस्य अपनी निष्ठा वापस ले लेंगे या कम से कम जब वे ऐसा करने का इरादा जाहिर करेंगे तभी नौकरशाही का ढांचा चरमरा कर ढह सकेगा।

इसलिए मैं नहीं समझ पाता कि मैं इस प्रकार का त्याग करने से अपने को कैसे बचा सकता हूँ? मैं जानता हूँ कि त्याग का अर्थ क्या है। इसका अर्थ है गरीबी, कष्ट, कठोर परिश्रम और अन्य ऐसी कठिनाइयों को गले लगाना जिन्हें बताने की आवश्यकता मुझे नहीं है लेकिन जिनका अनुमान आप भली–भाँति लगा सकते हैं। लेकिन यह त्याग मुझे जान–बूझकर और सचेत होकर करना ही होगा।

पिताजी का कहना है कि अधिकांश तथाकथित नेता वास्तव में निःस्वार्थ भाव वाले नहीं हैं। लेकिन उसकी वजह से क्या उन्हें यह कोशिश करनी चाहिए कि मैं निःस्वार्थ न बन पाऊं? अगर किसी को निःस्वार्थ? होना है तो वह अपने परिवार के लिए कष्ट और चिंता का कारण बनेगा ही। अगर हम स्वयं आत्मत्याग से दूर भागते हैं तो हम यह शिकायत नहीं कर सकते कि दूसरों में आत्म–त्याग की भावना नहीं है।

उपर्युक्त बातों पर विचार करने के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि अपने परिवार की ओर से मुझे अपनी स्वल्प भेंट के साथ आगे बढ़ना चाहिए और चूंकि यह त्याग अनिवार्यतः होना है, अतः उसे हम हल्के मन से क्यों न करें। पिताजी को आशंका है कि मैं अपनी जीविका का साधन चौपट कर रहा हूँ और मैं भविष्य में अपने लिए अकथनीय कष्टों के बीज बो रहा हूँ। मैं नहीं जानता कि मैं उन्हें कैसे समझाऊं कि जिस क्षण मैं त्यागपत्र दूंगा वह मेरे जीवन का एक सर्वाधिक गौरवशाली और आनंददायक क्षण होगा।

आपका यह प्रस्ताव कि मैं भारत वापस जाकर इस्तीफा दूं काफी युक्तिसंगत प्रस्ताव है। लेकिन इसके विरूद्ध मुझे एक या दो बातें कहनी हैं। पहली बात तो यह है कि मेरे लिए संविदा पर, जिसे मैं गुलामी की निशानी मानता हूँ, हस्ताक्षर करना बहुत कष्टदायक होगा। दूसरी बात यह है कि यदि मैं फिलहाल सर्विस को स्वीकार कर लूं तो मैं दिसंबर या जनवरी से पहले घर नहीं लौट सकता क्योंकि सामान्यतः इतना समय मुझे देना ही होगा। अगर मैं अभी इस्तीफा दे देता हूँ तो मैं जुलाई में लौट सकता हूँ। छः महीने में गंगा में बहुत सा पानी बह चुका होगा। उचित

समय पर पर्याप्त प्रत्युत्तर न मिलने से आंदोलन का जोर घट सकता है और अगर प्रत्युत्तर देर से मिला तो हो सकता है कि वह प्रभावहीन बन जाए। मेरा विश्वास है कि इस प्रकार का एक और आंदोलन आरंभ करने में वर्षों लग जाएँगे और इसीलिए मैं सोचता हूँ कि वर्तमान आंदोलन के ज्वार का लाभ उठाना चाहिए। अगर मुझे इस्तीफा देना ही है तो मुझे या अन्य किसी को इससे कोई अंतर नहीं पड़ेगा कि मैं कल इस्तीफा देता हूँ या एक वर्ष बाद। लेकिन, दूसरी ओर देरी करने से आंदोलन पर अवश्य कुछ प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। मैं पूरी तरह जानता हूँ कि आंदोलन को सहायता देने के लिए मैं अधिक कुछ नहीं कर सकता लेकिन जो कुछ भी मैं कर सकता हूँ उसे करके मुझे बहुत संतोष होगा।

जहाँ तक घर वापस आने पर मेरे कार्यक्रम का प्रश्न है, वह बंगाल की तत्कालीन परिस्थितियों और उसकी जरूरतों पर निर्भर करेगा। मैं जो भी काम करूँगा उसके अतिरिक्त मुझे अपने राष्ट्रीय जीवन की विभिन्न समस्याओं का अध्ययन भी करते रहने के लिए काफी समय देना होगा। इन समस्याओं के गहन अध्ययन से ही कोई भी व्यक्ति विवेकपूर्ण सेवा के लिए अपने आपको बौद्धिक दृष्टि से तैयार कर सकता है।

एक–दो वर्ष तक सर्विस में बिताना, विशेषकर लार्ड सिन्हा के शासन काल में, मेरे भविष्य के कार्य के लिए सहायक नहीं होगा। एक दो वर्ष तक जिलाधिकारी के रूप में काम करने से निस्संदेह मूल्यवान अनुभव प्राप्त हेगा। लेकिन सब डिवीजनल अफसर होने में 2 से 3 वर्ष तक लगेंगे। पहला वर्ष कमोवेश सरकारी या 'लिपिक' कार्य में गुज़र जाता है।

आपके कहने के मुताबिक इस समय अस्पष्टता और अराजकता के दौर में है। लेकिन उसे समुचित ढंग से ढालना हमारे हाथों में है। ऐस्क्विथ की 'प्रतीक्षा करो और देखो' की नीति अपनाने से कोई लाभ नहीं होगा। आंदोलन या तो सफल होगा या विफल। यदि वह सफल होता है तो वैसा हमारी उस उदासीनता के बावजूद होगा जिसे कोई भी अनुचित ही कहेगा। और अगर वह विफल हो गया तो उसकी जिम्मेवारी,

आंदोलन से अलग रहने के कारण हमारी होगी।

स्वदेश में जो कुछ हो रहा है उसके बारे में मेरे कोई अत्युक्तिपूर्ण विचार नहीं हैं। अगर मैं आश्वस्त होता कि आंदोलन अनुकूल ढंग से आगे बढ़ेगा तो मैं आसानी से प्रतीक्षा कर सकता था। लेकिन उसकी विफलता या शिथिलता की आशंका मुझे विवश कर रही है कि बात एकदम बिगड़ जाने से पहले ही मैं अपने आपको आंदोलन में झोंक दूं।

मैं नही जानता कि कलकत्ता में किसने यह अफवाह फैलाई है कि मैं इस्तीफा दे भी चुका हूँ। कुछ लोगो को मेरे विषय में शायद मुझसे भी अधिक पता रहता होगा।

सैनिक कमीशन के लिए आवेदन का संबंध मुझसे हैं हालांकि इसे लेकर भी कुछ गलतफहमी फैली है। कैम्ब्रिज के भारतीय विद्यार्थी वहाँ की आफिसर ट्रेनिंग कोर में प्रवेश के लिए कुछ समय से आंदोलन करते रहे हैं। माइकेलमास सत्र, 1920 में प्रवेश के लिए आवेदनकर्त्ताओं में मैं भी एक था। लेकिन हम केवल कैम्ब्रिज में प्रवास के दौरान ट्रेनिंग लेना चाहते थे। मैंने अपने आवेदन में स्पष्ट उल्लेख कर दिया था कि मैं आई. सी. एस का प्रोबेशनर हूँ। यह स्पष्ट है कि जब मैं आई. सी. एस. से इस्तीफा दे दूंगा तो मुझे सम्राट की सरकार की सेवा से कुछ भी लेना–देना नहीं होगा।

मैं लौटते ही अध्यापन का कुछ कार्य शुरू कर सकता हूँ लेकिन स्थायी व्यवसाय के रूप में मैं पत्रकारिता को चुनूँगा। इससे मुझे आजीविका का प्रबंध करने में भी सहायता मिलेगी।

यदि किसी कारण इस्तीफे के संबंध में मैं अपना निर्णय बदलने का निश्चय करूँगा तो मैं पिताजी को तार भेज दूँगा क्योंकि उससे उनकी चिंता दूर हो सकेगी।

आप सब कैसे हैं? हमस ब यहाँ सकुशल हैं।

आपका स्नेहभाजन
सुभाष

(66)

कैम्ब्रिज

20–4–21

प्रिय दादा,

मुझे गत दो सप्ताह से आपका कोई पत्र नहीं मिला है। मुझे मेज दीदी को लेकर विशेष चिंता है।

मैं नहीं जानता कि लगभग 2 महीना पहले कलकत्ता में यह अफवाह कैसे फैली कि मैंने इस्तीफा दे दिया है। मैंने कलकत्ता में केवल एक ही व्यक्ति को अपने इरादे के बारे में लिखा था और उसने इसे किसी को भी नहीं बताया है। मेरा विश्वास है कि कुछ लोगों को मुझसे जो आशाएँ थीं उन्होंने अफवाह का रूप ले लिया जो तेजी से फैलती गई।

मैं अपना त्यागपत्र परसों भेज दूँगा। मैंने उसके बारे में इस सप्ताह कलकत्ता के दो व्यक्तियों को लिखा है और उनसे कहा है कि वे इसे लेकर कोई बतंगड़ न खड़ा करें। यहाँ अब से कुछ ही दिन पहले लोगों को निश्चित रूप से पता चला है कि मैं इस्तीफा देने जा रहा हूँ। दुर्भाग्यवश इससे भारतीय समुदाय में खलबली मच गई है। इसलिए मुझे आशंका है कि उनमें से कुछ लोग भारत को सूचना भेजेंगे और वहाँ कुछ लोग उस सूचना को उछालने की कोशिश करेंगे। कई कारणों से मैं चाहता हूँ कि कोई सनसनी न फैलने पाए। प्रथम तो मुझे सनसनी और लोगों की शाबाशी दोनों ही नापसंद हैं, दूसरे अगर कोई सनसनी न फैले तो मुझे जल्द से जल्द स्वदेश वापस जाने में कोई कठिनाई नहीं पेश आएगी। तीसरे, मेज दीदी की स्वास्थ्य की हालत को देखते हुए मैं अपने इस्तीफे की बात पिताजी से छिपाना चाहता हूँ। मेज दीदी की बीमारी की खबर पाने के बाद मैंने पिताजी को इस्तीफे के बारे में कुछ नहीं लिखा है। लेकिन मुझे भय है कि इसे गोपनीय रखना असंभव है। फिर भी मैं भरसक कोशिश करूँगा।

आक्सफोर्ड में मैं बड़े तूफानी समय से होकर गुज़रा हूँ, मेरा

आशय मानसिक द्वंद्व से हैं। अपने अगले पत्र में मैं उन सब कारणों को लिख भेजूँगा जिन्होंने मुझे इस्तीफे की राह पर मोड़ दिया।

आप अभी मेरे पास पैसे भेजने की चिंता न करें । विशेषतः इसलिए कि इन दिनों मुद्रा विनिमय की प्रतिकूल दर है। मेरे कुछ मित्रों ने रूपया उधार देने का प्रस्ताव किया है जिससे मेरे स्वदेश पहुंचने तक मेरा खर्चा चल जाएगा। मैंने उनका प्रस्ताव स्वीकार करने में कोई झिझक इसलिए नहीं दिखाई है क्योंकि उन्होंने मुझे आश्वासन दिया है कि वे वह पैसा मुझे उधार दे रहें हैं जो इस समय उनके पास फालतू पड़ा हुआ है। मैं पौंड में उधार लूंगा और अगर अगले कुछ महीनों में मुद्रा विनिमय की दर में सुधार होता है तो मेरे लिए भारत से उधार चुकाना सुविधाजनक होगा। मुझे ऋण देकर वे कुछ खोएंगे नहीं (सिवा ब्याज की बैंक दर के) जबकि मुझे बहुत सहूलियत हो जाएगी। मुझे आशा है कि अगले कुछ महीनों में मुद्रा विनिमय की दर में सुधार होगा।

मैं अगले महीने के आरंभ में यात्रा के लिए आवेदन करूँगा! मेरा इरादा जून के अंत तक स्वदेश के लिए रवाना होने का है। मैं मेसेजेरीज़ मैरीटाइम्स में एक बर्थ पाने की कोशिश करूँगा और यदि इसमें सफलता नहीं मिली तो बी. आई. एस. एन. (ब्रिटिश इंडिया स्टीम नेविगेशन) अथवा सिटी लाइन में पाने का प्रयत्न करूँगा।

आपने अपने पत्रों मे मेरे लिए बहुत अधिक दयालुतापूर्ण शब्द कहे हैं। मैं जानता हूँ कि मैं उनके योग्य पात्र नहीं हूँ। आपके पत्रों में आपकी जो अतिशय उदार भावना व्यक्त हुई है उसने मेरे मर्म को गहराई से स्पर्श किया है। मैं जानता हूँ कि आप सचमुच ऐसी भावना के धनी हैं और इतना ही कहना चाहूँगा कि मुझे आप पर गर्व है। मतभेद के बावजूद मुझे विश्वास है कि अपने बड़े भाई से जितना हार्दिक और सहानुभूति पूर्ण प्रत्युत्तर मुझे मिला है उतना शायद ही किसी अन्य को मिल सकेगा।

मैं जानता हूँ कि मैंने कितने दिलों को दुखाया है। अपने कितने बड़ों की मैंने अवज्ञा की है। लेकिन इस जोखिम भरे उपक्रम की पूर्व संध्

या पर मेरी एकमात्र प्रार्थना यही है कि यह हमारे प्यारे देश के हित के लिए समर्पित हो।

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष

इंडियन सिविल सर्विस से त्यागपत्र की मूल प्रति

(67)

16, हर्बर्ट स्ट्रीट, कैम्ब्रिज
22–4–21

दि राइट आनरेबल ई. एस. मांटेग्यू, एम. पी.
भारत मंत्री

माननीय,

मैं चाहता हूँ कि आई. सी. एस. प्रोबशनरों की सूची से मेरा नाम हटा दिया जाए।

इस संबंध में मैं कहना चाहूँगा कि मुझे अगस्त 1920 में हुई खुली परीक्षा के फलस्वरूप चुना गया था।

मुझे अभी तक 100 पौंड (केवल एक सौ पौंड) भत्ते के रूप में मिला है। जैसे ही मेरा त्यागपत्र स्वीकार हो जाएगा, मैं उक्त राशि इंडिया आफिस को लौटा दूँगा।

आपका आज्ञाकारी सेवक,
सुभाषचन्द्र बोस

(अगला पत्र नेताजी ने इंडियन सिविल सर्विस से अपना इस्तीफा भेजने के दिन चारूचन्द्र गांगुली को लिखा था।)

—संपादक

(68)

फिट्ज़ विलियम हॉल
कैम्ब्रिज
22 अप्रैल, 1921

प्रिय चारू,

तुम्हें मालूम है कि मैं पहले एक बार कर्त्तव्य की पुकार पर जीवन जलयान का यात्री बना था। अब वह जहाज एक ऐसे बंदरगाह पर पहुँच गया है जहाँ अपार आकर्षण है—जहाँ सत्ता, सम्पत्ति और समृद्धि मेरे इंगित मात्र से मेरी अपनी हो सकती हैं। लेकिन मेरे अंतरतम से आती हुई आवाज मुझसे कहती है, "तुम्हें इनमें कोई भी सुख नहीं मिलेगा। तुम्हारे उल्लास की राह है महासागर की उत्ताल ऊर्मियो के साथ—साथ तरंगित होते रहना।"

आज उसी प्रकार का प्रत्युत्तर देते हुए मैं फिर अपने जीवन—जलयान की पतवार प्रभु के हाथों सौंप कर यात्रा पर निकल पड़ा हूँ। केवल वही जानता है कि यह जहाज किस किनारे जाकर लगेगा।

मैं अभी तय नहीं कर पाया हूँ कि मैं क्या करूँगा। कभी—कभी मेरा मन होता है कि मैं रामकृष्ण मिशन में शामिल हो जाऊँ। किसी और समय मुझे बोलपुर जाने की इच्छा होती है और फिर, मुझमें पत्रकार होने की भी लालसा मौजूद है। देखें कि क्या होता है।

तुम्हार सुभाष

अगले दो पत्र शरतचन्द्र बोस को लिखे गए थे।

(69)

द यूनियन सोसायटी,
कैम्ब्रिज
23–4–21

प्रिय दादा,

पिछले दो सप्ताह से मुझे आपका कोई पत्र नहीं मिला है। मुझे पिताजी के पत्र से मालूम हुआ कि आप ईस्टर सप्ताह में कटक गए थे। मुझे जानने की उत्सुकता है कि मेज दीदी का स्वास्थ्य अब कैसा है। मुझे लगता है कि आप सब इस संबंध में ऐसी चुप्पी साधे हुए हैं जो मन में तरह–तरह के संदेह उत्पन्न करती हैं।

मैंने फिट्ज विलियम हाल के अपने सेंसर श्री रेडवे से अपने त्यागपत्र के बारे में बातचीत की। मेरी आशा के विपरीत उन्होंने मेरे विचार का हार्दिकता से समर्थन किया। उन्होंने कहा कि उन्हें यह सुनकर आश्चर्य हुआ था और लगभग आघात पहूँचा था कि मैंने अपना विचार बदल लिया है क्योंकि उनकी जानकारी में अब तक किसी भारतीय ने ऐसा नहीं किया था। मैंने उनसे कहा कि मैं बाद में पत्रकारिता का व्यवसाय अपनाऊँगा जिस पर उन्होंने कहा कि उनकी राय में सिविल सर्विस जैसे नीरस काम की अपेक्षा पत्रकारिता का जीवन कहीं अधिक अच्छा है।

यहाँ आने से पहले मैं तीन सप्ताह तक ऑक्सफोर्ड में था और वहीं मेरे चिंतन का अंतिम चरण पूरा हुआ। एकमात्र बात, जो मुझे पिछले कुछ महीनों से परेशान कर रही थी, वह यह थी कि क्या ऐसा मार्ग अपनाना नैतिक दृष्टि से उचित होगा जिससे बहुत से लोगों के मन में, और खास तौर पर मेरे पिता और माँ के मन में गहरा दुःख और कष्ट हो?

मैंने अपने एक पिछले पत्र में आपको लिखा था कि मैं महसूस करता हूँ कि अब जब कि मुझे विदेश में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिल चुका है, मैं अपने परिवार के अन्य सदस्यों को भी यह सुविधा दिए जाने के लिए जो कुछ संभव हो सके, करूँ या कम से कम परिवार के भौतिक सुख के लिए किसी अन्य उपाय से कोशिश करूँ। नितांत प्रश्न मुझे कतई परेशान नहीं करते थे क्योंकि आरंभ से ही मैं किसी सांसारिक लालसा से प्रेरित नहीं था और मैंने ब्रह्मचर्य का जीवन अपनाने का संकल्प किया था। लेकिन मुझे यह लगा कि सभी पारिवारिक हितों की ओर से आँखे फेरने से पहले मुझे आश्वस्त होना चाहिए कि मैं सचमुच किसी महानतम् कर्त्तव्य की प्रेरणा से वैसा कर रहा हूँ। ईसा मसीह के इस उपयुक्त कथन ने कि "जो अपने भाई से घृणा करता है लेकिन कहता है कि उसे ईश्वर से प्यार है वह पाखंडी है", मुझे स्मरण दिलाया कि अक्सर यह हो सकता है कि हम उच्चतर उद्देश्य के लिए काम करने के भ्रम में अपने सांसारिक कर्त्तव्यों की उपेक्षा कर दें।

मैंने बराबर अनुभव किया है कि हमारे दृष्टिकोण से यह अनुचित है कि हम आपके कधों पर इतना अधिक वित्तीय बोझ डाल दें हालांकि मैं इस वित्तीय समस्या का कोई अन्य समाधान भी नहीं निकाल पाया हूँ। अतः मैंने सोचा कि मुझे इस बोझ को विकेन्द्रित करना चाहिए और कुछ भार अपने ऊपर ले लेना चाहिए। यह काम मुझे इसलिए और भी आवश्यक लगा क्योंकि पिताजी के कार्य–निवृत्त होने में सहायक बनने के लिए आपको अपने ऊपर कुछ और भी वित्तीय जिम्मेवारी लेनी पड़ी है। मैंने आपको लिखा था कि मैं इस संबंध में क्या महसूस करता हूँ और मुझे आपका जवाब भी मिला था। वह जवाब आपकी विशाल हृदयता का परिचायक था: वह और कुछ हो ही नहीं सकता था, और आपने मुझे उस नैतिक दायित्व से मुक्त करने का प्रयास किया था, जिसके अधीन मैं अपने को महसूस कर रहा था। फिर भी, मेरा विचार है कि मेरा छुटकारा उस नैतिक दायित्व से अभी नहीं हुआ है और आगे भी तब तक नहीं होगा जब तक मैं पूर्ण संतोष के साथ यह न दिखा दूँ कि मैं अब जिस जीवन को

अपनाने जा रहा हूँ उसमें मैंने ठोस और मजबूत कार्य किया है।

मैं आपसे यह बात नहीं छिपाना चाहता कि मैं महसूस कर रहा हूँ कि मैंने जो कुछ भी किया है उसके लिए मैं औरों की अपेक्षा पिताजी, माँ और आपके प्रति अधिक उत्तरदायी हूँ आपने मुझे नैतिक दायित्व से मुक्त करने की कोशिश की है यद्यपि नैतिक दायित्व से किसी एक पक्ष या दोनों ही पक्षों की मर्जी होते भी बचा नहीं जा सकता। पिताजी और माँ के प्रति मेरा यह दायित्व है कि मैं जैसे भी मुझसे बन पड़े, उन्हें अप्रसन्न न करूँ। वे मेरे हितों की देखभाल की भावना से प्रेरित हैं और उन्हें यह आशंका होनी स्वाभाविक है कि यदि मैं सिविल सर्विस से इस्तीफा दे दूंगा तो मैं अपने लिए भविष्य में वित्तीय तबाही और गरीबी को आमंत्रित करूँगा। मैं उन्हें यह समझाने में असमर्थ रहा हूँ कि मैं जिस पथ का पथिक होने जा रहा हूँ वह मेरे लिए अपार प्रसन्नता लाएगा कि वास्तविक प्रसन्नता को रूपया आना पाई से नहीं नापा जा सकता और यदि मैं 'सर्विस' में बना रहूँ तो मैं हमेशा यह महसूस करता रहूँगा कि मैं एक ऐसा अपराधी हूँ जिसमें अपनी आस्था के अनुसार जीवन जीने का साहस नहीं है। यह स्वाभाविक है कि उनके विचार जीवन की भौतिक व्याख्या से निःसृत हों लेकिन मैं यह बात पूरी तरह महसूस करता हूँ कि मेरे प्रति उन्हें जो स्नेह है उसी के कारण वे मुझे जीवन में सुखी और समृद्ध देखने के लिए चिंतित हैं और नहीं चाहते कि मैं एक बार फिर भी अनिश्चितताओं के समुद्र में झकोरे खाने लगूँ।

इसलिए मेरी स्थिति यह है कि नए जीवन में प्रवेश करते हुए मैं अपनी माँ और पिताजी की स्पष्ट इच्छाओं और आपके परामर्श के विरूद्ध कार्य कर रहा हूँ यद्यपि आपने लिखा है कि मैं जो कुछ भी करूँ उसके लिए आपकी "हार्दिक शुभकामनाएँ" मेरे साथ रहेंगी।

'सर्विस' में प्रविष्ट होने के विरूद्ध मेरी सबसे बड़ी आपत्ति इस तथ्य को लेकर थी कि मुझे संविदा पर हस्ताक्षर करने होंगे और इस प्रकार मुझे उस विदेशी नौकरशाही के प्रति निष्ठा रखनी होगी जिसके

विषय में, सही हो या गलत, यह सोचता रहा हूँ कि उसे बने रहने का कोई भी नैतिक अधिकार नहीं है। यदि एक बार मैं संविदा पर हस्ताक्षर कर देता हूँ तो सैद्धातिक रूप में इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा कि मैं तीन दिन तक सेवारत रहता हूँ या तीन वर्ष तक। मेरा यह विश्वास बन गया है कि समझौता एक बुरी चीज है जो मनुष्य को सम्मान से च्युत करता है और उसके आदर्श को क्षति पहूँचाता है। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी के जीवन का अंत 'सर' की उपाधि और मंत्रिपद की प्राप्ति के साथ इसलिए होने जा रहा है कि वे कार्य सिद्धि के लिए एडमंड बर्क की अवसरवादिता के सिद्धांत के पुजारी हैं। हम उस मंजिल पर नहीं पहुँचे हैं कि हमें अवसरवादिता का दर्शन स्वीकार कर लेना चाहिए। हमें एक राष्ट्र का निर्माण करना है और राष्ट्र का निर्माण तभी संभव हो सकता है जब हम हैम्पडन और क्रामवेल जैसे व्यक्तियों के समझौता–विरोधी आदर्शवाद से प्रेरित हों।

अपने पिछले अनुभव के कारण मैं बहुत तीव्रता से महसूस करता हूँ कि समझौता–परस्ती बड़ी अपवित्र चीज है। यदि मैं 1916 में जेम्स के सम्मुख सर ऊँचा करके खड़ा होता और स्वीकार कर लेता कि मैंने ओटेन पर हमला किया है तो मैं एक बेहतर तथा अधिक सच्चा इंसान सिद्ध होता और विद्यार्थी संप्रदाय के उद्देश्यों की अधिक अच्छी तरह से पूर्ति कर सकता, हालांकि स्वयं मुझे प्रतिकूल परिणाम झेलने होते। इसी प्रकार, यदि मैं वर्तमान परिस्थितियों में भारतीय रक्षा सेना (आई. डी. एफ.) में शामिल न होता और सिविल सर्विस के लिए इंग्लैंड न आता तो मैं अने प्रति और अपने सिद्धांतों के प्रति सच्चा सिद्ध होता। लेकिन जो कुछ बीत चुका है, वह बीत चुका है, और विगत को फिर से जीवित नहीं किया जा सकता। परंतु भविष्य अब भी मेरे हाथ में है और यह निश्चय मुझे ही करना है कि क्या मैं समझौता–परस्ती की राह पर और आगे शायद पीछे लौटने की सभी संभावनाएँ समाप्त करके, बढ़ूँ अथवा क्या मैं किसी भी परिणाम की परवाह किए बिना अपने सिद्धांत पर दृढ़ रहूँ।

मैं यह विश्वास नहीं करता कि कोई व्यक्ति सर्विस में रहते हुए देश का कुछ भी भला नहीं कर सकता। न मेरा यही विश्वास है कि सर्विस में उन्नति के लिए किसी को यूरोपीय रंग–ढंग से रहना अनिवार्य है। मैं बिल्कुल महसूस करता हूँ कि सच्चा आदमी परिस्थितियों के दबाव से निर्मित न होकर उन्हें अपने अनुरूप ढाल लेगा। इसलिए ये सब विचार गौण थे और मेरे सामने मुख्य प्रश्न था सिद्धांत का।

मुझे यह विश्वास हो चला है कि अब समय आ गया है कि हम ब्रिटिश सरकार से हर तरह का संबंध समाप्त कर दें। प्रत्येक सरकारी कर्मचारी, चाहे वह मामूली चपरासी हो या प्रांतीय गवर्नर, भारत में ब्रिटिश सरकार की स्थिति को ही मजबूत करता है। किसी भी सरकार को खत्म करने का सबसे अच्छा उपाय यही है कि उससे सहयोग न किया जाए। मैं ऐसा इसलिए नहीं कहता कि यह टाल्सटाय का सिद्धांत है और न इसलिए कहता हूँ कि गाँधी जी भी इस बात को दुहराते हैं बल्कि इसलिए कहता हूँ क्योंकि मैं स्वयं इस पर विश्वास करने लगा हूँ।

मेरा यह भी विश्वास हो चला है कि हम जिस राष्ट्रीय मुक्ति की कामना करते हैं वह त्याग और कष्ट–सहिष्णुता के रूप में अपनी कीमत लिए बिना हमें नही मिल सकती। हममें से जिनके पास यह अनुभव करने के लिए हृदय है और ये कष्ट सहने के लिए अवसर है, उन्हें पूजा के ये पुष्प लेकर आगे आना चाहिए। मैं यह आशा नहीं करता कि जो लोग लंबे समय से 'सर्विस' में हैं और जिनके कंधों पर वित्तीय जिम्मेवारियों का भारी बोझ है वे ऐसा कर सकेंगे। फिर भी हमारे विशाल देश में प्रत्येक परिवार को अपनी विनम्र श्रद्धांजलि लेकर आगे बढ़ना होगा और जब तक हम स्वयं अपने कर्त्तव्य का निर्वाह नहीं करते, हमें यह शिकायत करने का कोई अधिकार नहीं है कि हमारे नेता स्वार्थी हैं।

मै महसूस करता हूँ कि हमने अभी तक अपना योगदान नहीं दिया है और इसीलिए मुझे यह त्याग करना चाहिए। त्याग और कष्ट सहिष्णुता अपने आप में बहुत आकर्षक चीजें नहीं हैं लेकिन मैं उनसे बच

नहीं सकता क्योंकि मेरा दृढ़ विश्वास है कि उनके बिना हमारी राष्ट्रीय आकांक्षाओं की पूर्ति हर्गिज नहीं हो सकती। यह केवल एक संयोग है कि इस काम के लिए मैं आगे आ रहा हूँ न कि कोई और । यदि हम किसी पराए व्यक्ति के त्याग का अनुमोदन करते हैं तो कोई कारण नहीं कि हम अपने ही मामले में उसका अनुमोदन क्यों न करें।

इसके अलावा मैं यह भी देखता हूँ कि मैं सौभाग्य से इस काम के लिए अपने स्वभाव और अपने पिछले प्रशिक्षण के कारण भी उपयुक्त हूँ।

इन बातों पर विचार करने से मुझे लगता है कि 'सर्विस' छोड़कर मैं उचित ही कदम उठा रहा हूँ और पिताजी की यह इच्छा कि मुझे सेवारत होना चाहिए, युक्तिसंगत नहीं है तथा मेरे प्रति उनके स्नेह और मेरे लिए सांसारिक समृद्धि की अभिलाषा से प्रेरित है।

मेरे इस्तीफे से कुछ हद तक कठिनाइयाँ पैदा होंगी जैसे हो सकता है कि बाद में सेज दादा की तरक्की पर असर पड़े । लेकिन मैं सोचता हूँ कि हमें कुछ न कुछ कठिनाइयों का सामना यह समझकर करन ही होगा कि वे अनिवार्य हैं।

मुझे आशा है कि आप लंबे पत्र से यह न समझने लगेंगे कि मैं कोई उपदेश दे रहा हूँ। मेरे मन में ऐसी कोई बात नहीं है। ऊपर मैंने जो लिखा है उसके पीछे आपसे यह कहने की इच्छा रही है कि वे कौन से विचार हैं जिन्होंने मुझे एक ऐसे कार्य के लिए प्रेरित किया जो लगभग आप सब की आकांक्षा के विरूद्ध हैं। मैंने अवज्ञा का दृष्टिकोण तभी अपनाया जब मैं आश्वस्त हो गया कि त्याग और कष्ट सहिष्णुता उद्देश्य प्राप्ति के लिए अनिवार्य हैं और वर्तमान परिस्थितियों में मैं ही त्याग करने के लिए सबसे अधिक उपयुक्त पात्र हूँ।

यह निर्णय देना मेरा काम नहीं है कि सभी की सलाह के विरूद्ध अपनी पहल पर काम करने का यह कोई नैतिक औचित्य है। मैं जानता हूँ क़ि मैंने पिताजी को असीम दुःख पहुंचाया है और इसके लिए मैं अपने

को कभी क्षमा नहीं करूँगा। केवल समय ही बताएगा कि मैंने ठीक किया है या नहीं। अगर आप समझते हैं कि मैंने यह काम जल्दबाजी में या अच्छी तरह सोच विचार किए बिना किया है तो मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप तब तक के लिए अपने निर्णय को स्थगित रखें और आलोचना को रोके रहें जब तक समय मेरी मूर्खता को अच्छी तरह उघाड़ कर ने रख दे। अगर आप समझते हैं कि मैंने गलत चुनाव नहीं किया है तो मुझे विश्वास है कि आपका आशीर्वाद और आपकी शुभकामनाएँ मेरे भावी जीवन में मेरे साथ हमेशा रहेंगी।

मुझे माँ का एक पत्र मिला है जिसमें उन्होंने कहा है कि पिताजी और अन्य लोग जा कुछ भी सोचते हों उन्हें महात्मा गांधी के आदर्श पसंद हैं। मैं नहीं कह सकता कि ऐसा पत्र पाकर मुझे कितनी प्रसन्नता हुई है। मैं उसे एक महान निधि के समान सुरक्षित रखूंगा क्योंकि उसने मेरे मन से एक बहुत बड़ा बोझ उतार दिया है।

मैंने कुछ दिन पहले अपना त्यागपत्र भेज दिया है लेकिन अभी मेरे पास यह सूचना नहीं आई है कि उसे स्वीकार कर लिया गया है।

चितरंजन दास ने मेरे पत्र के उत्तर में मुझे बताया है कि वहाँ क्या काम पहले से चल रहा है। उनकी शिकायत है कि आजकल ईमानदार कार्यकर्त्ताओं कीं कमी है। इसे देखते हुए जब मैं घर लौटूंगा तो मेरे लिए अनुकूल काम की कोई कमी नहीं रहेगी।

मैं जून के अंत में स्वदेश के लिए रवाना होना चाहता हूँ। जैसे ही मेरा इस्तीफा मंजूर हो जाएगा मैं जहाज में एक स्थान के लिए आवेदन करूँगा। आपको अभी मेरे लिए पैसे भेजने की चिंता नहीं करनी चाहिए। मुझे पैसे उधार देने के लिए प्रस्ताव किया गया है जो मेरे कलकत्ता पहुँचने तक खर्च के लिए काफी होंगे।

मुझे यह जानकर बड़ी राहत मिली है कि मेज दीदी अब स्वस्थ हैं। इसलिए मैं पिताजी को लिख रहा हूँ कि मैंने इस्तीफा दे दिया है। मुझे

आशा है, और मेरी भगवान से प्रार्थना है कि पिताजी इस अशुभ समाचार को सहने योग्य बने।

इससे अधिक मुझे कुछ नहीं कहना है। जो कुछ होना था हो चुका है, मुझे पूरी आशा है कि इसका नतीजा अच्छा ही होगा।

मुझे आपका पत्र तीन सप्ताह से नहीं मिला है। आपकी चुप्पी से मुझे आश्चर्य हो रहा है। आप ठीक तो हैं?

हम सब यहाँ सकुशल हैं। आप सब कैसे हैं? क्या अमी को अभी भी मेरी याद है। मेरे लौटने तक वह बड़ी उम्र वाला लड़का बन चुका होगा।

आपका स्नेहभाजन
सुभाष

(70)

दि यूनियन सोसायटी,
कैम्ब्रिज
18–5–21

प्रिय दादा,

मुझे आपका पत्र पाने के लिए बड़ी उत्सुकता हो रही है क्योंकि काफी लंबे समय से आपने पत्र नहीं भेजा है। भारत की डाक आ चुकी है और उसकी पहली किश्त के साथ घर से कोई पत्र नहीं आया।

सर विलियम ड्यूक कोशिश कर रहे हैं कि मैं अपना इस्तीफा वापस ले लूँ। उन्होंने इसके बारे में बड़े दादा को लिखा है। कैम्ब्रिज में सिविल सर्विस बोर्ड के सचिव श्री रोबर्टस् ने भी मुझसे कहा है कि मैं अपने निर्णय पर पुनर्विचार करूँ और उन्होंने यह भी बताया है कि वे इंडिया आफिस के आदेश पर ऐसा कर रहे हैं । मैंने सर विलियम को संदेश भेज दिया है कि मैंने परिपक्व विचार के बाद ही यह कदम उठाया है।

मेरी परीक्षा (ट्रिपोज) पहली जून से हो रही है।

अपनी वर्तमान योजना के अनुसार मैं जून के अंत में या जुलाई के आरंभ में मार्सलीज से जहाज द्वारा रवाना होऊँगा। मुझे जैसे ही सूचना मिलगी कि मेरा इस्तीफा मंजूर हो गया है, वैसे ही मैं अपने लिए जहाज मैं स्थान सुरक्षित करा लूंगा।

आप सब कैसे हैं? मैं यहाँ सकुशल हूँ। बड़े दाद शीघ्र ही आक्सफोर्ड की यात्रा पर जाने वाले हैं।

मैं 'निप्पन यासेन काईशा' के एक जहाज पर यात्रा करने का विचार कर रहा हूँ और कोलंबो में उतरूँगा।

एमिली शेंक्ल को लिखे पत्र

1934–1942

रोम

30.11.34

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा लिखा पत्र मिला, पढ़कर बहुत आनंद आया।

मेरी रोम की यात्रा बहुत सुखद रही। कई बार (ट्रायोल के समीप) हम बादलों से ऊपर पहुँच गए तो कभी तेज धूप में घिर गए। नीचे पृथ्वी पर धुंध छाई थी जिस कारण वह रहस्यमयी प्रतीत हो रही थी। 'डोलोमाइट्स' (खनिज शैल) बर्फ से ढके थे और सफ़ेद दिख रहे थे।

ढाई घंटे की यात्रा के पश्चात् हम वेनिस पहुँचे। वेनिस से रोम पहुँचने मे दो घंटे लगे।

यदि भविष्य में कभी मैं तुम्हें, मेरी पुस्तकें और ट्रंक भिजवाने के लिए लिखू तो, तुम प्रत्येक लेख तथा प्रत्येक पत्र अवश्य फाड़ देना। मुझे केवल प्रकाशित पुस्तकें ही भेजना। फ्रेंच भाषा का अध्ययन जारी रखना।

यदि संभव हो तो, उन 210 शिलिंग से जो मैंने तुम्हें लिफ़ाफ़े में दिए थे, एक टाइपराइटर खरीद लो।

मुझे आशा है कि तुमने पूरी सावधानी से गैली, भूमिका आदि भिजवा दी होगी और कोई गलती नहीं की होगी।

जब–तक मैं भारत नहीं पहुँच जाता तब तक तुम्हें पत्र नहीं लिख पाऊंगा। चिंता नहीं करना। मैं सदा खराब पत्र लेखक रहा हूँ किंतु, खराब व्यक्ति नहीं हूँ।

यह पत्र मैं तुम्हें एयरमेल से भेज रहा हूँ। किसी को बताना नहीं कि मैंने तुम्हें एयरमेल से पत्र भेजा है क्योंकि तुम्हारे सिवाय मैं किसी को

भी एयरमेल से पत्र नहीं भेजता, अतः उन्हें यह अच्छा नहीं लगेगा।

कल रात मैं प्रातः साढ़े छः बजे तक, पुस्तक खत्म करने के लिए, कार्य करता रहा और बिल्कुल भी सो नहीं सका। कल प्रातः 7.30 बजे जहाज़ पकडूँगा। मैं वह वायुयान देख आया हूँ जिसमें मुझे रोम से कलकत्ता के लिए रवाना होना है। अमैस्टरडम से मैं यहाँ पहुँच ही चुका हूँ।

मेरे कलकत्ता के पते—1, वुडबर्न पार्क, कलकत्ता के पते पर एक औपचारिक पत्र एयरमेल द्वारा भेजो, जिसमें यह सूचना भी देना कि 'विशार्ट' को गैलीज आदि सुरक्षित प्रेषित की जा चुकी है। कृपया पत्र टाइप करके भेजना।

अपने माता—पिता को मेरा प्रणाम कहना और तुम्हें मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस
(बिना तिथि के, नवंबर, 1934)

टाइपराइटर खरीद लेने की खुशी में उपहारस्वरूप । कृपया मुझे लिखों कि मशीन (टाइपराइटर) कब खरीदी और कैसी चल रही है।

वेनिस
1.12.34
(1.30 अपराह्)

अभी—अभी मैं यहाँ पहुँचा हूँ और दोपहर का भोजन कर रहा हूँ। कुछ ही क्षणों में फिर रवाना होने वाला हूँ। तुम्हारे माता—पिता को मेरा प्रणाम।

सुभाष चंद्र बोस
30.11.34

एथेंस

(बिना तिथि का, 1.12.34)

रोम में तुम्हारा तारमिला। मैं दोपहर तीन बजे के आस–पास यहाँ (एथेंस) पहुँच गया था। कुछ थकान महसूस हो रही है, अन्यथा स्वस्थ हूँ। अनुबंध ज्ञापन के संबंध में, हस्ताक्षर आवश्यक नही हैं क्योंकि वह मेरी ही प्रति है। दूसरी प्रति जो विशार्ट भेजी गई है उस पर मैं पहले ही हस्ताक्षर कर चुका हूँ। जब कभी मैं तुम्हें यह लिखूँ कि मेरे लेख भारत भिजवा दो तो याद रखना कि सभी लेख, पत्रादि नष्ट कर देना, केवल पुस्तकें और कपड़े ही भारत भिजवाना। एथेंस में कुछ भी देख पाना शायद संभव नहीं होगा। समय कम है और मुझे पत्र लिखने हैं। अंधेरा होने पर मुझे दिखाई कम देता है आशा है आप सभी आनंद से हैं।

सुभाष चंद्र बोस

रात्रि 10 बजे. मैं एथेंस के कुछ स्थल देख पाया हूँ।

मिस्त्र

1.12.34

यहाँ 4000 वर्ष से भी अधिक प्राचीन पिरामिड, मस्जिदें, और मकबरे आदि देखने में बहुत आनंद आया। अब पुनः मैं पूर्व के मध्य क्षेत्र में वापिस पहुँच गया हूँ। एथेंस से आते समय रात्रि में हमारा वायुयान बादलों से भी ऊपर उड़ रहा था। अतः हमने शानदार सूर्योदय देखा, जो हम केवल पूर्व में ही देख पाते हैं । यूरोप में शानदार सूर्योदय बहुत कम देखना संभव हो पाता है। मैं पूर्णतः स्वस्थ हूँ। कल प्रातः फिर यात्रा प्रारंभ करूँगा।

सुभाष चंद्र बोस

इराक

रविवार, 2.12.34

कायरो से आज दोपहर मैं यहाँ पहूँचा। कल शाम मैं कराची में होऊँगा तथा एक दिन बाद (यानी मंगलवार को) कलकत्ता में । इन पुराने स्थलों को देखने का अलग ही आनंद है। दूसरी ओर स्वर्णिम गुंबदों वाली मस्जिद है जो शायद 450 वर्ष पहले बनाई गई थी। आशा है तुम स्वस्थ हो।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सेंसर द्वारा पारित

38/2, एल्गिन रोड अथवा
1, वुडर्बन पार्क
कलकत्ता
7.12.34

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

मार्ग में बिना किसी प्रकार की असुविधा के मैं यहाँ 4 दिसंबर को पहुँच गया था। मेरे पिता इस मृत्युलोक को 2 दिसंबर को ही छोड़ गए थे, यानी मेरे कलकत्ता पहुंचने से 40 घंटे पूर्व। मेरी माता की हालत बहुत खराब है, यद्यपि हम भाई व बहन मिलकर उन्हें ढ़ांढ़स बंधाने का भरसक प्रयास कर रहे हैं। पाश्चात्य लोगों के लिए हमारी मानसिकता को समझ पाना कठिन है। एक हिंदू पत्नी का जीवन उसके पति के जीवन से कुछ इस प्रकार बंधा होता है कि उसकी अनुपस्थिति में उसके लिए जीना असंभव होता है। फिर भी, हमें विश्वास है कि वे आघात को सह पाने में सक्षम होंगी। पिछले कुछ दिनों में, हमारे परिवार को कई आघात सहने पड़े है, इन सभी का मेरे माता–पिता पर बहुत असर पड़ा है।

मैं नहीं जानता कि भविष्य में, मैं तुम्हें पत्र लिख पाऊँगा अथवा नहीं, किंतु यदि न लिख पाऊं तो कृपया मुझे गलत मत जानना। फ़िलहाल मैं अपने ही घर में एक कैदी का सा जीवन व्यतीत कर रहा हूँ।

घर में कैद रहने का आदेश मुझे उसी क्षण दे दिया गया जिस क्षण मैंने कलकत्ता में कदम रखा था। फ़िलहाल सरकार ने मुझे मेरी माता के पास एक सप्ताह बिताने की इज़ाजत दी है। इस एक सप्ताह के दौरान मैं अपने परिवार के सदस्यों के अतिरिक्त किसी से भी बातचीत अथवा संपर्क नहीं कर सकता। अपने घर से बाहर भी नहीं जा सकता। यह सप्ताह बीतने के बाद मेरे साथ क्या होगा, मैं नहीं जानता। संभवतः भविष्य में तुमसे भी पत्र व्यवहार न कर पाऊं। हर हाल में मेरा भविष्य अनिश्चित है।

मेरा घर का पता है 38/2, एल्गिन रोड अथवा 1, वुडबर्न पार्क, कलकत्ता। क्योंकि मेरी माताजी पूर्व पते पर रह रही हैं इसलिए मुझे यहीं बंधक बनाया गया है।

वायुयान की यात्रा सुखद थी और यदि मुझे यह मानसिक परेशानी न होती तो और भी आनंद आता। प्रत्येक प्रातः सूर्योदय का दृश्य अद्भूत था। पाँच दिन की अवधि में यूरोप व एशिया के इतने देशों पर से गुजरना बहुत रोचक अनुभव था।

तुम्हारे माता–पिता को मेरा प्रणाम व तुम्हें हार्दिक शुभकामनाएँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंन्द्र बोस

केवल कराची तक डाक ले जाता है। 'द इम्पीरियल एयरवेज' (ब्रिटिश) कलकत्ता तक डाक ले जाता है। ब्रिटिश वायुयान के लिए तुम्हें शुक्रवार अथवा रविवार को विएना से डाक प्रेषित करनी होगी किंतु डच वायुयान के लिए सोमवार अथवा बुधवार को। तुम्हारा 2 दिसंबर का पत्र, जो तुमने तीन तारीख को डाक में डाला वह ब्रिटिश वायुयान द्वारा नहीं आ सका, इसी कारण विलंब हुआ। डच वायुयान द्वारा डाक भेजते समय ध्यान रखना कि केवल कराची तक का खर्च ही देना।

वेनिस से जो कार्ड मैंने तुम्हें भेजा था क्या वह तुम्हें नहीं मिला?

मुझमें इतना धैर्य नहीं है कि मैं अपनी यात्रा के विषय में विस्तार से तुम्हें लिखूं, हालांकि तुम जानना चाहोगी। पहली शाम मैंने रोम–दिव्य शहर में बिताई। सुबह वहाँ से चलने से पूर्व मुझे तुम्हारा तार मिला। अगली रात हमने एथेंस में व्यतीत की। ग्रीक के प्राचीन अवशेषों व एक्रोपोलिस आदि को देखने के लिए मेरे पास पर्याप्त समय था। अगली शाम हमने कायरो में बिताई। कायरो में हमारे पास इतना समय था कि हमने यहाँ का अद्भूत तूतारखामिन संग्रहालय तथा पिरामिड देखे। गाइड के आग्रह के कारण, मुझे वहाँ अपना फ़ोटो खिंचवाना पड़ा। उस फोटो की प्रति साथ में भेज रहा हूँ। उसके पार्श्व में तुम पिरामिड और स्फिक्स, तूतारखामिन संग्रहालय देखोगी। अनेकों आश्चर्यजनक चीजों के साथ–साथ मैंने वहाँ ममियां भी देखीं अगली रात हमने इराक की राजधानी बगदाद में बिताई। बगदाद में भी मैंने पुराने अवशेष तथा स्वर्ण मस्जिद देखी जो 500 वर्ष पुरानी है। 3 तारीख की सुबह हम बगदाद से रवाना हुए और उसी शाम कराची पहुँचे। कराची से हम जोधपुर के लिए वायुयान में बैठे और रात हमने वहीं बिताई। अगले दिन दोपहर चार बजे के आसपास हम कलकत्ता में थे।

यात्रा बेहद दिलचस्प थी। जिस चीज़ ने मुझे सबसे ज्यादा आनंदित किया वह था सूर्योदय, जो हमने 2000 मीटर की ऊंचाई से देखा। ऐसा अद्भूत सूर्योदय आप लोग यूरोप में कभी नही देख सकते। वायुमान के ऊपर उठने व नीचे उतरने में मुझे हल्का सा सिर भारी होता महसूस हुआ, किंतु एक ही ऊँचाई पर उड़ने पर कोई असुविधा महसूस नहीं हुई। उड़ान के दौरान भी मैं बिना किसी कठिनाई के लिख सकता था, हल्का–सा झटका भी महसूस नहीं होता था। वायुयान का शोर अलबत्ता असुविधाजनक था किंतु असहनीय नहीं था।

कार्ल्सबाद के फ्रॉं–लाई और हर को मेरा प्रणाम कहना। कृपया मुझे कार्ल्सबाद की एलबम भेजने का कष्ट न करना जब तक कि मैं स्वयं

तुम्हें न लिखूं।

एथेंस (अथवा कायरो) से मैं पहले ही तुम्हें लिख चुका हूँ कि विशार्ट के साथ अनुबंध के प्रति तुम्हें चिंता करने की आवश्यकता नहीं है वह एक अतिरिक्त प्रति थी जो मेरी थी, जिस पर मेरे हस्ताक्षरों की कोई आवश्यकता नहीं थी।

38/2 एल्गिन रोड
अथवा 1, वुडबर्न पार्क
कलकत्ता
31 दिसंबर, 1934

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारे 10 दिसंबर व 18 दिसंबर के पत्र एयरमेल द्वारा पाकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई। पिछले पत्र से मुझे पता चला कि तुम्हारा टाइपराइटर ठीक कार्य कर रहा है।

तुम्हारे पत्र से यह जानकर मुझे बहुत कष्ट हुआ कि वहाँ बेहद ठंडा है और तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं है। मुझे आशा है कि तुम शीघ्र ही पूर्णतः स्वस्थ होकर बिस्तर त्याग दोगी।

यह जानकर हर्ष हुआ कि तुम्हारे फ्रेंच भाषा के पाठ प्रगति पर हैं। जो भी व्यक्ति नई भाषा सीखने में सक्षम होता है उससे मुझे ईर्ष्या होती है। भारत एवं भारतीय दर्शन के संबंध में तुम्हारी जिज्ञासा मैंने लिख ली है जैसे ही संभव होगा इस विषय में तुम्हें लिखूँगा।

इस वर्ष का यह अंतिम दिवस है। नव वर्ष के लिए मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ भेजता हूँ और तुम्हारे मंगल की कामना करता हूँ। तुम्हारे माता–पिता के लिए भी मैं शुभकामनाएँ भेज रहा हूँ, कृपया उन तक पहुंचा देना।

यहाँ आने के बाद से मेरा स्वास्थ्य बहुत संतोषजनक नहीं है। पिछले सप्ताह तो मेरी पुरानी बीमारी आंतरिक दर्द, बहुत बढ़ गई थी।

संभवतः इसका कारण मेरा वह भोजन रहा हो जो मुझे शोक के इन दिनों में खाना पड़ा। यह शोक अवधि 3 जनवरी 1935 को समाप्त होगी।

सामान्यतः मेरा घर लौटना सबके लिए बहुत प्रसन्नता का विषय होता है किंतु यह क्षण दुख का है।

अभी हम लोग असहनीय वेदना से उबर नहीं पा रहे हैं। घरेलू दुख के अतिरिक्त मुझे उन बंधनों का कष्ट भी है जो सरकार द्वारा मुझ पर लगाए गए हैं। जैसा कि तुम समाचार पत्रों में भी देख चुकी होगी कि मैं अभी भी अपने घर में 'कैद' हूँ।

मुझे शंका है कि कहीं मुझे आपरेशन न करवाना पड़े । इसके अतिरिक्त कोई चारा नहीं है। किंतु मैं यहा बड़ा आपरेशन करवाना नहीं चाहता। इसलिए मुझे तब तक प्रतीक्षा करनी होगी जब तक कि मैं पुनः युरोप नहीं आता।

नव वर्ष हेतु तुम्हारी शुभकामनाओं के लिए धन्यवाद।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि तुम्हारी गाल ब्लैडर वाली समस्या हल हो गई है और अब तुम्हें आपरेशन नहीं करवाना पड़ेगा। इस विषय में भी मेरी शुभकामनाएँ।

कृपया अपने माता–पिता को मेरा प्रणाम कहना और अपने लिए हार्दिक शुभकामनाएँ स्वीकार करो।

तुम्हें पता ही होगा कि नेशनल बिब्लियोथिक, विएना में स्वामी विवेकानंद का संपूर्ण कार्य संग्रहीत है जो मैंने पिछले वर्ष उन्हें दिया था। यदि आवश्यकता पड़े तो उसका उपयोग भी कर सकती हो। स्वामी विवेकानंद की पुस्तकों में भारतीय दर्शन बहुत अच्छे रूप में अभिव्यक्त हुआ है।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सेंसर द्वारा पारित

38/2, एल्गिन रोड अ
कलकत्ता
8 जनवरी, 1935

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि मैं आज ही यूरोप के लिए रवाना हो रहा हूँ। आज बंबई के लिए चल दुंगा और दस तारीख को बंबई से जहाज (एम0बी0 विक्टोरिया) लूंगा। 21 जनवरी को इटली में जेनुआ पहुँचूँगा।

हमारे दुख के क्षणों में तुमने जो सहानुभूति दिखाई उसके प्रति मैं तुम्हारा हृदय से आभारी हूँ। कृपया अपने माता–पिता तक हमारा धन्यवाद पहुँचा देना।

यहाँ आने के बाद से मेरा कष्ट बढ़ा है। अतः मुझे आपरेशन करवाना ही पड़ेगा।

डॉ0 शर्मा द्वारा तुमने जो उपहार मेरे लिए भिजवाया उसके लिए बहुत–बहुत धन्यवाद। उपहार के साथ तुम्हारा 7 दिसंबर का पत्र भी प्राप्त हुआ।

आशा है अब तक तुम्हारा जुकाम ठीक हो गया होगा। मुझे संतोष है कि तुम स्वस्थ हो।

नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ स्वीकार करो और अपने माता–पिता व अपनी बहन को भी मेरी ओर से शुभकामनाएँ देना।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

नेपल्स

20.1.35

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हें यह सूचित कर दूँ कि मैं नेपल्स तक ठीक–ठाक पहुँच गया हूँ। पोर्ट सईद के बाद मौसम कुछ बिगड़ गया था जिस कारण हमें यहीं उतरना पड़ा।

विएना आने से पहले एक सप्ताह व्यतीत करूँगा। इटली रेल विभाग उन विदेशी पर्यटकों को 50 प्रतिषत छूट देता है जो 6 दिन इटली में व्यतीत करते हैं। तुम्हारा क्या हाल है, इसकी सूचना देते हुए मुझे होटल एक्सेलसियर, रोम के पते पर संक्षिप्त पत्र लिखो।

प्रातः यहॉ पहुँचते ही मैं पोंपेई गया था। आज दोपहर मै इन दिनों सक्रिय सोल्फालारा ज्वालामुखी देखने जाऊँगा।

माता–पिता को प्रणाम व तुम्हें शुभकामनाएँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी

सुभाष चंद्र बोस

पुनश्चः कल या परसों मैं रोम के लिए रवाना होऊँगा। यह पत्र मैं एयरमेल द्वारा नहीं भेज रहा क्योंकि आज रविवार है। कृपया एयरमेल द्वारा इस पते पर पत्र लिखो – होटल एक्सेल्सेयर, रोम।

सुभाष चंद्र बोस

नेपल्स

22.1.35

सायं 4 बजे

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

रोम जाने के लिए स्टेशन जाने से पहले मैं यह पत्र लिख रहा

हूँ, यह पत्र मैं रोम से ही डाक में डालूँगा।

पिछले तीन दिन मैं घूमने में व्यस्त रहा। मैं पोंपई, सोल्फालारा ज्वालामुखी, द लिटल विसुवियस, जो इन दिनों सक्रिय था, संग्रहालय आदि देखने गया। मैंने थापरी तथा विसुवियस जाने के लिए टिकट खरीद लिए थे किंतु विचार त्यागना पड़ा क्योंकि बर्फ़ गिरने लगी थी। नेपल्स में बर्फ़ गिरने की बात जानकर तुम्हें आश्चर्य होगा। वहाँ के लोगों ने मुझे बताया कि पिछले तीस वर्षों में कभी ऐसी बर्फ़ नहीं पड़ी। बहरहाल, मैंने थापरी और विसुवियस की टिकटें वापिस करके आज प्रातः विएना की टिकट खरीद ली है। रास्ते में मैं तीन दिन रोम में और संभवतः एक दिन के लिए वेनिस में भी रूकूँगा। अधिक संभावना यही है कि रोम से सीधा विएना ही जाऊँगा। मुझे आशा है कि विएना में खूब बर्फ़ गिर रही होगी और वहाँ काफी सीलापन होगा। मुझे आशा है कि अब तक तुम मुझे एयरमेल द्वारा पत्र भेज चुकी होगी। तुम्हारा पत्र पाकर मुझे प्रसन्नता होगी। माता–पिता को सादर प्रणाम व तुम्हें हार्दिक शुभकामनाएँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्चः मुझे जल्दबाजी में भारत छोड़ना पड़ा। अंत तक मुझे विश्वास नहीं था कि मैं यहाँ आऊँगा। बहरहाल मैंने 'धूप' जो तुम चाहती थी वह खरीद ली है और स्वामी विवेकानंद की पुस्तक 'थाट्स ऑन वेदांत' भी ले ली है। क्या मेरा लेख पढ़ पाओगी?

सुभाष चंद्र बोस
होटल पैलेसर एंबैसेडेरू

रोम
25.1.35

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

विएना से एयरमेल द्वारा प्रेषित तुम्हारे पत्र, लिफाफा और पोस्टकार्ड

— के लिए धन्यवाद। आज प्रातः ही मुझे मिले। इस होटल के ठीक सामने होटल एक्सेलसियर है। अतः वहाँ से पत्र प्राप्त करने में कोई कठिनाई महसूस नहीं होती।

मुझे खेद है कि मैं नेपल्स से शीघ्र ही विएना नही पहूँच पाया। यहाँ पर मुझे बहुत—सा कार्य करना है और उस कार्य की उपेक्षा करना मेरे लिए उचित नहीं होगा। आज शाम मुझे महामहिम मुसोलिनी से मुलाकात करनी है, जिन्हें मैं अपनी पुस्तक की प्रति उपहार में दूँगा।

(कृपया इस बात को बिल्कुल गुप्त रखें।)

पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है। प्रिंटिंग आदि उत्तम है। भूमिका भी छपी है, जिसमें मैंने तुम्हारे प्रति आभार व्यक्त किया है।

यहाँ का मौसम बहुत बढ़िया है और जहाज की अपेक्षा अब मेरा स्वास्थ्य बेहतर है। जहाज में मेरे पेट में तीव्र वेदना थी, मध्यसागर भी बहुत चंचल था।

कृपया मेरे लिए परिशिष्ट की टाइप प्रति तैयार रखें, अंतिम पृष्ठ जो मैंने रोम जाने के लिए विएना से रवाना होते समय लिखे थे।

स्टेशन पर मुझे लेने मत आना। मैं होटल से तुम्हें फोन करूँगा तब तुम मुझे मिलने आ सकती हो। मैं 27 तारीख, रविवार को रोम से चलने की सोच रहा हूँ, किंतु अभी कुछ निश्चित नहीं है। संभवतः वेनिस में एक दिन रूकूंगा, यदि वहाँ का मौसम अच्छा हुआ तो।

तुम क्या सोचती हो कि मैं तुम्हारा टेलिफोन नं0 भूल गया हूँ?

मेरी वर्षगांठ पर संदेश के लिए धन्यवाद। वास्तव में मैं तो यह भूल ही गया था। मैं भी कितना मूर्ख हूँ—क्या नहीं?

कृपया अपने माता—पिता को भी मेरा धन्यवाद व प्रणाम कहना। तुम्हारे पुराने जुकाम के लिए मैं चिंतित हूँ। तुम्हारी बहन व तुम्हारे लिए मेरी शुभकामनाएँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च: मैं यह पत्र एक्सप्रेस डाक से भेज रहा हूँ ताकि रविवार तक तुम्हें मिल लाए। मैं कटयार को अपने आगमन की तार द्वारा सूचना दूँगा – चाहो तो तुम उसे अथवा होटल दी फ्रांस को टेलिफोन द्वारा मेरे आगमन की सूचना दे सकती हो।

सुभाष चंद्र बोस

एल्बर्गो पलाजो एंबैसीकयोटरी

रोम

शनिवार, 26.1.35

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

कल ही तुम्हें पत्र लिखा था। मुझे लग रहा है कि मैं 28 तारीख, सोमवार की प्रातः से पहले रवाना नहीं हो पाऊँगा और विएना (सुधावहानोफ) मंगलवार की प्रातः 8 बजे पहुँच पाऊँगा। यही सूचना मैं डॉ0 कटयार को भी दे रहा हूँ। मेरे विचार से विएना में हम सुधावहानोफ ही पहुंचेंगे, किंतु अभी पक्का नहीं है। यदि यहाँ से रवाना होने में और विलंब हुआ या अपना कार्यक्रम स्थगित करना पड़ा तो मैं समय पर डॉ0 कटयार को सूचित कर दूँगा। तुम्हारा स्टेशन पर पहुँचना आवश्यक नहीं है। आशा है तुम पूर्णतः स्वस्थ हो। हार्दिक शुभकामनाएँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

प्राग

13.1.36

.प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हें सूचित कर दूँ कि प्रातः मैं यहाँ ठीक–ठाक पहुँच गया हूँ। दिनभर यहाँ व्यस्त रहने के पश्चात् मैं आज रात ही बर्लिन के लिए रवाना हो जाऊँगा। मैं राष्ट्रपति बी0 से मिला। माता–पिता को मेरा प्रणाम।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

बर्लिन डब्ल्यू 8 डेन
अंटर डेन लिंडन, 5.6
15.1.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

मैं कल प्रातः प्राग से यहाँ पहुँच गया था किंतु कल अत्यधिक व्यस्त रहा अतः तुम्हें पत्र नहीं लिख पाया। कांग्रेस कुछ दिन के लिए स्थगित हो गई है – अतः मैं सोचता हूँ कि मैं इटली को जहाज से जा सकता हूँ– किंतु अभी निश्चित नहीं है। कल ही मुझे मेरे पते पर रिडायरेक्ट की गई डाक मिली। आशा है कि आज भी कुछ पत्र प्राप्त होंगे। यदि पार्सल आ जाए तो कृपया मुझे यहाँ के पते पर 'इंडियन स्ट्रगल' भेज देना। संभवतः यहाँ अभी दो या तीन दिन और ठहरूँगा। माता–पिता को प्रणाम व तुम्हें शुभकामनाएँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

होटल ब्रिस्टल
बर्लिन डब्ल्यू 8
17.1.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

दोनों पत्रों के लिए धन्यवाद, एक कल मिला था और एक आज मिला है। मैं हर समय लोगों से घिरा रहता हूँ इसिलए लंबा पत्र लिखने का समय नहीं मिल पाता। इसलिए कृपया मुझे क्षमा कर देना।

कल एंटवर्प के लिए रवाना होऊँगा और तीन दिन वहाँ रहूँगा। वहाँ से पेरिस जाऊँगा।

एंटवर्प में मेरा पता है—द्वारा मन नाथलाल डी0 जावेरी, 24 एवेन्यू वैन डेन नेस्ट, एंटवर्प (बेल्जियम)

पेरिस का मेरा पता है— द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी, 11 रू स्क्राइब, पेरिस (एफ0आर0)

कृपया मेरी डाक इसी हिसाब से रिडायरेक्ट करना तथा अमेरिकन प्रेस तथा पेंशन कंपोज़िट को भी सूचित कर देना।

पेंशन कंपोज़िट के अपने कमरे में मैं 2 ओवरकोट और 1 बरसाती छोड़ आया था बरसाती मुझे अपने साथ लानी चाहिए थी लेकिन मैं भूल गया। कृपया श्रीमती वेसी से कहे कि वे कोटों को संभाल लें।

मैं साथ में कुछ टिकट भेज रहा हूँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

कॉन
19.1.36
प्रातः 10 बजे

कॉन से शुभकामनाएँ। माता–पिता को मेरा प्रणाम। अभी एंटवर्प के लिए रवाना हो रहा हूँ।

सुभाष चंद्र बोस

ब्रेसेल्स
20.1.36

सुभाष चंद्र बोस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

किसी अन्य निर्देश तक कृपया सारी डाक इसी पते पर भेजें – द्वारा एन0 डी0 झावेरी, 14 एवन्यू, वैन डेन नेस्ट, एंटवर्प।

द्वारा एन0 डी0 झावेरी
14 एवेन्यू, वैन डेन नेस्ट
एंटवर्प (बेल्जियम)
22.1.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

18 तारीख के कार्ड के लिए धन्यवाद। आशा है ब्रसेल्स से भेजा मेरा कार्ड तुम्हें मिला होगा। कल हम यहॉ से ब्रसेल्स के लिए चल देंगे। कार द्वारा केवल एक घंटे का मार्ग है।

मैं यहाँ जितने दिन रूकना चाहता था उससे अधिक मुझे यहॉ ठहरना पडेगा। इसलिए कृपया मुझे इसी पते पर पत्र लिखो। यहाँ से मैं पेरिस जाऊँगा, वहाँ से आयरलैंड के लिए जहाज पकडूँगा, शायद 30 तारीख को हैव्रे से। फरवरी के मध्य में आयरलैंड से लौटूंगा फिर वहॉ से 28 फरवरी को इटली से 'विक्टोरिया' द्वारा भारत लौटूंगा।

पेरिस में मेरा पता होगा–द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी, 11, रो स्क्राइब, पेरिस (Ixe)

बर्लिन में मुझे दो पत्र मिले थे जिनका उत्तर मैंने दे दिया था।

1. बंगला अखबार जो तुम्हें नहीं चाहिए वे इस पते पर भेज दो–द्वारा के.एल. गांगुली, बर्लिन, विल्मर्सडोर, जहींगर स्ट्रीट–38.

2. जो अखबार तुम चाहो अपने पास रख सकती हो।

3. मुझे केवल एक अखबार 'पत्रिका' अथवा 'फारवर्ड' भेज दो।

4. शेष बचे अखबार निम्न पते पर भिजवा दो – द्वारा एच. घोषाल, अल लोआस्था, 15 एम 14, वारस्ज़ावा (पोलन)

मेरे विचार में ये निर्देश पूर्णतया स्पष्ट हैं। डॉ0 कटयार को उनके

अखबार हमेशा की तरह मिलते रहने चाहिए।

तुम्हारे जुकाम के विषय में जानकर चिंता हुई। कृपया निम्न कार्य करो—

1. सिंह से कहो कि वह तुम्हें उस इलाज के लिए ले जाए जैसा इलाज तुम पहलेभी करवा चुकी हो।

2. डॉ0 सेन से कहो कि वे जुकाम और खांसी की दवा लिख दें।

3. साल्वेंट्स का मिश्रण लेकर देखो। किसी भी एपोथीक से तुम स्वयं खरीद सकती हो।

एक सप्ताह बाद मैं तुम्हें पेरिस से कुछ राशि भेज पाऊंगा।

मेरी ओर से माता–पिता को सादर प्रणाम व तुम्हें हार्दिक शुभकामनाएँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

एंटवर्प
24.1.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

यहाँ रूके हुए मुझे काफी दिन हो गए हैं, इसलिए मैंने अपनी डाक के विषय में पेरिस लिख दिया था, आज प्रातः मुझे मेरी डाक मिल गई है। 26 तारीख, रविवार में मैं पेरिस के लिए रवाना हो जाऊँगा। कृपया मेरी डाक उसी के मुताबिक रिडायरेक्ट कर देना। हार्वे से 30 तारीख को मैं जहाज द्वारा आयरलैंड के लिए रवाना होऊँगा। पेरिस स्थित अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी के कार्यालय को बता दूँगा कि वे मेरी डाक आयरलैंड भिजवा दें। अपने कुछ मित्रों के साथ आज मैं स्पा जाऊँगा जहाँ हम वाटर लू और अन्य ऐतिहासिक स्थल देखेंगे। कल वापिस आएंगे और रविवार को मैं पेरिस के लिए चल दूंगा। मैंने तुम्हें

एंटवर्प का फ्रांसीसी अखबार भेजा था जिसमें मेरा साक्षात्कार छपा था। आज प्रातः मुझे तुम्हारा पत्र और कार्ड मिला। तुम्हारे स्वास्थ्य के विषय में जानकर चिंता हुई। कृपया अपना ध्यान रखो, जैसा कि पिछले पत्र में भी मैंने लिखा था। आशा है तुमने अमरीका के अखबार श्रीमती हार्प को भिजवा दिए होंगे। तुम्हें जब समय मिले, मेरे सारे कागजात देख लेना। क्या तुमने कम कीमत पर अखबार प्राप्त करने के लिए किसी कैफे से बात की। मेरे विचार में तुम्हें फ्रेंच भाषा सीखना जारी रखना चाहिए। अगले पत्र में विस्तार से लिखूंगा। संभवतः मैं बहुत से अखबार पत्र आदि तुम्हारे पास छोड़ आया हूँ। कृपया एक बार उन्हें पुनः देख लेना ताकि तुम्हें पता रहे कि तुम्हारे पास वास्तव में क्या क्या है। जल्दबाजी के लिए क्षमा चाहता हूँ। तुम्हारे माता–पिता व तुम्हें शुभकामनाएँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

वाटरलू
25.1.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

सुभाष चंद्र बोस की ओर से शुभकामनाएँ (अस्पष्ट) के.डी. पारिख, चंदूलाल मोहनलाल, नत्थालाल दयाभाई झावेरी।

होटल अंबेसेडर
बोलवर्ड हौसमैन
पेरिस IXe
30.1.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

मुझे खेद है कि मैं पेरिस से तुम्हें पत्र नहीं लिख पाया। मैं बेहद व्यस्त था। अब मैं डब्लिन के लिए रवाना हो रहा हूँ। वहाँ का मेरा पता है–शैलबर्न, होटल डब्लिन (आयरलैंड)

किंतु तुमने मुझे पत्र क्यों नही लिखा?

मैं दो पाउंड भेज रहा हूँ जिसके बदले में तुम्हे 50 शिलिंग मिल जाएँगे। कृपया अपनी फ्रेंच भाषा की पढ़ाई जारी रखो और अपनी खांसी–जुकाम की दवाई खरीद लेना। मुझे आशा है शीघ्र ही तुम्हारा खाँसी–जुकाम ठीक हो जाएगा।

मुझे आधिकारिक रूप से सूचना मिली है कि जैसे ही मैं डब्लिन पहुंचूँगा, राष्ट्रपति डी. वलेरा मेरी अगवानी करेंगे।

शुभकामनाएँ

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

यूनाइटेड स्टेट्स लाइंस
जहाज पर
एस.एस. वाशिंगटन
30.1.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

इस समय मैं हार्वे में हूँ और शीघ्र ही आयरलैंड के लिए जहाज़ पकडूँगा। कल शाम मैं वहाँ पहुँच जाऊँगा। शायद वहाँ बहुत व्यस्त रहूंगा अतः पत्र नहीं लिख पाऊंगा। आज प्रातः पेरिस से मैंने तुम्हें एक रजिस्टर्ड पत्र लिखा है। डब्लिन के पते पर पत्र लिखते समय याद रखना कि डाक इंग्लैंड होकर जाती है। 12 फरवरी को मैं आयरलैंड से रवाना हो जाऊँगा। डब्लिन में मैं शैलबर्न होटल, आयरलैंड में रहूंगा। पेरिस में होटल एंबेसडर, बोलवर्ड हौसमैन, पेरिस (IXe) में रहूँगा।

तुम्हारी अस्वस्थता की जानकारी से दुख हुआ। इससे मुझे कष्ट होता है। तुम अपने स्वास्थ्य की देखभाल क्यों नहीं करतीं?

क्या मैं तुम्हें सूचित कर चुका हूँ कि डब्लिन पहूँच कर सबसे

पहले मैं राष्ट्रपति डी वलेरा से मिलूंगा। इसकी व्यवस्था हो चुकी है।

पैरिस में मेरी कई दिलचस्प लोगों से मुलाकात हुई। आयरलैंड से वापसी में मैं एक सप्ताह पेरिस रूकूंगा, एक सप्ताह स्विट्ज़रलैंड में और तीन सप्ताह गैस्टीन में रहूँगा। कांग्रेस 7 अप्रैल तक के लिए स्थगित हो गई है अतः मर्सिलेस से 20 मार्च के आसपास चलूंगा। अब मैं लॉयड ट्रीस्टीनों द्वारा नहीं जाऊँगा।

तुम्हारे सभी पत्र मुझे मिल गए हैं। धन्यवाद।

कुछ शब्द तुमने गलत लिखे हैं। विएना (बंगला भाषा में) बंदे मातरम (बंगला भाषा में) आदि। ब्लान का लेख मैं अभी पढ़ नहीं पाया इसका मुझे खेद है। जैसे ही मै वह पढ़ लूंगा, उसके विषय में तुम्हें लिखूंगा। डॉ. सेलिंग निश्चय ही पंडित नेहरू की पुस्तक ले सकते हैं।

मैं तुम्हारे लिए कुछ पत्रकारिता संबंधी कार्य सोच रहा हूँ। जैसे ही मेरा विचार स्पष्ट होगा मैं तुम्हें लिखूँगा।

अपने एक पत्र में तुमने मेरी जवानी की चर्चा की है। किंतु अब मैं युवा नहीं रहा। तुमने नई फ्रंच कैबिनेट देख ही ली होगी। हैरियट उसमें नहीं है।

फिलहाल तुम एक (पुराना) अखबार खरीद कर उसे पढ़ सकती हो।

मुझे 'ले मार्टिन' का अनुवाद भिजवाने की तुम्हें कोई आवश्यकता नहीं है। यदि बंगला भाषा के अतिरिक्त अन्य भाषाओं के बहुत से अखबार हैं तो तुम वे वारसा में श्री घोषाल को भिजवा सकती हो। क्या मैंने पहले तुम्हें नहीं लिखा था कि कुछ बंगला भाषा के अखबार डॉ0 गांगुली को बर्लिन में भिजवा दो। उनका पता है– डॉ0 के. एल. गांगुली, जहाँगर स्ट्रीट, 38, बर्लिन, विल्मर्स डोर्फ। डॉ0 गांगुली को केवल बंगला भाषा के अखबार ही भिजवाना।

क्या मैं तुम्हें कुछ फ्रांसीसी पत्रिकाएं अथवा दैनिक समाचार पत्र भिजवांऊ? वैसे, तुम केफे वालों से क्यों नहीं कहती कि वे पुराने फ्रांसीसी अखबार तुम्हें दे दें?

जर्मनी की आर्थिक दशा शोचनीय है। वहाँ के लोग अब इसके लिए सरकार की भर्त्सना नहीं करते। 'हॉस–फ्राउन' को तो विशेष रूप से इससे कुछ लेनादेना नहीं।

मुझे प्रसन्नता है कि तुमने सिगरेट प्रीना कम कर दिया है।

पेरिस से जाने से पहले मैं तुम्हारे लिए संवाददाता खोजने का प्रयास करूँगा। वैसे अभी भी कोशिश में हूँ।

मेरा स्वास्थ्य बेहतर है, यद्यपि मैं बहुत थका हुआ महसूस करता हूँ। एंटवर्प और पेरिस में मुझे भारतीय खाना खाने का अवसर मिला।

अशोक का पता है–द्वारा ग्रिंडले एंड कंपनी, **54**, पार्लियामेंट स्ट्रीट, लंदन, एस. डब्ल्यू.

अलविदा, तुम्हारे माता–पिता को मेरा प्रणाम। तुम्हारी बहन व तुम्हें मेरी शुभकामनाएँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

शैलबर्न होटल
डब्लिन
7.2.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तीन फरवरी के तुम्हारे पत्र के लिए शुक्रिया। साथ में मैं डॉ0 कंटयार के लिए एक पत्र भेज रहा हूँ कृपया, उसे विएना से रोम के लिए डाक में डाल देना।

एक कटिंग भेज रहा हूँ, इसका अनुवाद करके मुझे भेज देना।

आशा है यहाँ से मैंने जो कटिंग्स तुम्हें भेजी थी, वे तुम्हें मिल गई होंगी। कृपया उन्हें बंद लिफाफे में डॉ. कटयार के पास भिजवा दो और उसे लिख देना कि आवश्यक कार्रवाई के पश्चात् वह उन्हें तुम्हें लौटा दे।

यह जानकर मुझे दुख हुआ कि तुम्हें खांसी और जुकाम है।

11 तारीख को डब्लिन से पेरिस के लिए चलुंगा। वहाँ का पता है– होटल एंबैसेडर, बोलवर्ड हौसमैन पेरिस (Ixe)।

यदि तुम्हें 'न्यू लीडर' की आवश्यकता हो तो सदा उसे ले सकती हो।

एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर भागते–दौड़ते रहने के बावजूद मेरा स्वास्थ्य ठीक है। लेकिन कुछ थकान महसूस करता है।

तुमने 'दास इका' की कटिंग मुझे भेजकर अच्छा किया।

हार्दिक शुभकामनाएँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

मेरी तुमसे प्रार्थना है कि अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखो।
सुभाष चंद्र बोस

डब्लिन
मंगलवार, 11.2.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

साथ में 'द हिंदू' से एक पत्र है, इसे संभाल कर रखना। इससे स्पष्ट है कि वे हर माह दो लेख चाहे हैं जिसके लिए वे प्रति लेख 30 शिलिंग देंगे। यानि 3 पौंड अथवा 75 आस्ट्रियन शिलिंग प्रति माह। इसके

लिए आवश्यक है कि तुम समाचार पत्र नित्य नियम से पढ़ना शुरू कर दो। विएना के अखबारों के लिए नीयू फ्री प्रेस से काम चलेगा। किंतु तुम टाइम्स (पुरानी प्रति) की प्रति कम कीमत में प्राप्त कर सकती हो। यदि यह संभव न हो तो 'टाइम्स' नित्य नियम से लेना शुरू कर दो। जब तक मैं यूरोप में हूँ, तब तक मैं तुम्हें उसकी कटिंग्स भेजता रहूंगा, परिणामस्वरूप, फिलहाल टाइम्स पढ़ना अति आवश्यक नहीं है। किंतु इस बात को अपने मन में रखना। 'टाइम्स' में केवल दो पृष्ठ ऐसे होते हैं जिनमें विदेशी समाचार प्रकाशित होते हैं, इसलिए शेष पृष्ठ तुम्हारे लिए आवश्यक नहीं हैं।

दूसरी बात, तुम्हें 'हिंदू' नित्य नियम से पढ़ना चाहिए। आजकल उसकी प्रति मेरे लिए आती है। यदि ऐसा है, तो उसे तुम अपने लिए रख लो। यदि तुम रोज हिंदू पढ़ोगी तो तुम जान जाओगी कि उसकी सामान्य नीति क्या है। यह अंग्रेजी के समाचार पत्रों में सर्वश्रेष्ठ है, किंतु यह मध्यमार्गी राष्ट्रीय दैनिक है, और मैं नहीं समझता कि यह उतना राष्ट्रवादी है जितना कि उसे होना चाहिए था।

भारतीय पाठकों की दृष्टि से यह आवश्यक है कि तुम अपने पहले लेख में जिस देश की चर्चा करो, वहाँ के वर्तमान राजनैतिक इतिहास की सामान्य चर्चा करो ताकि बाद में जो समाचार तुम भेजो वह भारतीय पाठकों को अच्छा (सही) लगे। तुम यूगोस्लाविया से प्रारंभ कर सकती हो अतः प्रथम विश्वयुद्ध से लेकर आज तक के राजनैतिक इतिहास का सामान्य लेखा–जोखा दो। इसके लिए तुम्हें तत्काल यूगोस्लाविया के पत्रकारों से संपर्क साधना चाहिए। श्रीमती फ्यूलप मिलर से कहो कि वे तुम्हारा परिचय श्री मैक्सिम कैंडट से अथवा अन्य किसी योग्य पत्रकार से करवा दें, और तुम जितनी संभव हो उतनी जानकारी प्राप्त कर लो। मुझे अधिक जानकारी नहीं हैं किंतु फिर भी मैं तुम्हें कुछ नोटस भेज सकता हूँ जो तुम्हारे लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। उन नोट्स की सहायता से तुम लेख तैयार कर सकती हो।

यदि अधिक सुगम हो तो, तुम किसी अन्य ऐसे देश से प्रारम्भ कर सकती हो। जिसके विषय में तुम जल्दी और आसानी से अधिक जानकारी प्राप्त कर सकती हो। जिन देशों के विषय में तुम लिख सकती हो। वे हैं–

(1) बल्कान राज्य – यूगोस्लाविया, बुल्गारिया, रूमानिया, ग्रीस, तथा संभवतः हंगरी भी। हालांकि हंगरी की गिनती बल्कान में नहीं की जाती।

(2) पूर्व के निकट – टर्की, पैलेस्टाइम, सीरिया, मिस्त्र।

इनमें तुम अरेबिया को भी शामिल कर सकती हो।

तुम्हें याद रखना होगा कि आजकल मिस्त्र का अत्याधिक महत्व है।

मैंने पुनः विचार किया, मेरा मानना है कि तुम्हें 'टाइम्स' प्रतिदिन पढ़ना चाहिए। इसलिए मैं टाइम्स बुक क्लब को लिख रहा हूँ कि वे मेरी प्रति तुम्हें भेज दें। तुम इसे पढ़ो और फिर बाद में बीच के चार पृष्ठ जिनमें विदेशों के समाचार होते हैं अथवा कुछ महत्वपूर्ण कटिंग्स मुझे भेज दो।

तुम्हें एक विज़िटिंग कार्ड छपवा लेना चाहिए जो इस प्रकार हो।

फ्रालिन ई0 शेंक्ल,

('द हिंदू' मद्रास की विशेष प्रतिनिधि, भारत का सर्वाधिक लोकप्रिय तथा प्रभावशाली दैनिक समाचार पत्र)

विएना –XVIII
टेलि0 आर 60–2–67
फेरोगास–24

उपरोक्त कार्ड निश्चय ही जर्मन भाषा में होना चाहिए।

फिर तुम बल्कान तथा पूर्व निकट के उन सभी देशों के प्रेस अटैची को लिख सकती हो, जिनके विएना में दूतावास हों। उन्हें पत्र

लिखो, जिसके साथ अपना कार्ड भी भेजो और उनसे उस सूचना के लिए मिलने का समय मांगों जो वे भारतीय पत्रों में प्रकाशित देखना चाहेंगे। प्रेस अटैची अथवा प्रेस प्रमुख का पता दूतावास के द्वारा होगा। इस सब कार्य के लिए कुछ पैसे की आवश्यकता होगी। इसलिए मैं तुम्हें दो पाउंड (अथवा 50 शिलिंग) पेरिस से भेजने का प्रयत्न करूँगा।

मैं आज पेरिस के लिए चलूंगा और 14 तारीख (अधिकाधिक) तक वहाँ पहुँच जाऊँगा। कृपया मुझे इस पते पर लिखें – द्वारा होटल अंबेसडर, बोलवर्ड हौसमैन, पेरिस Ixe.

पहला लेख हैप्सबर्ग पुनरूद्धार के प्रति लिटल एंटेंट के रवैये के विषय में भी हो सकता है।

जब तुम पहला लेख एयरमेल से भेजो तो 'द हिंदू' के संपादक से उसके औचित्य के विषय में अवश्य पूछ लेना।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

होटल अंबेसेडर
16, बोलेवर्ड हौसमैन
पेरिस
18.2.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

मैं तुम्हारे तीन पत्रों के उत्तर नहीं दे पाया। तुम्हारा 15 तारीख का पत्र अगले दिन मिल गया था। बहुत–बहुत धन्यवाद। मैं यह पत्र बहुत जल्दी में लिख रहा हूँ। इसलिए सिर्फ एक विषय में ही लिखूँगा। 'द हिंदू' को अपना पहला लेख इस सप्ताह मत भेजना। लेख तैयार करने में कम से कम एक सप्ताह और लो और भेजने से पहले मुझे अवश्य दिखा लेना।

पहला लेख बढ़िया होना चाहिए — बेशक उसे भेजने में कुछ देरी ही हो जाए। मुझे चिंता है कि कहीं तुम पहला लेख जल्दबाजी में इसी सप्ताह न भेज दो।

मैं लंदन से तुम्हारे लिए एक शब्दकोष का प्रबंध कर रहा हूँ। इस सप्ताह तुम्हें दो पाउंड भेजूंगा।

लिटल एंटेंट का अभिप्राय चेकोस्लोवाकिया, रूमानिया और यूगोस्लाविया से है।

तुम्हारे पत्र व्यवहार के लिए मैंने दो फ्रांसीसी महिलाओं का पता लिया है। बाद में भेजूँगा।

तुम्हारे किसी काम आ सकूँ तो मुझे प्रसन्नता होगी।

शेष अगले पत्र में, एक बार फिर बता दूँ कि इस सप्ताह 'द हिंदू' को लेख मत भेजना।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

होटल अंबेसेडर
शनिवार, 22.2.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा पत्र मुझे आज ही मिला, धन्यवाद। मैं साथ में दो पाउंड भेज रहा हूँ। अभी भी मैं लंबा पत्र लिखने की स्थिति में नहीं हूँ। मेरा कार्यक्रम इस प्रकार है—

1. 25 फ़रवरी, मंगलवार को — लुसाना जाऊँगा।

2. 26 तारीख, को लुसाना में — पंडित नेहरू से मिलूँगा।

3. 27 तारीख को लुसाना में — विलेन व्यू में रोलां से मिलूंगा।

4. 27 और 28 को — बैग्स्टीन के लिए रवाना होऊंगा।

(कुरहांस हॉकलैंड, बैगस्टीन)

मेरे पेरिस छोड़ने के पश्चात् जब तक मैं बैगस्टीन में निश्चित रूप से ठहरता नहीं तब तक कोई महत्वपूर्ण बात या पत्र नहीं लिखना। मैं एक जगह नहीं ठहरूँगा इसलिए पत्र खो जाने की आशा है। लुसाना में मेरा पता होगा – द्वारा मैसर्स वैगन–लिट्स/कुक लुसाना, श्विज़।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्चः–मैंने तुम्हारे सभी पत्र पढ़ लिए हैं।

सुभाष चंद्र बोस
कुरहाँस हॉकलैंड
बैगस्टीन
3.3.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

आज प्रातः मैं यहॉ पहुँचा हूॅ। 28 फरवरी को श्रीमती नेहरू की मृत्यु के कारण मुझे लुसाना में देर हो गई। मुझे आशा थी कि यहाँ पहुँचने पर मुझे तुम्हारा पत्र और लेख मिलेगा। मैं बहुत थक गया हूँ इसलिए शांति से आराम करना अच्छा लग रहा है। तुम कैसी हो? यहॉ बहुत सुंदर स्थल है। मैं यहाँ स्कीइंग करना चहता हूँ। तुम्हारे माता–पिता को मेरा प्रणाम।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

बैगस्टीन
4.3.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

आज मैं तुम्हारे 22 जनवरी और 8,12,15,19,20 तथा 25 फरवरी के पत्रों का जवाब देने बैठा हूँ।

यह जानकर हर्ष हुआ कि तुम आजकल नित्य नियम से दो विएना के समाचार पत्र पढ़ रही हो। यद्यपि उनमें आस्ट्रिया के विषय में पूर्ण जानकारी नहीं होगी लेकिन फिर भी वे बल्कान के विषय में उपयोगी जानकारी दे सकते हैं।

यदि तुम डॉ0 एल्वीरा को मिलो या बातचीत हो तो उन्हें मेरा प्रणाम भी कहना। उन्हें बता देना कि मैं भविष्य में कहीं भी क्यों न रहूँ लेकिन उन्होंने मेरी रूडाल्फीनर हौस में जो देखभाल की उसे कभी भूल नहीं सकता। मेरे विचार से यूरोप छोड़ने से पूर्व मेरा उनसे मिल पाना संभव नहीं हो पाएगा। वे इतनी भली महिला हैं कि उन्हें इसी जीवन में सब सुख प्राप्त होंगे।

तुम्हारे 12 तारीख के पत्र के साथ संलग्न कागज भी मिला। क्योंकि पत्र खुला था इसलिए मेरा विश्वास है कि बंबई के अधिकारियों की लिस्ट में तुम्हारा नाम भी अवश्य आ चुका होगा।

'दास लेटजेट फोर्ट' में भारतीयों की कोई चर्चा नहीं है? उसमें क्या केवल कुर्द और नीग्रो की ही चर्चा है? कृपया मुझे इस फिल्म का थोड़ा सा विवरण भेजो। क्या इसकी कहानी भी 'बोसांबो' की कहानी से मिलती–जुलती है?

भूलवश मैं तुम्हारे लिए अंग्रेजी शब्दकोष का आर्डर नहीं दे पाया। यह कार्य आज कर रहा हूँ। यह कार्ल्सबाद होती हुई मेरे नाम से आएगी अतः तुम छुड़ा लेना।

मैं टाइम्स बुक क्लब को युद्ध पूर्व के यूरोपीय इतिहास के लिए भी लिख रहा हूँ। मुझे खेद है कि मैं यह पहले नहीं कर पाया। यदि मुझे तुम्हारे लिए उपयुक्त पुस्तक मिल गई तो मैं तुम्हारे लिए भी एक खरीद लूंगा। मेरी पुस्तकों में एक बहुत अच्छी पुस्तक जो युद्ध पूर्व के अंतर्राष्ट्रीय मसलों पर है किंतु मुझे डर है कि वह तुम्हारे लिए बहुत लंबी और लाभकारी होगी। तुम अधिक लोकप्रिय पुस्तक चाहती हो।

कार्ल्सबाद के श्री स्टीनर तुम्हें यहूदियों की विचारधारा के विषय में उपयोगी सूचना दे सकते हैं। किंतु तुम्हें अरब विचारधारा से संबंधित सूचना की अधिक आवश्यकता है।

सीरिया के लिए, मैं एक ऐसे सीरियाई नेता का कार्ड भेज रहा हूँ जिसे देश निकाला दे दिया गया और जो अब जेनेवा में रह रहा है। तुम मेरा यह कार्ड भी साथ भेजकर भारतीय प्रेस के लिए अधिक सूचना एकत्र कर सकती हो। उन्हें बता देना कि वे फ्रांसीसी भाषा में लिख सकते हैं और तुम्हें सूचनाएं फ्रांसीसी भाषा में ही उपलब्ध कराएं। यदि संभव हो तो उसे फ्रांसासी भाषा में ही पत्र लिखना क्योंकि वह केवल वही भाषा जानता है। यदि फ्रांसीसी भाषा में न लिख पाओ तो अंग्रेजी में लिखना। मेरे विचार से उसके सचिव को अंग्रेजी आती है।

तुम्हारा विज़िटिंग कार्ड ठीक है। अपने पहले लेख के साथ यह कार्ड मत भेजना, किंतु अपना पहला (व्यक्ति) कार्ड भेज सकती हो। 'द हिंदू' के संपादक से नियुक्ति पत्र के विषय में भी पूछ लेना। जब वह तुम्हें मिल जाए तो तुम अपना नया कार्ड भी भेज सकती हो। अंग्रेजी की विज़िटिंग कार्ड आवश्यक नहीं है।

प्रेस प्रमुख महामहिम नहीं होता। आस्ट्रियन प्रेस चीफ़ का दर्जा, मंत्री के बराबर है। इसलिए उसे माननीय मंत्री महोदय का संबोधन कर सकते हैं। तुम आस्ट्रियन प्रेस प्रमुख. से पत्र व्यवहार कर सकती हो लेकिन नियुक्ति पत्र आने तक इंतजार करो। अन्य प्रेस प्रमुखों से पत्र–व्यवहार के लिए नियुक्ति पत्र की प्रतीक्षा करना आवश्यक नहीं है। तुम्हें वकेर स्बुरो, विएनर, मैरे तथा अन्य विएना के अधिकारियों से पत्र–व्यवहार करना चाहिए जिन्हें विदेश में प्रचार कराने में दिलचस्पी हो। वर्केर स्बुरो के प्रमुख संभवतः स्ट्राफैला हैं और श्री फाल्टिस उन्हें जानते हैं।

दूतावासों के संबंध में– (1) सीरिया और पैलस्टीन औपनिवेशिक राज्य होने की वजह से उनके दूतावास नहीं हैं। (2) मिस्त्र का दूतावास

विएना में है। (3) अरेबिया (इब्न सउद) का दूतावास लन्दन में हैं न कि विएना में। (4) बल्कान देशों, टर्की सहित सभी के दूतावास हैं। (5) ईराक का दूतावास लंदन एवं अन्य देशों की राजधानियों में हैं, किंतु शायद विएना में नहीं है। ब्रिटिश दूतावास से सूचना हेतु पत्र व्यवहार करना व्यर्थ है।

मुझे प्रसन्नता है कि तुम अपने फ्रेंच भाषा के पाठ जारी रखे हुए हो। यह बहुत महत्वपूर्ण है। मैं साथ में दो फ्रांसीसी पते भेज रहा हूँ ताकि तुम उनसे पत्र–व्यवहार कर सको। तुम उनसे संपर्क करके कह सकती हो कि श्रीमती व श्री वुड्स, जो 131,मोर हैंपटन रोड, डब्लिन (आयरलैंड) के निवासी हैं, ने आपसे संपर्क करने को कहा था। शुरू–शुरू में बहुत ही नम्रता भरा पत्र लिखना। दोनों पते बिल्कुल अलग–अलग हैं किंतु यदि तुम्हें यह महसूस हो कि तुम पत्र–व्यवहार जारी नहीं रख पाओगी तो कृपया पत्राचार प्रारम्भ नहीं करना।

मुझे हर्ष हुआ कि तुम पहले से बेहतर हो। क्या वाकई ऐसा है।

भारत से आया पार्सल 'आइनशरे बेन' जो डब्लिन से रिडायरेक्ट किया गया, मुझे समय पर मिल गया था।

'द हिंदू' के लिए तुम्हारे प्रथम लेख की रूपरेखा बहुत अच्छी है। अब मैं पूरा लेख देखना चाहता हूँ।

'टाइम्स' में से तुम जितना चाहो कटिंग कर सकती हो। मेरी चिंता मत करना।

जब मैं पेरिस में था तब मुझे तुम्हारे दो लंबे पत्र मिले थे।

पैलस्टीन इंग्लैंड के अधिकार में हैं। सीरिया फ्रांस के अधीन है। अरेबिया स्वतंत्र है जिसके एक भाग पर इब्न सउद (मक्का जैसे धार्मिक स्थलों के सहित) का अधिकार है और दूसरे भाग पर यमन के इमाम का अधिकार है। मिस्त्र का राजा नाममात्र को है, किंतु वह अंग्रेजों के संरक्षण में है।

यदि अभी तक तुमने तुर्की के प्रेस प्रमुख से संपर्क नहीं किया है तो कर लेना चाहिए। मिस्त्र के लिए नाहस पाशा से पत्र–व्यवहार करना व्यर्थ है।

भारतवासियों को पाठ पढ़ाने से पहले तुम्हें ठीक प्रकार सोच विचार कर लेना होगा। सामान्यतः वे लोग सोचते हैं कि कोई महिला उनके साथ मौजमस्ती करे और उन्हें नृत्य सिखाए। कुछ महिलाएं इस प्रकार की हैं भी और मुझे डर है कि तुम्हें भी उनमें से एक ही न समझ लिया जाए। डॉ0 सेन का व्यवहार तुम्हारे साथ कैसा है?

उदय शंकर के विषय में तुम्हें सूचना किसने दी? मुझे उम्मीद है कि वह अग्निहोत्री के जाल में नहीं फंसेगा।

मुझे उम्मीद है कि अब तक तुम हंगरी के प्रेस प्रमुख से मिल चुकी होगी। कृपया मुझे एच के विषय में नारीमन का लिखा लेख भिजवा दो।

तुम्हारे कुछ और प्रश्नों का उत्तर देकर मैं यह पत्र समाप्त करता हूँ।

(1) लोथार्नो समझौता कई वर्ष पहले 9 यूरोपीय शक्तियों के मध्य लोथार्नो में हुआ था। उसमें यह समझौता किया गया था कि वे यूरोप में शांति रखेंगे और यदि किसी शक्ति पर बाहर से आक्रमण होता है तो वे उसकी सहायता भी करेंगे। समझौते का सही वर्ष मुझे याद नहीं संभवतः 1925 था।

(2) स्ट्रेसा सम्मेलन, इटली के स्ट्रेसा शहर में इंग्लैंड, फ्रांस और इटली के बीच संपन्न हुआ था। इसका उद्देश्य यह था कि जर्मनी के विरूद्ध तीनों देश आपस में एक हों।

(3) रोमन पैक्ट से अभिप्राय संभवतः यह था कि इटली, आस्ट्रिया और हंगरी का आपस में आर्थिक और राजनीतिक सहयोग का समझौता हुआ। यह समझौता पिछले वर्ष ही हुआ था।

(4) लिटिल एंटेट से अभिप्राय चेकोस्लोवाकिया, यूगोस्लाविया तथा रोमानिया हैं। हंगरी इनके विरूद्ध है।

(5) बल्कान एंटेंट से अभिप्राय टर्की, ग्रीस, रूमानिया और यूगोस्लाविया है।बुल्गारिया और अल्बेनिया इससे अलग हैं।

आज या कल मैं तुम्हें एक और पत्र लिखूंगा। उसकी प्रतीक्षा करना। यहाँ बहुत सुंदर और शांत जगह है। खूब बर्फ है। तुम कैसी हो?

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

कुरहास हाकलैंड
बैगस्टीन
7.3.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

मेरे विचार से मैंने तुम्हारे सभी पत्रों का उत्तर दे दिया है सिवाय आखिरी दो के जो मुझे कल और आज मिले। दोनों के लिए धन्यवाद।

(1) क्या मैंने पेरिस से तुम्हें फ्रेंच अखबार 'ला लुमीरी' की कटिंग भेजी थी।उसमें मेरा साक्षात्कार प्रकाशित हुआ था। यदि नहीं, तो एक भेज दूंगा। पेटिट पेरीसियन की कटिंग भी भेजूंगा जिसमें पंडित नेहरू व मेरे अपने विषय में एक लेख प्रकाशित हुआ है।

(2) क्या तुम्हें ध्यान है कि मैंने पटेल के पत्रों का बंडल कहाँ रखा है। यहाँ मेरे पास काफी समय है, मैं उन्हें पढ़ना चाहता हूँ। कृपया मुझे सूचित करो कि वे कहाँ हैं?

(3) मेरी बहुत इच्छा थी कि मैं विएना आता किंतु यह असंभव है। कुछ दिनों मुझे अपना ध्यान रखना होगा क्योंकि 18 तारीख को मैं बैगस्टीन से रवाना हो जाऊँगा। यदि मैं विएना गया तो मुझे स्नान

छोड़ने पड़ेंगे।

(4) कल माथूर का पत्र मिला, उसमें उन्होंने लिखा है कि वे डॉ0 सेन के साथ शायद बैगस्टीन आएंगे। यदि उनमें से कोई इधर आ रहा हो तो कृपया वे वस्त्र अवश्य भिजवा देना जो मुझे चाहिएं। भारत बिरजिस, उसी कपड़े का भारत में निर्मित कोट, स्वैटर और गर्म कमीज। संभवतः दूरबीन भी भिजवा सको। वह मेरे भाई की है अतः मैं चाहूंगा कि मैं उसे लौटा दूं। यदि कुछ और तुम्हें याद आ जाए जिसे तुम मेरे लिए आवश्यक समझो, वह भी तुम भिजवा सकती हो।

(5) मैं निंरतर सोच रहा हूँ कि पेंशन कास्मापोलाइट में पड़े मेरे ट्रंकों का क्या करूँ। क्या श्रीमती वैटर से कहूँ कि वे मेरे लिए उन्हें अपने यहाँ रख लें। जो भी विचार बनेगा, मैं तुम्हें लिखूंगा।

(6) अमीर चेकिब अर्सलान का पता यह है–

माननीय अर्सलान लेमीर चेकिब

ए0 वी0 ई0 हैंट सेह 9

जेपेचस (जेन्फ़)

मेरा विश्वास है कि इस बीच उन्होंने अपना पता बदला नहीं होगा। पत्र के दूसरी ओर 'एब्सेंडर' लिखना मत भूलना ताकि वे न हों तो पत्र तुम्हें वापिस मिल जाए। मैंने श्री जेनी को लिख दिया है कि वे इस विषय में उनसे संपर्क करने की कोशिश करें तथा एक अन्य सीरियाई राष्ट्रवादी नेता माननीय एल–जाबरी से भी मिलने का प्रयास करें।

(7) मैं पेरिस को टर्की के विषय में सूचना उपलब्ध कराने के लिए लिख रहा हूँ। इस बीच तुम तुर्की के प्रेस प्रमुख से संपर्क कर सकती हो।

(8) मैंने 'टाइम्स' का 16 मार्च तक का चंदा भिजवा दिया है। यह 8 शिंलिंग (ब्रिटिश) प्रति माह है। मैं सोचता हूँ कि तुम्हें टाइम्स की पुरानी प्रति सस्ते दाम में मिल जानी चाहिए। विएना में लगभग एक दर्जन कैफ़े ऐसे हैं जहाँ टाइम्स की प्रतियां आती हैं। यदि उनमें से किसी एक

से तुम कम दाम पर पत्र लेने का प्रबंध कर सकोगी तो बेहतर रहेगा।

(9) लंदन स्थित इराकी और अरेबियन दूतावास से संपर्क करना व्यर्थ है।

(10) यदि कोई बैगस्टीन आ रहा हो तो मेरा हल्का कोट अवश्य भिजवा देना। और तुम्हारे पास कौन–कौन सी चीज़ें हैं?

(11) तुम्हारे पत्रों के शेष प्रश्नों के विषय में मैं बाद में लिखूंगा। पहले तुम्हारा लेख पढ़ लूं। मैं उसे कल की (रविवार) डाक से भेजने का प्रयत्न करूँगा ताकि सोमवार को तुम्हें मिल जाए, तत्काल उसे टाइप करके सोमवार की शाम को ही डाक में डाल देना। मेरे विचार से इंडिया एयरमेल विएना से मंगलवार और शनिवार (प्रातः 6 बजे) हौप्ट पोस्ट से जाती है इसलिए तुम्हें रविवार या बृहस्पतिवार की शाम ब्रांच आफिस में डाक डाल देनी चाहिए।

(12) हिंदू ने तुमसे कितना लंबा लेख मांगा है, मैं यह भूल गया हूँ। तुम्हारा आलेख (प्रारूप) काफी छोटा है। तुम हिंदू के एक कालम के शब्दों की गिनती करो और यह सुनिश्चित कर लो कि संपादक ने जितना बड़ा लेख मांगा है लेख उससे छोटा न हो।

(13) मैंने 'हिंदू' को पत्र लिखा है जिसमें लिख दिया है कि तुम्हारा लेख इस माह के मध्य तक अवश्य मिल जाएगा। इसलिए यदि मंगलवार की डाक से नहीं भी भेज पाओंगी तो भी कोई चिंता नहीं है। आज इतना ही।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

कुर्लहास हाकलैंड
बैगस्टीन
रविवार,
8.3.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

यह कार्ड मैं तुम्हें यह सूचित करने के लिए लिख रहा हूँ कि तुम्हारा लेख मैं आज नहीं भेज पाऊंगा। अतः तुम्हें आगामी एयरमेल (शुक्र या रविवार) तक इंतजार करना होगा। मुझे आशा है कि मैं मंगलवार को तुम्हारा लेख भेज सकूँगा ताकि तुम्हें बुधवार को मिल जाए।

श्री नांबियार ने तुम्हारे लिए दो सुझाव भेजे हैं जो अच्छे हैं, और मैं भी इनसे सहमत हूँ।

(1) पहला यह कि तुम्हारा हिंदू के लिए लेख महिला आंदोलन और सिनेमा समाचारों पर होना चाहिए। उनका कहना है कि हिंदू की इन विषयों में काफी दिलचस्पी है। इसलिए जब तक तुम्हारा बल्कान का पत्र व्यवहार निश्चित नहीं हो जाता तब तक तुम्हें प्रतीक्षा करनी चाहिए। ये सब बातें मैं तुम्हें इस समय इसलिए लिख रहा हूँ ताकि तुम इन्हें अपने दिमाग में बैठा लो। यदि 'हिंदू' तुम्हारे बल्कान पत्र व्यवहार से प्रसन्न हो जाते हैं तो फिर तुम उन्हें ये विषय (महिला एवं सिनेमा) सुझा सकती हो।

(2) तुम्हें भारत से कुछ आकर्षक फोटोग्राफ मँगाने चाहिए और उन्हें वीनर बिल्ड आदि जैसे चित्रात्मक पत्रिकाओं में प्रेषित करो। यह तो निश्चित ही है कि मुझे ऐसी व्यवस्था करनी होगी जिससे तुम्हें भारत से चित्र मिल सकें। इस बीच तुम विएना और स्विस पत्रिकाओं से पत्रव्यवहार कर यह मालूम करो कि उन्हें भारत के चित्र प्रकाशित करने में रूचि हैं अथवा नहीं, यदि वे भारतीय चित्र प्रकाशित करना स्वीकार कर लेते हैं तो कितना पारिश्रमिक देंगे। यदि हमें भारत से चित्र उपलब्ध हो

जाते तो तुम्हें भारतीय विक्रेताआं की अपेक्षा आधी कीमत अदा करनी होगी।

शेष बाद में,

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

10.3.36

टिप्पणियाँ–

(1) अंग्रेजी खराब है।

(2) द सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी कभी भी सरकार की नियंत्रक नहीं रही (कुछ सप्ताह के अतिरिक्त) उसका केवल विएना शहर पर अधिकार था। 1934 में उसे विएना म्यूनिसिपैलिटी से भी बाहर कर दिया गया था।

(3) आस्ट्रिया में कैथोलिक पार्टी को कभी भी केंद्रीय पार्टी नहीं कहा गया। वह क्रिश्चियन सोशल पार्टी कहलाती थी।

(4) यह कहना गलत है कि क्रोट्स और स्लोवंस पुनः आस्ट्रिया आना चाहेंगे। यह तुम्हें किसने बताया?

(5) तुम्हारा यह कहना गलत है कि इटली हैप्सबर्ग के पुनरूद्धार के विरूद्ध है। केवल जर्मनी विरोधी है न कि इटली।

बेहद खराब! बहुत निराशाजनक! अंग्रेजी भी बहुत खराब है।

सन 1945 में ओटोमान तुर्कियों ने बोसफोरस पार करके कांसटैनटिनपोल पर कब्जा कर लिया था। वही युरोप में ओटोमन अथवा तुर्की साम्राज्य का अवसान था। 1918 में संयुक्त राज्यों ने कांसटैनटिनपोल पर कब्जा कर लिया और सुल्तान को उसके ही महल में बंदी बना दिया था। वही यूरोप में तुर्की साम्राज्य का अंत था। विलि तुर्क वासी

अनातोलिया के पर्वतों में चले गए फिर उन्होंने अपने देश कें अस्तित्व के लिए संघर्ष किया। उन्होंने अनातोलिया की रक्षा की, कांस्टैनटिनपोल को वापिस अपने अधिकार में लिया तथा थ्रास पर भी कब्जा किया। यह सन 1922 की बात है। किंतु यूरोप के नक्शे से तुर्की साम्राज्य हमेशा के लिए हट गया। लगभग 500 वर्ष तक यूरोप में बल्कान का इतिहास ही तुर्की इतिहास था।

सन 1453 में जब कांस्टैनटिनपोल तुर्क से हार गया तो दो देशों में तुर्की राज्य पश्चिम व उत्तर पश्चिम की ओर फैलना शुरू हुआ। ग्रीस, बुल्गारिया, यूगोस्लाविया, हंगरी, अल्बेनिया सभी तुर्की राज्य थे। फिर एक शुभ घड़ी ऐसी भी आई कि जब तुर्की सेनाओं का सामना विएना की दीवरों से हुआ। यदि विएना हार जाता तो तुर्क साम्राज्य पश्चिमी यूरोप तक फैल जाता। सन् 1683 में दो निराशाजनक आक्रमणों के पश्चात् तुर्कियों को वापिस भगा दिया गया और क्रिश्चियन यूरोप बच गया। वापिस तो हो गया लेकिन जाने से पहले वह क्रिश्चियंस को काफी पीना सिखा गया। 1683 के पश्चात् तुर्की साम्राज्य का पतन प्रारंभ हुआ, किंतु, लगभग 250 वर्ष तक तुर्कियों ने संघर्ष जारी रखा।

18वीं सदी के अंत में फ्रेंच विद्रोह के दौरान तुर्की साम्राज्य पर रोक लगी। तब तक यूरोप के लोग साम्राज्यों, जातियों व कुल जैसे विचारों से घिरे थे। फ्रांसीसी विद्रोह तथा नेपोलियन के नेतृत्व में हुए संग्राम के पश्चात् ही लोगों ने राष्ट्रीयता के विषय में सोचना प्रारंभ किया। पूरा बल्कान प्रायद्वीप एक राष्ट्रीय भावना से प्रभावित था। सर्ब, ग्रीक और रूमानिया में तुर्की राजाओं के विरूद्ध विद्रोह प्रारंभ हो गए।

किंतु तुर्की अभी भी बहुत शक्तिशाली थे और उनकी सेनाएं अद्भूत थीं। यदि बल्कानवासी अपनी शक्ति एवं संसाधनों पर ही निर्भर रहते तो तुर्क साम्राज्य को उतार फेंकने में युग बीत जाते। किंतु बाहय शक्तियों ने उनका साथ दिया। 1815 में नेपोलियन के पतन के पश्चात दो उपनिवेशिक शक्तियों—आस्ट्रिया और रशिया का अभ्युदय हुआ। अपने

औपनिवेशवाद से प्रेरित होने के कारण तथा तुर्की राज्य के अधीन क्रिश्चयन जनसाधारण के प्रति सहानुभूति के कारण ही 19वीं सदी में आस्ट्रिया और रूस का मुख्य उद्देश्य तुर्की साम्राज्य को उखाड़ फेंकना था। रूस सहानुभूति के कारण अधिक सक्रिय हुआ। बल्कान के अधिकांश लोग जैसे सर्ब और बुल्गार्स आदि क्योंकि स्वयं स्लाव जाति के थे इसलिए उनका झुकाव अपने जैसे रूसी लोगों की ओर हुआ और उन्होंने रूस को तथा वहाँ के वासियों को अपना माना तथा उन्हें ही रक्षक मान लिया। रूस ने भी इस भावना का पोषण किया और जान बूझकर पान–स्लाव आंदोलन को प्रोत्साहित किया, उन्हें आशा थी कि वे इस प्रकार बल्कान प्रायद्वीप में अपना अधिक से अधिक प्रभाव बना लेंगे।

तुर्की के आंतरिक विद्रोहों की अपेक्षा यूरोपीय बड़ी शक्तियों का दबाव अधिक था जिसके कारण ओटोयन राजाओं को बल्कान लोगों की राष्ट्रीय भावनाओं को अधिक छूट देनी पड़ी। पहली स्थिति यह आई जब तुर्की सुल्तान के अधिराज्य के अंतर्गत ही सर्बिया और ग्रीस को स्वायत्तता दी गई। किंतु जल्दी ही वह क्षीण सूत्र भी टूट गया जिसने इन्हें तुर्की राज्य से बांध रखा था। सन 1830 से 1880 के मध्य अधिकांश बल्कान देशों ने काफी हद तक स्वतंत्रता प्राप्त कर ली थी और बल्कान लोगों को उन युद्धों से फायदा पहुंचा जो टर्की ने लड़े थे।

इस विषय में यह जान लेना चाहिए कि जैसे ही बल्कान से तुर्कियों ने हटना प्रारंभ किया, तो उस रिक्त स्थान पर स्वतंत्र बल्कान राज्यों के प्रवेश के साथ–साथ आस्ट्रियाई साम्राज्य ने भी अपनी घुसपैठ शुरू कर दी। उदाहरणार्थ आज के यूगोस्लाविया, जिसमें से सर्बियों को निकाल दिया जाय जो तुर्की के सुल्तान से आस्ट्रिआई राजा ने अपने हाथों में ले लिया। रूस चाहता था कि वह बल्कान में तुर्की साम्राज्य के हाथों मुक्त हुए प्रांतों को आस्ट्रिया के कब्जे से बचाए, किंतु वह ऐसा नहीं कर पाया क्योंकि यूरोपीय शक्तियां विशेषकर ब्रिटेन उसके विरूद्ध था। रूस और ग्रेट ब्रिटेन के मध्य दो कारणों से मतभेद था। पहला–रूस और

ब्रिटेन दोनों ही एशिया में बड़ी तेजी से आगे बढ़ रहे थे। दूसरे–ग्रेट ब्रिटेन को यह चिंता थी कि यदि तुर्की साम्राज्य का बिल्कुल अंत हो गया तो बोसफोरस और डार्डानेल्स सीधे ही रूस के कब्जे में आ जाएँगे और वह भूमध्य की शक्ति बन जाएगा और स्वेज कैनाल में उनके लिए समस्या बन जाएगी। ब्रिटेन के इस कार्य के परिणामस्वरूप तथा बाद में जर्मनी द्वारा रूस के विरोध के कारण रूस बल्कान में तुर्की साम्राज्य पर अपना अधिकार नहीं जमा पाया।

(अस्पष्ट) जब 19वीं सदी में, आस्ट्रिया व रूस जैसी–बाहय शक्तियां तुर्की साम्राज्य को उखाड़ फेंकने की योजना बना रहीं थीं तब पश्चिमी यूरोपीय शक्तियां, जो रूस से आशंकित थीं, वे रूस को यूरोप में तुर्की साम्राज्य पर अधिकार जमाने से रोकने में लगी थीं।

तुर्की साम्राज्य का तो अंततः पतन होना ही था किंतु प्रश्न यही था कि तुर्की साम्राज्य का स्थान अब कौन ले? क्या बल्कान प्रायद्वीप स्वतंत्र राज्यों का संगठन होगा या कोई अन्य औपनिवेशिक शक्ति उस प्रायद्वीप पर अपना अधिकार जमाएगी? इस प्रश्न का हल निकल आया, वह कि आस्ट्रिया ने प्रायद्वीप पर अपना अधिकार जमाएगी? इस प्रश्न का हल निकल आया, वह कि आस्ट्रिया ने प्रायद्वीप के अधिकांश भाग पर अपना कब्जा कर लिया था और उसका उसे छोड़ने का कोई विचार भी नहीं था। बाद में बुल्गारिया जब तुर्की से मुक्त हुआ, रूस की सहायता से, तो रूस चाहता था कि वह उस पर अपना आधिपत्य बना लें किंतु अन्य शक्तियों के दबाव के कारण वह ऐसा नहीं कर पाया। इस प्रकार बुल्गारिया को अपनी आजादी रूस से उपहारस्वरूप प्राप्त हुई। इस तथ्य को आज भी बुल्गारिया के लोग स्वीकार करते हैं तथा अपनी राजधानी, सोफिया में उन्होंने रूस के प्रति आभार प्रकट करने के लिए एक विशाल स्मारक बनाया है।

बल्कान प्रायद्वीप में रूस की औपनिवेशिक कुंठा और उसकी तुलना में आस्ट्रिया की सफलता ने दोनों देशों के मध्य तनाव पैदा कर

दिया। वर्तमान सदी के अंत तक यह स्पष्ट हो गया है कि दोनों देश शीघ्र ही संघर्ष करके यह निर्णय कर लेंगे कि बल्कान प्रायद्वीप पर किसका आधिपत्य होगा। एंग्लो–जर्मन दुश्मनी की वजह से ही बल्कान युद्ध विश्वयुद्ध में परिवर्तित हो गया था। किंतु यदि जर्मनी साम्राज्य 1870 में अस्तित्व में न आया होता और 1974 में विश्वयुद्ध न भी हुआ होता तो भी बल्कान मसले पर आस्ट्रिया और रूस के मध्य युद्ध अवश्य होता।

यदि हम विश्वयुद्ध के तात्कालिक कारणों पर विचार करें तो आश्वस्त हो जाएँगे कि यूरोप के इस हिस्से में संघर्ष अवश्यंभावी था। जून 1974 में आस्ट्रियाई साम्राज्य के अंतर्गत सराजीवों में आस्ट्रियाई आर्कड्यूक की हत्या कर दी गई। हत्यारा एक सर्ब था और जांच पड़ताल से पता चला कि ृाड्यंत्रकारी लीग के लोग थे जो सर्ब सेना के अधिकारियों से मिले हुए थे और उन्हें हथियार आदि भी सप्लाई करते थे। प्रथम दृष्टा केस से बना जिसमें यह सिद्ध हो गया कि इसके पीछे सर्बियन सरकार का हाथ था जिसके विरोध में विएना से बैलग्रेड को एक सख्त अल्टीमेटम भी भेजा गया। यद्यपि वह अल्टीमेटम किसी भी सरकार के लिए किसी कड़वी गोली से कम न था, किंतु आस्ट्रिया की अपेक्षा सर्बिया एक बहुत ही छोटा देश था। यदि उसे किसी का सहारा नहीं मिलता कि वह हर हाल में शर्त में आस्ट्रिया से समझौता कर लेता, किंतु चूंकि प्रारंभ से ही रूस उसके (सर्बिया) साथ था इसलिए उसने आस्ट्रियाई अल्टीमेटम था पालन करने से इंकार कर दिया। इसलिए सर्बिया से आस्ट्रिया ने युद्ध करने की घोषणा कर दी। रूस अपने शरण में आए सर्बिया की सहायता करने को सामने आया, इससे युद्ध क्षेत्र विस्तृत होने लगा जिसके परिणामस्वरूप विश्वयुद्ध प्रारंभ हुआ। यदि इन घटनाओं पर ध्यान दें तो इसमें कोई संदेह नहीं रह जाता कि रूस ने ही सर्बिया को प्रेरित किया कि वह आस्ट्रियाई सीमा क्षेत्र में रहने वाले सर्ब तथा अन्य जाति के लोगों द्वारा वहाँ समस्या खड़ी करना रूस और सर्बिया चाहते थे कि आस्ट्रियाई साम्राज्य से बल्कान में रह रही स्लाव जाति को छुटकारा मिल सके। सर्बिया राष्ट्रीय आधार पर इसका इच्छुक था जबकि रूस पैन–स्लाविक

जाति के हित में था आस्ट्रिया के प्रति घृणा के कारण ऐसा चाहता था। विश्वयुद्ध के कारण बल्कान की स्थिति बिल्कुल बदल गई। 1918 तक तो बल्कान प्रायद्वीप औपनिवेशिक आक्रमणों का शिकार रहा। किंतु विश्वयुद्ध के पश्चात तीन महाशक्तियां—तुर्की, आस्ट्रिया और रूस बल्कान क्षेत्र से अलग हो गईं। आज हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अंततः बल्कान प्रायद्वीप को औपनिवेशिक ताकतों से छुटकारा मिला।

किंतु इसका क्या यह अर्थ था कि बल्कान समस्या सदा के लिए हल हो गई। नहीं विश्वयुद्ध ने पुराने संकट हल किए तो कुछ नई समस्याएं भी पैदा कीं। आज हम बल्कान देशों को लाभ तथा अलाभकारी दो क्षेत्रों में बांट सकते हैं। लाभ में रहने वाले देश थे यूगोस्लाविया और रूमानिया। हानि में रहने वाले देश बुल्गारिया और हंगरी, यदि हम इस देश को भी बल्कान क्षेत्र का मानें तो हानि में रहने वाले देश अपनी सीमाओं का पुनर्मूल्यांकन करना चाहते थे। इसके इलावा यूगोस्लाविया में आंतरिक कलह भी शुरू हो गई उधर बुल्गारिया में मैकेडोनियन प्रश्न जोर—शोर से उठ खड़ा हुआ, जो कि ग्रीस और यूगोस्लाविया में पहले ही था।

नहीं, अभी भी बल्कान समस्या का सदा के लिए अंत नहीं हो पाया। बल्कान के लोग ऊपर से फिलहाल शांत है। किंतु ऊपरी सतह के नीचे की हलचल अभी भी सुनी जा सकती है। यद्यपि कुछ समय के लिए जर्मनी और आस्ट्रिया ने पूरे विश्व का ध्यान अपनी ओर खींचा किंतु बल्कान प्रायद्वीप यूरोप में उठ रहे तूफान का केंन्द्र था।

कुर्लहास हाकलैंड
बैगस्टीन
11.3.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

(1) कुछ जर्मन सामग्री संलग्न है। कृपया इसका जल्दी से

जल्दी अनुवाद करके मूल पाठ सहित मुझे भिजवाओ।

(2) मैंने तुम्हारे लिए यूरोपीय इतिहास का आर्डर बुक करवा दिया है। वह लंदन से सीधे तुम्हारे ही नाम से आएगी।

(3) आक्सफोर्ड डिक्शनरी मेरे नाम से कार्ल्सबाद होती हुई आएगी। क्या अभी तुम्हें मिली या नहीं?

(4) क्या तुमने किसी कैफ़े में टाइम्स के बारे में पूछताछ की?

(5) कल मुझे तुम्हारा पोस्टकार्ड मिला था। तुमने कहा था कि तुम मुझे कुछ कपड़े और पटेल के पत्र भिजवा रही हो। कैसे? मुझे उम्मीद है कि डाक द्वारा नहीं। मुझे अब उनकी आवश्यकता नहीं हैं क्योंकि अब मौसम स्कीइंग के योग्य नहीं हैं और मैं नहीं चाहता कि तुम उन्हें भिजवाने में डाक खर्च करो। अपने पत्र में मैंने तुम्हें लिखा था कि तुम उन्हें तैयार रखना और जब मैं लिखूं तब भेजना। पिछले पत्र में भी मैंने लिखा था यदि माथुर या सेन बैगस्टीन आ रहे हों तो उनके हाथ में चीजे भिजवा सकती हो। किंतु मुझे डाक द्वारा ये चीजें नहीं चाहिए। इसलिए अब उन्हें डाक द्वारा मत भेजो।

आशा है तुम स्वस्थ हो।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्चः—क्या कांस्यूलेट को सूचित कर दिया? उन्होंने क्या कहा?

सुभाष चंद्र बोस
कुर्लहास हौकलैंड
बैगस्टीन
12.3.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा लेख ठीक करके साथ में भेंज रहा हूँ। तुम इसे तत्काल

भेज सकती हो। कृपया अपने अगले पत्र में मुझे सूचित करो कि हिंदू के एक कॉलम में कितने शब्द हैं।

हाँ, तुम्हें मेजर बसु की बात मान लेनी चाहिए। इसमें कोई शक नहीं। इंग्लैंड जाने का तुम्हारे लिए यह अच्छा मौका है। मुझे आशा है कि तुम्हारे माता–पिता तुम्हें जाने की आज्ञा दे देंगे।

यह पत्र मैं जल्दी में लिख रहा हूँ क्योंकि डाक में तत्काल डालने की जल्दी में हूँ।

मुझे सूचित करो कि क्या तुम्हें कैफे से टाइम्स उपलब्ध हो पाएगा अथवा नहीं। अन्यथा मुझे तत्काल लंदन पत्र लिखना होगा। लंदन से टाइम्स केवल 16 मार्च तक ही आएगा।

मैं ठीक–ठाक हूँ। मेजर बासु की बात मान लो।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

कर्लहॉस हौकलैंड
बैगस्टीन
आस्ट्रिया
12.3.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

अभी–अभी मुझे तुम्हारा भेजा पार्सल मिला और मैं तुम्हें बता नहीं सकता कि मैं तुमसे कितना नाराज हूँ। मैं नहीं जानता किसके निर्देश पर तुमने यह सब भेजा है। ये सब व्यर्थ हैं क्योंकि अब यहाँ बर्फ नहीं है। और फिर, जितना सामान मेरे पास है मैं उससे अधिक सामान ले जा नहीं सकता इसलिए ये सब मुझे वापिस विएना भेजना होगा।

पिछले पत्र में मैंने तुम्हें लिखा था कि सब सामान तैयार रखना, ताकि आवश्यकता पड़ने पर मैं तुम्हें लिख सकूँ कि मुझे भिजवा दो। हाल

ही के पत्र में मैंने लिखा था कि यदि माथूर या सेन में से कोई इधर आ रहा हो तो उसके हाथ भिजवा देना। किंतु तुमसे डाक द्वारा भेजने को किसने कहा।

कृपया मुझे बताने का कष्ट करो कि तुमने डाक में इस पर कितना व्यय किया है।

मुझे पूरा विश्वास है कि तुम ऐसी ही मूर्खतापूर्ण बातों पर बहुत–सा पैसा व्यर्थ लुटाती हो।

मुझे उम्मीद थी कि तुम बहुत समझदार हो लेकिन अब पता चला कि तुम मूर्ख हो। मुझे बहुत दुख हुआ।

फिर तुम कपड़ों का पार्सल बनाकर भेज सकती थीं। सूटकेस में रखकर क्यों भेजे?

काश तुमने अपना दिमाग कम इस्तेमाल किया होता और मेरे निर्देशों पर अधिक ध्यान दिया होता।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्चः—पार्सल देखने से पता लगा कि एक्सप्रेस भेजने में तुमने और भी अधिक व्यय किया है। ऐसी क्या जल्दी थी—आश्चर्य है। तुमने इस बेकार की बात में व्यर्थ ही इतना पैसा खर्च किया।

सुभाष चंद्र बोस

कुर्लहास हॉकलैंड
बैगस्टीन
15.3.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

भारत सरकार से अधिकारिक तौर पर (विएना के कौंसिल द्वारा) मुझे सूचना मिली है कि जब मैं भारत में पहुंचूंगा तो वे मुझे स्वतंत्र नहीं रहने देंगे। इसका अर्थ है कि मैं जैसे ही भारत पहुंचूंगा मुझे सीधे जेल जाना होगा।

अब मैं सोच रहा हूँ कि मेरे इस सरकारी स्वागत के बावजूद मुझे भारत जाना चाहिए अथवा नहीं। संभवतः मैं जाऊँगा। फिर भी दो तीन दिन में मैं निर्णय ले लूंगा।

यदि मैं पानी के जहाज से गया तो मैं इटली की बंदरगाह के लिए 25 की सुबह बैगस्टीन से रवाना हो जाऊँगा और यदि वायुयान से गया तो 31 मार्च को बैगस्टीन से जाऊँगा। उम्मीद है कि मैं इटली के जहाज़ से ही जाऊँगा। यदि मुझे वहाँ जाना ही है तो कुछ आवश्यक कार्य है जो मुझे करना है–कुछ लेख लिखने हैं और अपनी पुस्तक का दूसरा संस्करण तैयार करना है। इसमें एक सप्ताह का कठिन परिश्रम चाहिए। क्या तुम एक सप्ताह के लिए यहाँ आ सकती हो? कृपया अपने माता–पिता से पूछ लो कि क्या वे तुम्हें एक सप्ताह घर से बाहर रहने की अनुमति दे देंगे।

यदि तुम्हारा यहाँ आना आवश्यक हुआ तो मैं तुम्हें पुनः लिखूंगा मेरा अगला पत्र मिलने तक तुम्हें कुछ और नहीं करना केवल मेरी पुस्तक का परिशिष्ट ठीक करना है और इसी से संबंधित अन्य कार्य करने हैं।

यदि तुम आओगी तो मेरा ट्रेंच कोट तथा दूरबीन लेती आना। अपने साथ कम से कम सामान लाना ताकि अधिक बोझ न हों तुम्हारी रेल यात्रा का खर्च मैं भेज दूंगा।

कृपया इस पूरी बात को गोपनीय रखना। अपने माता–पिता को भी बता देना कि किसी से इस विषय में चर्चा न करें। विएना में मैंने किसी को भारतीय सरकार की धमकी के विषय में नहीं बताया है। इसलिए जब तक मैं अन्य मित्रों को सूचित नहीं करता तब तक इस बात को गुप्त रखना है।

यदि मैं अभी घर नहीं जाता तो तुम्हें भी फिलहाल यहाँ आने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। मैं इस समय केवल इसलिए लिख रहा हूँ ताकि मेरे बुलाने पर तुम तत्काल आने को तैयार रहो।

माता–पिता को प्रणाम, तुम्हें व तुम्हारी बहन को प्यार।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्चः–आशा है कि तुम अपना पहला लेख हिंदू को भेज चुकी हो।

सुभाष चंद्र बोस
कुर्लहास हॉकलैंड

बैगस्टीन
आस्ट्रिया
सोमवार, 16.3.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

हाँ, मुझे घर अवश्य जाना होगा। इसलिए मुझे तत्काल सब तैयारियां करनी हैं। तुम्हारी यात्रा के खर्च के लिए मैं 40 शिलिंग भेज रहा हूँ। कृपया मेरे लिए निम्नलिखित चीज़ें लेकर आना।

(1) ट्रैंच कोट (लंबाकोट)

(2) मीडर (कमर की पेटी) यह किसी ट्रंक में बंद है।

कृपया हल्का वाला ओवरकोट (ग्रे रंग का) कास्मोपोलाइट की

मालकिन के पास ही छोड़ देना ताकि जब मैं मंगवाऊं तो वह डाक द्वारा भिजवा सके या किसी आने-जाने वाले के हाथ भिजवा दे। किंतु उसे अपने साथ लाने का कष्ट मत करना। केवल लंबा कोट ही लाना।

कपड़ों के दोनों ट्रंक खोलकर देख लेना। यदि तुम्हें कोई वस्तु ऐसी लगे जो भारत में मेरे काम आ सकती है तो लेती आना। लेकिन भारतीय कपड़े की सूती धोतियां मत लाना। मेरे पास एक जोड़ा और वे पर्याप्त हैं।

अपने उपयोग के लिए, जितना संभव हो कम से कम सामान लाना ताकि अधिक बोझ न उठाना पड़े।

तुम्हें कपड़ें आदि केवल एक सप्ताह के लिए लाने हैं। संभव है तुम्हें कुछ सामान अपने साथ वापिस ले जाना पड़े।

यदि तुम्हें मेरे कपड़ों में सफेद टोपी (गॉधी टोपी) मिल जाए तो ले आना।

आज सोमवार है, और तुम्हें यह पत्र शाम तक मिल जाएगा। क्या तुम कल (मंगल) चल सकोगी? यदि संभव हो तो मुझे यह तार दे देना।

बोस

कुर्लहॉस हॉकलैंड

बैंगस्टीन

पहूँच रही हूँ 10.15 (अथवा 15.02 अथवा 22.10)

इतना ही काफी है। तुम्हें अपना नाम लिखने की भी आवश्यकता नहीं है। यदि कल रवाना न हो पाओ तो कृपया एक्सप्रेस पत्र लिख देना वह समय पर पहुँच जाएगा। मुझे उम्मीद है कि तुम बुधवार को रवाना हो पाओगी।

विएना में किसी को यह बताने की जरूरत नहीं कि तुम यहाँ आ

रही हो अथवा वे मुझे जेल भिजवा देंगे।

तुम्हारा 14 तारीख का पत्र मुझे कल मिला। यह अच्छा ही है कि तुम्हारे पाठ खत्म हो चुके हैं वरना मुझे तुम्हारे कार्य में बाधा डालनी पड़ती।

संभवतः मैं फिलहाल पर्याप्त राशि नहीं भेज पाऊंगा। कृपया कोई व्यवस्था कर लेना, जब तुम यहाँ आओगी तब तुम्हें दे दूंगा।

अपनी टिकट के लिए तुम्हें रिजर्वेशन ब्यूरो पर जाने की जरूरत नहीं। क्योंकि बैगस्टीन आस्ट्रिया में ही है इसलिए तुम रेलवे स्टेशन से सीधे टिकट खरीद सकती हो। मेरे विचार से 33 शिलिंग लगेंगे–थर्ड क्लास में। गाड़ी का निश्चित समय मुझे मालूम नहीं, वह तुम स्वयं ओटेरिकर वर्केशब्यूरो से टेलिफोन करके पता कर लेना। किंतु मेरे विचार से कोई सीधी गाड़ी नहीं है। तुम्हें सेल्जबर्ग अथवा शाजक स्टवेल पर गाड़ी बदलनी पडेगी।

जब यहाँ आओ तो टिकट अपने पास ही रखना। माता–पिता को प्रणाम।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

15.3.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

आज प्रातः ही मैंने तुम्हें एक एक्सप्रेस पत्र लिखा है। तीन बातें मैं भूल गया था।

(1) 'इंडियन स्ट्रगल' तथा उस पर यदि तुमने कुछ नोट्स आदि बनवाए हैं तो वे अपने साथ लेती आना।

(2) अपना टाइपराइटर भी साथ लाना। कुछ टाइपिंग पेपर

(लगभग 100) तथा कार्बन भी लाना।

(3) अपने साथ 50 डाक के लिफाफे, 25 पतले लिफाफे एयरमेल के तथा कुछ डाक पैड (50 कागज) भी लाना।

यदि तुम्हारे पास समय न हो तो स्टेशनरी (कागज आदि) की चिंता मत करना। किंतु अपना टाइपराइटर लाना मत भूलना, क्योंकि वह अति आवश्यक है।

पतले कागज यहाँ बहुत महंगे हैं, अतः यदि तुम्हारे पास समय हो तो साथ लाना ही उचित रहेगा।

आशा हैं इसमें तुम्हें अधिक कष्ट नहीं होगा। मुझे मालूम है तुम्हें धनाभाव होगा, किंतु कोई व्यवस्था कर लेना।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

हॉस हाकलैंड
बीजी 17.3.36(मंगलवार)

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

संभवतः तुम्हें यह पत्र बहुत देर से मिलेगा। यदि समय पर मिल जाए तो कृपया एक चीज का ध्यान रखना। यहाँ एक महिला (हॉस फ्रा) के पास औरग्रा प्राइवेट (जर्मन) टाइपराइटर है और वह मुझे खुशी–खुशी वह टाइपराइटर दे भी देगी। वह भारी है–पोर्टेबल नहीं है। यदि तुम समझो कि तुम उस मशीन पर कार्य कर सकती हो तो अपना टाइपराइटर लाने की आवश्यकता नहीं है। जितना कम सामान हो उतना ही अच्छा है।

यदि समय हो तो मेरे चिकित्सा के सभी कागजात मेडिकल रिपोर्ट्स आदि ले आना। वे कास्मोपोलाइट में किसी ट्रंक में हैं।

गाड़िया इस प्रकार है–

विएना (पश्चिम) –	8.0	12.20	13.45
बैगस्टीन –	14.41	19.09	21.36

मेरे विचार से सभी गाड़िया तुम्हें सैल्जबर्ग पर बदलनी पडेगी। कुछ गाडिया श्वाक सेंट वेला पर भी बदलनी पड़ती है। एक और पत्र लिखने के लिए क्षमा चाहता हूँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

यदि तुम अपना टाइपराइटर नहीं ले कर आओ तो मेरे ट्रैंच कोट के साथ मेरा ग्रे रंग का ओवरकोट ला सकते हों।

विलेक
बैनहॉफ़ रेस्टोरेंट
26.3.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

अभी मैंने यह लेख पुरा किया है। पहला लेख जो मैंने बैगस्टीन से लिख कर भेजा था उसे फाड़ देना और इसे सोमवार को एयरमेल द्वारा भेज देना। इस लेख के साथ संपादक को एक पत्र भी लिखना जिसमें तुमने जो दो लेख लिखे थे उनके विषय में उनकी राय और भविष्य के लिए कुछ सुझाव आदि भी पूछ लेना।

भारत पहुंचने से पहले मैं तुम्हें तुम्हारे अगले लेख के लिए विचार भेजूंगा। आशा है तुम घर ठीक–ठाक पहुँच गईं। अब मैं अपनी गाड़ी के इंतजार में हूँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनः—मुझे मालूम नहीं हुआ कि कोई मेरा पीछा कर रहा है। संभवतः वह यहीं हो, लेकिन मैं इतना व्यस्त हूँ कि उस ओर ध्यान देने का भी समय नहीं है।

विएना
30.3.36

विश्वयुद्ध के पश्चात बल्कान
(हमारे बल्कान संवाददाता द्वारा)

विश्वयुद्ध समाप्त होने का अर्थ था आस्ट्रियाई और हंगरी साम्राज्य का विघटन तथा यूरोप से तुर्कियां का सफाया, उनके लिए केवल थ्रास का कुछ भाग तथा कांस्टैनटिनपोल शहर बचा जो विशाल ओटोमन साम्राज्य की यादगार मात्र था, जो किसी समय बोस्फ़ोरस से लेकर विएना तक फैला हुआ था। बल्कान प्रायद्वीप में से छः राज्य यूगोस्लाविया, बुल्गारिया, अल्बानिया, रूमानिया, ग्रीस और यूरोप में तुर्की उभरे। हंगरी जो कि सामान्यतः बल्कान राज्य में सम्मिलित नहीं था, किंतु जिसने बल्कान प्रायद्वीप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, को भी बल्कान क्षेत्र में माना जा सकता है। इन छः राज्यों में से बल्कान और तुर्की अपेक्षाकृत छोटे राज्य हैं और दोनों राज्य धर्म की दृष्टि से मुस्लिम देश हैं। विश्वयुद्ध के पश्चात जिन राज्यों ने अपने क्षेत्र का विस्तार किया वे हैं, यूगोस्लाविया और रूमानिया। अतः हम इन्हें लाभ में रहने वाले राज्य में गिन सकते हैं। यूगोस्लाविया (जिसका वास्तविक अर्थ दक्षिणी स्लाव राज्य) जैसा कि नाम से भी स्पष्ट है स्लाव जाति का राज्य है। यूगोस्लाविया की अन्य छोटी–छोटी जातियां हैं सर्ब, क्रोट्स तथा स्लोवन्स। ये सभी जातियां स्लाव भाषा बोलती हैं जो कि अन्य स्लाव भाषाओं चेक, पोलिश तथा रूसी भाषाओं की भांति स्लाव भाषा से अलग नहीं है। रूमानियावासी खत्म होती जा रही जाति है। संभवतः ये लोग प्राचीन रोमंस के वंशज हैं, रूमानिया की भाषा भी लैटिन था आधुनिक इटालियन से मिलती–जुलती है। ग्रीस को भी हम लाभ में रहने वाले राज्यों में गिन सकते हैं क्योंकि इसने भी बल्कान युद्ध 1912–1913 तथा विश्वयुद्ध के दौरान अपनी

सीमाओं को विस्तृत किया यद्यपि इसकी उपलब्धि यूगोस्लाविया और रूमानिया की अपेक्षा कम थी। ग्रीस अब यथास्थिति बनाए रखने का इच्छुक है और उसे अपनी सीमाओं को विस्तुत करने की आकांक्षा भी नहीं है। छः बल्कान राज्यों में से बुल्गारिया ही ऐसा राज्य है जो सबसे अधिक हानि में रहा। हालांकि टर्की ने यूरोप एवं एशिया में दोनों ही जगह अपना साम्राज्य खो दिया किंतु उसने स्वयं को भाग्य के भरोसे छोड़ दिया और पुनर्निर्माण का विचार भी नहीं बनाया। उसके पास जितना क्षेत्र है वह उसी से संतुष्ट है, क्योंकि वहाँ केवल तुर्की निवास करते हैं और वह बल्कान क्षेत्र में शांतिपूर्वक रहना चाहते हैं, यह निश्चय ही हानि में रहने की स्थिति ही कहीं जा सकती है।

पिछले लेख में मैंने उल्लेख किया था कि अभी बल्कान की समस्याओं का हल नहीं हुआ है। हालांकि बल्कान प्रायद्वीप से औपनिवेशिक शक्तियों का खात्मा हो गया। बल्कान क्षेत्र की विस्फोटक शक्तियां बुल्गारिया और हंगरी हैं– यूगोस्लाविया भी, यद्यपि कारण भिन्न–भिन्न हैं। मैं विस्तार से बताती हूँ।

बुल्गारिया का सदा से यह सपना रहा है कि वह एक शक्तिशाली स्लाव राज्य बने, किंतु किस्मत ने उसका साथ नहीं दिया, उसके बल्कान पड़ोसियों ने ही उसे हानि पहुंचाई है। उसने तुर्की के बलबूते पर अपना साम्राज्य बढ़ाया, किंतु बाद में, जिस क्षेत्र प पर वह अपना अधिकार बताता था उसे उत्तर में रूमानिया ने और दक्षिण में ग्रीस ने अपने अधिकार में ले लिया। ऐसा 1912–13 के बल्कान युद्ध के दौरान हुआ।

विश्वयुद्ध के पश्चात, संभवतः पश्चिमी शक्तियों का विरोध करने का दोषी होने की वजह से बुल्गारिया के क्षेत्र पर यूगोस्लाविया का अधिकार भी हुआ। इस प्रकार उसे अपने पड़ोसियों से बहुत सी शिकायतें थीं जिनमें रूमानिया, ग्रीस और यूगोस्लाविया तथा संभवतः तुर्की भी था। इसी कारण जब बल्कान क्षेत्र की चार महत्वपूर्ण शक्तियों ने यानी रूमानिया, ग्रीस, यूगोस्लाविया और तुर्की ने बल्कान संगठन का फैसला

किया ताकि बल्कान प्रायद्वीप में शांति और यथास्थिति कायम रखी जा सके तो बुल्गारिया ने मिलने से मना कर दिया। हंगरी की भांति ही बुल्गारिया भी अपनी सीमाओं का पुनर्निर्धारण चाहता था।

बुल्गारिया की अपेक्षा हंगरी के साथ और भी त्रासदी रही। युद्ध से पूर्व हंगरी की जनसंख्या 18 मिलियन थी। 1919 में ट्रायनन समझौते से यह आधी रह गई। ऐसा इस तरह हुआ। आस्ट्रो–हंगेरियन साम्राज्य एक ही राजा–आस्ट्रियाई कैसर या राजा के अधीन था। इस साम्राज्य के एक हिस्से पर सीधा आस्ट्रिया का राज्य था जिसका मुख्यालय विएना में था जबकि दूसरे भाग पर हंगरी का राज्य था जिसका मुख्यालय बुडापेस्ट था। (आस्ट्रियाई लोग जाति से जर्मन हैं और उनकी बिल्कुल अलग भाषा है।) विश्वयुद्ध के दौरान जब पश्चिमी शक्तियां विजयी हुई तब उन्होंने आस्ट्रियाई–हंगेरियन साम्राज्य को तोड़ने का निश्चय किया। ऐसा करने के लिए उन्हें केंद्रीय और दक्षिण पूर्वी यूरोप में नए राज्य बनाने पड़े। इस प्रकार हंगरी की कीमत पर चेकोस्लोवाकिया एक स्वतंत्र और बड़े राज्य के रूप में अस्तित्व में आया। सर्बिया, जिसकी जनसंख्या 4 मिलियन के लगभग थी, सर्ब, क्रोट्स और स्लावंस का विस्तृत राज्य बना जिसकी नींव आस्ट्रिया के कंधे पर रखी गई। इस पुनर्विभक्ति के कारण हंगरी से चेकोस्लोवाकिया ने अपना बड़ा हिस्सा वृहत सर्बिया को (इसे अब यूगोस्लाविया कहते हैं) तथा रूमानिया को दिया जिस कारण उसकी (हंगरी की) सीमा और जनसंख्या आधी के लगभग हो गई। और जहाँ विश्वयुद्ध से पूर्व आस्ट्रो–हंगेरियन साम्राज्य की जनसंख्या 50 मिलियन के लगभग थी वहीं अब आस्ट्रिया एक छोटा सा राज्य बन गया जिसकी जनसंख्या केवल 6 1/2 मिलियन रह गई और जिसमें से विएना की ही जनसंख्या 2 मिलियन थी। किंतु आस्ट्रिया ने अपने भाग्य से समझौता कर लिया और अब आस्ट्रिया में ऐसा कोई आंदोलन नहीं हुआ जिससे उसकी पहली सीमाओं की प्राप्ति की इच्छा जाहिर होती हो। इसके विपरीत आस्ट्रियाई लोगों का एक बड़ा वर्ग जर्मनी में विलय का इच्छुक है, इन लोगों की जनसंख्या लगभग 65 मिलियन है। भला हो या बुरा लेकिन

हंगरी अपने भाग्य से समझौता नहीं कर पाया इसी कारण आज हंगरी में जोरदार आंदोलन छिड़ा है जो चाहता है कि उस ट्रायनन समझौते का पुनर्गठन हो जिसके द्वारा हंगरी की वर्तमान सीमाएं निर्धारित की गई थीं।

पिछले युद्ध से सबसे अधिक लाभ की स्थिति में रहने वाले तीन राज्यों में बल्कान क्षेत्र के दो राज्य यूगोस्लाविया और रूमानिया तथा केंद्रीय यूरोपीय क्षेत्र के चेकोस्लोवाकिया – सामान्य हित की बातों के लिए समझौते और सहयोग से लिटन एंटेंट का उद्भव हुआ। हंगरी इसे अपने विरूद्ध एक ़ाड्यंत्र मानता है।

लिटल एंटेंट के परिणामस्वरूप चार राज्यों के बीच – यूगोस्लाविया, रूमानिया, ग्रीस और तुर्की – बल्कान एंटेंट बना। इसे बुल्गारिया अपने खिलाफ मानता था। अल्बानिया, जो कि बल्कान का ही एक राज्य था बल्कान एंटेंट में शामिल नहीं हुआ क्योंकि उस पर इटली का प्रभाव अधिक था।

बल्कान एंटेंट और लिटन एंटेंट दोनों ही यूरोपीय समस्याओं के प्रति फ्रांस के पक्षधर हैं। केंद्रीय यूरोप में फ्रांसीसी राजनीति सक्रिय है तथा बल्कान में फ्रांस का प्रभाव अधिक है। यूगोस्लाविया जैसे अलग–अलग राज्यों का झुकाव वैसे भी जर्मनी की ओर ही दिखाई देता है।

केंद्रीय यूरोप तथा बल्कान से फ्रांसीसी राजनीति सक्रिय है तथा बल्कान में फ्रांस का प्रभाव अधिक है। यूगोस्लाविया जैसे अलग–अलग राज्यों का झुकाव वैसे भी जर्मनी की ओर ही दिखाई देता है।

केंद्रीय यूरोप तथा बल्कान से फ्रांसीसी प्रभुत्व को खत्म कर अपना प्रभुत्व बनाने का प्रयास इटली बहुत पहले से करता आ रहा है। अल्बानिया काफी समय से पहले ही उसके प्रभाव में था तथा इटली, आस्ट्रिया और हंगरी के मध्य हुई तीन पक्षीय संधि ने तो इटली को केंद्रीय यूरोप की राजनीति के मध्य में ला खड़ा किया। जर्मनी के आक्रमण से बचने के लिए आस्ट्रिया इटली की तरफ बढ़ा और हंगरी इटली के पक्ष

में झुका क्योंकि इटली ने उसके पुनर्निर्धारण के लक्ष्य को उकसाया था

बल्कान प्रायद्वीप में बुल्गारिया और हंगरी के अलावा दो अन्य स्त्रोत भी ऐसे थे जो भविष्य में परेशानी खड़ी कर सकते थे। पहला तो यूगोस्लाविया की आंतरिक स्थिति बहुत नाजुक थी। जिस समय युद्ध के पश्चात् सर्ब्स, क्रोट्स और स्लोवंस को मिलाकर एक साम्राज्य की स्थापना की गई तब क्रोट्स और स्लाव लोगों को आशा थी कि उन्हें संघ राज्य में स्वायत्तता प्राप्त होगी। किंतु 1929 में स्वर्गीय अलैक्जेंडर ने डिक्टेटरशिप द्वारा देश को एकत्र करने का प्रयास किया तथा प्रत्येक प्रकार की प्रांतीयता को दबाने की हर संभव कोशिश की। उसने यूगोस्लाविया का पुनः नामकरण किया। हालांकि ऊपरी तौर पर विरोध दब गया, किंतु क्रोट्स और स्लाव जाति के लोगों में विद्रोह की भावना–बढ़ती गई। आज विरोधी पार्टियां पहले की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली हैं और सभी का मानना है कि यूगोस्लाविया की आंतरिक समस्या हल होने वाली नहीं।

दूसरी समस्या मेकडोनिया से संबंधित है। यहाँ के लोग ग्रीस, बुल्गारिया और यूगोस्लाविया में बंटे हैं और बुल्गारिया का सबसे अधिक प्रभाव है। कुछ समय पूर्व तक बुल्गारियाई सरकार की मैकेडोनियम स्वायत्तता और स्वतंत्रता के प्रति उदारवादी दृष्टिकोण था। मेकडोनियंस अपने उद्देश्य के प्रति जागरूक एवं स्पष्ट नहीं थे। कुछ लोग वर्तमान राज्यों के मध्य ही स्थानीय स्वायत्तता पाने के इच्छुक थे तो कुछ लोग स्वतंत्र मेकडोनिया राज्य लेना चाहते थे। जो ग्रीस, यूगोस्लाविया, बुल्गारिया से बिल्कुल अलग हो। एक साल से, जबसे, बुल्गारिया में मेकडोनियाई आंदोलन को दबा दिया गया है तब से मेकडोनिया की समस्या के विषय में अधिक शोर–शराबा नहीं है। किंतु इस बात में कोई शक नहीं है कि समस्या अभी बनी हुई है और हल नहीं हुई हैं।

इसी से जुड़ा एक प्रश्न है, वह यह कि यूगोस्लाविया और बुल्गारिया के संबंध आपस में कैसे हैं। पिछले दो वर्षो के दौरान दोनों के मध्य बहुत गहरी दोस्ती हुई हैं। इसके लिए हमें यूगोस्लाविया के स्वर्गीय

राजा एलेक्जेंडर का और बुल्गारिया के राजा बोरिस का आभारी होगा चाहिए। किंतु इस समस्या का मूल प्रश्न यह है कि अंततः दक्षिणी स्लाव का नतृत्व कौन संभालेगा। एक समय ऐसा था जब बुल्गारिया इसके सपने देखा करता था किंतु इन दिनों उसे एक किनारे करके यूगोस्लाविया ने दक्षिणी स्लाव राज्य में अपना प्रभाव बना लिया है। अब तो यूगोस्लाव का प्रभुत्व इतना बढ़ चुका है कि वे खुले आम यूगोस्लाविया और बुल्गारिया के एक होने की चर्चा करते हैं। यूगोस्लाविया इसमें एक बड़ी शक्ति है। यह विचार तो बहुत अच्छा है कि दक्षिणी स्लाव को मिला कर एक राज्य का दर्जा दे दिया जाए किंतु बुल्गारिया के राजा और उसकी राजगद्दी का क्या होगा। इन समस्याओं पर हम अपने आगामी लेख में विस्तृत चर्चा करेंगे।

नपोली

28.3.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

सुरक्षित यात्रा के पश्चात् मैं आज प्रातः यहाँ पहुँच गया हूँ और शीघ्र ही समुद्र के बीच होऊंगा। तुम्हारे लिए और तुम्हारी बहन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ। तुम्हारे माता–पिता को प्रणाम। कृपया उन्हें सूचित कर देना कि जब मैं गैस्टीन में था तो मुझे उनका पत्र मिल गया था। विलाक से मैंने एक लेख 'युद्ध के पष्चात बल्कान' भेजा था जो तुम्हें अब तक मिल चुका होगा।

फिर मिलेंगे।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

'कांट वर्डे'
29.3.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

ऐसी बहुत सी बातें हैं जिनके विषय में मैं तुम्हें लिखना चाहता हूँ – किंतु उन्हें व्यवस्थित रूप में नही लिख पाऊंगा – इसलिए कृपया इस पत्र को ध्यानपूर्वक पढ़ना। अभी हम लोग नेपल्स से एक दिन की यात्रा की दूरी पर हैं। समुद्र बहुत शांत है – भगवान का शुक्र है। अब क्योंकि मैं बूढ़ा हो रहा हूँ इसलिए उपद्रवी समुद्र का सामना नहीं कर पाता जो कि सामान्यत: मैं जवानी के दिनों में कर लेता था। आजकल मौसम सुंदर और साफ है, धूप चमकती है, ऊपर नीला आकाश फैला है – हमारे चारों ओर गहरा नीला समुद्र है और हमारे सामने पानी का अनंत विस्तार है।

जब मैंने इटली की सीमा पार की तो कोई कठिनाई नहीं हुई। उन्होंने मुझे देखा अवश्य लेकिन मुझसे अपने ट्रंक तक खोलकर दिखाने को नहीं कहा। विलाक से मैं बाहनोफ रेस्तरां में तीन घंटे के लिए रूका था वहीं मैंने वह लेख पूरा किया जो तुम्हें डाक द्वारा भेजा था। मेरे विचार से उस जगह कोई व्यक्ति मेरा पीछा कर रहा था – किंतु मैंने परवाह नहीं की, क्योंकि मैं लिखने में व्यस्त था। यदि वह पत्र तुम्हें नहीं मिला तो निश्चित है कि उन्होंने वह चुरा लिया होगा क्योंकि मैंने स्वयं वह डाक में डाला था। सीमा पार करने के बाद ऐसा कुछ नहीं है जिसके विषय में कुछ लिखा जाए। मैंने रजिस्टर्ड डाक द्वारा तुम्हें पेंसिल भेजी थी। डॉ0 के0 से मैंने तुम्हारी कटिंग्स की बात भी की थी। नेपल्स की यात्रा ठीक–ठाक रही। सायं तीन बजे हम लोग नेपल्स से रवाना हुए।

जहाज की जीवन, जहाँ तक पशुओं का संबंध है – आरामदायक है। बहुत सा भोजन खाना पड़ता है – आवश्यकता से अधिक। सुबह बेड टी, फिर नाश्ता–बहुत सा, दोपहर एक बजे खाना, वह भी कम नहीं रात का खाना सायं 7.30 बजे। फर्स्ट क्लास में खाना बढ़िया होता है नाश्ते और लंच के बीच वे सूप अथवा सैंडविच भी देते हैं। दोपहर में एक

सम्मेलन होता है और रात में फिल्म दिखाई जाती है। रात हमनें एक फिल्म देखी। दिन में आप प्रतिदिन स्नान कर सकते हैं, जहाज में एक स्विमिंग पूल भी है जहाँ आप जा सकते स्विमिंग के लिए, यदि मौसम अच्छा हो तो। समय बिताने के लिए डेक पर खेलने के कई खेल हैं। आज निशानेबाजी की प्रतियोगिता थी जिसमें इटली के यात्रियों ने शानदार प्रदर्शन किया। वे लकड़ी के टुकड़े को निशाना बना रहे थे। जिसे एक स्वचालित मशीन ऊपर उछालती थी। फर्स्ट क्लास में एक जिमनास्टिक का कमरा भी है।

मेरे केबिन के साथियों में एक अफ़गाान है और एक भारतीय है। पूरे जहाज पर कुल छः भारतीय हैं। पूरा जहाज इटली के यात्रियों से भरा है, मेरे विचार से यह मसावा पर खाली हो जाएगा। 30 या 31 तारीख को हम पोर्ट सईद पहुँचेगें, वहीं से यह पत्र डाक में डालूंगा।

मैं प्रसन्न हूँ कि समुद्र शांत है। सामान्यतः मध्य सागर सर्दियों में उछाल पर होता है और अरेबियन सागर गर्मियों में। केवल बसंत ऋतु में (मार्च, अप्रैल, मई) और पतझर के मौसम में (अक्तूबर और नवंबर) में दोनों ही सभुद्र प्रायः शांत रहते हैं। लाल समुद्र प्रायः शांत रहते हैं। लाल समुद्र प्रायः शांत होता है – जब तक कि उसमें तूफान न आया हो – किंतु वह बेहद गर्म होता है। आंजकल कैसा होगा कह नहीं सकता। उन्होंने बिजली के पंखे ठीक करने शुरू कर दिए हैं, शायद लाल समुद्र की वजह से ही।

मुझे आशा है कि मैंने जो कार्य तुम्हें सौंपा था वह बिना किसी गड़बड़ी के तुमने पूरा कर लिया होगा। बहुत सा काम था, मैं तुम्हें दोष नहीं दे सकता यदि तुमसे कुछ गलती हो भी जाए तो दो मुख्य बातें थीं–प्रेस में मेरा बयान और डाक्टर का पत्र, सभी एयरमेल द्वारा भेजी जानी है।

यदि संभव हुआ तो मैं (दूसरे लिफाफे में) हिंदू के लिए तुम्हारे आगामी लेखों के लिए कुछ सामग्री मिल जाए और तुम उन लेखों को पुनः

लिख सको तो बेहतर होंगा। प्राग के मित्र के संपर्क में रहने का प्रयत्न करो—वह पत्रकारिता में तुम्हें सहयोग देगा।

यदि कभी पूर्व की दिशा में यात्रा करनी पड़े तो बसंत ऋतु अथवा पतझर का मौसम ही चुनना। यदि बंसत ऋतु में यात्रा करो तो गर्मियों के कपड़े साथ रखना क्योंकि पोर्ट सईद के बाद उनकी आवश्यकता पड़ेगा। जहाज पर यूरोपीय महिलाएं डेक पर 'बीच पजामा' पहने ही घूमती रहती हैं।

आज प्रातः जहाज के वायरलेस अखबार (रोजाना अखबार) में विएना के विषय में एक वायरलेस खबर थी। कोई डॉ0 आक्स्नर (?) जो फिनिक्स इंश्योरेंस कंपनी से संबंधित थे, डानुबे के किनारे मृत पाए गए। डॉ0 विलेस के ज्यूरिख में हुए आंख के आपरेशन की भी चर्चा थी तथा आज होने वाले जर्मन चुनाव की भविष्यवाणी भी थी।

मेरे पास कुछ अतिरिक्त लीरा बच गए हैं जो मैं तुम्हें इसी लिफाफे में भेज रहा हूँ। मैंने सुना है कि यदि मैं इन्हें पोर्ट सईद अथवा बंबई में बेचूंगा तो बहुत कम दाम मिलेंगे। मैं तुम्हें पेपर नोट के रूप में 100 या 150 लीरा भेजूंगा। यदि ये तुम्हें मिल जाएं तो तुम तत्काल इन्हें आस्ट्रियाई करेंसी में परिवर्तित करा लेना। संभवतः लीरा की कीमत गिरेगी इसलिए जल्दी से जल्दी परिवर्तित करा लेना।

मेरे विचार से मैं टाइम्स बुक क्लब को एक माह अर्थात् अप्रैल के अंत तक के लिए राशि भेज देता हूँ। तुम वह अखबार पढ़ने के बाद सप्ताह में एक बार मुझे भेज सकती हो। केवल अंदर के चार पृष्ठ भेजना, किंतु कृपया कटिंग्स मत काटना। यदि तुम्हारे उपयोग की कोई वस्तु हो तो नोट्स बना लेना। प्रत्येक बल्कान राज्य के लिए तुम्हें अलग—अलग नोट्स अथवा कटिंग्स तैयार करनी चाहिएं। इस प्रकार जब तुम लेख लिखना शुरू करोगी तो सही सामग्री के चुनाव में कठिनाई नहीं होगी।

फिर, अपने स्वास्थ्य का अवश्य ध्यान रखो। गैस्टीन में भोजन

बहुत अच्छा नहीं था। आशा है अब घर पर तुम बेहतर महसूस कर रही होगी। अब बसंत ऋतु है, अतः तुम्हें सर्दी महसूस नहीं होनी चाहिए और आशा है अब तुम्हारा जुकाम भी ठीक हो जाएगा। आशा है गॉलब्लैडर की समस्या भी समाप्त हो जाएगी। मेरी तुमसे प्रार्थना है कि अपनी खुराक के विषय में सावधान रहो। यदि ध्यान दोगी तो संभवतः आपरेशन करवाने से भी बच सको। अन्यथा एक न एक दिन आपरेशन अवश्य होगा।

मेरे अंग्रेजी के पत्रों के विषय में यदि आवश्यक हो तो प्राग के मित्र की सम्मति ले सकती हो। तुम्हें मालूम है कि राजनैतिक विषयों में मैं उस पर विश्वास करता हूँ। पटेल के पत्र संभाल कर रखना। उसमें यदि मेरा कोई पत्र हो तो उसे अलग रख लेना। यदि तुम्हें रिलीज आर्डर मिल जाए तो तत्काल उसे पंजीकृत डाक से मेरे भाई के पास भेज देना उस पर प्रेषक का नाम मत लिखना (बंगला पत्रों के विषय में नीचे लिखी बातें ध्यान में रखना)

मैंने डॉ0 के0 से बात की थी और वे मेरे कुछ कपड़े भारत ले जाने को तैयार हो गए हैं। मेरे विचार से यह बेहतर होगा कि मेरे कपड़ों को तीन बक्सों में बांट दिया जाए दो छोटे बक्से और एक बड़ा (चमड़े का)। माथुर और कटियार संभवतः बिना किसी परेशानी के एक–एक बक्सा ले जा सकते हैं। अधिक महंगे और उपयोगी वस्त्र छोटे बक्सों में भरे जाने चाहिएं। यदि एक ही बक्से में आ जाए तो बहुत ही बढ़िया रहेगा। यदि माथूर मान जाता है तो बेहतर रहेगा क्योंकि वह सीधा कलकत्ता ही आएगा। बंबई से कलकता तक का सामान का किराया और यूरोप का जो थोड़ा बहुत खर्च होगा वह मैं दूंगा ही। किंतु तुम्हें अपनी सामान्य बुद्धि से काम लेते हुए यह देखना होगा कि यातायात का खर्च अधिक न हो। यदि वह बहुत ज्यादा है तो उन्हें भारत भेजना व्यर्थ है। डॉ0 के0 ने मुझे बताया कि वह विएना से उन्हें बंदरगाह तक लाने की व्यवस्था कर सकता है, बिना किसी अतिरिक्त व्यय के। यूरोप अथवा बंबई को जो अतिरिक्त व्यय हो वह तुम्हें अदा करना चाहिए – कम से कम मेरी ओर से व्यय

देने का प्रयत्न अवश्य करना। यदि डॉ0 के0 या माथूर मुझसे खर्चा नहीं लेते तो अलग बात है, किंतु मेरे विचार से मुझे उन्हें देने की कोशिश अवश्य करनी चाहिए, क्योंकि वे विद्यार्थी ही तो हैं।

मेरी पुस्तकों के विषय में, जो तुम्हें उचित जान पड़े, डॉ0 वी0 अथवा श्रीमती एफ0 एम0 से बात कर सकती हो। कृपया एक बार ये देख लेना कि कौन सी पुस्तकें उधार ली गई थीं, वे वापिस दे दी गई हैं या नहीं।

अमेरिकन एक्सप्रेस के पास मेरे 5 डालर शेष हैं। मैं उन्हें सूचित कर दूंगा कि वे तुम्हें यह राशि पाउंड्स में दे दें। संभवतः वे अपना कमीशन लेंगे। कृपया कमीशन स्वयं देकर यह राशि पाउंड्स में ले लेना। इसमें से एक डालर तुम्हें न्यू लीडर को भेजना होगा। शेष चार डालर तुम अपने पास रख लेना। बेहतर होगा यदि तुम इस राशि को इंग्लिश करेंसी में ले लो, क्योंकि यदि कभी इंग्लैंड जाओ तो इसका इस्तेमाल कर सकोगी। यदि परिवर्तित कराना चाहे तो डॉ0 सेन से बात करना। संभवतः वे उचित कीमत दिलवा दें। यदि इंग्लैंड नहीं भी गई तो भी यह पैसा काम आएगा।

अपने दूसरे पत्र के साथ मैं तुम्हें न्यू लीडर के लिए एक पत्र भी भेजूंगा। उस पत्र के साथ एक डालर रख कर एयरमेल से नांबियार के पास भिजवा देना। मैं भी नांबियार को पत्र लिख रहा हूँ। नांबियार को यह पत्र एयरमेल द्वारा भेजने का विचार इसलिए है कि सामान्य पत्र की अपेक्षा एयरमेल द्वारा भेजा गया पत्र अधिक सुरक्षित रहता है। प्राग से पंजीकृत डाक से भेजने का विचार इसलिए है कि यह लंदन सुरक्षित पहुँच जाएगा। (तुम जानती ही हो कि हम आस्ट्रिया से पंजीकृत डाक द्वारा पैसे नहीं भेज सकते किंतु चेकोस्लोवाकिया से भेजना संभव है।)

कृपया न्यू लीडर को पढ़ने के बाद भारत भेज देना। न्यू लीडर और टाइम्स दोनों ही मेरे घर के पते पर –1, वुडबर्न पार्क, कलकत्ता – बुक पोस्ट द्वारा भेज देना।

बंगला पत्रों के विषय में – अपनी उपस्थिति में वे डॉ0 सेन से पढ़वा लेना और फिर बाद में उनका तत्काल अनुवाद कर लेना। उन्हें अशोक के पास मत भेजना। अनुवाद करने के पश्चात उन्हें फाड़ देना।

गाड़ी के डिब्बे में बड़ा चमड़े का बक्सा ले जाना अंसभव हैं। उसे 'गीपैक' के रूप में बुक करवाना पडेगा जो काफी महंगा पड़ेगा। इसलिए तुम्हें तब तक इंतजार करना पड़ेंगा। जब तक कि कोई व्यक्ति उसे अपने खर्चे पर लाने को तत्पर नहीं हो जाता। यदि यातायात का व्यय अधिक न हो तो उस बक्से को यथासंभव खाली करके उस व्यक्ति को दे दो ताकि वह अपने कपड़े उसमें रखकर ला सके। मैं यह बक्सा अवश्य चाहूंगा क्योंकि वह बहुत उपयोगी है तथा मेरे भाई का है। उस बक्से की सफेद सूती चीजें तुम किसी को भी दे सकती हो। खास भारतीय कमीजें, जो युरोप में उपयोग में नही आ सकतीं वे तुम कटियार अथवा माथूर के हाथों भिजवा सकती हो या फिर उन्हें नष्ट कर दो क्योंकि उनका कोई विशेष उपयोग नहीं है। बड़े बक्से में से काम की चीजें निकाल कर अन्य दो बक्सों में भर दो ताकि कटियार या माथुर उन्हें अपने साथ ला सकें। कृपया स्केटिंग और स्कीइंग के जूते भिजवा देना क्योंकि यादगार के तौर पर मैं उन्हें अपने पास रखना चाहूँगा। एक पत्र में मैंने काफी कुछ लिख दिया है। अपने माता–पिता को मेरा प्रणाम कहना और बहन को मेरी शुभकामनांएँ देना। तुम्हें मेरी शुभकामनांएँ। कृपया अपने माता–पिता को बता देना कि मैं उनसे प्रार्थना करता हूँ कि वे तुम्हें पत्रकारिता जारी रखने की अनुमति दें।

तुम्हारा शुभाकांक्षी,
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्चः–यदि कुछ और लिखना होगा तो मैं पोर्ट सईद पहुंचने से पहले एक और पत्र लिखूंगा, किंतु अन्य पते पर।

सुभाष चंद्र बोस

'कांट वर्डे'

30.3.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

कुछ मुद्दे जो मैं पिछले पत्र में लिखना भूल गया, इसलिए अनुलग्नक नोट भेज रहा हूँ।

(1) यदि तुम्हें मौका मिले, तो इंग्लैंड अवश्य जाओ। यदि तुम वहाँ जाओ तो श्री प्यूलिन सील (17, एडिथ ग्रव, चेलसी, लंदन एस0 डब्ल्यू0–10) से पत्र व्यवहार करना मत भूलना और स्वयं को मेरी सचिव के रूप में प्रस्तुत करना जैसा कि इंडियन स्ट्रगल में भी चर्चा की गई है। वे तुम्हारी सहायता करेंगे। फिलहाल उन्हें पत्र लिखने की अपेक्षा लंदन फोन करके बात कर सकती हो। यदि अशोक अभी भी वहाँ है तो तुम्हारे जाने पर वह भी तुम्हारा सहायक सिद्ध हो सकता है। उसका पता है 33, कनॉट मैंशन, बाटरसी पार्क, लंदन, एस डब्ल्यू – 11, दोनो ही के पत्र पुलिस द्वारा सेंसर किए जाते हैं।

यदि तुम लंदन जाओ तो मार्ग पेरिस भी अवश्य जाना। पेरिस देखने योग्य है। संभवतः श्रीमति वेटर तुम्हारा परिचय कुछ फ्रांसीसी महिलाओं से करवाएं। शायद तुम्हारा अध्यापक ही तुम्हें उन लोगों से मिलवाये।

(2) उन दो फ्रांसीसी महिलाओं को पत्र लिखो जिनसे श्रीमती और कुमारी वुड्स ने तुम्हारा परिचय कराया है। शायद वे तुम्हारे बारे में उन महिलाओं से बात कर चुकी हों, लेकिन यदि तुमने उन्हें पत्र न लिखा तो वे तुम्हारे बारे में न जाने क्या सोचें।

(3) मुखर्जी को पुनः पत्र मत लिखना, यदि वह पत्र न लिखे तो शायद उसे तुम्हारा पत्र लिखना पसंद न हो। उसे बंगला पुस्तकों के विषय में तुम्हारे पत्र का उत्तर देना चाहिए था। संभवतः उसे कोई शंका हो कि आखिर तुम बंगला क्यों सीखना चाहती हो।

(4) अपनी फ्रेंच की कक्षाएं जारी रखो। स्पेनिश का क्या हुआ?

(5) तुम सप्ताह में दो बार जिमनास्टिक सीख सकती हो। उपकरणों के बिना प्रयास करो। यदि कोई लाभ न हो तो जिम (?) को ट्राई करो, जहाँ मैं जाया करता था।

(6) मुझे उम्मीद है कि तुम जहाँ तक संभव होगा उतनी कंजूस बनोगी। यह पैसा मैं चाहता हूँ कि तुम तब इस्तेमाल करो जब कोई गंभीर समस्या आ खड़ी हो। अतः इस महत्वहीन बातों पर व्यय मत करो। (गर्मियों के लिए तुम नई पोशाक अथवा नया कोट बनवा सकती हो।)

(7) कृपया चित्रात्मक पत्रिकाओं से संपर्क कर यह जानने का प्रयास करो कि वे भारतीय चित्रों को पुनः प्रकाशित करने के लिए पैसा खर्च करने को तैयार है या नहीं।

(8) जब 'हिंदू' तुम्हें नियुक्त कर ले तो उन्हें सिनेमा समाचार अथवा महिला आंदालनों के विषय में सामग्री भेजो। उन्हें भेजते समय पत्र में लिखना कि यदि उन्हें पसंद न आए तो बेशक प्रकाशित न करें, किंतु यदि वे प्रकाशित करते हैं तो वे उसका पारिश्रमिक अवश्य देंगे।

(9) तुम डॉ0 फाल्टिस के माध्यम से आस्ट्रियाई वर्कर्सब्यूरो के संपर्क में रह सकती हों और उनसे पूछ सकती हो कि क्या वे तुम्हारे द्वारा भारत में अपना प्रचार कराना पसंद करेंगे। इस विषय में मैं डॉ0 फाल्टिस को भी लिख रहा हूँ। साथ में मैं यूनाइटेड प्रेस ऑफ इंडिया के लिए तुम्हारा परिचय पत्र भी भेज रहा हूँ और उन्हें लिख रहा हूँ कि वे तुम्हारे द्वारा भेजी गई सामग्री को प्रकाशित करने का प्रयास करें। यदि तुम्हारी कुछ सामग्री प्रकाशित हो जाती है तो तुम हंगरी या आस्ट्रिया के वर्कर्स ब्यूरो को अपनी योग्यता का प्रमाण दे सकती हो। यदि शुरू–शुरू में वे तुम्हें कुछ नहीं भी देंगे तो भी भारतीय प्रेस में तुम्हारे प्रकाशन से वे

धीरे–धीरे प्रभावित अवश्य होंगे। यदि तुम प्रकाशन हेतु कुछ सामग्री भेजो तो उन्हें यह अवश्य भेंजें।

जैसा कि श्री नांबियार ने तुम्हे सुझाव दिया है तुम्हें विएना मेला, बुडापेस्ट मेला आदि घटनाओं की रिपार्ट भारतीय समाचार पत्रों को अवश्य भेजनी चाहिए। (हिंदू शंकर तथा पीचामुत्थु के भाषण के समाचार प्रकाशित करना पसंद करेगा।) विएना मेले की रिपोर्ट यूनाइटेड प्रेस को भेजो वे स्वयं सब अखबारों को भेज देंगे किंतु तुम्हें कुछ देंगे नहीं। 'हिंदू' तुम्हें राशि देगा किंतु उसकी दिलचस्पी केवल महिला आंदोलनों, सिनेमा और कला समाचारों में होती है। बल्कान रिपोर्ट में तो उनकी रूचि है ही। संक्षेप में, हिंदू तुम्हारे संबंध भारतीय प्रेस से भी हैं। पहला कदम यह उठाओ, कि मेरे परिचय पत्र के साथ तुम यूनाइटेड प्रेस को एक छोटा सा लेख 'डर लिट्जे फ्रोर्ट' पर भेज दो। इस रिपोर्ट में यह बताओ कि कहानी तो बंगाली और बोस्तानों में एक समान है किंतु पृष्ठभूमि अलग अलग है।

यदि तुम्हें यूनाईटेड प्रेस से नियुक्ति पत्र मिल जाता है तो कृपया किसी को यह मत बताना कि यूनाईटेड प्रेस तुम्हें कोई पारिश्रमिक नहीं देता, क्योंकि यूरोप में उन पत्रकारों का कोई विशेष महत्व नहीं है जिन्हें प्रेस पारिश्रमिक नहीं देता।

(10) मैं तुम्हें यह महसूस कराना चाहता हूँ कि जहॉ तुम मेरे निर्देशों का पालन नहीं करतीं वहाँ कितने घपले करती हो। ताजा उदाहरण तो यह है कि तुमने डॉ0 सेन को यह बताया कि फिलहाल मेरा भारत जाना स्थगित हो गया है। तुम्हारे साथ कठिनाई यह है कि तुम काम करने से पहले बिल्कुल भी सोचती नहीं हो। तुम्हें यह आदत डालनी होगी कि कोई भी कार्य करने से पूर्व अवश्य सोचो। कुछ भी करने से पहले कम से कम तीन बार सोचो। यदि तुम ऐसा करोगी तो कभी गलती नहीं करोगी।

(11) नेपल्स से मैंने तुम्हें एक छोटा सा पत्र लिखा था। आशा है तुम्हें मिल गया होगा।

(12) यूनाइटेड प्रेस को लिखते समय संपादक को औपचारिक संबोधन लिखना न कि श्री बी0 सेन गुप्ता।

(13) हिंदू और यूनाइटेड प्रेस को लिखते समय यह ध्यान अवश्य रखना कि आलेख पुनःन भेज दो या एक ही आलेख दोनों को न भेज दिया जाए। यह घातक होगा। इसमें बचने के लिए, जो भी तुम भारत भेजो उसकी टाइप प्रति अपने पास अवश्य रख लो।

(14) यह पत्र समाप्त करने के पूर्व सिर्फ एक बात और अपने जीवन में कभी स्वार्थ को लक्ष्य न बनाओ या उसकी उम्मीद न करो। मानव कल्याण की सोचो – जो सदा–सदा की भलाई है – जो ईश्वर की दृष्टि में ठीक है। निष्काम (बंगला में) भाव से कार्य करो। हार्दिक शुभकामनाएँ। माता–पिता को प्रणाम।

तुम्हारा शुभाकांक्षी,
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्चः—टाइम्स के लिए मैं अप्रैल के अंत तक का चंदा दे रहा हूँ उसके बाद वह नहीं आएगा।

सुभाष चंद्र बोस
'कांट वर्डे'

स्वेज़ कैनाल
31.3.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

कल मैंने तुम्हारे घर के पत पर दो पत्र भेजे हैं। मैंने अमेरिकन एक्सप्रेस को लिख दिया है कि वे अंग्रेजी करेंसी में तुम्हें पांच डालर का भुगतान कर दें। कमीशन स्वयं दे देना और उनसे पूरी राशि ले लेना। मैंने

तुम्हें लीरा नहीं भेजे, क्योंकि मुझे जहाज पर खर्च करने को पैसे की आवश्यकता पड़ेगी।

आज मैं दुबारा इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि कुछ दिलचस्प बातें हैं। हम लोग प्रातः 9.30 बजे पोर्ट सईद से रवाना हुए थे और इस समय स्वेज़ नहर पार कर रहे हैं। शाम तक हम स्वेज नहर के अंत में पहुँच जाएँगे।

जब प्रातः हम पोर्ट सईद पहुंचे तो मेरी खोज में पुलिस अधिकारी जहाज पर आए। मेरा पासपोर्ट छीन लिया गया और एक पुलिस वाले को मुझ पर पहरा देने के लिए बैठा दिया गया। जितनी देर जहाज पोर्ट सईद में रहा मुझ पर पहरा रहा। जब जहाज वहां से चला तो पुलिस वाला भी चला गया और मेरा पासपोर्ट परिचारक के पास छोड़ दिया गया। स्पष्ट है कि अंग्रेज नहीं चाहते थे कि मैं जहाज से उतरूं और किसी से मिलूं। (नहासपाशा से मैंने पहले ही मिल लिया था।) यदि तुम चाहो तो इस घटना का खूब प्रचार कर सकती हो। तुम इसकी सूचना डा0 सेन; मैडम एफ0 मिलर व अन्य लोगों को दे सकती हो। इस घटना से तुम अंदाजा लगा सकती हो कि भारत पहुंचने पर मेरा कैसा सरकारी स्वागत होगा।

हार्दिक शुभकामनाएँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी,
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्चः—माता—पिता को मेरा प्रणाम। आशा है शाम को स्वेज़ से यह पत्र मैं डाक में डाल सकूँगा।

सुभाष चंद्र बोस

पुनश्चः—फिलीस्तीनी पत्रकार ने तुम्हें लिखा था कि एक और नहर बनाई जाएगी—संभवतः अकाबा से हाइफ्रा तक। अथवा लाल समुद्र के दक्षिणा छोर पर (स्वेज़ की तरह) स्थित है और हाइफा मध्यसागर में फिलीस्तीन में। यदि इस विषय में विश्वस्त समाचार मिले तो हिंदू के लिए समाचार

बना कर भेजो। यदि खबर सच्ची हुई तो एक पत्रकार के रूप में तुम्हें ख्याति मिलेगी।

सुभाष चंद्र बोस
आर्थर रोड जेल

बंबई, भारत
8.4.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

आज प्रातः मैं यहॉ पहूँच गया था और यहॉ पहुँचने पर अपने ट्रंक खोलने पर मुझे पता चला कि मैं अपने चिकित्सा के कागजात लाना भूल गया हूँ। वे उसी बक्से में होंगे जो मैं वहीं मैडम वेसी के यहॉ छोड़ आया हूँ। क्या तुम वहाँ जाकर मुझे मेरे चिकित्सा संबंधी सभी कागजात लेकर सामान्य पंजीकृत डाक द्वारा भेजने का प्रयास करोगी? यह भी संभव है कि उन्हें मेरी भूल पता चल चुकी हो और वे उन कागज़ों को मेरे घर के पते पर भिजवा चुकी हों। यदि ऐसा हो तो तुम्हें चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। कृपया मैडम वेटर और मैडम एफ मिलर तक मेरा प्रणाम पहुँचा देना, क्योंकि उन्हें मैं अलग से पत्र नहीं लिख सकता। यदि वे कागज़ात मुझ तक भिजवाने हों तो इस पते पर भेजो–द्वारा, सुपरिटेंडेंट, आर्थर रोड जेल, बंबई। क्योंकि वह बड़ा सा ढेर है इसलिए उसे एयरमेल द्वारा भेजने की आवश्यकता नहीं है। आशा है कष्ट देने के लिए क्षमा करोगी। शुभकामनाएँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी,
सुभाष चंद्र बोस

जेलर साहब यदि आप इसे सेंसर करके पास करने के बाद एयरमेल से भिजवा देंगे तो मैं आपका आभारी रहूंगा।

सुभाष चंद्र बोस
यरवदा केंद्रीय जेल

पूना (बंबई प्रेसीडेंसी)
11.5.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

पता नहीं तुम्हें मेरा 8 अप्रैल का पत्र, जो मैंने आर्थर रोड जेल, बंबई से लिखा वह मिला या नहीं। उसमें मैंने तुम्हें लिखा था कि कृपया मेरे वे चिकित्सा संबंधी कागज भिजवाने की व्यवस्था करे जो मैं वहाँ भूल आया था। अपनी भूल का अहसास मुझे बंबई पहूँचने से कुछ समय पूर्व ही हो गया था इसीलिए मैंने जल्दी से जल्दी यहॉ उतरते ही एयरमेल द्वारा तुम्हें पत्र लिखा था। मेरे चिकित्सा के कागज श्रीमती वेसी के पास रह गए होगें, यदि तुम उन्हें मुझ तक पहुँचाने की व्यवस्था कर दोगी तो मैं तुम्हारा आभारी रहूँगा। पिछला पत्र लिखने के बाद मुझे पूना जेल में स्थानांतरित कर दिया गया है। इसलिए मुझे इस पते पर लिखो–द्वारा सुपरिटेंडेंट, यरवदा जेल, पूना। यूदि तुम पहले ही आर्थर रोड जेल के पते पर मेरे कागजात भिजवा चुकी हो तो वे उन्हें यहाँ भिजवा देंगे और मुझे समय पर मिल जायंगे।

संभव है तुम आजकल विएना अथवा देश से बाहर गई हो। यदि ऐसा हैं तो फिलहाल मेरे कागजों को लेकर चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है। बाद में जब शहर में लौटोगी तब भिजवा देना। इस बीच यदि मुझे बहुत आवश्यकता महसूस हुई तो मैं विएना में किसी और से संपर्क कर लूंगा–लेकिन मेरा विचार है कि मैं तुम्हारे विएना लौटने तक इंतजार कर सकता हूँ।

सर्दियॉ अब खत्म हैं। आशा है तुम समुद्र के पास के बसंत और गर्मियों का आनंद ले रही होगी। यहाँ आजकल जून माह का सबसे गंदा मौसम है। 13 अप्रैल को बंबई से लौटने के बाद से ही यहाँ गर्मी बहुत तेज है। तुम अंदाजा भी लगा सकती कि यहाँ कितनी गर्मी है। अभी भी मैं अक्सर उस मोटी बर्फ को याद करता हूँ जो उन दिनों बैगस्टीन में पड़ी थी जब मैंने यूरोप छोड़ा।

मेरे पत्र से तुम जान जाओगी कि मैं आजकल जेल में हूँ, जैसे ही 8 अप्रैल को मैं बंबई में जहाज से उतरा तत्काल बंदी बना लिया गया। परिणामतः यहाँ से मैं तुम्हें कुछ पाया हूँ सिवाय अपने छोटे भाई व उसकी पत्नी के, जो लगभग दो सप्ताह पूर्व मुझसे मिलने आए थे। शायद तुम्हें यह जानकर प्रसन्नता हो कि मुझे उसी जेल में उसी कमरे में रखा गया हैं जहाँ कुछ दिन पहले महात्मा गांधी को बंदी बनाया गया था।

इस कष्ट (चिकित्सा संबंधी कागज भिजवाने के लिए) क्षमा चाहता हूँ, यह हिम्मत तभी जुटा पाया क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम इसे कष्ट नहीं समझोगी मुझे प्रसन्नता है कि विना विएना मेरी डाक निरंतर मुझे मिल रही है। विएना से भारत के पते पर भेजे गए कई पत्र और पत्रिकाएं मुझे मिल चुकी हैं।

अपने माता–पिता को मेरा प्रणाम कहना और तुम्हें शुभकामनाएँ। अपनी बहन को भी मेरी शुभकामनाएँ। कृपया मुझे सूचित करो कि तुम सब लोग कैसे हो।

अभी मैं इलस्ट्रेटेड वीकली आफ इंडिया में एक इन्सबक लडकी के विषय में पढ़ रहा था जो केवल 15 वर्ष की है और शानदार चित्र बनाती है। उसे एक उच्च श्रेणी का कलाकार माना जा रहा है और उसने विएना के कलाक्षेत्र में सनसनी फैला रखी है। उसका नाम रोजूरिथा बिटरलिख है। क्या तुमने भी उसके विषय में कुछ पढ़ा है?

तुम्हारा शुभाकांक्षी,

सुभाष चंद्र बोस

सेंसर द्वारा पारित

द्वारा सुपरिंटेंडेंट आफ़ पुलिस
दार्जिलिंग (बंगाल)
25.5.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

मेरे उन चिकित्सा के कागजों को मुझ तक पहुँचाने का कष्ट उठाने के लिए धन्यवाद जिन्हें मैं भूल से वहीं विएना में छोड़ आया था। तुम्हारा अग्रेषित पत्र और ये कागज मुझे लगभग एक सप्ताह पूर्व मिल गए थे जब मैं पूना में था। मैं तभी तत्काल तुम्हें धन्यवाद का पत्र लिखता, किंतु उस समय तक मुझे इस स्थान पर स्थानांतरण के आदेश मिल गए जो कि दर्जिलिंग के समीप है। मुझे पता है कि तुमने कभी इस स्थान के विषय में कुछ सुना नहीं होगा किंतु पढ़ा अवश्य होगा। फिर भी यह तो संभव है ही कि तुम उसे नक्शे में खोज सकती हो। यह बंगाल के उत्तर में स्थित है।

चिकित्सा संबंधी कागजों के देर से मिलने पर मैंने सोचा कि तुम गर्मियों में गाँव गई होगी। इसीलिए मैंने पूना से पुनः तुम्हें पत्र लिखा था कि शहर लौटने तक तुम्हें इसकी चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। वह पत्र भेजते ही मुझे तुम्हारा पत्र और मेरे कागज़ात मिल गए।

आजकल मैं जेल में नहीं हूँ। मुझे कैदी (पता नहीं तुम इसका अर्थ समझती हो या नहीं) बनाकर एक बंगले (एक छोटी विला) में, जो मेरे भाई का है रखा गया है। यह बंगला दार्जिलिंग के रास्ते में कुर्सियांग के निकट स्थित है। दार्जिलिंग 7000 फीट की ऊंचाई, यानि कि 1600 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यह स्थान 5000 फुट की ऊंचाई पर यानि कि 1600 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यद्यपि अभी मैं स्वतंत्र नहीं हूँ लेकिन पूना की जेल से बेहतर हूँ क्योंकि वहाँ अप्रैल और मई के महीनों में भयानक गर्मी होती है। उसकी तुलना में, यहाँ बहुत ठंडा है और इस

बंगले से समतल भूमि का बहुत सुंदर दृश्य दिखाई देता है।

कृपया प्राग और विएना के मित्रों को मेरा स्मरण कराना। कभी–कभी पत्र लिखती रहा करो, तुम्हारे बारे में जानकर प्रसन्नता होगी। तुम्हें और तुम्हारे माता–पिता को शुभकामनाएँ और बहन को प्यार।

तुम्हारा शुभाकांक्षी,
सुभाष चंद्र बोस

गिद्ध पहाड़
कर्सियांग
जिला दार्जिलिंग
22.5.36

सेंसर द्वारा पारित

द्वारा द सुपरिंटेंडेंट आफ़ पुलिस
दार्जिलिंग, (बंगाल)
11 जून, 1936

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारे 26 मई के लंबे पत्र के लिए धन्यवाद, वह मुझे 9 तारीख को मिला। इसने मेरे जीवन की नीरसता को भंग करके मुझे एक बार फिर विएना पहुंचा दिया है। पिछले दिनों हमें हमारे समाचार पत्रों में बहुत सी अस्ट्रियाई खबरें पढ़ने को मिलीं–विशेष रूप से तुम्हारे चांसलर (केंजलर ?) और भूतपूर्व चांसलर के मध्य चल रहे युद्ध के विषय में । ये समाचार आस्ट्रियाई राजनिति से संबंधित है और मेरे विचार से तुम्हारी इसमें कोई विशेष दिलचस्पी नहीं है । यदि तुम्हें दिलचस्पी होती भी तब भी में तुम्हें

राजनीति के विषय में कुछ भी लिखने में असमर्थ–रहता।

'रूडोल्फ़नर हॉस' की नर्सों ने मेरा बेहद ध्यान रखा। यदि तुम्हारा कभी उनसे मिलना हो तो मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ उन्हें देना। बहन एल्वीरा की बीमारी के बारे में जानकर दुख हुआ। शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की मेरी कामनाएँ उस तक पहुँचा देना। मुझे पहले भी यह महसूस होता था कि थोड़ा सा भी अधिक काम करने पर वह बहुत थकान महसूस करती थी। वह तब भी बहुत स्वस्थ नहीं दिखाई देती थी। मुझे तब भी यह आश्चर्य होता था कि वह एक संपन्न और धनिक परिवार से संबद्ध है लेकिन फिर भी नर्सिंग क्यों करती है। शायद यह उसका शौक हो या फिर उसे किसी की सहायता करके सुख का अनुभव होता हो। कुछ भी हो मैं हमेशा उसका आभारी रहूँगा।

सहानुभूति न रखने वाली नर्सों के विषय में तुमने जो लिखा है उसे मैं अवश्य पढ़ना चाहूंगा। क्या यह, उसी वार्ड की, मोटी नर्स (आवरसवेस्टर?) ही नहीं, जिस वार्ड में मैं था। मुझे अब बेहद दुख हो रहा है कि मैं उस कलाकार लड़की रोजूरिथा बिटरलिख की पेटिंग्स की प्रदर्शनी नहीं देख पाया। क्या उसने कहीं प्रदर्शनी की, जिसकी सिस्टर एल्वीरा ने बहुत तारीफ की थी। क्या तुम स्वंय प्रदर्शनी देखने गई?

इसमें कुछ भी आश्चर्य नहीं कि तुम्हें बुडापेस्ट पसंद आया। ऐसा शायद ही कोई व्यक्ति होगा जो उसके सौंदर्य से प्रभावित न हुआ हो। यह वास्तव में ही 'डानुबे की महारानी' है। ग्रेट ब्रिटेन के पर्यटकों को बुडापेस्ट बहुत पसंद है। विएना भी है इसमें दो राय नहीं लेकिन यदि प्राग अथवा बूडापेस्ट से तुलना की जाय तो ऐसा महसूस होता है कि यह शहर वह हैं जहाँ कभी बहुत संपन्नता रही होगी। लेकिन बुडापेस्ट और प्राग अभी भी संपन्न और खुशहाल लगते हैं।

मेरे अपने विषय में लिखने को कुछ विशेष नहीं है। मुझे खेद है कि मेरी जर्मन भाषा भी बहुत प्रगति नहीं कर पाई है। कभी–कभी मैं कुछ पृष्ठ पढ़ लेता हूँ किंतु प्रति दिन इसके लिए कुछ समय निकाल पाने में

आलस करता हूँ। तुम्हें मालूम ही है कि अभी मुझे जर्मन व्याकरण सीखनी है जो कि बहुत ही नीरस विषय है। फिलहाल मैं स्वयं कोई कठिन या गंभीर पुस्तक पढ़ नहीं पाता। जर्मन साहित्य मुझे भेजने के लिए तुम्हारा आभारी हूँ, किंतु इस स्थिति में वह मेरे लिए अधिक लाभदायक सिद्ध नहीं होगा। जब कोई अकेला होता है तब वह जर्मन व्याकरण की अपेक्षा कोई दिलचस्प चीज पढ़ना चाहता है।

फ्रेंच भाषा में तुम्हारी प्रगति से प्रसन्नता हुई। शीघ्र ही तुम अपनी भाषा के अतिरिक्त अन्य दो भाषाओं की ज्ञाता बन जाओगी। तुम्हारी स्पेनिश का क्या हाल है?

आशा है शहर से जाने से पहले ही तुम्हें यह पत्र मिल जाएगा। जो भी हो, मैं यह एयरमेल द्वारा भेजूंगा। अधिकांश लोगों की डाक जब वे गर्मियों की छुट्टियों में कहीं जाते हैं तो उन तक पहुँचाई नहीं जाती। क्या तुम्हारे साथ भी ऐसा ही है।

यह स्थान 1500 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है और दार्जिलिंग के रास्ते में पड़ता है। यह हिमालय की पर्वत श्रृंखलाओं पर स्थित है। निचले स्थानों की अपेक्षा यहाँ की जलवायु ठंडी और सुहानी है। कमरों में तापमान 20^0 सेल्सियस होता है बिना हीटर लगाए। वर्ष के इस भाग में भारत में ऐसा तापमान मिलना बहुत अच्छा है। पूना में तो यहाँ भी तापमान 43^0 सेल्सियस तक पहुँचता है।

एक प्रकार से यहाँ की जलवायु यूरोप के समान है, सिवाय इसके कि यहाँ कई माह तक लगातार तेज बारिश होती है। बारिश के अतिरिक्त यहाँ धुंध भी बनी रहती है इसलिए हर क्षण मौसम परिवर्तित होता रहता है। कभी–कभी सूर्य चमकता है तब हम धूप का आनंद उठाते हैं, जैसा कि यूरोप में भी होता है। नीचे समतल स्थानों में दिन भर तपते सूरज की गर्मी रहती है, सिवाय बरसात के दिनों के। परिणामस्वरूप हम लोग यूरोपवासियों की भांति सूरज के शौकीन नहीं हैं। तुम जानती ही हो कि यहाँ धूप अधिक है और सर्दी कम है।

यहाँ मेरे भाई का एक छोटा सा घर है जिसमें मुझे बंदी बनाया गया है (पता नहीं तुम्हें इसका अर्थ मालूम है या नहीं) यद्यपि यहाँ भी बहुत से बंधन हैं लेकिन फिर भी जेल से तो बेहतर ही है। सबसे बुरी बात हर समय अकेला रहना है लेकिन व्यक्ति धीरे–धीरे आदी हो जाता है। कुछ दिन पहले मेरे बड़ भाई को सरकार द्वारा यह इजाजत मिली थी कि वह मेरे साथ यहाँ कुछ दिन बिता सके। वह परिवर्तन मेरे लिए बहुत अच्छा था। फिलहाल मुझे घूमने के लिए बाहर भी नहीं जाने दिया जाता, किंतु सरकार इस पर विचार कर रही है।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि तुम श्रीमती हार्ग्रोव से मिली। वास्तव में, वह महिला बहुत सभ्य महिला है और लोगों व वस्तुओं के प्रति उनमें ठीक समझ भी है, तथा आध्यात्मिक दृष्टिकोण है। क्या तुम उनकी मित्र सुश्री ग्रीन, अमरीकी महिला से मिलीं। वह भी आध्यात्मिक दृष्टिकोण की महिला है।

तो अभी तुम्हारा टिकट इकट्ठे करने का शौक जारी है। मैंने यूरोप कम से कम सेंट्रल यूरोप जैसा शौक कहीं नहीं देखा। होटल के बैरे, काम करने वाली, डाक क्लर्क, अस्पताल की नर्सें, रेल अधिकारी, उच्चवर्ग के लोग, विद्यार्थी, बुजुर्ग महिलाएँ तक इसके शौकीन हैं। कभी–कभी बिल्कुल अनजान लोगों ने भी आकर मुझसे भारतीय टिकटें मांगी हैं। उन लोगों को कुछ टिकटें देकर उनकी प्रसन्नता अनुभव करना भी एक मजेदार दृश्य है। पुरकरडोर्फ सैनेटोरियम में एक वृद्ध विएना की महिला थी–एक मरीज, जिन्होने पहले दिन मुझसे बात की थी उन्होंने भी कुछ टिकटें मांगी थी और जब मैंने उन्हें कुछ टिकटें दी तो उनकी प्रसन्नता की कोई सीमा नहीं थी। बाद में तो लोगों को खुश करने की दृष्टि से मैं स्वयं ही टिकट इकट्ठी करने का शौकीन हो गया था। इस देश में अभी यह शौक नहीं फैला है, किंतु मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि समय के साथ यह अवश्य फैलेगा। यहाँ के युवाओं में आटोग्राफ लेने का शौक तो फैल गया है।

मुझे प्रसन्नता है कि गर्मियों के आगमन से तुम बेहतर अनुभव कर रही हो। यहाँ इसके विपरीत है। हम गर्मियों के जाने पर प्रसन्न होते हैं और सर्दियों की प्रतीक्षा करते हैं। कृपया अपने माता–पिता को मेरा सादर प्रणाम कहना और बहन को शुभाशीष।

मैं तुमसे हर बार लंबे पत्र की आशा नहीं करता क्योंकि मेरे पास यहाँ जितना समय है उतना वहाँ तुम्हारे पास नहीं होगा। फिर भी जब भी समय मिले मुझे कुछ पंक्तियाँ तो लिख ही सकती हो। आशा है तुम्हें इस लंबे और तुच्छ पत्र को पढ़ने का समय मिल जाएगा। सभी मित्रों को हार्दिक प्रेम और तुम्हें शुभकामनाएँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी,

सुभाष चंद्र बोस

पुनः लगभग एक सप्ताह तक यानी कि 3 से 10 अप्रैल तक मुझे टाइम्स नहीं मिला शायद विएना के पुराने पते से मेरे नए पते पर नहीं भेजा गया। बाद की प्रतियां ठीक–ठाक मिली हैं।

यदि तुम कोई फ्रांसीसी पत्रिका पढ़नी चाहती हो तो वेंड्रडी पढ़ो। इसका वही स्थान है जो 'स्पैक्टेटर' और 'न्यू स्टेट्समैन' का इंग्लैंड में है।

सुभाष चंद्र बोस

सेंसर द्वारा पारित

द्वारा सुपरिंटेंडेंट आफ़ पुलिस
दार्जिलिंग (बंगाल)
भारत
22.6.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 9 जून का पत्र मुझे कल प्राप्त हुआ। तुमने मुझे पुनः लिखने को कहा है। यह मैं प्रसन्नतापूर्वक कर सकता हूँ क्योंकि वर्तमान अवस्था में मुझे कोई कठिनाई नहीं है। सच्चाई तो यह है कि पत्र लेखन (एक सीमा के अंतर्गत) कभी–कभी मुझे समय बिताने में सहायक सिद्ध होता है, विशेषकर तब जब कि समय बीत न रहा हो। पत्र लिखना निश्चय ही किसी नीरस पुस्तक को पढ़ने से बेहतर है। किंतु तुम्हें मेरे पत्रों का उत्तर देने की चिंता करने की जरूरत नहीं जब तक कि तुम्हारे पास समय हो और पत्र लिखने की इच्छा भी हो। (मुझे पता नहीं कि तुम मेरी इतनी बुरी लेखनी पढ़ भी पाओगी या नहीं।)

तुमने डाक टिकटों के विषय में पूछा है। किंतु मेरा पत्राचार सीमित हो गया है और विदेशी पत्राचार तो प्रायः रूक ही गया है, इसलिए दिलचस्प डाक टिकट प्रायः नहीं ही मिलती। फिर भी मैं ध्यान रखूंगा कि तुम्हें टिकट इकट्ठे करने मे दिलचस्पी है। जहाँ तक फोटो का प्रश्न है, हालांकि आसपास के दृश्य बहुत सुंदर है किंतु मैंने अभी तक कोई चित्र नहीं खींचा है। मैं कुछ चित्र लेने की सोच रहा हूँ, और यदि इस कार्य में सफल रहा तो तुम्हें अवश्य भेजूंगा। किंतु मुझे आशंका है कि क्या मैं सफल हो पाऊंगा। इस बात के अलावा, कि मैं एक अच्छा फोटोग्राफर नहीं हूँ, यहाँ का मौसम भी फोटोग्राफी के लिए उपयुक्त नहीं है। यहाँ हमेशा धुंध छाई रहती है और बारिस भी बहुत होती है। कभी–कभी धूप चमकती है। पहाड़ों के चित्र लेना तब तक संभव नहीं है जब तक कि

मौसम बिल्कुल साफ न हो। यह सब बातें तो तुम जानती ही हो क्योंकि तुम्हें खुद को भी फोटो खींचने का शौक है।

मैं उस कलाकार लड़की के कुछ चित्र (पुनःप्रस्तुति) अवश्य लेना चाहूँगा, यदि वे विएना में बिक रहे हैं तो। किंतु तुमसे मेरी प्रार्थना है कि इस बात पर खर्च करने की कोई जरूरत नहीं यदि वे बहुत महंगी हो तो।

तुम्हारे पत्र से यह जानकर मुझे बहुत खेद हुआ कि मेरे देश के एक व्यक्ति ने वहाँ ब्राटिस्लावा में अभद्र व्यवहार किया। क्या तुमने प्रेस रिपोर्ट में उसका नाम देखा?

मैंने तुम्हारे पिछले एयरमेल पत्र का उत्तर एयरमेल द्वारा ही दिया था इस बात को 15 दिन हो गए। उम्मीद है वह पत्र शीघ्र ही तुम तक पहुँच जाएगा।

तुमने अपने पत्र में लिखा है कि आजकल तुम पढ़ाने का कार्य भी कर रही हो। तब फिर तो तुम योजनानुसार सीरिया नहीं जा पाओगी बल्कि तुम्हें शहर में ही रहना पड़ेगा। यदि मेरा यह पत्र मिलने पर यदि तुम शहर में ही हो तो मेरा एक काम कर दोगी? मैं विएना में, जहाँ आखिरी दिनों में रहा था – 22, अल्सेर स्ट्रासे, कुछ पुस्तकें छोड़ आया हूँ। क्या तुम श्रीमती वेसी से यह पता लगा सकती हो कि उनमें कोई 'प्लांड इकॉनमी' नामक कोई पुस्तक है जो विश्वेश्वरैया ने लिखी है। यदि वह पुस्तक उनमें है तो वे कृपा कर मुझे वह पुस्तक बुकपोस्ट से भिजवा दें। इस पुस्तक की मुझे आजकल आवश्यकता है किंतु संभव है मैंने वह पुस्तक यूरोप में खरीदी हो, इसलिए मैं उसे दुबारा खरीदना नहीं चाहूँगा।

यहाँ के समाचार पत्रों का कहना है कि हर हाल में राजकुमार ओटो विएना लौटेगां शीघ्र ही तुम्हें सम्राट मिल जाएगा और विएना के रिक्त स्थानों पर एक बार फिर जीवन झूम उठेगा।

वैसे अंग्रेजी में Kaffee के स्पैलिंग Cafe होते हैं। जो हम पीते हैं उसे अंग्रेजी में Coffee लिखा जाता है। आशा है इस प्रकार तुम्हारी

गलतियां निकालने के लिए तुम मुझे क्षमा करोगी।

यदि तुमने 'मंडाले' अथवा 'दास लेट्जे फोर्ट' (द लास्ट फोर्ट) फिल्में देखी है तो कृपया मुझे बताओ कि वे तुम्हें कैसी लगी। तकनीक की दृष्टि से तो बढ़िया रही होंगी।

सरकार ने मेरे दो भतीजों (भाई के बेटों को दो सप्ताह तक मेरे पास रहने की अनुमति दे दी है। वे आजकल यहाँ है इसलिए मुझे साथ मिल गया है। इस माह के अंत में वे यहाँ से चले जाएँगे। मेरे बारे में यही समाचार था जो तुम्हें देना था।

आशा है तुम सब लोग पूर्ण स्वस्थ होंगे। प्राग और विएना के मित्रों को मेरी याद दिलाना, जब कभी भी उन्हें मिलो। तुम्हारे माता–पिता को मेरा प्रणाम और तुम्हें व तुम्हारी बहन को शुभकामनाएँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी,
सुभाष चंद्र बोस

सेंसर द्वारा पारित

द्वारा सुपरिंटेंडेंट आफ़ पुलिस
दार्जिलिंग, बंगाल
15 जुलाई, 1936

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारे 27 जून के पत्र के लिए बहुत–बहुत धन्यवाद यह मुझे 11 तारीख को मिला था। साथ में उस कलाकार लड़की रोजूरिथा बिटरलिख के चित्र भी थे। उन्हें देखकर मुझे विएना में प्रोफेसर सिजेक के कला स्कूल में बच्चों द्वारा बनाई गई पेंटिंग्स की याद हो आई। पता नहीं तुम कभी वहां गई हो या नहीं। यदि अभी नहीं गई तो वह देखने योग्य जगह है। श्रीमती हार्ग्रोव और श्रीमती वेटर दोनों की प्रोफेसर सिजेक के

कला–स्कूल की प्रशंसक हैं। वे ही मुझे वहाँ ले गई थीं और उन्होंने मुझे 70 वर्षीय प्रोफेसर से मिलवाया था। वह भद्र और वृद्ध पुरूष आज विश्वविख्यात हो चुका है। श्रीमती हारग्रोव ने मुझे प्रोफेसर की अंग्रेजी की पुस्तक 'चाइल्ड आर्ट' भी भेजी है जो अभी प्रकाशित हुई है।

तुम्हारे पत्र से यह आभास होता है कि तुम आध्यात्मिक चीजों में अधिक दिलचस्पी लेने लगी हो। क्या यह श्रीमती हारग्रोव का प्रभाव है? भारत में जब कोई युवा व्यक्ति आध्यात्मिक होने लगता है तो उसके परिवार के लोग चिंतित होने लगते हैं कि कहीं यह विश्व का त्याग कर संन्यासी, साधु न बन जाए।

आखिरकार वहाँ ग्रीष्म ऋतु शुरू हो ही गई। मुझे आशा है कि गाँव में तुम्हें आनंद आएगा और वहाँ की स्थितियों में तुम घुलमिल जाओगी। तुम्हारे फेफड़े में आए कष्ट को सुन कर दुख हुआ। मेरे विचार से तुम इसमें अभी लापरवाही नहीं करोगी क्योंकि इस उम्र में इलाज करवाना आसान है।

सामान्यतः पुरानी? अथवा लापरवाही के कारण ही फेफडों की टी0बी0 हो जाती है। तुम्हें इस प्रकार चेतावनी देने की लिए मैं क्षमा चाहता हूँ, किंतु मैं वही कर रहा हूँ जो कोई भी चिकित्सक बताएगा। मैं भी इस कष्ट को भाग चुका हूँ और थोड़ा बहुत इसके बारे में जानता हूँ। विएना फेफड़ों की बीमारी से छुटकारा पाने के लिए सबसे बढ़िया जगह है और यदि तुम विएना में रहते हुए लापरवाही के कारण बीमार पड़ जाओ तो इससे ज्यादा दुखद बात और क्या होगी। वहाँ फेफड़ो का इलाज करने के लिए प्रसिद्ध व्यक्ति प्रोफेसर न्यूमान है, जिससे मैंने कई माह तक इलाज करवाया।

नहीं, मुझे श्रीमती वैटर की कोई चिट्ठी नहीं मिली है, हालांकि मैंने उन्हें अप्रैल में पूना से पत्र लिखा था, अभी दस दिन पहले भी मैंने उन्हें एक पत्र लिखा है। आश्चर्य है कि वे पत्र का उत्तर क्यों नही दे रही। अब तुम्हारे पत्र से समझ में आया कि उन्होंने आठ सप्ताह पूर्व पत्र लिखा था

जो मुझे नहीं मिला। तुम्हारे पत्र से पता चला कि श्रीमती मिलर अभी विएना में ही हैं। मैंने सोचा था कि वो अपनी पूर्व योजना के अनुसार लंदन चली गई होंगी। क्या तुम उन्हें मेरा सादर प्रणाम कह दोगी?

मुझे लगता है भारत में विएना बहुत लोकप्रिय हो गया है, विशेष रूप से, चिकित्सा की दृष्टि से। मेरे विचार से विएना के लोगों को चाहिए कि वे विएना के महलों और संग्रहालयों के चित्रों सहित विएना और आस्ट्रिया के बारे में लेख लिखें। बैगस्टीन जैसी जगह जो मुझे बेहद पसंद आई, भारतवासियों को आकर्षित करेगी यदि वे उसके विषय में जानते होगे तो। मेरी इच्छा थी कि मैं यहा के समाचार पत्रों में बैगस्टीन और वहाँ के स्नानापचार के विषय में कुछ लिखूं, क्योंकि मुझे दो बार वहाॅ जाने पर बहुत लाभ मिला। स्विटजरलैंड की भांति ही आस्ट्रिया भी पर्यटकों को आकर्षित करता है, इसलिए उसे भारत में भी अपना प्रचार करना चाहिए।

मुझे खेद है कि मैं यहाँ के दृश्यों का कोई अच्छा चित्र नहीं ले पाया हूॅ। आजकल यहाँ लगातार बरसात हो रही है और यदि बरिश नहीं हो तो धुंध छाई रहती है। कुछ चित्र जो हमने लिए वे अच्छे नहीं आए हैं। यहा निकट ही एक झरना है जिसे 'पगला झोरा' अथवा 'मैड वाटरफाल' कहते हैं। मैं उसका चित्र लेना चाहता हूॅ। यदि मैं कुछ अच्छे चित्र लेने में सफल हुआ तो तुम्हें अवश्य भेजूंगा। जो दृश्यावली तुम दार्जिलिंग में देख सकते है उसकी तुलना में यहाँ कुछ भी नहीं है। वहाँ से तुम्हें मध्य में आकाश को छूती कंचनजंगा चोटी बर्फ से ढकी दिखाई देगी। यह अद्भूत और महाने है और उस पर्वत से ढकी चोटी के समय खड़ा व्यक्ति बहुत क्षुब्ध दिखाई देता है। पता नहीं यहाँ दार्जिलिंग के चित्र मिलेंगे या नहीं, मैं पूछूँगा।

आजकल मैं फिर अकेला हूँ। मेरे जिन दो भतीजों को मेरे पास रहने की स्वीकृति मिली थी—वे वापिस जा चुके हैं। अकेले रहना बुरा नहीं है· किंतु कभी—कभी बहुत उकताहत होती है। मैंने अपना साथ देने के लिए एक ग्रामोफोन रख लिया है। अब मुझे महसूस होता है कि मैं पहले की अपेक्षा आजकल यूरोपीय संगीत में अधिक आनंद लेता हूँ। क्या तुम

मुझे कुछ बढ़िया रिकार्ड्स के नाम भेज सकती हो। तब मैं कलकत्ता से उन्हें मंगवा लूंगा। इतनी दूर से चुनाव कर पाना कठिन है इसलिए जिसने सुन रखे हों यदि वह उनकी प्रशंसा करे तो उचित रहता है।

लंदन से मुझे मेरे सामान्य अखबार और पत्रिकाएं लगातार प्राप्त हो रही हैं उनके द्वारा मैं विश्व के बाहरी हिस्से से जुड़ा रहता हूँ। इसके अतिरिक्त मुझे भारतीय अखबार और पत्रिकाएं भी मिलती रहती हैं। बिना अखबारों के पता नहीं मेरा क्या हाल हो।

तुम्हारे पत्र के वे कुछ वाक्यांश, जो विशेष रूप से आट्रियाई हैं, को मैं ठीक कर सकता हूँ? (1) तुमने कहा है कि '11 तारीख से तुम्हारा पत्र' यहाँ 'का' होना चाहिए। जर्मन भाषा में तुम 'से' और 'का' के लिए एक ही शब्द 'वॉन' का प्रयोग करते हो। इसी वजह से यह गलती हुई है। (2) तुमने फिर लिखा है कि वह चिंता से आगे देख रही है यहॉ तुम्हारा अभिप्राय प्रसन्नता एवं उत्सुकता से है। क्योंकि चिंता तब होती है जब हम किसी बुरी चीज की चिंता में होते हैं। (3) तुमने लिखा है 'on neglected catarrh' इसकी जगह 'neglected chtarrh ?' होना चाहिए था। यदि अगला शब्द 'वावेल' से प्रारंभ हो तो 'का' का प्रयोग होता है। किंतु यदि 'ए' हो तो 'ए' का ही प्रयोग होगा। सामान्यतः यही नियम है। लेकिन अपवाद भी मिलते हैं। ' neglected ' शब्द चूंकि Constent से शुरू होता है इसलिए उसके पहले 'का' के स्थान पर 'ए' प्रयुक्त होगा। मैं और अधिक आलोचना नहीं करूँगा क्योंकि तुम बुरा मान जाओगी। दूसरा तुम्हारी अंग्रेजी बहुत अच्छी है यदि मुझे इतनी जर्मन आती जितनी तुम्हें अंग्रेजी आती है तो मैं अत्यधिक प्रसन्न होता।

इस लंबे पत्र को पढ़ते-पढ़ते तुम थक गई होगी। अतः मैं अब समाप्त करता हूँ। तुम्हारे माता-पिता को मेरा सादर प्रणाम और तुम्हें व तुम्हारी बहन को शुभकामनाएँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी,
सुभाष चंद्र बोस

सेंसर द्वारा पारित

द्वारा द सुपरिंटेंडेंट आफ़ पुलिस
दार्जिलिंग
30 जुलाई, 1936

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 13 तारीख का पोलाऊ से लिखा लंबा और दिलचस्प पत्र मुझे 24 को मिला। आस्ट्रिया के नक्शे पर मुझे पोलाऊ नहीं मिल पाया, किंतु जिस रास्ते से तुम लोग गुजरे – मोनिकिरचन–का मुझे ध्यान है, वहाँ सर्दियों में मैं भी घूमने गया था। तब वहाँ खूब बर्फ गिरी हुई थी और स्कीइंग करने वाले लोग व्यस्त थे। वह एक सुंदर स्थल है अतः यह पोलाऊ भी अवश्य ही सुंदर स्थल होगा। मुझे यह जानकर अच्छा लगा कि वहाँ तुम लोगों को अच्छी गर्मी मिल रही है। ऐसे भयानक सर्दी वाले देश में यह अति आवश्यक है।

आस्ट्रियाई मामलों के विषय में तुमने जो कुछ लिखा है वह हमें काफी देर से प्राप्त हुआ, रायटर का भला हो जिसके द्वारा हमें अगले ही दिन पूरा समाचार मिल गया था। ऐसे महत्वपूर्ण समाचार वायरलेस द्वारा एकदम भेजे जाते हैं –विश्व के हर हिस्से में। सामान्य घटनाएँ या समाचार ही अन्य देशों तक नहीं भेजे जाते।

यहाँ का मौसम बहुत नमी वाला है और सिंतबर के अंत से लेकर अक्तूबर के मध्य तक ऐसा ही रहेगा। कभी कभी यह बहुत बेमानी लगता है, किंतु व्यक्ति इसका आदी हो जाता है। अब मुझे अपने घर की एक मील की परिधि में घूमने की इजाजत मिल गई है यानी कि मैं अपने घर से एक मील की दूरी तक जा सकता हूँ। यह तभी संभव है जब यहाँ का मौसम बिल्कुल साफ हो, जैसा कि प्रायः इस मौसम में संभव नहीं। यहाँ लोगों का मानना है कि स्वास्थ्य की दृष्टि से यह मौसम सबसे खराब है। फिर भी गर्मी से तो राहत है जिसका मुझे बिल्कुल भी शौक नहीं।

मैं कुछ चित्र लेने की सोच रहा हूँ और यदि वे बहुत बुरे न हुए तो मैं अगले पत्र के साथ तुम्हें भी भेजूंगा।

मैंने देखा कि टाइम्स सीधे लंदन से ही मेरे पास आ रहा है। जब मैंने टाइम्स बुक क्लब को चंदा भेजा था तब मैंने अपना नया पता उन्हें दे दिया था, उसी का उपयोग उन लोगों ने किया है।

यदि तुम्हें कोई भारतीय पत्रिका (अंग्रेजी की) पसंद हो तो मुझे लिखो मैं किसी से कहकर वहा तुम्हें भिजवाने का प्रबंध कर दूंगा। चित्रात्मक साप्ताहिकों में 'द टाइम्स आफ इंडिया इलस्ट्रेटेड वीकली' सबसे अच्छा है जो बंबई से प्रकाशित होता है। मासिक पत्रिकाओं में मार्डन रिव्यू, जो कलकत्ता से प्रकाशित होता है सबसे अच्छा है। मैं दोनों का शौकीन हूँ और ये दोनों पत्रिकाएं मुझे निरंतर मिलती हैं।

क्या आजकल तुम अपनी अंग्रेजी को सुधारने की दृष्टि से कोई अंग्रेजी पत्रिका पढ़ रही हो या तुम सोचती हो कि इतना ही काफी है अब फ्रेंच सीखनी चाहिए?

'Uhr' शब्द का जर्मन भाषा में अर्थ है घड़ी (समय भी) और यह स्वीलिंग है। इसलिए तुम 'Vor einc Uhr' क्यों कहती हो जबकि 'Vor cine Uhr' कहना चाहिए (एक बजे से पहले)। यह मुझे जर्मन व्याकरण पढ़ने पर समक्ष में आया। यह छपा गलत है अथवा तुम लोग जर्मन भाषा में ' Vo rein Uhr ' ही कहते हो।

रोम लांदा एक बहुत दिलचस्प और योग्य लेखक है। सामान्यतः वह जीवनियां लिख्ता है। मैंने उसकी (उससे नहीं) एक पुस्तक, जो उसनक पिलांदस्की पर लिखी, पढ़ी है। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि अ बवह आध्यात्मिक विषयों पर भी लिख रहा है। पिलास्की की जीवनी में मैंने देखा कि वह एक रहस्यमय व्यक्ति था। तुम्हें वह पुस्तक यहा भेजने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि आध्यात्मिक विषयों पर बहुत सी पुस्तकें हमारे यहाँ भारत में उपलब्ध हैं।

मैं श्रीमती वेटर के लिए कुछ दार्जिलिंग चाय भिजवाने की सोच रहा हूँ, क्योंकि वे भारतीय चाय की बहुत शौकीन हैं और दर्जिलिंग की चाय भारतीय चाय में सबसे उत्तम है। किंतु मुझे डर है कि कस्टम ड्यूटी बहुत अधिक होगी जिसके कारण से पार्सल लेना बहुत महंगा पड़ेगा। मुझे मालूम है कि आस्ट्रियाई कस्टम ने एक बार मुझसे कृकृकृकृ (अस्पष्ट) आस्ट्रियाई शिलिंग प्रति पाउंड (1/2 किलाग्राम) ड्यूटी के रूप में लिए थे। क्या तुम, जब संभव हों तब, यह पता लगा सकती हो कि सेंपल पोस्ट यानि 1/2 किला अथवा एक किलो के पार्सल पर कितना खर्च होगा। रेस्तरां अथवा केफ़े के मालिक यह बता सकते हैं क्योंकि वे हमेशा चाय अथवा काफी खरीदते रहे हैं। यह भी पता लगाओं कि आस्ट्रिया में चाय पर सामान्य ड्यूटी कितनी है। 'पर सैंपल पोस्ट' को जर्मन भाषा में क्या कहते हैं – बी मस्टर पस्ट – अथवा कुछ और?

मुझे खेद है कि इस विषय में मुझे ही कष्ट देना पड़ेगा क्योंकि इस विषय में मैं श्रीमती वैटर को नही लिख सकता क्योंकि उन्हें ही चाय भेजना चाहता हूँ।

हमारे यहाँ के महान संस्कृत कवि और नाटककार कलिदास ने एक 'शकुंतला' नामक नाटक लिखा है जो लगभग 1000 वर्ष पुरानी बात है। जर्मन कवि गेटे ने जब उसे पढ़ा तो बहुत प्रसन्न हुआ और उसकी तारीफ में उसने एक कविता लिखी। मैं उसकी कुछ पंक्तियां (अंग्रेजी अुनवाद) भेज रहा हूँ और यदि तुम उसे मूल जर्मन भाषा में मुझे भिजवा दोगी तो मैं तुम्हारा आभारी रहूंगा।

यदि यह गेटे की कविता न हो तो किसी अन्य जर्मन कवि की हो सकती है– लेकिन यह गेटे की ही कविता होनी चाहिए।

कुल मिलाकर मैं ठीक हूँ। आंतरिक कष्ट भी अभी थोड़ा बहुत है और गले में भी इन्फैक्शन है। गले के संक्रमण केलिए तो डॉ0 आटो–वैक्सीन तैयार कर रहे हैं। क्या तुम जानती हो कि इसका क्या मतलब है? जर्मन भाषा में इसे क्या कहते हैं मैं नही जानता। आशा है तुम सभी लोग स्वस्थ

हो। माता–पिता को सादर प्रणाम और तुम्हें शुभकामनाएँ।

सेंसर द्वारा पारित

द्वारा सुपरिंटेंडेंट आफ़ पुलिस
दार्जिलिंग
3.8.36

प्रिय श्री बोस,

आपका 15 जुलाई का पत्र मुझे 29 जुलाई को मिला, धन्यवाद।

मुझे प्रसन्नता है कि आपको उस लड़की रोजूविथ रिटरलिख के चित्र मिल गए। हाँ मैंने श्रीमती हाग्रोव से प्रो0 सिज़ेब के स्कूल के विषय में सुना था। जो पुस्तक उन्होंने आपको भेजी वह भी मुझे दिखाई थी। दुर्भाग्यवश मैं अभी उस स्कूल में नहीं जा पाई हूँ, लेकिन विएना जाते ही वहाँ अवश्य जाऊँगी। श्रीमती हार्ग्रोव भी वापिस पहुँच चुकी है। फिर मैं जाकर स्कूल में देने का प्रयास करूँगी।

आपको लगा कि मेरी आध्यात्मिक बातों में दिलचस्पी श्रीमती हारग्रोव के प्रभाव के कारण है। नहीं, ऐसा नहीं है। इन बातों में तो मेरी दिलचस्पी तभी से है जब मेरी आयु मुश्किल से बारह या तेरह वर्ष थी। ऐसा भी नहीं कि मुझे लगा कि मैं इस विषय को और गहराई से जानूं, बल्कि पहले से ही मेरी इसमें दिलचस्पी थी। जिस व्यक्ति ने मेरे मन को इस ओर मोड़ा वे मेरे प्रथम गुरू (भारतीय संभवतः यही कहते हैं) हंस स्ट्रंडर थे जो मुझे जर्मन लेखकों में सबसे अधिक प्रिय थे। मेरे विचार से मैंने पहले भी आपसे उनके विषय में बात की थी। लेकिन इसका अभिप्राय यह नहीं है कि मैं बिल्कुल संत बन जाऊँगी, या विश्व को त्याग कर अध्यात्म में इतनी खो जाऊँगी। पहली बात मेरा मानना है कि संसार त्याग देने में कोई भलाई नहीं है, क्योंकि व्यक्ति जीवन में कोई भला कार्य या

उद्देश्य की प्राप्ति कर सकता है, जबकि संत या त्यागी बनकर कर उद्देश्यपूर्ण लक्ष्य की प्राप्ति नहीं कर सकता। विश्व अभी इतना परिपक्व नहीं हुआ हैं कि हम अधिक आध्यात्मिक क्षेत्र की ओर झांकने लगे।

हाँ, मौसम कुल मिलाकर बहुत अच्छा है। बीच में कुछ दिन तापमान गिर गया था लेकिन अधिक महसूस नहीं हुआ। जहाँ तक मेरे स्वास्थ्य का प्रश्न है मैं पहले से बेहतर महसूस कर रही हूँ। कुछ दिन पूर्व मेरे गॉल ब्लैडर में दर्द हुआ करता था, खाना खाने के बाद। लेकिन मैंने उससे बचने के लिए यह किया कि मैंने खाना कम कर दिया और मीट खाना तो बिल्कुल ही बंद कर दिया। शराब मैं सामान्यतः नहीं पीती। कल मैंने थोड़ी सी ले ली थी, क्योंकि मेरे पिता की 60वीं वर्षगांठ थी और हमारा पूरा परिवार, बच्चे, बूढ़े यहाँ तक कि पादरी भी शराबघर में गया था। मैं कहना चाहूंगी कि कैथोलिक पादरी विशेष रूप से यहाँ के, बहुत व्यवहारिक लोग हैं। यहाँ का एक पादरी रात–रात भर शराबखानों और कैफेटेरिया में बैठा रहता है, यहाँ तक कि वह लड़कियों के साथ नृत्य भी करता है और पीता भी है। अन्य लोग इस प्रकार सबके सामने नृत्य नहीं करते, लेकिन वह बहुत मस्त व्यक्ति है। मजे की बात यह है दूसरा पादरी धर्म के विषय में बहुत सावधान और सख्त है। मैंने भी एक बार उससे थोड़ी सी बात की थी। हम लोग धर्म पर बात करते हैं और मैंने उसे बताया कि कई वर्षों से मैं चर्च नहीं गई। अब वह मुझे अपनी चर्च में ले जाने की कोशिश करता है। लेकिन अपने इस उद्देश्य में वह सफल नहीं हो पाएगा। फिर भी मैं उससे इस बार बात करूँगी और उसे बताऊंगी कि इस विषय में मेरी क्या सोच है।

नहीं आपने मुझे डराया नहीं है क्योंकि आपने तो मेरे स्वास्थ्य के विषय में ही बात की है। मैं स्वयं बहुत स्पष्टवादी हूँ और स्पष्ट बोलने वाले मित्र ही मुझे पसंद हैं। इसलिए घबराने की बात नहीं, आप कभी भी मुझे चेतावनी दे सकते हैं या विरोध कर सकते हैं।

बहुत दिनों से श्रीमती वैटर का कोई समाचार मुझे भी नहीं मिला।

किंतु अब मैं उन्हें पुनः पत्र लिखूंगी और यह भी लिखूंगी कि उनका लिखा पत्र आप तक नहीं पहुंचा। श्रीमती मिलर लंदन में हैं। उनके वापिस आने के बाद मेरा उनसे मिलना बहुत कम हुआ है। लेकिन उन्हें वह शहर और वहाँ के लोग बहुत पसंद आए। लगभग छः सप्ताह वे वहाँ रहीं और संभवतः उन्होंने मुझे बताया था कि उनकी अंग्रेजी में बहुत सुधार हुआ है। उनके पति शायद आजकल अमरीका गए हैं। उन्होंने मुझे बताया था कि वे गर्मियों में इटली या कहीं संभवतः अल्बानिया जाएंगी। लेकिन मुझे उनकी वास्तविक योजना का ज्ञान नहीं, क्योंकि आप तो जानते ही हैं कि मेरी कभी भी उनसे घनिष्ठता नहीं रही।

तो, भारत में विएना लोकप्रिय हो रहा है। ठीक है, मुझे प्रसन्नता हुई आप तो जानते हो कि मुझे आस्ट्रिया के प्रति उतना लगाव नहीं है जितना कि मुझे वहाँ अपना पूरा जीवन व्यतीत करने के कारण होना चाहिए था। प्रचार के विषय में आपने जो कहा वह ठीक है, क्योंकि आस्ट्रिया ने कभी भी अपनी सुंदरता का उपयोग नहीं किया। अभी कुछ ही दिनों से आस्ट्रिया हुआ है विशेष रूप से इंग्लैंड में।

मैंने आसपास के स्थानों के कुछ चित्र खींचे हैं, लेकिन अभी निकलवाए नहीं हैं। शेष हमारे परिवार के हैं और मेरे विचार से आपकी उनमें अधिक दिलचस्पी भी नहीं होगी। मैं आपको एक अन्य लिफाफे में साधारण डाक से कुछ फोटो और यहाँ के चित्र फोटो पोस्टकार्ड भेजूंगी। मेरे विचार से दार्जिलिंग के दृश्य अद्भुत होने चाहिए। कुछ दिन पूर्व मुझे अजीब स्वप्न आया कि मैं हिमालय पर्वत पर हूँ। लेकिन वह दर्जिलिंग नहीं था। मैं सबसे ऊंची चोटी के आसपास कहीं थी और सुंदर दृश्य देखकर इतनी प्रसन्न थी कि जब मेरी आंख खुली और वे दृश्य गायब हो गए तो मुझे बहुत दुख हुआ। यहाँ के दृश्य अद्भुत और महान नहीं हैं लेकिन शांत, सुदंर और प्यारे हैं ठीक वैसे जैसे कोई सुंदर सो रही हो। ऊंचे-ऊंचे पर्वत मुझे हमें उस युवा पुरूष की याद दिलाते हैं, जो आसमान को छूने को उत्सुक है।

यह अच्छी बात है कि आपने ग्रामोफोन लिया है। विएना जाने पर मैं आपको रिकार्ड्स की सूची अवश्य भेजूंगी, क्योंकि वहीं मुझे सही नंबर पता चल पाएगा जो यहाँ से मिलना असंभव है। लेकिन आप मुझे यह अवश्य बता दें कि किस प्रकार का यूरोपीय संगीत आप पसंद करेंगे। मुझे डर है कि मैं संगीत के मामले में सही निर्णायक नहीं हूँ। जैसा कि आप जानते हैं कि मुझे बोझिल संगीत पसंद नहीं, मैं उसे सुन नहीं सकती। उदाहरण के लिए मुझे कोई भी वागनर के संगीत द्वारा भगा सकता है। मुझे सुगम संगीत पसंद है विशेष रूप से विएना के गीत। किसानों के गीत, यहाँ तक कि जॉज म्यूजिक भी मुझे पसंद है। फिर भी विएना लौटने के बाद मैं अच्छे गानों की एक सूची आपको अवश्य भेजूंगी।

क्या आपको 'माडर्न रिव्यू' की प्रति मिल रही है? यदि मिल रही है तो कृपया इस वर्ष के जुलाई अंक की प्रति मुझे भिजवा दें। मैंने बुडापेस्ट के विषय में एक छोटा सा लेख लिखा था जो छप गया था। मुझे उसकी प्रति भी मिली थी, लेकिन दुर्भाग्यवश वह प्रति ठीक नहीं है। क्योंकि उसमें कुछ पेज गायब और शेष पृष्ठ दो बार लगे हुए हैं। लेख वाले पृष्ठ ही गायब हैं। वह लेख छपा अवश्य है, क्योंकि आवरण पृष्ठ पर उसका जिक्र है। इसलिए यदि संभव हो तो कृपया मुझे उसकी प्रति अवश्य भिजवा दें।

मेरी गलतियों को सुधारने के लिए बहुत–बहुत धन्यवाद। कृपया भविष्य में भी ऐसा करते रहें।

क्या आपने बर्लिन में ओलंपिक खेलों के विषय में कुछ सुना हैं? वे अवश्य ही भव्य होंगी। हम अखबारों और वायरलैस पर इसकी सूचनाएं भेजे रहते हैं। एक दिन बर्लिन के ओलंपिक स्टेडियम से प्रसारण हो रहा था जिसमें सभी प्रतियोगियों ने मार्च किया था, वह हमने सुना था। जब आस्ट्रिया के खिलाड़ी आए तो आपने सुना होगा कि लोग खुशी से कितना झूम व चिल्ला रहे थे।

श्वेस्टर एल्वीरा ने मुझे एक पत्र लिखा था और कहा कि वह यहाँ मेरे पास एक दो दिन के लिए आएगी। यह बढ़िया रहेगा। यदि वह फिर वह कार से आई तो मैं उसे अधिक घुमा सकूँगी। कल मैं इस युवा पादरी के साथ उसकी मोटर साइकिल पर घूमने जाऊँगी। यहाँ नजदीक ही पहाड़ है और मैं इसलिए जाऊँगी ताकि वहाँ आसपास के कुछ चित्र ले सकूँ। यदि वे ठीक–ठाक आ गए तो आपको भी उनकी प्रति भेजूंगी।

इस माह के अंत में हम विएना वापिस लौटेंगे। कीमतों को देखते हुए यहाँ रहना उपयुक्त ही है। इतना सस्ता स्थान मैंने आज तक नहीं देखा। हम चारों मेरे पिता, माता, बहन और मैं सामान्यतः कुल मिलाकर चार शिलिंग से ज्यादा खर्च नहीं पाते। क्या यह सस्ता नहीं? यहाँ टैक्स कार्यालय, पुलिस तथा अन्य कार्यालयों के कुछ युवा लोग हैं, जो यहीं खाना खाते हैं जहाँ हम खाते हैं। मैंने उनसे भी पूछा कि वे कितना पैसा व्यय करते हैं। वे नाश्ते, दोपहर के खाने और रात के खाने पर दो आस्ट्रियाई शिलिंग खर्चते हैं और बिना नाश्ते के 1.80 शिलिंग (आस्ट्रियाई) खर्च करते हैं । रहने–खाने–पीने सभी चीजों की व्यवस्था तथा चारों वक्त के खाने सहित यहाँ केवल 4.50 शिलिंग खर्च होते हैं।

क्या आपको बाहर सैर करने की अनुमति मिल गई? आशा है मिल गई होगी। आपका स्वास्थ्य कैसा है? आशा है संतोषजनक होगा। मेरे माता–पिता और मेरी बहन आपको शुभकामनाएँ भेज रहे हैं।

आपके स्वास्थ्य की शुभकामनाओं सहित,

आपकी शुभाकांक्षी
एमिली शेंक्ल

सेंसर द्वारा पारित

द्वारा द सुपरिंटेंडेंट आफ़ पुलिस
दार्जिलिंग
12 अगस्त, 1936

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

आपके तीन तारीख के पत्र के लिए धन्यवाद। वह मुझे आज प्रातः ही मिला। आजकल यहाँ बादल और नमी है, इसलिए आजकल मैं घर की चारदीवारी में बंद हूँ। समतल भूमि में रहने के आदी हम लोगों को जो खूब धूप सेंकते हैं आजकल यहाँ यूरोप की ही भांति धूप कम मिल रही है।

यदि तुम मुझे कुछ ग्रामोफोन रिकार्ड्स के नाम अथवा नंबर भेज दोगी तो तुम्हारा आभारी रहूँगा। मुझे भी बोझिल एवं शास्त्रीय संगीत नहीं चाहिए, चाहे वह गायन हो या वाद्य संगीत। मुझे सुगम संगीत ही पसंद है जो रिकार्ड्स में उपलब्ध होगा। शास्त्रीय संगीत यदि सीखा गया हो तभी उसकी सराहना कर पाना संभंव है। हमारे यहाँ के संगीत का भी यही है। सच कहूं तो मुझे अपने यहॉ का भी शास्त्रीय संगीत बिल्कुल भी पसंद नहीं। अब कुछ–कुछ समझने लगा हूँ। जो संगीत हम लोगों को पसंद है उसे संगीत के विशेषज्ञ संगीत ही नहीं मानते। मेरे पास विएना का वाल्तज संगीत है, जो बहुत अच्छा है।

यदि तुम्हें दर्शन, विशेष रूप से भारतीय दर्शन में रूचि है तो तुम भगवद्गीता–हमारी बाइबल का जर्मन अनुवाद पढ़ो। शुरू में यह कठिन लगेगी किंतु इसके कुछ अंश तुम्हें अवश्य समझ में आएंगे। उसके कुछ अंश ऐसे हैं जो मैं अभी तक समझ नहीं पाया हूँ। हालांकि मैं भारतीय हूँ और दर्शन का छात्र भी रहा हूँ। दूसरा अध्याय सबसे महत्पूर्ण है जो कर्मयोग से संबद्ध है, यानि कर्म ही पूजा है।

कुछ दिन से मैं स्वस्थ महसूस नहीं कर रहा। संभवतः मेरा गला खराब हो गया है जिसकी वजह से मेरी तबियत खराब हो गई है। साधारण दवाई मुझ पर असर नहीं करती इसलिए मेरे लिए 'आटोवैक्सीन' तैयार की गई है, जिसका इंजेक्शन मैं लगवा रहा हूँ। वे ऐसा ही करते हैं वे गले से लार लेकर, लैबोरटरी में उसका परीक्षण करते हैं और पता लगाते हैं कि उसमें कौन से कीटाणु हैं। इन्हीं कीटाणुओं से इंजेक्शन तैयार किया जाता है। चिकित्सकों की राय है कि गले के खराब होने पर यही इलाज कारगर है। इस चिकित्सा से मुझे कितना लाभ हुआ यह मैं तुम्हें बाद में बताऊंगा।

जुलाई का मार्डन रिव्यू तुम्हें भिजवाने का इंतजाम कर रहा हूँ। आशा है जल्दी ही वह तुम्हें मिल जाएगा। कृपया मुझे बताओ कि क्या तुम्हें कोई अन्य भारतीय पत्रिका पसंद है जो तुम लेना चाहोगी, मैं वह भिजवाने का भी प्रयास करूँगा।

अगले सप्ताह शायद तुम्हें साधारण डाक से कुछ चित्र भेजूंगा। उस दिन कुछ धूप चमकी थी तो, मैंने कुछ चित्र लिए थे जो आजकल डेवलप हो रहे हैं। यदि अच्छे हुए तभी भेजूंगा, अन्यथा नहीं। आज मेरा लेख बहुत ही खराब है, आशा है तुम किसी प्रकार इसे पढ़ पाओगी।

हाँ! यहाँ भी ओलंपिक खेलों की रिर्पोट्स आ रही हैं। अन्य सभी खेलों में भारत का प्रदर्शन निराशाजनक रहा, लेकिन हमें आशा है कि वह हॉकी की चैंपियनशिप बरकरार रख सकेगा। तुम जानती हो कि भारत में कोई वैज्ञानिक प्रशिक्षण की व्यवस्था नहीं है, धनाभाव भी एक मुख्य कारण है।

जब भी तुम्हारी मुलाकात सिस्टर एलविरा से हो तो पेरा प्रणाम कहना।

कुछ छोटी–मोटी परेशानियों के अतिरिक्त मेरा स्वास्थ्य ठीक ही है। इस घर की एक मील की परिधि में घूमने की मुझे इजाजत मिल गई

है, किंतु आजकल का मौसम मुझे इजाजत नहीं देता।

आज अन्य ऐसा कुछ नहीं जिसके विषय में तुम्हें कुछ लिखूं। आशा है तुम ठीक–ठीक हो। अपने माता–पिता को मेरा प्रणाम कहना। तुम्हें व तुम्हारी बहन को मेरी शुभकामनाएँ। वहाँ सभी मित्रों को मेरी नमस्ते कहना।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सेंसर द्वारा पारित

सुपरिंटेंडेंट आफ़ पुलिस
दार्जिलिंग
17 अगस्त, 1936

प्रिय श्री बोस,

आपका–(अस्पष्ट) तारीख का पत्र मुझे 12 तारीख को कुछ फटी हालत में मिला। उसके लिए बहुत–बहुत धन्यवाद। मुझे खुशी है कि मेरे पत्र से आपको खुशी मिली। जब व्यक्ति को दिलचस्प अनुभव होंगे तभी वह दिलचस्प बातें लिख सकेगा। मेरे पहले पत्रों से आप जान ही चुके हैं कि मेरा यहाँ का निवास कोई बहुत बढ़िया नहीं रहा। पिछले पंद्रह दिन से भी कुछ एकाएक बदलाव आया है। हमें बहुत अच्छे सहयोगी, युवा वर्ग के मिल गए हैं। हम सप्ताह में दो या तीन बार उसी रेस्तंरा में मिलते हैं जहाँ हमारे ओलंपिक सत्र होते हैं। मूर्खता के तौर पर हमने एक अपनी ओलंपिक समिति का गठन किया है। दो बार हम बाहर घूमने भी गए हैं। एक सप्ताह पूर्व हम एक पर्वत पर चढ़े थे। इसके लिए हम लोग प्रातः 5. 30 बजे निकल पड़े थे। असल में हमें अपने तीन मित्रों का इंतजार करनी पड़ी जिस कारण हम 6 बजे से पहले प्रारंभ नहीं कर पाए। हम उस पर्वत पर प्रातः 8.15 पर पहुँच गए थे। चढ़ाई बहुत मज़ेदार थी। जैसे–जैसे हम

लोग ऊपर और ऊपर चढ़ते गए पेसे ही आस–पास का सौंदर्य हमें बांधता गया, वह एक अद्‌भुत दृश्य था। अंग्रेजी में इस सब की व्याख्या कर आपको बताना मेरे लिए कठिन कार्य है, अपनी भाषा में मैं अधिक स्पष्ट और विस्तृत रूप में इसकी व्याख्या कर सकती हूँ। चोटी पर हम लोगों ने कुछ घंटे व्यतीत किए, बड़ा मजा आया, ऊधम मचाया और सूर्य से त्वचा भी जल गई। सायं चार बजे हमें घर वापिस जाना था, किंतु रास्ते में कुछ देर के लिए हमें रूकना पड़ा जिससे 7.30 बजे रात को घर पहुंचे। सूर्य की तेजी से जलकर मैं घर लौटी तो काली हो चुकी थी और मुझे अपने इस अद्‌भूत रंग पर अभिमान है।

दूसरी बार पर्वत की चढ़ाई हमने उसी दिन की जिस दिन आपका पत्र हमें मिला। तब हम लोग केवल चार ही थे, मेरी बहन, हमारी पार्टी की एक लड़की वह पादरी और मैं स्वयं थी। इस बर हम दूसरी ओर गए थे और यह चढ़ाई भी बहुत मजेदार रही। मार्ग में हमें बहुत से मशरूम मिले, जिसे हम सभी बहुत पसंद करते हैं। ऊपर हम लोगों ने अंदर कुछ घंटे बिताए, बारिश शुरू हो गई थी। किंतु इससे हम लोग दुखी नहीं हुए। हम लोगों के पास गिटार थे, हमने गाने–वाने गाए और मजे से समय व्यतीत किया।

आपने लिखा है कि आपके नक्शे में आपको पोलाऊ नहीं दिखा। यह स्थान बहुत बड़ा नहीं है इसलिए आस्ट्रिया के किसी विशेष नक्शे में ही यह दि जा सकता है। यह प्राग से 60 किलोमीटर उत्तर की ओर है। दृश्यावली के हिसाब से पोलाऊ एक मनोरम स्थल है। मौसम बहुत बढ़िया नहीं हैं, लेकिन बहुत बुरा भी नहीं है। हर दिन आंधी तूफान आता है। अभी भी बहुत तेज बारिश हो रही है और रह–रह कर बिजली कड़कती हैं यह जानकर प्रसन्नता हुई कि अब आपको सैर के लिए जाने की अनुमति मिल गई है। एक मील की परिधि में घूमना कोई बहुत बड़ी बात नहीं लेकिन कुछ न होने से तो बेहतर है।

यह अच्छा रहेगा यदि आप समय–समय पर मुझे कुछ भारतीय

पत्र–पत्रिकाएं भेजते रहेंगे। मैं अभी भी अंग्रेजी सीख रही हूँ, क्योंकि एक मात्र यही संभावना है जिसके द्वारा मेरी अंग्रेजी सुधर सकती है या जितनी सीखी है वह भूलने से बची रह सकती है। श्रीमती हारग्रोव ओमन से वापिस आ गई है। फिलहाल वे टायरोल में ठहरी हैं, वहाँ से उन्होंने मुझे एक पत्र भी लिखा था। उन्होंने मुझे कृष्णाजी की फोटो भी भेजी है। सदा की तरह उन्होंने लंबा पत्र लिखा है, लेकिन अधिकांश आध्यात्मिक है।

हाँ आपका कहना ठीक–ठाक है। 'Die Uhr' स्त्रीलिंग हैं जिसका अर्थ घड़ी है इसी से समय भी बना है। लेकिन 'Vor eiu Uhr' कहना बिल्कुल ठीक है। ऐसा क्यों हैं, मैं आपको नहीं बता सकती क्योंकि मैंने जर्मन व्याकरण नहीं सीखा है।

चाय के विषय में, और उस पर कितनी ड्यूटी लगेगी, यह पुछ कर मैं आपको लिखूंगी। लेकिन यह कार्य मैं विएना पहुँचने के बाद ही कर सकती हूँ। लेकिन मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि चाय पर इतनी ज्यादा ड्यूटी देनी पड़ती है। यदि इतनी ड्यूटी की बात न होती तो मैं बहुत पहले आपको चाय का पार्सल भेजने के लिख चुकी होती। यहाँ की चाय केवल हल्के पीले रंग का पानी होता है। बहरहाले मैं यहाँ चाय नहीं पीती, दूध या कॉफी लेती हूँ। सैंपल पोस्ट को जर्मन भाषा में 'मस्टर ओन वर्ट' कहते हैं।

शकुंतला के विषय में जर्मन कविता का मूल पाठ में आप को भिजवाऊंगी। किंतु यहाँ से कुछ नहीं कर सकती। जब विएना वापिस जाऊँगी तभी कुछ संभव होगा। यहाँ मेरे पास गेटे की कोई प्रति नहीं है, न ही किसी अन्य व्यक्ति के पास है। पादरी से पूछूंगी। यदि हुई तो, हालांकि मुझे डर है कि उसके पास भी नहीं होगी।

आज हमारा भारी नुकसान हुआ। हमारे साथ की एक ओलंपिक खिलाड़ी हमें छोड़ गई। जब वह गई तो वह रो रही थी और हम अपने रूमाल हिला रहे थे।

उस दिन मुझे जर्मन प्रकाशक से दो बढ़िया पुस्तकें प्राप्त हुई। एक तो नई है, जो इसी वर्ष प्रकाशित हुई है जो जेपलिन के विषय में है। दूसरी कुछ वर्ष पुरानी है जो बुद्ध के जीवन के विषय में हैं। यह मुझे अधिक अच्छी लगी। मुझे इन दोनों पुस्तकों की समालोचना करनी है इसलिए दोनों मुझे निःशुल्क प्राप्त हुई हैं (केवल आस्ट्रिया में पुस्तकों पर लगने वाला शुल्क, जो मात्र 85 ग्रोशेन था, मुझे देना पड़ा।) क्या आप मुझे सुझाव दे सकते हैं कि इन पुस्तको को आलोचना मैं किस भारतीय पत्र के पास भेजूं? कलकत्ता के किसी अखबार को या 'बांबे क्रॉनिकल' को?

आशा है आपके गले की तकलीफ अब ठीक हो गई होगी। कुल मिला कर हम सब लोग अच्छा महसूस कर रहे हैं। मेरी चचेरी बहन पिछले सप्ताह यहाँ आई थी लेकिन वह स्वस्थ नहीं है। कल दोपहर का खाना खाने के बाद वह बेहोश हो गई और मुझे काफी कष्ट हुआ। एक नौकर की सहायता से उसे उठा कर बिस्तर पर लिटाया, उसके कपड़े बदले, और उसे होश में लाने का प्रयास किया। यह बहुत कठिन कार्य है।

इस सप्ताह या अगले सप्ताह मैं पादरी के साथ मोटर ड्राइव पर जाऊँगी। उसकी मोटर साइक्रिल बहुत बढ़िया है, हम लंबी यात्रा पर जाना चाहते हैं, फिर हम लोग पहाड़ों पर सैर–सपाटे के लिए जाएँगे। सुबह जल्दी निकलेंगे और रात देर से वापिस आएंगे। आशा है मौसम ठीक रहेगा, अधिक बरसात नहीं होगी, क्योंकि बरसात के मौसम में चलना बहुत बुरा लगता है।

कुछ दिन पहले श्रीमती वैटर ने मुझे एक पोस्टकार्ड लिखा था जिसमें उन्होंने लिखा था कि वे शीघ्र ही आपको एयरमेल से एक पत्र लिखेंगी। मेरे विचार से जब आपको मेरा पत्र मिलेगा, तब तक उन्हें उनका भी पत्र मिल जाएगा।

आज मैं अपना पत्र यहीं समाप्त करती हूँ। इसके अतिरिक्त कुछ और आपको बताने को नहीं है। अगली साधारण डाक से मैं निश्चय ही

कुछ अच्छे पोलाऊ के पोस्टकार्ड भेजूंगी। आशा है वे सही सलामत आप तक पहुँच जाएँगे। साथ में एक पौधा है (पता नहीं आप इंग्लिश में इसे क्या कहते हैं।)। इसे हम लोग ली कहते हैं और यदि इसके चार पत्ते हों तो उसे 'ग्लूकली' कहते हैं। इसे अपने पर्स में रखा लेना यह सौभाग्य लाता है। यहाँ मान्यता है कि यदि कोई इसके चार पत्ते किसी को भेंट में दे तो भाग्यशाली होता है। लेकिन यह उसी व्यक्ति द्वारा खोजा गया हो जो उपहार दे रहा है। मैंने स्वयं उसे खोजा है, इसलिए मेरे लिए यह भाग्यशाली सिद्ध नहीं होगा अतः मैं यदि किसी को उपहार दे सकूँ तो मुझे प्रसन्नता होगी। अतः आपके पास भेज रही हूँ। आशा है यह आपके लिए भाग्यशाली सिद्ध होगा।

मेरे माता–पिता व बहन आपको शुभकामनाएँ भेज रहे हैं। आशा है आप पूर्णतः स्वस्थ होंगे। मेरी शुभकामनाएँ।

आपकी शुभाकांक्षी
एमिली शेंक्ल

पुनश्च :–मेरी गलतियों के लिए क्षमा करेंगे। लेकिन मैं कई रातों से सोई नहीं हूँ (दिन में बहुत थक जाती हूँ), सिर चकरा रहा है, इसलिए अंग्रेजी भूल सी गई हूँ। यदि आप मेरी गलतियां ठीक कर देंगे तो आपकी आभारी रहूंगी।

सेंसर द्वारा पारित

सुपरिंटेंडेंट आफ़ पुलिस
दार्जिलिंग
18 अगस्त 1936

प्रिय श्री बोस,

जब यह पत्र मिलेगा तब तक आप को मेरा 17 तारीख का पत्र भी मिल चुकेगा सौभाग्य से मुझे मेरे मित्र पादरी के पास गेटे के कार्य की प्रति मिल गई। वह कृति मिल गई जो आप चाहे थे।

वह बहुत छोटी सी है। उसकी प्रति संलग्न है।

सकोंतला

मेरे विचार से आप अंग्रेजी अनुवाद के माध्यम से यह कविता समझ पाएंगे। गेटे ने शकुंतला को 'सकोंना' कहा है।

मैं पोलाऊ के कुछ पोस्टकार्ड भिजवा रही हूँ। और एक चित्र भी जो मैंने सायं 6 बजे खींचा था। वह यह दृश्य मुझे बहुत पसंद है। हमारे घर से केवल पांच मिनट की दूरी पर है। मुझे लगा कि यह फोटो अच्छा आया है। क्या आपको ऐसा नहीं लगता। मेरे पास बहुत से फोटो है लेकिन उनमें कई लोग, हमारे लिए अथवा परिवार के लोग हैं और मेरे विचार से उनमें आपकी विशेष रूचि भी नहीं होगी। किंतु यदि आप कहेंगे तो हम वे भी आपके पास भेज देंगे क्योंकि उनकी ग्राउंड बहुत अच्छी आई है।

आशा है आप पूर्णतः स्वस्थ हैं और आपको कार्ड पसंद आए होंगे।

हम सभी की ओर से आपको सादर प्रणाम और आपके स्वास्थ्य के लिए शुभकामनाएँ।

आपकी शुभाकांक्षी
एमिली शेंक्ल

पुनश्च :–(अस्पष्ट) डैमल को भारत बुला लिया गया है। क्या आपने इस विषय में कुछ भारतीय पत्रों में पढ़ा है?

द्वारा द सुपरिंटेंडेंट आफ़ पुलिस
दार्जिलिंग
29 अगस्त, 1936

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारे सत्रह तारीख के पत्र के लिए धन्यवाद, जो मुझे कल मिला, जिसमें भाग्य वृद्धि का उपहार भी था। मेरे विचार से आस्ट्रिया के लोग भाग्योपहार के तौर पर पेड़, पत्ते आदि के बहुत शौकीन हैं। मुझे याद है जब श्रीमती वेटर गर्मियों की छुट्टियों में पर्वतों पर जाती थीं तो वे वहाँ से मुझे बहुत से पहाड़ी पौधों की पत्तियों भेजती थीं। उन्हें सफेद पौधे एडिल विस का बहुत शौक था और शायद सभी आस्ट्रियावासी इसे पसंद करते हैं। यूरोप के अन्य हिस्सों में मुझे और शकुन देखने को मिले, जैसे घोड़े की नाल, काली बिल्ली आदि। इन्हें वे शुभ शकुन समझते हैं। लेकिन आस्ट्रिया के लोग शायद प्रेम उपहार के लिए पौधे व पत्तियां ही पसंद करते हैं। हमारे भारत में अनेकों अंधविश्वास हैं, इसलिए मैं इनमें विश्वास नहीं करता। वास्तव में मेरा मानना यह था कि भारत के बाहर लोग अंधविश्वासी नहीं होंगे, क्योंकि हमारे यहाँ इनका अपार भंडार है। बहरहाल यह जानकर मजा आया कि तुम लोगों में भी अंधविश्वासी नहीं होंगे, क्योंकि हमारे यहाँ इनका अपार भंडार हैं बहरहाल यह जानकर मजा आया कि तुम लोगों में भी अंधविश्वास है। यदि मेरी इस बात से

तुम्हारी भावनाओं को ठेस पहुँची तो मैं क्षमा चाहता हूँ, लेकिन मैंने जो महसूस किया वह तुम्हें बता दिया।

आजकल हमारे यहाँ के समाचार पत्रों में एक सनसनीखेज समाचार छप रहा है जिसमें एक जज ने पिछले तीन वर्ष से चले आ रहे एक केस में अपना निर्णय दिया है। इसके तथ्य इतने मज़ेदार हैं कि हम कह सकते हैं कि वास्तविक कहानी से भी अजीब हो सकती है। मैं कुछ कटिंग्स भेज रहा हूँ, जिनसे तुम्हें लेख लिखने के लिए सामग्री मिल जाएगी। मेरे विचार से दास मैगजीन, वीनर मैगजीन, और शायद न्यू फ्री प्रैस का रविवारीय परिशिष्ट ऐसे लेख छापना चाहेंगे जिसमे उनके पाठकों की दिलचस्पी हो। मैं तुम्हें स्टेट्समैन, एडवांस, अमृत बाजार पत्रिका की कटिंग्स भेज रहा हूँ। 'स्टेट्समैन' और 'एडवांस' की कटिंग में जहाँ मैने लाल निशान लगाए हैं उससे तुम्हें कहानी मिलेगी और आनंद बाजार पत्रिका से तुम्हें जज के निर्णय का संक्षिप्त विवरण मिल जाएगा। कहानी को समझने के लिए निर्णय को पढ़ना आवश्यक नहीं है, लेकिन मैंने इसे केवल संदर्भ के लिए भेजा है। वास्तव में तो यह जजमेंट उस व्यक्ति को भ्रांत कर देगी जिसे पूरी कहानी का पता नहीं। मैं तुम्हें कुछ शब्दों के अर्थ भेज रहा हूँ जो इसमें बार–बार आएंगे।

(1) भोवाल बंगाल में ढ़ाका जिले के एक स्थान का नाम है।

(2) कुमार राज का पुत्र है।

(3) रानी, राजा या कुमार की पत्नी है।

(4) संन्यासी वह साधु है जो संसार त्याग चुका है।

(5) रूपया, भारतीय सिक्का है। R/3 1/2 लगभग 20 अस्ट्रियाई शिलिंग के बराबर है।

(6) मुद्दई, वह व्यक्ति है जो किसी व्यक्ति के विरूद्ध अदालत में शिकायत करता है।

(7) अभियुक्त वह व्यक्ति है जिस पर आरोप लगाया गया है और जो शिकायत के विरूद्ध अपनी सफाईपेश करेगा।

(8) नागा, साधुओं की एक जाति है। भारत में संन्यासियों की बहुत से जातियां हैं, कई प्रकार की पूजा (योग ?) है।

(9) लाख का अर्थ है 100000

किसी भी प्रकार की भ्रांति से बचने के लिए पहले स्टेट्समैन पढ़ कर भलीभांति समझ लो। उसके बाद एडवांस का वह भाग पढ़ो जिस पर लाल रंग से निशान लगाया है। निर्णय आनंद बाजार पत्रिका में प्रकाशित हुआ है, एडवांस की कटिंग के पीछे भी है, लेकिन तुम्हें इसे बिल्कुल भी पढ़ने की जरूरत नहीं हैं। पूरी घटना को स्पष्ट करने की दृष्टि से मैं कुछ और तथ्य तुम तक भिजवा रहा हूँ।

मुद्दई इस केस को जीत चुका है, वह कहता है कि वह राजा राजेंद्र नारायण राय, भोवाल के राजा का द्वितीय पुत्र (कुमार) है। सन् 1909 में उसे दार्जिलिंग में जहर दे दिया गया था जिससे वह बेहोश हो गया। रात के समय उसे उसका संस्कार करने की दृष्टि से श्मशान घाट ले जाया गया। तभी तूफान आया और लोग आश्रय पाने के लिए वहाँ से भाग गए। कुछ घंटे बाद वे लोग वहाँ लौटे। इस बीच सन्यासियों ने उसके शरीर को वहाँ से हटाकर उसमें पुनः जीवन फूंक दिया। किंतु रामेंद्र नारायण राय, द्वितीय राजकुमार को जब होश आया तो वह अपनी याददाश्त गंवा चुका था। परिणामतः उसे संन्यासियों के बीच रहना पड़ा। उसके घर में उसके परिवार जनों ने किसी अन्य मृत देह लेकर दिन में जलूस निकालते हुए उसे श्मशान घाट ले जाकर उसका अंतिम संस्कार कर डाला। दूसरी ओर राजकुमार द्वितीय, याददाश्त गंवा बैठने के कारण ग्यारह वर्ष तक संन्यासियों के साथ घूमता रहा। 1920 में उसकी याददाश्त वापिस आई तो वह ढाका लौट आया। तब भी वह संन्यासी था, धोती पहनता था, बाल बढ़े थे और शरीर पर राख कल रखी थी। उसके कुछ मित्रों व रिश्तेदारों ने उसे तत्काल पहचान लिया। 1921 से 1932

तक उसने अपना राज्य वापिस लेने का प्रयास किया किंतु उसे धोखेबाज बता दिया गया। अंततः 1933 में उसमें अदालत में मुकदमा पेश किया जो वह अब जीत गया।

अभियुक्त का कहना है कि मुद्दई धोखेबाज है, यह सच्चाई है कि वास्तविक कुमार 1909 में मर गया था। उसका तो यह भी कहना है कि मृत देह रात में श्मशान घाट नहीं ले जाई गई थी बल्कि दिन में ही ले जाई गई थी और बाकायदा उसका संस्कार भी किया गया था। संस्कार का सर्टिफिकेट भी अदालत में पेश किया गया था। अभियुक्त मुद्दई की अपनी पत्नी रानी विभावती देवी है, जो यह मानने से इन्कार करती है कि यह संन्यासी उसका पति है और भोवाल का द्वितीय राजकुमार है। न्यायाधीश के अनुसार रानी विभावती देवी एक कमजोर मस्तिष्क की महिला है जो अपने भाई सत्येंद्रनाथ बैनर्जी (राय बहादुर) के प्रभाव में हैं। जज ने यह भी कहा है कि 1909 में द्वितीय राजकुमार के खो जाने के बाद से यह सत्येंद्रनाथ बैनर्जी अपनी बहन के माध्यम से अपने बहनोई के राज्य का आनंद लूट रहा है। उसे 1909 में विधवा करार दे दिया गया था। न्यायाधीश का कहना है कि संन्यासी कुमार तब तक अपना राज्य वापिस नहीं ले सकता था क्योंकि सत्येंद्रनाथ बैनर्जी पीछे से उसका विरोध कर रहा था। सत्येंद्र का दिमाग ही अभियुक्त के पीछे था जो अपनी बहन रानी विभावती देवी को उलझाए हुआ था।

राजा रामेंद्र नारायण राय के तीन बेटे हैं, मुद्दई द्वितीय राजकुमार है इसलिए वह पूरे राज्य की कुल आय, जो कि 8 लाख है, का एक तिहाई का हिस्सेदार होगा। इस प्रकार उसकी वार्षिक आय 5 लाख आस्ट्रियाई शिलिंग के लगभग होगी। तीन वर्ष तक मुकदमे पर जो उसने व्यय किया वह राशि भी उसे मिलेगी, जो कि एक बड़ी राशि होगी।

आशा है तुम्हें पूरी कहानी स्पष्ट हो गई होगी। पिछला पत्र मैंने तुम्हें 13 अगस्त को लिखा था लेकिन पता नहीं वह तुम्हें मिल पाएगा या नहीं क्योंकि डाक लेकर जा रहा जहाज एथेंस के निकट दुर्घटनाग्रस्त हो

गया और अधिकांश डाक बच नहीं पाई।

यदि तुम एयरमेल का प्रयोग करो तो केवल इंपीरियल एयरवेज का ही प्रयोग करना। डच या फ्रांसीसी एयरलांइस केवल कराची तक ही डाक लेकर आते हैं जबकि इंपीरियल एयरवेज कलकत्ता तक डाक लाता है। कराची से कलकत्ता तक डाक आने में कम से कम 3 या चार दिन लगते हैं।

अब मैं समाप्त करता हूँ, क्योंकि मेरा पत्र काफी लंबा हो चुका है। जब तुम विएना वापिस आओ तो श्रीमती वेसी से कहना कि मेरे ट्रंक खोल कर देख लें और कपड़ों को थोड़ी हवा लगा दें, अन्यथा उनमें कीड़े लग जाएँगे तथा सीलन से वे कपड़े खराब हो जाएँगे।

यदि तुम जर्मन पुस्तकों की आलोचना लिखना चाहती हो तो बांबे क्रॉनिकल (बंबई) अथवा मार्डन रिव्यू, या अमृत बाजार पत्रिका या एडवांस में लिख सकती हो। ये अखबार अंग्रेजी के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा की पुस्तक की आलोचना बहुत कम छापते हैं। इन सुप्रसिद्ध अखबारों में लिखने के लिए पूरा पत आवश्यक नहीं, केवल शहर का नाम लिखने से ही चलेगा। मद्रास से प्रकाशित हिंदू भी साहित्य की आलोचना सप्ताह में एक बार प्रकाशित करता है।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सेंसर द्वारा पारित

सुपरिंटेंडेंट आफ़ पुलिस
दार्जिलिंग
विएना
8.9.36

प्रिय श्री बोस,

5 तारीख को जब मैं विएना पहुंची तो मुझे आपका 12 अगस्त का पत्र मिला। किसी कारणवश वह देरी से मिला। 13 मार्च की दार्जिलिंग की डाक से वह रवाना हुआ था और 29 अगस्त को विएना पहुँच गया था। वह मेरे गाँव के पते पर नहीं भेजा गया था, इसलिए देरी से मिला।

अब हम वापिस आ गए हैं, लेकिन स्वस्थ महसूस नहीं कर रहे। वहाँ के खुले दृश्य याद आ रहे हैं और यहाँ घरों के बीच में हम अपने को कैदी अनुभव कर रहे हैं। 9 सप्ताह तक हम लोग गाँव के आदी हो गए थे, इसलिए शहर में मन नहीं लग रहा। फिर आप तो जानते ही है कि विएना में कितने भिखमंगे है। गाँव में उतने भिखारी नहीं दिखाई देते जितने कि शहर में दीखते है। हम सभी लोग अभी कुछ दिन और पोलाऊ में रहना चाहते थे लेकिन 15 तारीख से स्कूल खुल रहे हैं और मेरे पिता अभी यह निर्णय नहीं कर पाए कि मेरी बहन को कहाँ दाखिल करवाना है और इसलिए हमें अन्य स्कूलों के विषय में भी सूचना एकत्र करनी थी। अभी तक मेरी बहन रीयल जिमनेजियम (हाई स्कूल) में थी। लेकिन अब मेरे माता–पिता की राय है कि उसे उस स्कूल से निकालकर घर संभालना सिखाने वाले स्कूल में डालना चाहिए। इसके लिए ध्यान देना आवश्यक है।

यहाँ आने के बाद बहुत से कार्य करने थे इसलिय मुझे शहर जाकर ग्रामोफोन रिकार्ड्स की खोज खबर लेने का समय नहीं मिल पाया। सबसे पहले मैंने अखबारों का जो ढ़ेर लग गया था उसे निकाला।

अब मेरी अलमारी में कुछ जगह हो गई है जिससे उसमें कुछ नया कूड़ा करकट भरा जा सकता है। मैं अपने सभी चित्रों को व्यवस्थित कर रही हूँ, ताकि उन्हें एलबम में लगा सकूँ। दो साल से ये ऐसे ही पड़ी थीं। इस वर्ष मैंने लगभग 60 फोटो खीचे हैं, जो बहुत अच्छे आए हैं।

यह जानकर खेद हुआ कि आपका स्वास्थ्य अभी तक ठीक नहीं हुआ है? क्या डॉक्टर अभी गला ठीक नहीं कर पाए हैं? संभवतः सीलन भरे वातावरण के कारण ऐसा हो। क्योंकि मुझे पता है जब सर्दियों में वातावरण नमी वाला होता है तो मेरा गला भी जल्दी खराब हो जाता है। किंतु पोलऊ में जल्दी–जल्दी जलवायु में परिवर्तन आने की वजह से मेरा गला बहुत खराब हो गया था। मैं अभी भी पूर्णतः स्वस्थ नहीं हूँ, लेकिन पहले से बेहतर हूँ।

मार्डन रिव्यू मुझे भिजवाने के लिए धन्यवाद। अभी मुझे मिला नहीं है। फिलहाल मुझे अन्य भारतीय पत्रिका नहीं चाहिए। क्योंकि मुझे नहीं मालूम कौन सी सबसे अच्छी है। किंतु यदि किसी पुरानी पत्रिका की कोई प्रति फालतू हो, जो आपको महसूस हो कि मुझे रूचिकर लग सकती है तो कृपया वह मेरे पास वह अवश्य भेजें। मैं आपकी आभारी होऊंगी। जिन चित्रों के विषय में आपने लिखा है क्या वे अच्छी आ गई। मेरे विचार से यदि कैमरा अच्छा हो तो खराब मौसम में भी अच्छे चित्र लिए जा सकते हैं। एक दूसरा कैमरा मैंने दुकान से उधार लेकर उससे कुछ फोटो खींचे वे बहुत अच्छे आए है। मैं अपना कैमरा बदल कर अब कोडेक लूंगी। क्योंकि उन्हें इस्तेमाल करना आसान है और सस्ते भी पड़ते हैं, क्योंकि उनकी फिल्म पैकफिल्म की अपेक्षा सस्ती भी है। (मेरे पास पैकफिल्म ही है।)

मैं अभी तक सिस्टर एलविरा से मिल नहीं पाई हूँ। वे अपने एक मित्र के साथ साल्जबर्म गई हैं और इस माह के मध्य तक वापिस लौटेंगी। अभी तक विएना में किसी मित्र से भी नहीं मिल पाई हूँ। किंतु आशा है कि अगले सप्ताह मिलूंगी। श्रीमती हारग्रोव विएना वापिस लौट आई हैं,

लेकिन गोस्टीन में हैं। मैंने श्रीमती वैटर को फोन किया था किंतु उस समय उनके पति ही घर पर थे। श्रीमती मिलर भी आजकल घर पर नहीं हैं, क्योंकि उनसे भी संपर्क नहीं हो पाया। सेन सारे दिन बाहर रहते हैं। उनसे केवल एक बार फोन पर बात हुई थी।

जहाँ तक मुझे याद है, आपने मुझे बताया था कि आपने बंगला में दो पुस्तकें लिखी हैं। उनके शीर्षक मुझे याद नहीं। क्या वे दार्शनिक विषयों से संबद्ध नहीं थीं? मेरी राय है कि अब आपको उन्हें अंग्रेजी में अनुवाद करना चाहिए, ताकि बंगाल से बाहर के लोग भी उनको पढ़ सकें। मैं भी उन दोनों पुस्तकों को पढ़ना चाहूंगी, लेकिन मुझे बंगला के केवल तीन शब्द आते हैं (आप कैसे हैं, शुभदिन, आपका नाम क्या है?) इसलिए मैं कभी आपकी पुस्तकें नहीं पढ़ पाऊंगी। यह समय बिताने के लिए भी एक कार्य हो सकता है। इस विषय में आपकी क्या राय है?

आजकल मेरे सामने एक बहुत कठिन कार्य है, नौकरी की तलाश। माॅ पूरा दिन मुझपर चिल्लाती रहती हैं, क्योंकि नौकरी न मिलने का कारण मैं स्वयं हूँ। जैसे कि आजकल सड़क पर नौकरियां पड़ी मिलती हैं लेकिन आजकल मैं शांत हूँ, इसलिए नौकरी का युद्ध पुनः प्रारंभ किया जा सकता है। जिन दिनों हम पोलाऊ में थे तब मैं बहुत अशांत थी लेकिन ताजी हवा और धूप ने मुझे बहुत लाभ पहुँचाया।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगी कि इस वर्ष मैं पर्वतों पर घूमने भी गई। लेकिन इतना अवश्य बता दूं कि इस वर्ष पहाड़ो पर चढ़ने में मुझे थकान महसूस नहीं हुई। मेरा वजन कुछ कम हुआ है शायद इसीलिए चढ़ाई में कठिनाई नहीं हुई।

अभी–अभी सिस्टर एल्वीरा ने मुझे फोन किया, वे आज प्रातः ही वापिस लौटी है। उन्होंने आपके लिए शुभकामनाएँ भेजी हैं और आपका गला खराब होने की खबर से उन्हें दुख पहुंचा।

पोलाऊ से मैंने अलग से साधारण डाक द्वारा कुछ पिक्चर

पोस्टकार्ड और फोटो भेजे थे, क्या वे मिल गए?

मुझे मेरी मित्र एला का पत्र मिला है, उसने भी आपके विषय में पूछा है और आपको अपनी नमस्ते भेजी है।

अपने माता–पिता, अपनी छोटी बहन (जो अब बड़ी हो चुकी है) की ओर से आपको शुभकामनाएँ भेजती हूँ।

मेरी ओर से भी नकस्कार तथा स्वास्थ्य के लिए शुभकामनाएँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
एमिली शेंक्ल

पुनः—अपने अगले पत्र में मैं आपको चाय पर लगने वाली ड्यूटी और उस पुस्तक के विषय में लिखूंगी जिसके बारे में आपने लिखा है। यदि मेरे लायक कोई और सेवा हो तो अवश्य बताएं, मैं जहाँ तक संभव होगा करने की कोशिश करूँगी।

एमिली शेंक्ल

सेंसर द्वारा पारित

द्वारा द सुपरिंटेंडेंट आफ़ पुलिस
दार्जिलिंग
12 सितंबर, 1936

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

18 तारीख के पत्र के लिए धन्यवाद। उसमें दो चित्र और चार पिक्चर पोस्टकार्ड भी थे। पोस्टकार्ड और चित्र दोनों ही बढ़िया है। नौसिखिए की दृष्टि से तुम्हारे फोटो बहुत अच्छे हैं। मैं भी चाहता हूँ कि मैं तुम्हें यहाँ के आस–पास के और दार्जिलिंग के चित्र भेजूं। मेरे चित्र ठीक नहीं आए और उस पर मैंने कैमरे को खराब (यदि तोड़ा नहीं) कर दिया है। आवश्यकता पर कुछ काम नहीं आता। उस पर भी यहाँ का

मौसम जितना खराब हो सकता है उतना खराब है। 12 दिन की लगातार बरसात के बाद तीन दिन सूरज चमका। ऐसी आशा है कि अब इस माह के अंत तक मौसम साफ रहेगा। इससे पहले ऐसी कोई आशा नहीं थी। यदि आजकल के दिनों में मैं तुम्हें पोस्टकार्ड भेजता हूँ तो वे वहाँ मिलने वाले पोस्टकार्ड्स से भी खराब होंगे, क्योंकि फोटोग्राफी के क्षेत्र में भारत ने अभी बहुत उन्नति नहीं की है।

गेटे ने शंकुतला के विषय में क्या कहा वह ढूंढ़ने में तुमने जो कष्ट उठाया उसके लिए धन्यवाद। जर्मन भाषा का अंग्रेजी अनुवाद बहुत बढ़िया है।

तुम्हारी इच्छानुसार मैंने मार्डन रिव्यू का जुलाई का अंक भेज दिया था, रजिस्टर्ड बुक पोस्ट से भेजा है, शीघ्र ही मिल जाएगा। पता नहीं तुम्हें मेरा 12 तारीख (या 14) का एयरमेल का पत्र मिला अथवा नहीं। डाक ले जा रहा विमान ग्रीस के पास दुर्घटनाग्रस्त हुआ और बहुत सी डाक नष्ट हो गई। यदि वह पत्र भी उस नष्ट हुई डाक में रहा होगा तो तुम्हें नहीं मिल पाया होगा। अगला पत्र मैंने 29 अगस्त को साधारण डाक द्वारा भेजा था। उसमें मैंने एक मज़ेदार मुकदमें की कटिंग्स भेजी थीं जिसमें राजा का पुत्र 1909 में मरा हुआ जानकर जला दिया था, लेकिन अचानक 1921 में वह जीवित वहां प्रकट हो गया। उसने अपना राज्य मांगा और अदालत ने तीन साल के मुकदमे के पश्चात यह निर्णय दिया कि यही वास्तविक राजकुमार है। वह धोखेबाज नहीं है।

जब तुम विएना पहुँच जाओ और तुम्हें समय मिले तो मुझे विएना के सुगम संगीत के कुछ रिकार्ड्स के नंबर भेजना। तब मैं पता करवाऊंगा कि वे कलकत्ता में उपलब्ध हैं या नहीं।

मैनें अभी श्रीमती वेटर के पत्र का उत्तर नहीं दिया है और श्रीमती हारग्रोव के भी दो पत्रों का उत्तर नहीं दे पाया हूँ। विएना में जब तुम्हें समय मिले तो कृपया चाय पर कस्टम ड्यूटी का पता करके लिखना, और क्या वे कुछ मात्रा कर मुक्त सैंपल के तौर पर भेज देते हैं?

शेष कुछ विशेष लिखने को नहीं है। अतः यहीं समाप्त करता हूँ। तुम्हारे माता–पिता को सादर प्रणाम तुम्हें व तुम्हारी बहन को शुभकामनाएँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
एमिली शेंक्ल

पुनश्चः–क्या तुम मेरी ओर से श्रीमती वेसी से कह दोगी कि वे मेरे बक्सों में से निकाल कर दो पुस्तकें मुझ भिजवा दें।

1. स्टेट्समैन, वार्षिकी

2. विश्वेश्वरैया, जप्लांड इकानमी

सुभाष चंद्र बोस

सेंसर द्वारा पारित

द सुपरिंटेंडेंट आफ़ पुलिस
दार्जिलिंग
26.9.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा आठ तारीख का पत्र मुझे 22 तारीख को मिला। तुम्हें मेरा 12 अगस्त का पत्र मिल गया, कुछ देरी से ही सही। देरी इसलिए हुई, क्योंकि एथेंस के निकट वायुमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया और काफी डाक नष्ट हो गई। लेकिन डाक का बड़ा हिस्सा बाद में मिल गया, जिसे कठिनाई से छांटकर भेजा गया। अंग्रेजी की कहावत है कुछ नहीं से देर भली।

गेटे की कृति में से शकुंतला के लिए कुछ पंक्तियाँ भेजने के लिए धन्यवाद। तुमने ये अपने पिछले पत्र में भेज दी थीं, किंतु मुझे याद नहीं

कि मैंने प्राप्ति की सूचना दी थी या नहीं।

अब तक तुम्हें मेरा 29 तारीख का साधारण डाक से भेजा पत्र भी मिल गया होगा। 12 तारीख का एयरमेल द्वारा भेजा पत्र भी मिल चुका होगा। जुलाई का मार्डन रिव्यू भी सुपरिटेंडेंट आफ पुलिस द्वारा भिजवा दिया गया था वह भी शीघ्र ही मिल जाएगा।

एक दो सप्ताह में मैं तुम्हें दार्जिलिंग और कुर्सियांग के पिक्चर पोस्टकार्ड भिजवा दूंगा। वे साधारण डाक द्वारा ही भेजूंगा।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि गाँव में तुमने अच्छा समय व्यतीत किया और आजकल तरोताजा महसूस कर रही हो।

अपनी सुविधानुसार तुम मुझे ग्रामोफोन रिकार्ड्स की सूची भेज सकती हो। कोई जल्दी नहीं है।

शायद मैं पहले भी सूचित कर चुका हूँ कि पोलाऊ से तुमने जो पोस्टकार्ड (चार) और फोटो (दो) भेजे थे वे मुझे मिल गए हैं।

सुश्री एला का समाचार जानकार प्रसन्नता हुई। (मैं उसका सरनेम भूल गया हूँ लेकिन कृपया उसे मत बताना)। उसे और सिस्टर एलविरा को मेरी नमस्ते कहना। मेरे ख्याल से फ्रेन्जेनबाद के पश्चात् से उना 'kua' ठीक हो गया होगा। यह एक छोटी लेकिन अच्छी जगह है हालांकि मैरीनबाद और कार्ल्सबाद जैसी फैशनेबल जगह नहीं है। यहाँ बहुत से गरम पानी के चश्मे हैं।

परसों मैं मेडिकल जांच–पड़ताल के लिए दार्जिलिंग गया था। दार्जिलिंग तक कार से जाने पर कुर्सियांग से डेढ़ घंटा लगता है और पहाड़ी गाड़ी में 2 1/2 घंटा लगता है। मनोरम दृश्यों का आनंद नहीं ले पाया क्योंकि धुंध छाई थी। फिर भी परिर्वन की दृष्टि से यात्रा थी। कई दिन से अस्वस्थ महसूस कर रहा हूँ, पिछले सप्ताह एंफ्लूएंजा हो गया था, जिसे तुम लोग जर्मन भाषा में 'ग्रिप' कहते हो।

इस वर्ष भारत में नमी रही है। सामान्य से अधिक बरसात हुई है और मैदानी इलाकों में तो दो या तीन प्रदेशों में (बंगाल, बिहार और संयुक्त प्रांत) बाढ़ भी आ गई। आशा है कि अक्तूबर मास से हमें इन दुष्ट बादलों व बरसात से छुटकारा मिल जाएगा।

वहाँ सभी मित्रों को मेरा प्रणाम। तुम्हारे माता–पिता को सादर प्रणाम और तुम्हें व तुम्हारी बहन को शुभाशीष।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

द्वारा द सुपरिंटेंडेंट आफ़ पुलिस
दार्जिलिंग
9.11.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 1 अक्तूबर का पत्र मुझे 16 अक्तूबर को मिला, उसका उत्तर देर से देने के लिए क्षमा चाहता हूँ। इसी बीच मुझे विएना से ग्रामोफोन रिकार्ड्स की सूची और स्टेट्समैन की वार्षिकी मिल गई है। कृपया इन्हें भिजवाने का प्रबंध करने के लिए मेरा धन्यवाद स्वीकार करें। मेरे अंतिम पत्र जो मैंने तुम्हें लिखे थे 27 सिंतबर और 13 अक्तूबर के थे। मैंने साधारण डाक द्वारा तुम्हें कुछ दार्जिलिंग के पिक्चर पोस्टकार्ड और चित्र भिजवाए थे।

आजकल वहाँ काफी सर्दी पड़ रही होगी। ओह! मुझे बर्फ कितनी अच्छी लगती है। यहाँ सर्दियों में बर्फ नहीं पड़ती जब तक कि बहुत ऊंचाई पर न हो। लेकिन दूर के पहाड़ धीरे–धीरे बर्फ से ढक जाते हैं। दूरी से भी बर्फ देखना अच्छा लगता है।

श्रीमती वेटर को मैंने दोबारा लिखा था लेकिन उनका कोई उत्तर

नहीं आया। तुम्हारे पत्र में सिस्टर एल्वीरा की लिखी कुछ पंक्तियां पढ़ कर अच्छा लगा। कृपया उन्हें मेरा हार्दिक धन्यवाद कह देना।

श्री पैनर की मृत्यु के विषय में जानकर दुख हुआ। अपने मित्र श्री फाल्टिस के द्वारा शोक संदेश भिजवाने पर विचार कर रहा हूँ।

कुछ सप्ताह के लिए मेरेकुछ रिश्तेदारों को मेरे पास आकर
की आज्ञा मिल गई थी। अब वे सब लौट चुके हैं, केवल कुछ युवा रह गए हैं जो कि शीघ्र ही लौटने वाले हैं। मैं फिर अकेला हो जाऊँगा।

श्रीमती हारग्रोव प्रायः मुझे ताजा चुटकुला जो वे सुनती हैं के विषय में लिखकर भेजती रहती हैं।

कई दिन से मेरा स्वास्थ ठीक नहीं है। इस सर्दी में तुम्हारा क्या हाल है? क्या दुबारा खांसी हुई?

यदि तुम श्रीमती हारग्रोव से मिलो तो उन्हें बता देना कि मुझे उनकी अमरीकी मित्र सुश्री ग्रीन का पत्र मिला था। उनके पत्र का शीघ्र ही उत्तर दूंगा। क्या तुम मेरे मित्र डॉ0 सेन को 20/15, अल्सर स्ट्रास के पते पर टेलिफोन कर यह सूचना दे सकती हो कि मुझे उनका एयरमेल से भेजा पत्र मिल गया है।

हमारा सबसे बड़ा त्यौहार दुर्गापूजा अभी समाप्त हुआ है। इस त्यौहार के पश्चात अपने मित्रों व रिश्तेदारों को शुभकामनाएँ भेजने का रिवाज हैं – इसका कारण यह है कि – देवी माँ की पूजा अर्चना के पष्चात् उसके सभी बच्चों को आपस में प्रेम–प्यार से रहना चाहिए। इसलिए मैं तुम सबको विजया की शुभकामनाएँ भेजता हूँ। तुम सब लोगो का स्वास्थ्य कैसा है?

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सेंसर द्वारा पारित

सुपरिंटेंडेंट आफ़ पुलिस
दार्जिलिंग
विएना
4.12.36

प्रिय श्री बोस,

आपका 9 तारीख का पत्र मुझे 23 तारीख को मिला। बहुत–बहुत धन्यवाद। मैं बहुत चिंतित थी क्योंकि बहुत दिनों से आपकी कोई सूचना नहीं मिली थी। मुझे पिक्चर पोस्टकार्ड और चार फोटो मिल गए हैं, धन्यवाद। वे बहुत बढ़िया हैं और मेरे लिए उन्हें देखना बहुत आनंददायक है क्योंकि मुझे कुछ पता चला कि भारत कैसा लगता है। हिमालय पर्वत श्रृंखला अद्‌भूत होगी। लेकिन दार्जिलिंग बिल्कुल आधुनिक और यूरोप जैसा दीखता है। आशा है वहाँ और भी बहुत सी भारतीय किस्म की इमारतें होंगी। लेकिन यूरोपीय प्रभाव स्पष्ट झलकता है।

विएना का मौसम अचानक ही बदल गया है। चार दिन पहले कुछ बर्फ गिरी थी, लेकिन दुर्भाग्यवश वह अधिक देर टिकी नहीं। अन्यथा मौसम नमी और सर्दी का है, आप तो जानते ही हैं। हमेशा की भांति इस वर्ष भी मुझे जुकाम और खांसी हुआ और मुझे सर्दियो का कष्ट झेलना पड़ा। अन्यथा मैं पूर्णतः स्वस्थ महसूस करती हूँ। मेरा गॉल ब्लैडर भी ठीक है, अब वह ज्यादा तकलीफ नहीं देता। अब मैं बिना दर्द के डर के जो चाहूं खा–पी सकती हूँ। कम से कम यही इस कष्ट भरे जीवन में कुछ आराम है। आजकल मेरा वजन तेजी से घट रहा है। लेकिन मुझे उसकी चिंता नहीं, क्योंकि मैं मोटापे से तंग आ चुकी थी।

आजकल किसी मित्र से मुलाकात नहीं हो पा रही। केवल डॉ0 सेन कभी–कभी मिल जाते हैं। क्योंकि मुझे क्रिसमस की बहुत सी तैयारी करनी है। सिस्टर एलविरा ने भी मुझे कुछ क्रिसमस के उपहार लाने को कहा है जो वे अपने मित्रों को देना चाहती हैं, अतः मेरे पास बहुत–सा

काम इकट्ठा हो गया है। लेकिन इससे मेरी कुछ आय तो हो रही है, और फिर मुझे ऐसे काम पसंद भी हैं।

सिस्टर एलविरा को आपकी 'हार्दिक शुभकामनाएँ' पाकर–बहुत प्रसन्नता हुई और वे आपको नमस्ते भेज रही हैं। जिस क्षण मैं उनसे मिलने जा रही थी तभी आपका पत्र मिला, तो मैंने तत्काल उन्हें आपकी शुभकामनाएँ पहुंचा दीं।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपके कुछ रिश्तेदारों को आपके साथ रहने की अनुमति मिल गई थी। इसलिए आप बिल्कुल अकेले नहीं थे। कोई बात करने वाला आपके साथ था। युवा वर्ग भी आपका कुछ समय व्यतीत करा देगा। शेष समय में आप पढ़ते रहते होंगे।

दुर्भाग्यवश मुझे अपने फ्रेंच पाठ बीच में ही छोड़ देने पड़े। आजकल मेरी बिल्कुल भी आय नहीं है और मुझे पाठ निःशुल्क उपलब्ध नहीं हो पाएंगे। यह दुखद स्थिति है किंतु इसमें मेरा कोई वश नहीं है। मैं अखबारों में छपे विज्ञापनों के उत्तर में ढेरों पत्र लिखती हूँ, किंतु कोई उत्तर नहीं मिलता। एक बार उत्तर तो मिला लेकिन नौकरी नहीं मिल पाई। एक बार और उत्तर मिला लेकिन मैंने स्वयं नौकरी स्वीकार नहीं की क्योंकि वह बेकार थी। मुझे एक सात वर्षीय बालक की देखभाल करनी थी और वे मुझे रहने खाना पीने की सुविधा के साथ केवल 25 शिलिंग प्रतिमाह देते। इसके अलावा मुझे अपना कमरा स्वयं साफ करना पड़ता और घर के कामकाज में भी हाथ बंटाना पड़ता। यह मैंने स्वीकार नहीं किया क्योंकि आखिरकार मैं कोई नोकरानी तो हूँ नहीं।

आप कुछ चुटकुले जानना चाहते हैं। यह बहुत कठिन कार्य है क्योंकि आजकल मैं कैफे में बहुत कम जाती हूँ। जो एकमात्र चुटकुला मैंने सुना वह यह था –

"हम आस्ट्रिया के लिए नया शिलिंग बना रहे हैं जो रबड़ का होगा" (किसी ने पूछा क्यों?) ताकि आप उसे खींचकर बड़ा कर सकें और

यदि गिर जाए तो आवाज न हो।' यह चुटकुला संभवतः इसलिए बना, क्योंकि शिलिंग की कीमत और गिरने की संभावना है।

मैंने डॉ0 सेन तक आपकी शुभकामनाएँ पहुँचा दी थीं। वे बहुत प्रसन्न थे और उन्होंने भी अपनी शुभकामनाएँ भिजवाई हैं।

अब एक समाचार आपको देना है शायद आपको अच्छा लगे। सेन ने दुबारा हिंदुस्तान एकेडकियल एसोसिएशन का गठन किया है। फिलहाल विएना में 25–30 भारतीय हैं। कड़े संघर्ष के बाद गैरोला, जो कि अध्यक्ष बनना चाहता था, ने अपना सहयोग दिया। सेन ने उसका प्रतिरोध किया। अतः अली को पुनः अध्यक्ष बनाया गया और गैरोला को सचिव का पद देकर शांत किया गया। आजकल वे प्रतिदिन होटल द फ्रांस में मिलते हैं। अली काफी दिलचस्पी ले रहा है। यद्यपि सेन समिति का सदस्य या कोई पदाधिकारी नहीं है, फिर भी वह इसे जमाने का पूरा प्रयास कर रहा है। फिलहाल यह आशा है कि यह सफलतापूर्वक चलेगी। त्रिवेदी ने अपनी सभी परीक्षाएं पास कर ली हैं, सेन उसे एक सक्रिय सदस्य के रूप में ऐसोसिएशन में ले आए हैं। एक बार प्रोफेसर ओल्ब्रिक ने एक बहुत दिलचस्प भाषण दिया कि वे कैसे किलिमंजारों पर्वत पर चढ़े थे। उस सम्मेलन में 100 के लगभग लोग थे, हालांकि उस दिन मौसम अत्यधिक खराब था। हम लोगों ने 500 निमंत्रण भेजे थे।

मैं और मेरे माता–पिता आपकी विजया की शुभकामनाएँ पाकर प्रसन्न हुए। हमारी और से भी शुभकामनाएँ (यदि यह संभव हो तो कोई गैर–हिंदुस्तानी भी विजया की शुभकामनाएँ भेज सकता है।)

हमारा सबसे बड़ा धार्मिक पर्व 24 तारीख की है। पिछले वर्ष आप विएना में ही थे और आपने देखा ही था यह कैसे मनाया जाता है। पिछले सप्ताह मैंने आप को सैंपल रजिस्टर्ड डाक द्वारा क्रिसमस का उपहार भेजा था। कृपया इसे मेरी, मेरे माता–पिता व मेरी बहन की ओस से हार्दिक शुभकामनाओं सहित स्वीकार करें।

आशा है आपका स्वास्थ्य पहले की अपेक्षा ठीक होगा। कृपया पत्र का उत्तर जल्दी दें। मेरे परिवार व मेरी ओर से शुभकामनाएँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
एमिली शेंक्ल

पुनश्चः—एक बात तो आपको बताना भूल हो गई, मैंने आपके सारे ट्रंक ठीक—ठीक कर दिए हैं और आपके कपड़े अलग कर भेज दिए हैं। सभी को एक बड़े बक्से में बंद एक इटली की संस्था (आपके भतीजे की सहायता से) द्वारा वह बक्सा भिजवा दिया है।

जो चीजें आपके उपयोग में आने वाली नहीं थीं, वैसी अनावश्यक चीजों को मैंने विनजैग को (पेंशन कास्मोपोलाइट के नौकर) उपहार में दे दी। इसके अलावा आपके जूतों की भी एक जोड़ी (उसका ऊपरी भाग लगभग फट चुका था) भी उसे दे दी है क्योंकि वह कह रहा था कि मुझे आपके स्कीइंग के जूते सिंह के पास ही छोड़ दिए हैं। स्केट्स और स्केटिंग के जूते आपको भिजवा दिए हैं। बक्सों में मैंने तीन पुस्तकें भी रख दी हैं— (1) जर्मन व्याकरण और शब्दकोष (2) कैनटर विले घोस्ट (द्विभाषी श्रृंखला) तथा (3) इमरस्क (द्विभाषी श्रृंखला)।

अभी भी कुछ कपड़े मेरे पास रह गए हैं, जो आपके भतीजे ने आपके पास भिजवाने से मना कर दिए थे। अधिकांशतः गहरे रंग की बरसातियां हैं, जो आपको ठीक नहीं आती थीं। उनका मैं क्या करूँ? फिर एक अचकन, एक जोड़ी ब्रीच, एक यूरोपीय किस्म का कोट। ये सभी चीजें एक ही कपड़े की बनी हैं (भारतीय कपड़े की)। कृपया मुझे बताएँ कि मैं इन कपड़ों का क्या करूँ।

आपने यह नहीं बताया कि वह पत्र आपको मिल गया है जिसमें मैंने चाय पर लगने वाले कर के विषय में लिखा था। 4 पाऊंड (आधा

किलो) के लिए 10 आस्ट्रियाई शिलिंग देने होंगे। 10 डेका (100 ग्राम) कर मुक्त है।

एक बार फिर शुभकामनाएँ

एमिली शेंक्ल

सेंसर द्वारा पारित

कृपया इस पते पर उत्तर दें
1, वुडबर्न पार्क
एल्गिन रोड, पोस्ट आफिस
कलकत्ता

कुर्सियांग
15 दिसंबर, 1936.

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

4 तारीख के आपके पत्र के लिए धन्यवाद! वह मुझे आज प्रातः ही मिला। मुझे लगता है कि तुम्हें मेरा 26 सितंबर का पत्र नहीं मिला – कम से कम तुमने उसका उत्तर नहीं दिया – जबकि तुमने मेरे उसके बाद वाले 9 नवंबर के पत्र का उत्तर दे दिया है। अक्तूबर में (माह के मध्य में) मैंने तुम्हें पिक्चर पोस्टकार्ड भेजे थे जो तुम्हें समय पर मिल गए थे। तुम्हारी ओर से मिलने वाला अंतिम पत्र 16 अक्तूबर को मिला जो 1 अक्तूबर को लिखा गया था। दो माह से तुम्हारा कोई समाचार नहीं है, मुझे लगा शायद तुम बीमार हो। किंतु अब यह जानकर प्रसन्न्ता हुई एक माह के अंत में मौसम में कुछ सुधार हुआ है, तथा मेरे कुछ रिश्तेदार भी मेरे पास हैं जिसमें मैं व्यस्त रहत हूँ। मुझे हैरानी है कि मेरे 26 सितंबर के पत्र (एयरमेल) का क्या हुआ। वह दार्जिलिंग से समय पर डाक में डाला गया था, क्योंकि यदि सेंसर मेरा कोई पत्र पास नहीं करता है तो

मुझे इसकी आधिकारिक तौर पर सूचना मिल जाती है। इस पत्र का उत्तर पत्र के ऊपर लिखे मेरे घर के पते पर देना। मुझे स्थानांतरित किया जाना है और फिलहाल मैं नही जानता कि मुझे कहाँ भेजा जाएगा। इसलिए यदि तुम मेरे घर के पते पर पत्र लिखोगी तो वे उसे मुझ तक पहुँचा देंगे, चाहे मैं कहीं भी होऊँगा। लगभग दो माह पूर्व मैंने स्थानांतरण के लिए कहा था, क्योंकि यहाँ की जलवायु मेरे उपयुक्त नहीं थी। एक दो दिन में मैं यह स्थान छोड़ दूंगा।

लगभग एक सप्ताह पूर्व मैंने तुम लोगों के लिए साधारण डाक द्वारा क्रिसमस कार्ड भेजा था किंतु मुझे नहीं मालूम कि क्या मैंने उसमें जर्मन लोकाचार के हिसाब से उपयुक्त संबोधन किया था या नहीं। यदि कोई गलती रह गई तो मेरी अज्ञानता समझ क्षमा कर देना। यह पत्र क्रिसमस के आसपास ही तुम्हें मिलेगा। क्रिसमस और मंगलमय नववर्ष के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ स्वीकार करो। अपने परिवार के सभी सदस्यों को मेरी शुभकामनाएँ देना और अपने माता–पिता को मेरा सादर प्रणाम कहना। मुझे याद नहीं आ पा रहा कि पिछले वर्ष मैं क्रिसमस के दिनों में कहाँ था, और इस वर्ष कहाँ रहूँगा। मनुष्य का जीवन कितना परिवर्तनशील और अनिश्चित है।

यह जानकर दुख हुआ कि तुम्हें खांसी हो गई है। यद्यपि गॉल ब्लैडर की परेशानी से मुक्ति मिली। फिर भी उसे बिल्कुल भूल मत जाना। यह कभी ठीक नहीं होता और जब कभी खानपान में अनियमितता होती है, तब यह परेशानी दुबारा हो जाती है। मेरा अपना यही अनुभव है। मेरी भाभी, अशोक की माता को भी यह बीमारी है, लेकिन वे इसके प्रति लापरवाही बरत रही हैं। जब वे अपने खानपान में अनियमितता बरतती हैं वैसे ही पुनः परेशानी हो जाती है। मैं तो बहुत दिनों से उन्हें आपरेशन के लिए कह रहा हूँ लेकिन बाकी सभी लोग इसके विरूद्ध हैं।

क्रिसमस सप्ताह में तुम्हारी मुलाकात सिस्टर एलविरा से होगी। कृपया उसे भी मेरी क्रिसमस और नववर्ष की शुभकामनाएँ दे देना।

मेरे भाई ने लिखा है कि श्रीमती मिलर जो आजकल पूर्व के दौरे पर हैं, भारत पहुँच गई हैं। उसने उन्हें अपने घर आने का निमंत्रण दिया है, जब वे कलकत्ता आएँ तो।

मुझे चाय पर लगने वाले कर की सूचना मिल गई थी और तभी से मैंने मित्रों को चाय भेजने का विचार त्याग दिया है। एक पाउंड चाय पर 10 शिलिंग ड्यूटी देना अच्छा नहीं है। वैसे चाय की क्या कीमत है?

तुमने जो क्रिसमस उपहार भेजा है उसके लिए शुक्रिया। मैं उसके लिए तुम्हारा आभारी रहूँगा।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि जल्दबाजी में जो कपड़ों का बक्सा मैं वहाँ विएना में छोड़ आया था वह मुझे यहाँ भारत में भिजवाया जा रहा है। कृपया मुझे बताओ कि किराया कितना लगा और किसने यह राशि खर्च की ताकि मैं उसे यह राशि भिजवा सकूँ। शेष जो कपड़े वहाँ बचे हैं वे वहीं रहने दो। यदि मेरा कोई जानकार रास्ते में विएना से गुजरा तो मैं उससे प्रार्थना करके उन्हें यहाँ मँगवा लूँगा। लेकिन इसकी जल्दी नहीं। मेरे ख्याल से मैंने पेंशन कास्मोपोलाइट में दो ओवरकोट छोड़े थे एक हल्के ग्रे रंग का और दूसरा गहरे (शायद काले) रंग का था। क्या हल्के ग्रे रंग का कोट बक्से में भिजवाया है? गहरे रंग के कोट की मुझे जरूरत नहीं वह किसी गरीब व्यक्ति को दिया जा सकता है।

मेरा भतीजा पिछले कुछ माह से व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए जर्मनी में था। पता नहीं वह विएना जा पाया अथवा नहीं।

एक बार फिर शुभकामनाएँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सेंसर द्वारा पारित

(अस्पष्ट)
विएना
1.1.37

प्रिय श्री बोस,

आपका पंद्रह दिसंबर 1936 का पत्र पाकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। वह मुझे 28 दिसंबर को दोपहर में मिल गया था। उसी दिन प्रातः आपका क्रिसमस और नववर्ष का कार्ड भी साधारण डाक से मिला था। मेरे सभी जानकार व संबंधी बेहद प्रसन्न थे और आपको धन्यवाद कह रहे थे।

पिछला साल बीत गया और नया वर्ष आ गया है। यह कैसा रहेगा? विश्व की स्थिति में कुछ सुधार होगा अथवा वह और रसातल की ओर जाएगी? कोई नहीं जानता।

हाँ, मुझे आपका 26 सितंबर का एयरमेल द्वारा भेजा गया पत्र मिल गया था, मैंने उसका उत्तर भी दे दिया था। संभवतः मेरा पत्र रास्ते में कहीं इधर–उधर हो गया। मैं पूर्णतः स्वस्थ हूँ, सामान्य सर्दी–जुकाम है। ये दोनों मेरे विश्वस्त मित्र हैं। ये मुझे इतना प्यार करते हैं कि प्रतिवर्ष मुझसे मिलने आते हैं और पूरी सर्दियाँ मेरे पास रहते हैं। मुझे बुरा भी नहीं लगता। मुझे आशा है अब तक आप स्वस्थ हो चुके होंगे और अब बेहतर महसूस करते होंगे।

नवंबर और दिंसबर में मैं क्रिसमस उपहारों में अत्यधिक व्यस्त रही। प्रतिदिन सुबह से लेकर देर रात तक कार्य करती थी। किंतु यही अच्छा था कि मेरा कार्य पूरा हो सका।

क्या आपको किसी अन्य जगह स्थानांतरित किया गया है यदि हाँ तो कहाँ? कृपया मुझे इस नई जगह के विषय में अवश्य लिखें, आप तो जानते हैं कि मैं बेहद उत्सुक व्यक्ति हूँ।

इस वर्ष क्रिसमस बहुत अच्छा रहा। मुझे मेरे परिवार से बहुत सी चीजें मिली अधिकांश उपयोगी थीं और मित्रों से कुछ ऐश्वर्य की चीजें मिलीं। आयरलैंड की मेरी मित्र ने मुझे एक बहुत बढ़िया पुस्तक दी है जिसका नाम बासन्स फलाइंग कॉलम है इसके लेखक इरविन हैं। क्या आप इसके विषय में जानते हैं? श्रीमती हार्ग्रोव ने भी मुझे एक पुस्तक भेजी है 'द मिनरल्स एंड एंड देयर पेंटर्स' इसमें अति प्राचीन जर्मन चित्र की 24 प्रस्तुतियाँ हैं। मुझे यह पुस्तक बेहद पसंद आई। इसमें कुछ जर्मन भाषा की कविताएँ भी हैं। 26 दिसंबर को मास्टर और सेन मुझसे मिलने आए थे। मैंने एक और मित्र को आमंत्रित किया हुआ था, अतः हमें बहुत मजा आया। हमने क्राइस्ट लैंप जलाया और सेन ने पिआनो पर भारतीय संगीत बजाया। सेन कुछ माह के लिए कहीं जा रहा है, इसलिए उसे एक अतिरिक्त ट्रंक की जरूरत है। उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं आपके ट्रंको में से उसे दे सकती हूँ? मैंने उसे काला ट्रंक देने की सोची है। आशा है आपको बुरा नहीं लगेगा।कल उसने मुझे बताया कि आपने उसे लिखा है कि यदि यह चाहे तो भारतीय रिकार्ड्स में से एक रिकार्ड भी ले सकता है। उसने दो रिकार्ड्स लिए हैं। कौन से यह मैं नहीं जानती क्योंकि बंगला लिपि मैं समझ नहीं सकती।

इस वर्ष सिल्वेस्टर की यात्रा बहुत बोंरिंग रहीं। मैं अपने परिवार के साथ सर्कुना गई थी जहाँ से हम लोग 11 बजे वापिस लौटे। तब हमने चाय पीकर आधी रात होने तक का इंतजार किया तब एक दूसरे को नववर्ष की शुभकामनाएँ दीं। इसके पश्चात मैं अपने पड़ोस में गई। वह महिला अपने दो बच्चों के साथ घर में अकेली थी। हमने एक दूसरे को नववर्ष की शुभकामनाएँ दीं। तभी मुझे 'ब्लीगेसीन' का मूर्खतापूर्ण विचार आया। यह इस प्रकार किया जाता है। आप एक चम्मच में कुछ धातु (सीसा) पिघलाते हैं और जब यह पिघल जाता है तो इसे ठंडे पानी में डाल दिया जाता है। शीघ्र ही यह सख्त हो जाता है और कोई आकार ग्रहण कर लेता है। इसी आकृति के आधार पर आप उस व्यक्ति के विषय में, जिसने वह पानी में डाला था, भविष्यवाणी कर सकते हैं। मेरी धातु की

एक अजीब चीज बनी जो भारत का नक्शा जैसा दीख रहा था। रात को दो बजे मैं सोई और सुबह देर तक सोती रही।

सिस्टर एलविरा 15 दिसंबर को रूडोलफनर हॉस छोड़ गई थीं। वे ऊपरी आस्ट्रिया में अपने घर चली गई हैं। वे वहाँ लगभग तीन माह रहेंगी फिर शायद रूडोल्फनर हॉस लौटें या कुछ माह के लिए एक बार फिर इंग्लैंड चली जाएँगी। उन्होंने कहा था कि जब मैं आपको पत्र लिंखु तो उनकी शुभकामनाएँ भी आप तक पहूँचा दूँ। मेरी मित्र एला ने भी मुझे एक बहुत अच्छा पत्र लिखा था और आपके लिए वर्ष 1937 की शुभकामनाएँ भी प्रेषित की है।

मुझे मालूम था कि श्रीमती फ्यूलप मिलर भारत जा रही हैं, किंतु मैंने आपको केवल इसलिए नहीं लिखा, क्योंकि उन्होंने किसी को भी बताने को मना किया था। इस महिला के पास बहुत धन है, तभी तो यह एशिया की यात्रा पर निकली है।

मेरे विचार में भी किसी को चाय भेजने का विचार व्यर्थ है क्योंकि ड्यूटी बहुत ज्यादा है। यहाँ चाय की कीमतें अलग–अलग हैं। प्रति 10 ग्राम 30 ग्रोशेन से लेकर 70 से 80 तक है। विशेष रूप से एम0 ई0 आई0 एन0 एल0 नामक संस्था, जिसका अपनी पत्ती के द्वारा पूर्व से संबंध हैं, की चाय बहुत बढ़िया है। ड्यूटी का कारोबार बहुत भयानक है। मैंने अपनी मित्र को जर्मनी में एक हाथ का बना रात्रि गाउन भेजा। वह साधारण से सूती कपड़े का बना था और बल्कान विधि से बनाया गया था। उस गरीब को उस पर 4.50 मार्क्स ड्यूटी के देने पड़े। यह लगभग 9 आस्ट्रियाई शिलिंग के बराबर है। जब उसने मुझे यह लिखा तो मुझे बहुत दुख हुआ। क्या आपको भी उस क्रिसमस उपहार पर ड्यूटी देनी पड़ी जो मैंने आपको भेजा था।

विएना से भारत के लिए जो आपका सूटकेस भेजा गया है उसके लिए मैंने कोई किराया नहीं दिया है, आपके भतीजे अशोक ने ही इसकी व्यवस्था की थी, मैंने तो केवल उसे तैयार किया था। उसे मैंने बता दिया

था कि जो चीजें अनुपयोगी थीं वे मैंने किसी को दे दी है। हल्के ग्रे रंग का कोट अन्य कपड़ों के साथ भिजवा दिया है। गहरे रंग का (बल्कि डाला) कोट मेरे पास पड़ा है मैं यह उसे दे दूँगी जिसे इसकी आवश्यकता पड़ेगी। एक अन्य कोट (यूरोपीय ढंग था) मैंने उस व्यक्ति के हाथ भिजवा दिया है जो भारत जा रहा था। वह आपके भाई को दे दिया जाएगा। आपका भतीजा अभी जर्मनी में ही है। जिन दिनों आपकी चीजें भारत भेजने की व्यवस्था करनी थी तब उससे संपर्क हुआ था। किंतु वह विएना नहीं आ सका, हालांकि यदि वह आ जाता तो मुझे प्रसन्नता होती, क्योंकि मेरे लिए सब चीजों की व्यवस्था करना कठिन कार्य था। संभवतः बाद में वह विएना आए। बहुत दिनों से मुझे उसका कोई समाचार नहीं मिला है।

25 दिसंबर के बाद से यहाँ कुछ सर्दी बढ़ी है। 25 तारीख को बर्फीला तूफान भी आया था। किंतु बहुत बर्फ नहीं पड़ी धुंध में पेड़, टेलिफोन की तारें आदि गिर कर जम गईं। पेड़ ऐसे लग रहे थे जैसे किसी ने उन पर पिसी हुई चीनी डाल दी हो। मुझे खेद है कि मैं कोई पौधा तोड़कर आप तक नहीं भिजवा सकती। यह एक सुंदर दृश्य है।

अब तक मैं आपको सब कुछ बता चुकी हूँ। अब मैं शहर जाकर बूरपाल्ट्ज़ के टेलिग्राफिक आफिस से यह पत्र डाक में डालूंगी और फिर कैफे बेस्ट्स जाऊँगी, क्योंकि वहाँ मुझे अपनी एक मित्र से मिलना है।

एक बार पुनः नववर्ष की शुभकामनाएँ। मेरे परिवार की ओर से भी आपको हार्दिक शुभकामनाएँ।

ओह! इससे पहले कि मैं भूल जाऊँ, क्या आप कभी–कभी मुझे भारतीय समाचार पत्र भिजवा सकते हैं। कई महीने से मुझे ये पत्र नहीं मिले हैं। धन्यवाद।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारा शुभाकांक्षी
एमिली शेंक्ल

सेंसर द्वारा पारित

मेडिकल कालेज अस्पताल
कलकत्ता
10 जनवरी, 1937

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हें व तुम्हारे पूरे परिवार को मेरी ओर से नववर्ष की शुभकामनाएँ।

तुम्हारा पहली जनवरी का पत्र मुझे कल मिला। मैंने पिछला पत्र कुर्सियांग से लिखा था, किंतु अब मुझे कलकत्ता ले आया गया है। आजकल मैं अस्पताल में 'बंदी' हूँ। 17 दिसंबर को मैं यहाँ आया था तभी से यहाँ के डॉक्टरों द्वारा मेरा परीक्षण जारी है। चिकित्सकीय सहायता तो मुझे यहाँ मिल ही रही है जो मेरे लिए सुखद है किंतु एक अन्य बात भी है जिसके कारण मैं यहाँ आकर बहुत प्रसन्न हूँ। यहाँ का मौसम बहुत अच्छा है। सूर्य खूब तेजी से चमकता है, जिसका पहाड़ों पर अभाव था, फिर भी मौसम सर्द है। फिर सरक़ार ने भी मेरे रिश्तेदारों को प्रतिदिन मुझसे मिलने की अनुमति दे दी है।

अभी तक चिकित्स्कों ने 'बीमारी नहीं बताई है, केवल यही बताया है कि मुझे सैप्टि टांसिल है। उनकी शेष राय की मैं अभी इंतजार में हूँ।

मैं नहीं जानता कि यहाँ कितने दिन रहूंगा, न ही यह पता है यहाँ से मुझे कहाँ स्थानांतरित किया जाएगा। लेकिन यह पता है कि अधिक दिन यहाँ नहीं रह पाऊँगा। इसलिए यदि तुम मुझे पत्र भेजो तो मेरे घर के पते – 1 वुडबर्न पार्क, एल्गिन रोड, पोस्ट आफिस कलकत्ता के पत्ते पर ही लिखना, वह मुझे मेरे नये पते पर भेज दी जाएगी।

क्रिसमस उपहार के लिए धन्यवाद! फोटो बहुत बढ़िया है और वे बढ़िया स्मारिकायें हैं। ये मुझे कुर्सियांग में ही मिल गई थी। मुझे कोई ड्यूटी नहीं देनी पड़ी। हमें आयातित माल पर यूरोपीय देशों की भांति अत्यधिक टैक्स नहीं देना पड़ता है।

पता नहीं एयरमेल के उन्होंने तुमसे 1 शिलिंग 70 ग्रोशेन क्यों लिए। सामान्यतः वे 1 शिलिंग 30 ग्रोशेन लेते हैं। संभव है हाल ही में उन्होंने दरें बढ़ा दी हों।

श्रीमती हार्ग्रोव ने मुझे क्रिसमस उपहार के तौर पर एक बढ़िया पुस्तक भेजी है जिसमें तरह–तरह के पौधों के चित्र हैं। किसी ने मुझे 1937 का कैलेंडर भेजा है जो पुस्तकाकार है जिसमें आस्ट्रियाइ दृश्यों के सुंदर चित्र हैं। यह पुस्तक विएना बैंक वेरिन ने प्रकाशित की है।

तुम बर्फ का आनंद ले रही हो अतः मुझे तुमसे ईर्ष्या हो रही है। यहाँ के मैदानी इलाकों में तो हम स्वप्न में भी बर्फ नहीं देख सकते।

क्या तुम मुझे बताओगी कि तुमने क्रिसमस किस प्रकार मनाया? क्या आप लोग भी 24 और 25 दिसंबर को पेड़ पर रोशनी करते हो और उपहार बांटते हों? जहॉ तक मुझे याद है शायद 25 तारीख की रात में तो क्या 25 के बाद भी किसी रात पेड़ पर रोशनी करते हो? क्या 25 तारीख के बाद रोशनी को उतार देते हो? इंग्लैंड में 25 की शाम को क्रिसमस मनाई जाती है, यदि मेरी याददाश्त सही है तो।

कृपया सिस्टर एलविरा और सुश्री एला को मेरी ओर से नववर्ष की शुभकामनाएँ देना, यदि अभी तक नहीं दी है तो।

कई माइ बाद मैं शहर में आया हूँ, पहले–पहले यह परिवर्तन अच्छा लगा। किंतु यहाँ बहुत शोर है – अंदर भी, बाहर भी। बाहर बसों, ट्राम और अन्य यातायात के साधनों के कारण। अंदर उन मरीजों के कारण जो दर्द होने पर बेहद चीखते चिल्लाते हैं। यह भारत का सबसे बड़ा अस्पताल है। कलकत्ता का भी। कमरे जनरल वार्ड से ठीक प्रकार अलग नहीं बनाए गए हैं इसी कारण जब कोई मरीज दर्द से चिल्लाता है तो मुझे शोर सुनाई देता है। बहरहाल, बहुत दिन के अकेलेपन के बाद, मनुष्यों की निकटता, बेशक वे शोर ही मचाएँ, भली लगती है।

शेष कुछ लिखने को नहीं है। आशा है सर्दी के बावजूद तुम्हारा जुकाम ठीक होगा।

डॉक्टरों को आशा है कि वे उपचार द्वारा मेरा टांसिल ठीक कर सकते हैं, अन्यथा मुझे आपरेशन द्वारा उन्हें निकलवाना पड़ेगा।

विएना की श्रीमती मिलर आजकल कलकत्ता में हैं। सरकार ने उन्हें मुझसे मिलने की इजाजत दे दी है और मुझे भारत में उनसे मिलना अच्छा लगा। उन्होंने बताया कि उन्हें अपनी यात्रा में आनंद आ रहा है।

तुम्हारे माता–पिता को सादर प्रणाम, तुम्हें व तुम्हारी बहन को शुभाशीष।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सेंसर द्वारा पारित

मेडिकल कालेज अस्पताल
कलकत्ता
26 जनवरी, 1937

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 14 जनवरी का पत्र मुझे 25 तारीख को मिला, धन्यवाद! मुझे विश्वास हैं अब तक तुम्हें मेरा 10 जनवरी का पत्र मिल चुका होगा। शुभकामानाओं के लिए धन्यवाद, घर में भी सभी को धन्यवाद।

कलकत्ता में सर्दी बहुत कम पड़ती है, इस वर्ष भी यही हाल है। भारत के कुछ हिस्से में शीतलहर चल रही है। कर्सियांग में अधिक ठंड और धुंध थी। जिन दिनों मैं वहाँ था, वहाँ बेहद धुंधभरा मौसम था, इसलिए

आजकल यहाँ का सुर्य अच्छा लग रहा है। किंतु जो लोग सदा यही रहते हैं उन्हें यह धूप अच्छी नहीं लगती। यह स्वाभाविक ही है।

अभी भी मैं कलकत्ता के अस्पताल में ही हूँ। कुल मिलाकर पहले से कुछ बेहतर हूँ। फिलहाल मेरे गले की तकलीफ का इलाज चल रहा है। लिवर में भी कुछ खराबी है। मुझे अपने स्थानांतरण का पहले पता नहीं चलता किंतु कभी भी कहीं भी भेजा जा सकता हैं। इसलिए तुम मुझे मेरे घर के पते पर ही पत्र लिखो जो इस प्रकार है–1 वुडबर्न पार्क, कलकत्ता। वे मेरे पत्र सेंसर अधिकारियों के पास भेज देंगे।

शेष ऐसा कुछ नहीं जिसमें तुम्हारी दिलचस्पी हो। मेरे कलकत्ता आवास के दौरान मुझे सप्ताह में दो बार अपनी माताजी से मिलने की अनुमति मिल गई है। साथ में सिस्टर एलविरा के लिए पत्र भेज रहा हूँ। तुम्हारे माता–पिता को प्रणाम।

हार्दिक शुभकामनाएँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सेंसर द्वारा पारित

(अस्पष्ट)
विएना
28.1.37

प्रिय श्री बोस,

आपका 10 तारीख का पत्र मुझे 19 तारीख को मिला। बहुत–बहुत धन्यवाद! नव वर्ष की शुभकामनाओं के लिए मेरा व मेरे परिवार की ओर से धन्यवाद!

मैं आशा करती हूँ कि वे पूरी होंगी। आपको भी शुभकामनाएँ

आपके स्वास्थ्य के विषय में जानकर दुख हुआ। मैं आशा करती हूँ कि आप शीघ्र ही ठीक हो जाएँगे। बीमारी से बुरी कोई चीज नहीं है। और फिर अस्पताल में रहना तो और भी दुखद है। क्या आपको आपके स्वास्थ्य के विषय में कोई और सूचना नहीं मिली? कृपया मुझे भी सूचित करें।

भारत में पर्याप्त धूप निकलती है। यहाँ बिल्कुल भी नहीं है। एक सप्ताह पूर्व यहाँ भयानक सर्दी थी (10 डिग्री माइनस में था) अत्यधिक बर्फ भी पड़ रही थी। वह तो अच्छी थी, किंतु सर्दी ठीक नहीं। तीन चार दिन मैं बाहर नहीं निकली। क्योंकि मुझे सर्दी से बचने के लिए बहुत सावधान रहना पड़ता हैं।

फोटो के विषय में आपने क्या लिखा है? क्रिसमस के उपहार में तो मैंने आपको नीला कढ़ाई वाला बुक कवर भेजा था जो नीली सिल्क का बना था। क्या वह आपको नहीं मिला? बहरहाल! मैंने आपको चित्र नहीं भेजे थे। गलती हो गई होगी।

मेरे पिछले पत्र के संदर्भ में, उन्होंने मुझसे 1.30 शिलिंग ही लिए थे। डाकघर में ही किसी मूर्ख ने गलती से उसपर 1.70 शिलिंग लिख दिया होगा। मेरे ख्याल से वह सिल्वेस्टर से ही नशे में रहा होगा।

आप जानना चाहते हैं कि हम लोग यहॉ क्रिसमस कैसे मनाते हैं। पहले हम अपने रिश्तेदारों व मित्रों के लिए उपहार खरीदते हैं। 24 तारीख को क्रिसमस ट्री को (मिठाई, मोमबत्तियों और कॉँच की चीजें) सजाया जाता है। 24 की रात 7 या 8 बजे मोमबत्तियाँ जला दी जाती हैं। परिवार के सदस्यों द्वारा पुराना पारंपरिक गीत गाया जाता है। पेड़ के नीचे सभी उपहार रख दिए जाते हैं। तब प्रत्येक व्यक्ति अपना उपहार ले लेता है और अन्य लोगों को उसके लिए धन्यवाद देता है। जो अधिक धार्मिक लोग हैं – वे आधी रात को चर्च जाते हैं (मैं कभी नहीं जाती) 25

तारीख को छुट्टी रहती है। आप लोगों के पास आ जा सकते हैं, अथवा लोग आपके पास आ सकते हैं। 24 तारीख के बाद आप जब भी चाहें क्रिसमस ट्री को रोशन कर सकते हैं। जब कोई मिलने वाला आए तो उसे दिखाने के लिए सामान्यतः यह जलाया जाता है। वह पेड़ या तो नए वर्ष पर या फिर 6 जनवरी को हटाया जाता है। किंतु इन दो दिनों का कोई विशेष नियम नहीं है।

कुछ दिन पहले सिस्टर एलविरा यहाँ आई थीं। हमने आपको एक पोस्टकार्ड लिखा था, आशा है वह आपको मिल गया होगा। किंतु अब वे ऊपरी आस्ट्रिया के लिए रवाना हो चुकी हैं।

अब हमें रेडियो (वायरलेस) प्राप्त हो गया है। वह वास्तव में ही उपयोगी चीज है क्योंकि आप इस पर विएना, चेकोस्लोवाकिया, जर्मनी, इटली, पोलैंड, स्विट्जरलैंड, फ्रांस यहाँ तक कि इंग्लैंड भी सुन सकते हैं। इंग्लैंड के कार्यक्रम बहुत थका देने वाले और मुश्किल से समझ में आने वाले होते हैं। पिताश्री पूरे दिन डांटते–डपटते रहते हैं कि हमने परिवार की शांति भंग कर दी है। किंतु जितना ही वे चिल्लाते हैं उतना ही अधिक हम रेडियों सुनते हैं।

क्या आप जानते हैं कि श्रीमती मिलर वापिस कब लौट रही हैं? (चमड़े का बड़ा सूटकेस और कपड़े आदि) क्या आप अभी भी जर्मन भाषा पढ़ते हैं? मैं दिनभर कोई काम नहीं करती सिवाय इसके कि अंधकारमय भविष्य के प्रति चिंतित रहती हूँ। मैं एक संस्था से दूसरी संस्था तक पागलों की भाँति घूमी हूँ। मैंने अपना परिचय दिया है, पत्र आदि लिखे हैं। नतीजा कुछ नहीं निकला। मैं बता नहीं सकती यह सब कितना निराश करता है। कभी–कभी तो सोचती हूँ कि मैं जी क्यों रही हूँ। ऐसे व्यर्थ जिए जाने का क्या लाभ। किंतु व्यक्ति अपने जीवन का अंत करने से बहुत डरता है।

ऐसा लगता है कि हिंदुस्तान एकेडेमियल ऐसोसिएशन ने अपनी गतिविधियाँ रोक दी हैं। क्योंकि एक दिन मैं गैरोला को अखबार वापिस

करने होटल द फ्रांस गई थी। वहाँ के मालिक ने बताया कि वे अब हुत कम आपस में मिलते हैं। कोई सिस्टम नहीं रह गया है। एकमात्र व्यक्ति जो कुछ कर सका था, सेन , वह आजकल कुछ माह के लिए विएना से गया हुआ है और बाकी के लोग कोई अधिक कार्य करने वाले नहीं हैं। आज मैं श्री टाइमर से मिली थी। उन्होंने आपको नमस्ते व अपनी शुभकामनाएँ भेजी हैं।

क्या आजकल आप कुछ दिलचस्प चीज पढ़ रहे हैं? मैं कुछ नहीं पढ़ पा रही क्योंकि मुझे सिस्टर एलविरा का कुछ काम करना है जो मुझे व्यस्त किए हैं। यह अच्छा ही है, क्योंकि इससे व्यक्ति को अपने विषय में सोचने का समय ही नहीं मिलता।

शेष कुछ लिखने को नहीं है। कोई खास घटना भी नहीं घटी। हम सभी अपेक्षाकृत ठीक हैं। पता नहीं आपको कलकत्ता से कहीं ले जाया गया या अभी वहीं हैं। कृपया मुझे सूचित करें।

मेरा परिवार आपको शुभकामनाएँ भेज रहा है। आपके जन्मदिन की भी शुभकामनाएँ मेरी ओर से।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
एमिली शेंक्ल

पुनश्चः—एक बात तो मैं भूल ही गई। मुझे श्री जेनी का पत्र मिला था वे आपका पता पूछ रहे थे और कोई अन्य जानकारी जो मुझे आपके विषय में हो जानना चाहते थे। उन्होंने अपनी व जेनेवा के आपके अन्य मित्रों की शुभकामनाएँ आपको भिजवाई हैं।

एमिली शेंक्ल

सेंसर द्वारा पारित

मेडिकल कालेज अस्पताल
कलकत्ता
10फरवरी, 1937

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारे 28 जनवरी के एयरमेल द्वारा भेजे गए पत्र के लिए शुक्रिया। वह मुझे 8 तारीख को मिला। मेरे पते से आपको पता चल गया होगा कि मैं अभी अस्पताल में ही हूँ। भविष्य में कहाँ जाऊँगा कुछ भी निश्चित नहीं है।

तुम्हारे पत्र से पता चला कि जो क्रिसमस उपहार तुमने मुझे भेजा था वह गलत जगह चला गया। क्या तुमने वह पंजीकृत डाक से भेजा था? मैंने दार्जिलिंग के सुपरिंटेंडेंट ऑफ पुलिस को लिखा है कि वह खोज खबर ले। पहले के अनुभवों से मुझे उम्मीद नहीं है कि वह मिलेगा। फिर भी मै तुम्हें इसके लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

यहाँ मौसम अच्छा है हालांकि प्रातःकाल कुछ धुंध रहती है, लेकिन बाद में धूप चमकने लगती है। तुम जो वहाँ बर्फ का मजा ले रही हो उससे मुझे तुमसे ईर्ष्या होती है। यह खेद की बात है कि तुम सर्दियों के खेल खेलने नहीं जा पा रहीं – उसमें बहुत आनंद आता।

मेरे कपड़ों का सूटकेस कलकत्ता पहुँच चुका है, उसे भिजवाने की उस परेशानी के लिए तुम्हारा आभारी हूँ।

तुम दोनो का पोस्टकार्ड मिल गया था मैंने उसका उत्तर एयरमेल द्वारा भिजवा दिया था।

पता नहीं मैंने तुम्हें लिखा था या नहीं कि विएना की श्रीमती मिलर यहाँ जनवरी में आई थीं। कलकत्ता में वे दो सप्ताह ठहरीं , वे मेरे भाई की अतिथि थी। मुझे अस्पताल में मिलने की इजाजत उन्हें मिल गई

थी। आजकल वे घूम रही हैं और मार्च के अंतिम सप्ताह (अगले माह) वे बंबई से रवाना होंगी।

जिन दोनों मैं कुर्सियांग में था तो कभी–कभी जर्मन पुस्तक पढ़ लिया करता था। यहाँ आने के बाद ऐसा नहीं कर पाया। आज मै श्री–फाल्टिस को जर्मन में पत्र लिखने का प्रयास करूँगा। आशा है वे मेरी अशुद्ध जर्मन समझ जाएँगे, यदि मेरा पत्र उन तक पहुँचा तो।

आशा है तुमने अच्छी खासी फ्रेंच पढ़नी शुरू कर दी होगी। तुमने उसे बीच में क्यों छोड़ दिया? बाद में वह लाभदायक सिद्ध हो सकती थी।

कलकत्ता आने के बाद से मैं बेहतर महसूस कर रहा हूँ। इसके अलावा सरकार ने मुझे कुछ छूट दी है जिससे मुझे बेहद आराम मिला है। एक सप्ताह में दो बार मैं अपनी माताजी से मिलने जा सकता हूँ। आज से मैं उन्हें प्रतिदिन मिलने जा सकूँगा। प्रातःकाल मैं पुलिस आफिसर के साथ कार में दूर तक घूमने जा सकता हूँ। दोपहर में कभी–कभी मेरे वे रिश्तेदार मुझसे मिलने आ जाते हैं, जिन्हें मुझसे मिलने की इजाजत मिली है। शेष समय पुस्तकों, पत्रों और अखबारों के सहारे व्यतीत हो जाता है। यहाँ कलकत्ता में मेरे लिय समय बिताना कठिन कार्य नहीं हैं किंतु कर्सियांग में समय बहुत लंबा और उदास लगता था।

श्री जेनी और श्री टाइमर को मिलो या पत्र लिखो तो मेरी नमस्ते कहना। अन्य मित्रों को भी मेरी नमस्ते कहना। मेरा पता वही पहले वाला है– 1, वुडबर्न पार्क, कलकत्ता। वे मेरी डाक मुझे भेज देंगे। मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ और माता–पिता को सादर प्रणाम। तुम कैसी हो?

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सेंसर द्वारा पारित

(अस्पष्ट)
12.2.37

प्रिय श्री बोस,

आपका 26 जनवरी का पत्र पाकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। वह मुझे तीन तारीख में मिला था। मैंने एलविरा का पत्र उसे भेज दिया था उसने तत्काल मुझे जवाब भी दे दिया है। वह अत्यधिक प्रसन्न थी और उसने सादर प्रणाम व हार्दिक शुभकामनाएँ भेजी हैं। वह अभी आपको पत्र नहीं लिख सकती क्योंकि वह बहुत व्यस्त है। जब समय मिलेगा तो आपको पत्र का उत्तर अवश्य देगी।।

एक दिन मैंने फोन पर श्रीमती वेटर से बात की थी। उन्होंने भी आपके लिए हार्दिक शुभकामनाएँ भेजी हैं। वे आपको एक लंबा पत्र लिखतीं, किंतु उनकी बेटी लगभग एक माह से बीमार है, इसलिए नहीं लिख पाई।

अब मेरे विषय में एक समाचार। 2 तारीख से मुझे एक छोटी सी नौकरी मिल गई है। आजकल दोपहर में मै एक भारतीय बच्चे की देखभाल करती हूँ। क्या यह मजाक नहीं लगता? आप जानते ही हैं कि मुझे बच्चे बहुत पसंद नहीं हालांकि बच्चे मुझसे चिपटे रहते हैं। और अब मुझे एक बच्चे की देखभाल करनी है। बच्चा 17 माह का है और बहुत अच्छा है। जब उसके माता–पिता नहीं होते तो वह खासतौर पर भद्र हो जाता है। अपने माता–पिता को देखते ही वह शरारतें शुरू कर देता है क्योंकि वह जानत है कि उनके साथ वह कुछ भी कर सकता है। यह उनका पहला बच्चा है और माँ अनुभवी नहीं है, इस बात को वह स्वयं भी स्वीकार करती है। वे काश्मीर के भले लोग हैं। अब क्योंकि मेरी आमदनी शुरू हो गई है इसलिए मैंने अपने फ्रेंच के पाठ पढ़ने पुनः शुरू कर दिए हैं। हालाँकि मैंने कई माह फ्रैंच नहीं पढ़ी फिर भी मैं कुछ भूली नहीं हूँ।

मुझे स्वयं अपने आप पर आश्चर्य हो रहा है।

ओह! तो अब आपको धूप अच्छी लगने लगी है। मुझे याद है कि जब मैं सर्दियों में धूप के लिए कहती थी तो आप मेरा मजाक उड़ाया करते थे। आजकल यहाँ अधिक धूप नहीं है। पिछले कुछ दिन से यहाँ का सर्दियों का मौसम बहुत अच्छा था किंतु शीघ्र ही बर्फ पिघलने लगेगी और यहाँ का सौंदर्य समाप्त हो जाएगा। आजकल बाहर नमी और कीचड़ है। किंतु कुछ दिन से कुछ धूप निकलनी शुरू हुई है। कल मैं बच्चे को लेकर पार्क में गई थी। आपके देखने लायक था कि लोग अपने–अपने घरों से कैसे बाहर निकल आए थे। जैसे बारिश के बाद केंचुए। सभी धूप में बैठे थे और सुर्य के सामने रहना चाहते थे।

आपका स्वास्थ्य कैसा है? आशा है बेहतर होगा। दार्जिलिंग की सीलन भरी जलवायु के कारण ही अधिक टौसिल्स खराब हुए होंगे। मैं बताना चाहूँगी कि इन सर्दियों में मैं बहुत अधिक स्वस्थ महसूस कर रही हूँ। कई सप्ताह बीत गए मुझे खाँसी जुकाम नहीं हुआ। केवल जब बहुत अधिक सर्दी होती है तब मेरे बाईं ओर के फेफड़े में दर्द महसूस होता है। किंतु यह सहनीय है। मैंने डॉक्टर से बात की थी उसने मुझे बताया कि मुझे सर्दी से बचना चाहिए और धुंध में बाहर नहीं निकलना चाहिए तथा जहाँ तक संभव हो धूप सेकनी चाहिए।

आपकी लिवर की समस्या अब कैसी है? क्या वह ठीक हो सकती है? यदि भारत में नहीं हो सकती तो कृपया यूरोप आकर कार्ल्सबाद में कोशिश करें। आप तो जानते ही हैं कि यहाँ कितना लाभ हो सकता है।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि कलकत्ता में आपको अपनी माताजी से मिलने की इजाजत मिल गई थी। इससे आपको तथा आपकी माताजी को राहत महसूस हुई होगी क्योंकि माँ हमेशा अपने बच्चे से मिलने को बेचैन रहती है। आप भी अपनी माताजी से मिलकर प्रसन्न होंगे। क्या आपका भतीजा पहुँच गया है? उसने मुझे लिखा था कि वह

फरवरी के प्रारंभ में लौटेगा। मैं उसे पत्र लिखना भूल गई क्योंकि मैं बहुत व्यस्त थी।

श्रीमती हारग्रोव का कुछ समाचार है? यद्यपि हम दोनों एक ही शहर में रहते हैं लेकिन फिर भी पिछले क्रिसमस से मैं उनसे नहीं मिल पाई हूँ। मैं बाहर बहुत कम जाती हूँ। इसके अलावा बहुत से लोग विएना छोड़कर जा चुके हैं। सेन इंग्लैंड में हैं। एक बार उन्होंने मुझे लिखा था कि वे अस्पताल में बहुत व्यस्त रहते हैं। मास्टर अभी भी जर्मनी में है। बाकी लोगों से मैं मिल नहीं पाई। इसलिए किसी से संपर्क नहीं है। कल यूनिवर्सिटी में सीलोन के विषय में एक भाषण था। मैं वहाँ नहीं जा पाई क्योंकि वह सांय छः बजे प्रारंभ होना था। मैं शाम 7 बजे तक व्यस्त रहती हूँ। मेरे माता–पिता वहॉ गए थे। वह काफी दिलचस्प भाषण था।

अब मैं आपको आपके द्वारा जर्मन भाषा में लिखे पत्र के लिए बधाई देती हूँ। बहुत बढ़िया लिखा गया था। क्या मैं आपकी अशुद्धियाँ ठीक कर सकती हूँ। इसके लिए आपको मुझे कुछ अनुवाद कर भेजना होगा या फिर जर्मनी में पत्र लिखना होगा। तब मैं आपकी गलतियाँ ठीक करके भेज सकूँगी।

मेरे परिवार की ओर से सादर प्रणाम और मेरी ओर से शुभकामनाएँ स्वीकार करें।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
एमिली शेंक्ल

सेंसर द्वारा पारित

मेडिकल कालेज अस्पताल
कलकत्ता
26 फरवरी, 1937

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

12 तारीख के तुम्हारे एयरमेल द्वारा भेजे गए पत्र के लिए शुक्रिया। वह मुझे 23 तारीख को मिला। तुम्हें जर्मन भाषा में पत्र लिखने के बाद मैंने श्री फल्टिस को भी लिखा था। आशा है वे मेरी अशुद्ध जर्मन भाषा समझ सकेंगे।

यूरोप से प्राप्त पत्रों से पता चलता है कि इस वर्ष वहाँ अधिक सर्दी नहीं पड़ी। कलकत्ता में बल्कि सारे भारत में ही सर्दी अधिक नहीं पड़ती, इस वर्ष भी ऐसा ही रहा। जिंदगी में पहली बार मुझे सर्दी से दूर रहने पर प्रसन्नता हुई, जबकि मैं सर्दी और धुंध का शौकीन हूँ।

ऊपर के पते से तुम जान गई होगी कि मैं अभी कलकत्ता में ही हूँ। यहाँ आशा से अधिक रह चुका हूँ। जब मैं यहाँ आया था तो मुझे यहाँ पंद्रह दिन से अधिक रहने की आशा नहीं थी। लेकिन अब लगभग 2 1/2 माह हो गए हैं। यह पक्का है कि शीघ्र ही मैं कहीं अन्य स्थान पर जाऊँगा। किंतु पता नहीं कहाँ। इसलिए बेहतर यही है कि मुझे मेरे घर के पते पर पत्र लिखो – 1 वुडबर्न पार्क।

मेरी जर्मन भाषा शुद्ध करने के लिए धन्यवाद। बुरा मानने की जगह मैं तुम्हारा आभारी हूँ कि तुमने इतना कष्ट उठाया।

अन्य कुछ ऐसा नहीं है जिसमें तुम्हें रूचि हो। श्रीमती मिलए आजकल देश का भ्रमण कर रही हैं। मार्च में वे बंबई से रवाना होंगी। मैंने समाचार पत्रों में पढ़ा कि एक दिन वे महात्मा गाँधी से भी मिली थीं। मेरा एक भतीजा जो जर्मनी में पढ़ने गया था कई वर्ष बाद वापिस लौट आया है। दूसरा भतीजा शीघ्र ही उच्चशिक्षा के लिए इंग्लैंड के लिए रवाना

होगा।

हाँ! मुझे माताजी से मिलने की इजाजत मिल गई है। यह सुविधा हम दोनों को सुखद लगी। जब कलकत्ता से दूर चला जाऊँगा तो इसकी कमी खलेगी।

कुल मिलाकर मेरा स्वस्थ्य ठीक है किंतु अभी कुछ लक्षण मौजूद हैं। मेरे चिकित्सकों की राय है कि अस्पताल में रहना आवश्यक नहीं, इलाज कहीं भी रह कर हो सकता है।

मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ व तुम्हारे माता–पिता को सादर प्रणाम।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

विएना
26.2.37

प्रिय श्री बोस,

आपके 10 तारीख के पत्र के लिए धन्यवाद! वह मुझे 19 तारीख को मिला।

मैंने आपको क्रिसमस उपहार पंजीकृत सैंपल डाक द्वारा भेजा था। सौभाग्य से मेरे पास रसीद है। तब तक उसे संभाल कर रखूंगी जब तक कि आपसे कोई सूचना नहीं मिल जाएगी। मैं भी यहाँ पूछताछ करूँगी। आखिर चीज कहाँ गई यह पता करूँगी।

यहाँ का मौसम दुबारा सर्द, गंदा, धुंधभरा और बरसाती हो गया है। मैं बहुत परेशान हूँ। मुझे आपके यहाँ के धूप भरे मौसम से ईर्ष्या हो रही है। हम दोनों जगह बदल लेते हैं। आप विएना आ जाइए मैं भारत चली जाऊँगी।

आपने श्रीमती मिलर की कलकत्ता यात्रा के विषय में पहले भी लिखा था। अब तो वे वापिस आने वाली होंगी। यहाँ आकर वे काफी परेशान होंगी। जब वे विएना आएँगी तो मैं उनसे मिलूंगी। मेरे पास उनकी एक पुस्तक है जो मुझे उन्हें लौटानी है।

यह बुरी बात है कि आपने जर्मन सीखना दुबारा छोड़ दिया है। एलविरा को लिखे पत्र से मुझे आभास हुआ था कि आपने कितनी उन्नति कर ली है। यदि डॉ0 फाल्टिस को लिखा पत्र भी ऐसा ही लिखा गया है तो आपने बहुत अच्छा कार्य किया है। पिछले एयरमेल द्वारा भेजे पत्र में मैंने आपकी गलतियाँ ठीक करके भेजीं थीं आशा है वह आपको मिल गया होगा।

मैंने दुबारा फ्रेंच पढ़ना प्रारंभ कर दिया है क्योंकि मुझे एक छोटी सी नौकरी मिल गई है। मैं बहुत खुश हूँ। सच में अब मेरे पास घर के काम करने को भी बहुत कम समय मिल पाता है।

पिछले रविवार को मैं श्रीमती हार्ग्रोव से मिली थी। उन्होंने सादर प्रणाम भिजवाया है। वे स्वयं भी बहुत व्यस्त हैं। सुश्री ग्रीम कृष्णाजी से मिलने इटली गई थीं, वहाँ एक मीटिंग थी। वे भी आपको पत्र लिखेंगी।

यह अच्छा है कि अब आप रोज अपनी माताजी से मिल सकते है। आपकी माताजी को यह बहुत अच्छा लगेगा क्योंकि वे बूढ़ी और एकाकी हैं और आपके निकट रहने की इच्छुक भी होंगी। आपका स्वास्थ्य कैसा है? आशा है पहले से बेहतर ही होगा। क्या डाक्टर आपके टांसिल्स बचा पाएंगे? आपके लिवर की क्या स्थिति है? गॉल ब्लैडर के घाव का क्या हाल है? आशा है कि अब आपको आपरेशन के बाद की परेशानियाँ नहीं होंगी। आजकल मेरा गॉल ब्लैडर परेशान नहीं कर रहा। नवंबर 1936 के अंत में मुझे अटैक हुआ था। उसके बाद से कुछ नहीं हुआ। आज मुझे फ्रॉ लोवी का पत्र मिला उसने भी आपको अपनी नमस्ते भेजी है।

क्या आप मुझे एक बार 'माडर्न रिव्यू' की प्रति भिजवा सकते है। अथवा कोई अन्य पत्र या पत्रिका। आजकल इस नौकरी की वजह से मेरा मित्रों से संपर्क नहीं हो पाता। परिवार से रोज मिल लेती हूँ। बस यही सब चल रहा है।

इस सप्ताह विएना में बहुत शोर था। जर्मनी के विदेशा मंत्री वी0 न्यूरेटन सोमवार को विएना आए थे। प्रातः उनके आने से लेकर शाम तक यहूदी शहर में चिल्लाते रहे और जनमत संग्रह की माँग करते रहे। मैं वहाँ नहीं गई थी, क्योंकि मैं भीड़–भाड़ से बचती हूँ। हम लोग बेवजह मुसीबत में पड़ जाते हैं।

इस छोटी सी नौकरी के बावजूद मैं अभी ठीक–ठाक नौकरी की तलाश में हूँ। किंतु कोई आशा नहीं है। आप नहीं जानते यहाँ आस्ट्रिया में स्थिति कितनी खराब है। प्रत्येक व्यक्ति दूसरे देश जाना चाहता है क्योंकि आस्ट्रिया 6.5 मिलियन लोगों को नौकरी देने में अक्षम है। धीरे–धीरे स्थिति और बिगड़ेगा। इसी कारण जन्मदर में भी कमी आती जा रही है। इसका अर्थ है दो या तीन साल के अंदर आस्ट्रिया के कुछ हिस्सों में स्कूलों की कोई आवश्यकता ही नहीं रह जाएगी। शिक्षक भी बेरोजगार हो जाएँगे। विएना के तो कई स्कूल बंद हो भी चुके हैं क्योंकि वहाँ पर्याप्त मात्रा में बच्चे नहीं थे।

मेरे परिवार की ओर से सादर प्रणाम। मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
एमिली शेंक्ल

सेंसर द्वारा पारित

मेडिकल कालेज अस्पताल
कलकत्ता
15 मार्च, 1937

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

26 फरवरी के तुम्हारे एयरमेल द्वारा भेजे गए पत्र के लिए धन्यवाद। वह मुझे 11 तारीख को मिला।

पिछला पत्र लिखने के बाद मुझे सुपरिंटेंडेंट आफ पुलिस ने बताया कि उसके कार्यालय में मेरे लिए कोई पार्सल नहीं आया। वास्तव में शिकायत करते समय ही मेरे पुराने अनुभवों के आधार पर मुझे मालूम था कि पार्सल नहीं मिल पाएगा। फिर भी यदि तुम मुझे रसीद भेज दो तो मैं डाक विभाग से पूछताछ कर सकता हूँ। तुम भी वहाँ डाक विभाग में शिकायत दर्ज करा सकती हो। यदि तुम ऐसा करो तो कृपया रसीद शिकायत के साथ मत भेजना केवल संख्या और दिनांक का जिक्र कर देना। यदि तुम रसीद यहाँ भेज दोगी तो यहाँ डाक विभाग पार्सल की खोजबीन का प्रयास कर सकता हैं।

ऊपर के पते से तुम जान जाओगी कि मैं अभी भी कलकत्ता के अस्पताल में ही हूँ। मुझे यहाँ तीन महीने हो गए हालांकि जब दिसंबर में मैं यहा आया था तो मुझे उम्मीद थी कि दो या तीन सप्ताह से अधिक यहाँ नहीं रहूँगा। आजकल तेजी से गर्मी बढ़ रही है। दिन में बहुत गर्मी होती है। हालांकि रातें ठीक हैं। पिछले साल मार्च के अंत में जब मैं बैगस्टीन से चला था तो वहाँ अभी भी कुछ बर्फ शेष थी। यहाँ सपने में भी बर्फ नहीं दीख सकती क्योंकि जागते में ही हमने कभी बर्फ नहीं देखी। हिमालय पर्वत पर पड़ी बर्फ को दूर से देखने पर मन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

मुझे प्रसन्नता है कि तुमने फिर से फ्रेंच सीखनी शुरू कर दी है। मेरे विचार से अन्य भाषाओं का ज्ञान लाभदायक है। इससे व्यक्ति के मन और बुद्धि का विकास होता है। इस अस्पताल से निकलकर कहीं और जाने पर मैं जर्मन सीखना दुबारा शुरू कर दूंगा। यहाँ रहकर पढ़ाई करना कठिन हैं, यहाँ बहुत शोर–शराबा हैं। फिर शाम को घर जाता हूँ और सुबह गाड़ी में दूर तक घूमने जाता हूँ (साथ में पुलिस अधिकारी रहता है। मैं स्वतंत्र व्यक्ति नहीं हूँ।)

विशेषज्ञों की राय है कि मेरी तबीयत की खराबी का कारण टांसिल नहीं है। गॉल ब्लैडर ठीक है उसकी ओर से कोई कष्ट नहीं है। चिकित्सकों की राय अलग अलग है। शिकायत संभवतः लिवर में, फेफड़ों में या फिर कहीं और है। डॉ0 लेफ्टिनेंट कर्नल वेर होज, जो यहाँ मेरा इलाज कर रहे हैं। उनकी राय है कि लिवर में खराबी है न कि फेफड़ों में। मेरे विचार से उनका कहना ही ठीक है क्योंकि दर्द अपेक्षाकृत कम है, यदि कोई अन्य कारण होता तो कष्ट अधिक रहता।

क्या तुम्हारा परिवार इन गर्मियों में गाँव ज रहा है? क्या तुम्हारे गाँव में यहाँ की अपेक्षा गर्मी देर से आती है।

यदि श्रीमती लोवी को पत्र लिखो तो मेरा स्मरण दिलाना। जो अखबार तुमने चाहे हैं–वे तुम्हारे लिए मनोरंजक सिद्ध होंगे–साप्ताहिक, मासिक आदि। बहरहाल जब मैं कोई निर्णय कर लँगा तो तुम्हें अखबार भेजने लगूँगा। मेरे विचार से मार्डन रिव्यू तुम्हें पसंद नहीं आएगा क्योंकि उसमें केवल लेख प्रकाशित होते हैं – शायद इलस्ट्रेटेड वीकली में चित्र रहते हैं, वह तुम्हें पसंद आएगी।

आशा है तुम स्वस्थ हो। माता–पिता को प्रणाम व तुम्हें शुभकामनाएँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी

सुभाष चंद्र बोस

विएना
18.3.37

प्रिय श्री बोस,

आपका 26 तारीख का पत्र मुझे 8 तारीख में मिला। उसके लिए धन्यवाद। यह अच्छा है कि आपने श्री फाल्टिस को जर्मनी भाषा में पत्र लिखा। आशा है वे उसे आसानी से पढ़ गए होंगे। अब मेरी उनसे मुलाकात नहीं होती क्योंकि व्यस्तता के कारण मैं कई–कई सप्ताह शहर नहीं जा पाती।

यहाँ इस वर्ष सर्दी बहुत कम पड़ी किंतु मौसम की भविष्यवाणी करने वालों का कहना था कि सर्दी बहुत तेज पड़ेगी। किंतु वे जो कुछ बताते हैं उसका उल्टा सोचकर चलना ही ठीक है अब धीरे–धीरे बसंत ऋतु का आगमन हो रहा है। कभी–कभी मौसम बहुत सुहावना हो जाता है कुछ फूल भी खिलने शुरू हो गए हैं। हालांकि अभी पेड़–पौधों पर फूल नहीं आए हैं। इसमें अभी कम से कम एक महीना और लगेगा। आजकल मौसम बच्चे के साथ साथ मेरे लिए भी हितकर है क्योंकि जब तक कोई मुझे मजबूर न करे तब तक मैं सैर करने नहीं निकलती।

एक दिन मैं ने कलकत्ता के एक अखबार में रवींद्रनाथ टैगोर के साथ श्रीमती मिलर का चित्र देखा था। क्या आपने भी देखा था? वह 21 फरवरी के 'द ओरिएंट' में भी छपा था। वे इस चित्र में बहुत कमजोर लग रही थीं इसलिए मुझे बहुत दुख हुआ। विएना में वे ऐसी नहीं लगती थीं।

पता नहीं अभी भी आप कलकत्ता में ही हैं या नहीं? मेरे विचार से वहाँ का मौसम आपके लिए उपयुक्त नहीं होगा आपको पर्वतों पर चले जाना चाहिए। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपके स्वास्थ्य में सुधार है। मुझे आशा है आपका स्वास्थ्य और बेहतर होगा अतः इसलिए पूर्ण स्वास्थ्य की कामना करते हुए शुभकामनाएँ भेज रही हूँ।

जो बुक कवर खो गया उसका कोई समाचार मिला? यदि नहीं तो कृपया मुझे सूचित करें ताकि मैं यहा पूछताछ करूँ और मुझे उम्मीद

है कि यहाँ विएना में मैं उसका अता–पता लगाने में सफल हो जाऊँगी। यदि ऐसा नहीं हो पाया तो डाक विभाग मुझे जुर्माना अदा करेगा।

सिस्टर एलविरा पुनः विएना में आ गई हैं। एक दिन मैं उनसे मिलने रूडोल्फहॉस गई थीं। पहले की अपेक्षा अब वे बेहतर लग रही थीं क्योंकि काफी दिन आराम कर चुकी हैं। किंतु शीघ्र ही अस्पताल की हवा उन्हें फिर बीमार कर देगी। उन्होंने अपनी शुभकामनाएँ भिजवाई हैं। वे स्वयं आपको पत्र लिखकर आपके पत्र के प्रति आभार व्यक्त करतीं, किंतु आजकल वे अस्पताल में अत्यधिक व्यस्त हैं क्योंकि सभी कमरे भरे पड़े हैं जिसका अर्थ है नर्सों के लिए अधिक काम।

पता नहीं मैंने पहले आपको यह लिखा था या नहीं कि विएना के 'होहनस्ट्रासे' का द्वितीय भाग समाप्त हो चुका है। शायद आपको याद हो कि एक बार हमने इसे देखा था। हम लोग ट्राम नं0 38 के टर्मिनल स्टाप से काल्हनबर्ग की ओर गए थे। वहॉ से हम काल्हनबर्ग की जाने वाली नई बनी सड़क पर गए थे। अब उन्होंने वह सड़क लियोपोल्ड्सबर्ग तक बना दी है। मैं स्वयं तो वहाँ नहीं गई किंतु मैंने अखबारों में इस विषय में पढ़ा है और चित्र देखे हैं। हमारी सरकार का यह कार्यक्रम है कि वह नई सड़कें बनाएगी और पुरानी सड़कों की मरम्मत करेगी। यह अच्छी बात है क्योंकि आस्ट्रिया की सड़कों को अच्छी नहीं कहा जा सकता। तिपाहिया व दुपाहिया वाहनों की दृष्टि से तो ये बहुत ही खराब हैं। आजकल आस्ट्रिया में बहुत से विदेशी अपनी गाड़ियों में आते हैं इसलिए सड़को की मरम्मत करना आवश्यक हो गया है।

क्या आपकी थोड़ी बहुत जर्मन जारी है? आपके लिए यह बहुत फायदेमंद रहेगी। मैंने दुबारा फ्रेंच सीखनी शुरू कर दी है और मैं खुश हूँ कि मै ऐसा कर पा रही हूँ। दुर्भाग्यवश मेरे फ्रेंच अध्यापक को मई के आरंभ में गर्मियों की छुट्टियों मे कहीं जाना है। किंतु मुझे उम्मीद हे कि वर्षा ऋतु में मैं पुनः पढ़ सकूँगी। आजकल मैंने काफी प्रगति की है इसलिए यदि बीच में रूकना पड़ा तो मुझे बहुत दुख होगा।

जब आपके पास समय हो और आपकी इच्छा हो तो कृपया मुझे पत्र अवश्य लिखें। अब यही समाप्त करती हूँ क्योंकि मुझे दोपहर के कार्य के लिए जाना है। आशा है आप पूर्णतः स्वस्थ हैं।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ
मैं,

तुम्हारा शुभाकांक्षी
एमिली शेंक्ल

पुनश्च :—मेरे माता—पिता व बहन की ओर से आपको शुभकामनाएँ।

38/2 एल्गिन रोड
कलकत्ता
18.3.37

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हें सूचित कर दूँ कि अचानक कल रात मुझे रिहा कर दिया गया। रात दस बजे मैं अस्पताल से घर आ गया।

फिलहाल मैं अत्याधिक व्यस्त हूँ, किंतु अगले सप्ताह तुम्हें लंबा पत्र लिखूंगा। मैं आजादी से इधर—उधर घूम सकता हूँ और मेरी डाक भी अधिकारियों द्वारा सेंसर नहीं होगी, हालांकि चोरी छुपे यह सदा सेंसर की जाती रहेगी।

आशा है आप सब लोग पूर्णतः स्वस्थ हैं। यह समाचार वहाँ सभी मित्रों को दे देना शुभाशीष।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

24.3.37

प्रिय श्री बोस,

कुछ दिन पहले मैंने समाचार पत्रों में पढ़ा कि आप आजाद कर दिए गए हैं। मेरी बधाई स्वीकार करें। सिस्टर एलविरा और मैं आपके स्वास्थ्य के लिए आज रात शराब पिएंगी। हार्दिक बधाई और ईस्टर की शुभकामनाएँ।

आपकी शुभाकांक्षी

एमिली शेंक्ल

(सिस्टर एलविरा के साथ कार्ड)

38/2 एल्गिन रोड

कलकत्ता

25.3.37

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

पिछले सप्ताह, 18 तारीख को मैने जल्दबाजी में तुम्हें एयरमेल से एक पत्र लिखा था, जो शायद अब तक तुम्हें मिल चुका होगा। रिहाई के बाद से मैं अपनी माताजी के पास रह रहा हूँ। यह घर मेरे भाई के घर के बिल्कुल साथ है। रात–दिन मिलने वालों का तांता लगा रहता है, जिससे मैं व्यस्त रहता हूँ और थक भी जाता हूँ। मैं कलकत्ता छोड़कर किसी स्वास्थ्य केंद्र में परिवर्तन के लिए जाना चाहता हूँ। आज मैं साधारण डाक द्वारा कुछ समाचार पत्र भिजवा रहा हूँ जिनमें मेरी रिहाई की खबर छपी है। इसके साथ एक छोटी सी कटिंग और भेज रहा हूँ। मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं है। मेरी रिहाई की हमें किसी को भी आशा नहीं थी। भविष्य में मैं तुम्हें प्रति सप्ताह साधारण डाक से पत्र लिखने की कोशिश करूँगा। अब मैं हर प्रकार आजाद हूँ, हालांकि मेरे पत्र अभी भी पुलिस द्वारा सेंसर किए जाते रहेंगे।

तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है? श्रीमती मिलर ने बंबई से तार दिया है कि वे 25 तारीख (आज) को बंबई से रवाना होंगी। उन्होंने मुझसे पूछा है कि विएना के मित्रों को कोई संदेश भेजना है। मैंने उन्हें बता दिया कि कोई विशेष संदेश तो नहीं हैं लेकिन वहाँ सभी को मेरी नमस्ते कहिएगा।

तुमने कुछ भारतीय समाचार पत्रों के लिए लिखा है। मैं तुम्हें साप्ताहिक इलेस्ट्रेटेड भिजवाने का प्रबंध कर रहा हूँ। क्या तुम्हें दैनिक या साप्ताहिक अखबार भी चाहिए? यदि चाहिए तो मैं आसानी से इन्हें भिजवाने का प्रबंध कर सकता हूँ। किंतु मुझे डर है कि तुम्हारे पास दैनिक अखबार पढ़ने का समय नहीं होगा। और रोजाना अखबारों की भारतीय खबरें तुम्हारी समझ से भी परे होंगी। तुम क्या चाहती हो मुझे बताओ। श्रीमती वेटर कैसी हैं? वे मुझे निरंतर पत्र नहीं लिखतीं। क्या तुम कोई भारतीय भाषा पढ़ रही हो? किसी एक को सीखने की कोशिश क्यो नहीं करतीं? माता–पिता को प्रणाम, तुम्हें व तुम्हारी बहन को हार्दिक शुभकामनाएँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

प्रिय श्री बोस,

आपके दो पत्र (15 और 18 तारीख का) कल रात एक साथ मिले। बहुत–बहुत धन्यवाद। वास्तव में मैं आपकी रिहाई की खबर सोमवार से ही जान चुकी थी। आप अंदाजा लगा सकते हैं कि इस खुशखबरी से हमें कितनी प्रसन्नता हुई। मैंने सभी मित्रों को सूचित कर दिया था। आजकल मैं अत्यधिक व्यस्त हूँ इसलिए प्रत्येक मित्र को पत्र नहीं लिख सकी लेकिन शीघ्र ही लिख दूँगी।

इस अवसर पर मेरे परिवार की व मेरी बधाई स्वीकार करें। ईश्वर करे कि अब आप सदा आजाद रहें।

खो गए पार्सल के विषय में, इस पत्र को डाक में डालने से पूर्व

पोस्ट आफिस से पूछताछ करूँगी और यदि आवश्यक हुआ तो शिकायत के साथ रसीद भी भेज दूँगी, अतः इसे भारत भेज नहीं पाऊंगी।

मैं समझ सकती हूँ कि आपको बहुत से काम है। आपका अधिकांश समय मिलने–जुलने में व पत्र लिखने में ही बीतता होगा। इसके बावजूद आप इतनी जल्दी मुझे पत्र लिख लेते हैं इसके लिए मैं आपकी आभारी हूँ। आपके लिए आजाद होना हितकर है, क्योंकि गर्मियाँ आ रही हैं, अतः आप अपने को इस गर्मी से आसानी से बचा सकते हैं। विएना में अभी बहुत गर्मी नहीं पड़ी है। दो या तीन बार वह भी सिर्फ एक दिन के लिए। अगले दिन फिर बरसात और सर्दी हो जाती है। आज मौसम अच्छा है। दुर्भाग्यवश मुझे दोपहर बाद नीचे शहर में जाना होगा उस बच्चे की देखभाल के लिए जिसकी देखभाल मैं उसकी माँ के साथ करती हूँ। बच्चे की देखभाल के लिए जिसकी देखभाल मैं उसकी माँ के साथ करती हूँ। बच्चे की नाक बह रही है उसे डाक्टर के पास ले जाना है। बहुत खराब नौकरी है, क्योंकि बच्चा बहुत बीमार है, वह चीखता चिल्लाता है जिससे मेरा मन घबराता है। ईस्टर पर हमें बुडापेस्ट जाना था किंतु बच्चे की बीमारी की वजह से संभव नहीं।

फ्रेंच में मैंने काफी प्रगति की है। मैं बहुत प्रसन्न हूँ, क्योंकि इस विषय में मुझे बहुत दिलचस्पी है। यदि मेरे पास और पैसा और समय होता तो मै और भाषाएँ भी अवश्य सीखतीं।

कल शाम मैं सिस्टर एलविरा के साथ आपके स्वास्थ्य के लिए जाम पीने गई थी। हमने आपको एक पोस्टकार्ड लिखा था। आशा है आपको मिल जाएगा।

आप मुझे अखबार भिजवाने की सोच रहे हैं, इसके लिए धन्यवाद। जो आपको अच्छा लगे वही चुन लें। आजकल मेरे पास पढ़ने के लिए समय का आभाव है किंतु मैं किसी न किसी प्रकार समय निकालूंगी क्योंकि पढ़े बिना रहना मेरे लिए असंभव है।

38/2 एल्गिन रोड
कलकत्ता
25.3.37

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

पिछले सप्ताह, 18 तारीख को मैने जल्दबाजी में तुम्हें एयरमेल से एक पत्र लिखा था, जो शायद अब तक तुम्हें मिल चुका होगा। रिहाई के बाद से मैं अपनी माताजी के पास रह रहा हूँ। यह घर मेरे भाई के घर के बिल्कुल साथ है। रात–दिन मिलने वालों का तांता लगा रहता है, जिससे मैं व्यस्त रहता हूँ और थक भी जाता हूँ। मैं कलकत्ता छोड़कर किसी स्वास्थ्य केंद्र में परिवर्तन के लिए जाना चाहता हूँ। आज मैं साधारण डाक द्वारा कुछ समाचार पत्र भिजवा रहा हूँ जिनमें मेरी रिहाई की खबर छपी है। इसके साथ एक छोटी सी कटिंग और भेज रहा हूँ। मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं है। मेरी रिहाई की हमें किसी को भी आशा नहीं थी। भविष्य में मैं तुम्हें प्रति सप्ताह साधारण डाक से पत्र लिखने की कोशिश करूँगा। अब मैं हर प्रकार आजाद हूँ, हालांकि मेरे पत्र अभी भी पुलिस द्वारा सेंसर किए जाते रहेंगे।

तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है? श्रीमती मिलर ने बंबई से तार दिया है कि वे 25 तारीख़ (आज) को बंबई से रवाना होंगी। उन्होंने मुझसे पूछा है कि विएना के मित्रों को कोई संदेश भेजना है। मैंने उन्हें बता दिया कि कोई विशेष संदेश तो नहीं हैं लेकिन वहाँ सभी को मेरी नमस्ते कहिएगा।

तुमने कुछ भारतीय समाचार पत्रों के लिए लिखा है। मैं तुम्हें साप्ताहिक इलेस्ट्रेटेड भिजवाने का प्रबंध कर रहा हूँ। क्या तुम्हें दैनिक या साप्ताहिक अखबार भी चाहिए? यदि चाहिए तो मैं आसानी से इन्हें भिजवाने का प्रबंध कर सकता हूँ। किंतु मुझे डर है कि तुम्हारे पास दैनिक अखबार पढ़ने का समय नहीं होगा और रोजाना अखबारों की भारतीय खबरें तुम्हारी समझ से भी परे होंगी। तुम क्या चाहती हो मुझे बताओ। श्रीमती वेटर कैसी हैं? वे मुझे निरंतर पत्र नहीं लिखतीं। क्या तुम कोई

भारतीय भाषा पढ़ रही हो? किसी एक को सीखने की कोशिश क्यो नहीं करतीं? माता–पिता को प्रणाम, तुम्हें व तुम्हारी बहन को हार्दिक शुभकामनाएँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

26.3.37

प्रिय श्री बोस,

आपके दो पत्र (15 और 18 तारीख का) कल रात एक साथ मिले। बहुत–बहुत धन्यवाद। वास्तव में मैं आपकी रिहाई की खबर सोमवार से ही जान चुकी थी। आप अंदाजा लगा सकते हैं कि इस खुशखबरी से हमें कितनी प्रसन्नता हुई। मैंने सभी मित्रों को सूचित कर दिया था। आजकल मैं अत्यधिक व्यस्त हूँ इसलिए प्रत्येक मित्र को पत्र नहीं लिख सकी लेकिन शीघ्र ही लिख दूँगी।

इस अवसर पर मेरे परिवार की व मेरी बधाई स्वीकार करें। ईश्वर करे कि अब आप सदा आजाद रहें।

खो गए पार्सल के विषय में, इस पत्र को डाक में डालने से पूर्व पोस्ट आफिस से पूछताछ करूँगी और यदि आवश्यक हुआ तो शिकायत के साथ रसीद भी भेज दूँगी, अतः इसे भारत भेज नहीं पाऊंगी।

मैं समझ सकती हूँ कि आपको बहुत से काम है। आपका अधिकांश समय मिलने–जुलने में व पत्र लिखने में ही बीतता होगा। इसके बावजूद आप इतनी जल्दी मुझे पत्र लिख लेते हैं इसके लिए मैं आपकी आभारी हूँ। आपके लिए आजाद होना हितकर है, क्योंकि गर्मियाँ आ रही हैं, अतः आप अपने को इस गर्मी से आसानी से बचा सकते हैं। विएना में अभी बहुत गर्मी नहीं पड़ी है। दो या तीन बार वह भी सिर्फ एक दिन के लिए। अगले दिन फिर बरसात और सर्दी हो जाती है। आज मौसम अच्छा है। दुर्भाग्यवश मुझे दोपहर बाद नीचे शहर में जाना होगा

उस बच्चे की देखभाल के लिए जिसकी देखभाल मैं उसकी माँ के साथ करती हूँ। बच्चे की नाक बह रही है उसे डाक्टर के पास ले जाना है। बहुत खराब नौकरी है, क्योंकि बच्चा बहुत बीमार है, वह चीखता चिल्लाता है जिससे मेरा मन घबराता है। ईस्टर पर हमें बुडापेस्ट जाना था किंतु बच्चे की बीमारी की वजह से संभव नहीं।

फ्रेंच में मैंने काफी प्रगति की है। मैं बहुत प्रसन्न हूँ, क्योंकि इस विषय में मुझे बहुत दिलचस्पी है। यदि मेरे पास और पैसा और समय होता तो मै और भाषाएँ भी अवश्य सीखतीं

कल शाम मैं सिस्टर एलविरा के साथ आपके स्वास्थ्य के लिए जाम पीने गई थी। हमने आपको एक पोस्टकार्ड लिखा था। आशा है आपको मिल जाएगा।

आप मुझे अखबार भिजवाने की सोच रहे हैं, इसके लिए धन्यवाद। जो आपको अच्छा लगे वही चुन लें। आजकल मेरे पास पढ़ने के लिए समय का अभाव है किंतु मैं किसी न किसी प्रकार समय निकालूंगी क्योंकि पढ़े बिना रहना मेरे लिए असंभव है।

यदि आप विस्तार से मुझे पत्र लिख सकें तो बेहतर होगा। किंतु जब आपके पास समय हो तब। मैं स्वयं लंबा पत्र नहीं लिख पाती क्योंकि समय कम रहता है और मुझे पत्र को आज की डाक में डालने की जल्दी रहती है।

मेरा विश्वास है कि आपकी परेशानी लिवर के कारण ही है। मेरे लायक कोई सेवा हो तो अवश्य बताएँ।

मेरे परिवार की आर से शुभकामनाएँ। मेरी भी शुभकामनाएँ।

आपकी शुभाकांक्षी
एमिली शेंक्ल

मैं रसीद भेद रही हूँ, यदि पार्सल न मिल पाए तो कृपया रसीद मुझे वापिस भेज दें। मैं यहाँ विएना में कोशिश करूँगी। मुझे बताया गया है कि रसीद के बिना सब व्यर्थ है।

सादर

एमिली शेंक्ल

1, वुडबर्न पार्क
कलकत्ता
5 अप्रैल 1937

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

मुझे खेद है कि पिछले सप्ताह मैं तुम्हें पत्र नहीं लिख सका इसलिए इस सप्ताह एयरमेल से पत्र भेज रह हूँ। भविष्य में साधारण डाक से ही पत्र भेजूँगा। मेरा स्वास्थ्य संतोषजनक नहीं है इसलिए शीघ्र ही मैं परिवर्तन की दृष्टि से कलकत्ता छोड़ दूँगा। हाँ मैं अब पूर्णतया स्वतंत्र हूँ किंतु मेरी डाक अभी भी चोरी छुपे सेंसर की जा रही है। पंद्रह दिन पहले मैंने अखबारों में छपी अपनी रिहाई की खबरों की कटिंग्स तुम्हें भेजी थीं। कल मेरा जनता द्वारा स्वागत किया जाएगा, जहाँ बड़ी संख्या में लोग एकत्र होंगे। डाक्टरों ने मुझे केवल एक स्वागत समारोह में उपस्थित रहने की इजाजत दी है इसलिए उसके बाद मैं परिवर्तन के लिए कहीं चला जाऊँगा और अब तक किसी जन समारोह का निमंत्रण स्वीकार नहीं करूँगा जब तक कि पर्वत से लौटकर नहीं आ जाता। कृपया अपने स्वास्थ्य के विषय में विस्तृत सूचना दो।

18 मार्च और 6 मार्च के तुम्हारे एयरमेल द्वारा भेजे गए पत्रों के लिए धन्यवाद। श्री फाल्टिस तथा बर्लिन के अन्य मित्रों को मेरी रिहाई की सूचना दे देना। श्रीमती किट्टी कुर्टी का पता है, मोम्सन स्ट्रीट, 69, बर्लिन चार्लट्नबर्ग। आशा है तकलीफ के लिए क्षमा करोगी।

कलकत्ता के एक साप्ताहिक समाचार पत्र 'अमृत बाजार पत्रिका' को तुम्हें भिजवाने का प्रबंध कर दिया है। कृपया मुझे सूचित करों कि क्या कलकत्ता से प्रकाशित एक अन्य चित्रमय पत्र ओरिएंट क्या तुम्हें प्राप्त हो रहा है।

डाक रसीद के लिए धन्यवाद। मैं खो गए पार्सल के विषय में डाक विभाग को लिखूँगा। यदि असफल रहा तो रसीद तुम्हें वापिस लौटा दूँगा।

वहाँ सभी मित्रों, विशेष रूप से सिस्टर एलविरा को मेरी नमस्ते।

यह जानकर अच्छा लगा कि तुम फ्रेंच सीखने में प्रगति पर हो।

जर्मन भाषा में तुम लोग 'फैमिली' का उच्चारण कैसे करते हो। फामीली कहते हो अथवा फैमिली।

तुमने और सिस्टर एल्वीरा ने जो पोस्टकार्ड मुझे लिखा था वह अभी नहीं मिला है। आशा है अगले सप्ताह तक मिल जाएगा। मेरे विषय में चिंता करने के लिए धन्यवाद। मुझे कोई नया पार्सल मत भेजना क्योंकि वे मुझ तक नहीं पहुँचते, पिछले पार्सल की भाँति।

तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है? अपने माता–पिता को मेरा सादर प्रणाम देना। तुम्हारी

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

5.4.37

प्रिय श्री बोस,

25 तारीख के एयरमेल पत्र के लिए धन्यवाद। वह मुझे पहली तारीख को मिला। आपके पिछले पत्र के अनुसार आपकी रिहाई की सूचना मैंने विएना के लगभग सभी मित्रों को दे दी थी। किंतु विएना के

बाहर के मित्रों को नहीं लिख पाई। मैं बहुत व्यस्त हूँ। किंतु इस सप्ताह अवश्य लिख दूँगी।

मुझे पता है कि आने–जाने वाले आपको रात–दिन व्यस्त रखते होंगे। व्यक्ति को साँस लेने की भी फुर्सत नहीं मिलती, क्योंकि लोग दूसरों के समय और शक्ति का सदुपयोग करना जानते हैं। मेरे विचार से यदि आपको स्वास्थ्य केंद्र जाने का अवसर मिले तो अवश्य जाएँ। पहले ठीक हो जाए तभी आने–जाने वालों से मिलना शुरू करें। वैसे अब वास्तव में आपको क्या शिकायत है? आशा है लिवर की समस्या होगी न कि फेफड़ों की। क्योंकि मेरे विचार से यह अधिक देर तक रहने वाली समस्या है। किंतु आप बहादुरी से इसका मुकाबला करने में सफल रहेंगे। अब तो आपके लिए इसका मुकाबला करना और भी आसान है क्योंकि अब आप आजाद हैं। क्योंकि मेरा विश्वास है कि यह विचार कि व्यक्ति स्वतंत्र नहीं हैं और अपनी इच्छा से कहीं आ जा नहीं सकता स्वास्थ्य को खराब करने में सहायक है।

यह आपका उपकार होगा कि आप कुछ साप्ताहिक पत्र मुझे पहुँचाने की व्यवस्था कर देंगे। यही ठीक रहेगा कि साप्ताहिक अखबार मुझ तक पहुँचें क्योंकि दैनिक पत्र पढ़ने के लिए मेरे पास समय नहीं है। सुबह से शाम तक व्यस्त रहती हूँ। जब घर लौटती हूँ तो बहुत थकी हुई होती हूँ, लेकिन मुझे बुरा नहीं लगता क्योंकि मैं जितना अधिक कार्य और जिम्मेदारी संभालती हूँ उतनी ही शक्ति और ऊर्जा मुझमें पैदा हो जाती है। मेरा स्वास्थ्य ठीक–ठाक है, किंतु मेरे पास इतना समय नहीं कि मैं इसकी विशेष देखभाल करूँ और स्वयं पर दया करती रहूँ। इसलिए मुझे सामान्यतः पीड़ा नहीं होती। पिछले कुछ दिन से मेरे गॉल ब्लैडर में दर्द है, जिसकी मैं उपेक्षा नहीं कर सकती। इसके कारण मेरा वजन भी घटा है। किंतु इससे कोई विशेष अंतर नहीं पड़ता। अन्यथा मैं स्वस्थ हूँ और प्रसन्न एवं ऊर्जा से भरपूर हूँ।

विएना का मौसम बहुत खराब है। ईस्टर के दिन से ही बारिश

ही बारिश हो रही है। बाहर जा नहीं सकते जिससे बहुत तकलीफ होती है क्योंकि हर समय घर में घुसे रहना अच्छा नहीं लगता।

मेरे विचार से श्रीमती मिलर इस माह के मध्य तक विएना पहुँच जाएंगी। पता नहीं वे मुझे फोन करेंगी या नहीं। जितने दिन वे भारत में रहीं उन्होंने मुझे एक पंक्ति भी नहीं लिखा। हालांकि मुझसे वादा किया था। कैसे किसी औरत पर विश्वास किया जा सकता है।

जिस दिन आपका पत्र मिला उसी दिन मैंने श्रीमती वेटर को फोन कर आपकी नमस्ते उन तक पहुँचा ही थी। वे आपके विषय में सुनकर बहुत प्रसन्न हुईं। वे भी बहुत व्यस्त रहती हैं इसलिए निरंतर अंतराल पर पत्र नहीं लिख पातीं। उन्होंने मुझे कहा है कि मैं आप तक उनकी हार्दिक शुभकामनाएँ पहुंचा दूं। श्रीमती हारग्रीव का भी पत्र आया था उन्होंने भी आपको शुभकामनाएँ भेजी है। वे भी बहुत व्यस्त हैं और आजकल योग कर रही है ताकि आगामी अगस्त तक हालैंड के उपयुक्त बन सकें। इस वर्ष फिर कृष्णामूर्ति का कैंप लगेगा जिसमें वे जाना चाहेंगी। एक बार उन्होंने मुझे भी वहाँ ले चलने की बात की थी। मेरे विचार से वैसा वातावरण मेरे उपयुक्त नहीं क्योंकि फिलहाल मुझे ध्यान की और दर्शन या धर्म पर भाषण सुनने की आवश्यकता नहीं है। यह काम करने का समय है। बुढ़ापे में ध्यान करूँगी। फिलहाल मैं काम करना चाहती हूँ।

नहीं फिलहाल मैं कोई भारतीय भाषा नहीं सीख रही। फिलहाल यह संभव है। किंतु मेरी फ्रेंच की पढ़ाई जारी है जो मुझे बहुत पसंद है। बड़ी तेजी से प्रगति कर रही हूँ। केवल बोलचाल में भाषा प्रयोग की कमी है। आशा है अब मुझे पाठ मिल जाएँगे। मुझे जर्मन भाषा पढ़ानी होगी। किंतु अभी पक्का नहीं है। अब मेरे पास केवल रविवार का दिन खाली होता है। उस दिन भी कोई मिलने वाला आ जाता है या मैं अपनी मित्र से मिलने चली जाती हूँ। उस समय भी हम खाली नहीं बैठते, कुछ कढ़ाई आदि करते हैं या मैं उसे गिटार बजाना सिखाती हूँ।

आजकल गर्मी की चिंता है। हम पुनः पोलैं जाएँगे, वह बहुत प्यारी जगह है और उसके इलाका वहाँ हमारे बहुत से मित्र हैं जिससे बहुत मजा आएगा।

मेरे ख्याल से मैंने अपने बारे में बहुत कुछ बता दिया अब कुछ आपके विषय में पूछना चाहिए। आजकल आप क्या कर रहे हैं? क्या कोई नई पुस्तक लिखने का विचार हैं? खो चुके पार्सल की रसीद आपको मिली? यदि आपको सफलता न मिले तो कृपया यह मुझे लौटा दें तब मैं इस ओर से पुछताछ करूँगा, संभवतः कुछ सफलता मिले।

कुछ दिन पहले मेरी डायरेक्टर फाल्टिस से फोन पर बात हुई थी, तब उन्होंने मुझ बताया कि उन्हें आप का जर्मन भाषा में लिखा पत्र मिल गया है वे बहुत हैरान थे। बहुत बढ़िया लिखा था और कोई गलती भी नही थी। आपको यह भाषा सीखनी जारी रखनी चाहिए, यह दुख की बात है यदि आप इसे छोड़ देंगे तो। आपने बहुत प्रगति कर ली है। संभव है आपको फिर कभी यूरोप आने का अवसर मिले तब आपको प्रसन्नता होंगी कि आप यह भाषा जानते है। मेरे लायक कोई सेवा हो तो कृपया अवश्य लिखें। मुझे प्रसन्नता होंगी।

मेरे माता–पिता वे मेरी बहन आप को शुभकामनाएँ भेज रहे हैं। मेरी भी शुभकामनांएँ स्वीकार करें।

आपकी शुभकांक्षी
एमिली शेंक्ल

पुनश्च :– आपकी आभारी हूँ कि आप मुझे प्रायः पत्र लिखते रहते हैं। मैं भी जहाँ तक संभव होगा तत्काल उत्तर देने का प्रयास करूँगी। अतः मैं भी प्रति सप्ताह साधारण डाक द्वारा आपको पत्र लिखूँगी। यदि कुछ महत्वपूर्ण हुआ तभी एयरमेल से भेजूँगी।

1, वुडबर्न पार्क
कलकत्ता
8.4.37

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

क्या तुम साथ वाला पत्र श्री गैरोला के पास भेजी होगी? पता नहीं वे अभी भी अल्सर स्ट्रीट, 20/15 में ही रह हैं या नहीं। यदि नहीं तो कृपया उनका पता लगाओ। संभवतः होटल द फ्रांस के लोग उनका पता जानते हों। गैरोला से कहना कि वे वही करें जो मैंने पत्र में लिखा है। यदि गैरोला विएना में न हो तो सिंह या किसी अन्य भारतीय विद्यार्थी से आवश्यक कार्रवाई करने को कहना---जैसा मैंने गैरोला के पत्र में सुझाव दिया है।

यहाँ 6 तारीख को हुए जन समारोह की खबर की कुछ कटिंग्स भेज रहा हूँ। क्या पिछले साल बंगला शब्दकोष मिल गया था?

तुम्हारा स्वास्थ्य आजकल कैसा है? शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

1, वुडबर्न पार्क
कलकत्ता
15 अप्रैल 1937.

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 18 और 26 मार्च का एयरमेल द्वारा भेजा गया पत्र और तुम्हारा और एलविरा का कार्ड मिला। इन सबके लिए शुक्रिया।

आजकल यहाँ बहुत गर्मी पड़ रही है। एक सप्ताह मैं उत्तर की ओर पहाड़ों के लिए निकलूँगा।

कृपया सिस्टर एलविरा को मेरी शुभकामनाएँ दे देना। मैं अलग से उन्हें नहीं लिख रहा हूँ।

नहीं, आजकल मेरे पास जर्मन के लिए समय नहीं है। जब कलकत्ता से दूर चला जाऊँगा तब कोशिश करूँगा।

मेरा स्वास्थ्य वैसा ही है। आजाद व्यक्ति के रूप में बहुत प्रसन्न हूँ, किंतु बहुत से मिलने आने वालों के कारण बहुत थकान महसूस करता हूँ। आशा है पहाड़ों पर अच्छा समय व्यतीत होगा।

आशा है तुम्हारी फ्रेंच ठीक चल रही है। इसे हर हाल में जारी रखो।

तुम्हारे गॉल ब्लैडर के दर्द को सुनकर चिंता हुई। अपने खान–पान के बारे में सावधानी बरतो।

तुम्हारे एक पत्र के साथ पार्सल की रसीद भी मिल गई थी, किंतु अभी कुछ नहीं कर पाया हूँ।

तुम्हारा 5 तारीख (अप्रैल) का एयरमेल का पत्र मिला। तुम गाँव कब जा रही हो? (पोलाऊ)

मेरा स्वास्थ्य वैसा ही है। मेरे गले, लिवर या फेफड़े में तकलीफ है। किंतु मुझे आशा है कि यदि मुझे 6 माह का आराम मिल जाए या वातावरण में परिवर्तन हो जाए तो मैं ठीक हो सकता हूँ। यही बात डाक्टर भी कहते हैं।

आप सब का क्या हाल है? तुम्हारे माता–पिता को सादर प्रणाम और तुम्हारी बहन व तुम्हें शुभाशीष।

तुम्हारा शुभाकांक्षी

सुभाष चंद्र बोस

1, वुडबर्न पार्क
38/2 एल्गिन रोड
कलकत्ता
22 अप्रैल 1937

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

मैं जल्दी में केवल कुछ पंक्तियाँ ही लिख रहा हूँ। एक सप्ताह के अंदर–अंदर मैं पहाड़ों के लिए रवाना हो जाऊँगा। यदि पत्र लिखो तो इस पते पर लिखना–

द्वारा डॉ0 एन0 आर0 धर्मवीर

डलहौजी, पंजाब, भारत।

तुम कैसी हो? मेरा स्वास्थ्य पहले जैसा ही है। यहाँ बहुत गर्मी है, जिससे मुझे थकान महसूस होने लगती है। तुम गाँव कब जा रही हो? तुम अपना समय कैसे व्यतीत करती हो इस विषय में लिखना। क्या फ्रेंच सीख रही हो? क्या तुम्हारी मुलाकात श्रीमती मिलर से हुई?

शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

लाहौर
शनिवार, 1.5.37.

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 14 तारीख का एयरमेल भेजा गया पत्र मुझे कलकत्ता में ही मिल गया था। 25 तारीख को मैं कलकत्ता से रवाना हुआ था और कांग्रेस पार्टी की एक बैठक के लिए 4 दिन के लिए इलाहाबाद में ठहरा था। आज प्रातः ही यहाँ पहुँचा हूँ। शीघ्र ही पहाड़ के लिए रवाना हो जाऊँगा। मेरा वहाँ का पता रहेगा–द्वारा डॉ0 एन0 आर0 धर्मवीर,

डलहौजी (पंजाब)। मैं कुछ महीने डलहौजी में ही रहना चाहूँगा (यह लगभग 2000 मीटर की ऊँचाई पर है।)

कृपया मुझे सूचित करो कि क्या तुम्हें चित्रमय 'ओरिएंट और साप्ताहिक अमृत बाजार पत्रिका प्राप्त हो रही है?

श्रीमती फिलिप से तुम्हारे बारे में मेरी कोई बात नहीं हुई। उन्होंने मुझसे वहाँ के मित्रों को संदेश भिजवाने की बात की थी और मैंने कह दिया था कि सभी को मेरी नमस्ते कहिएगा।

इस सप्ताह मैं तुम्हें साधारण डाक से पत्र नहीं लिख सका, इसलिए एयरमेल द्वारा लिख रहा हूँ।

यह जानकर दुख हुआ कि पेंशन कास्मोपोलाइट बिक चुका है। कृपया मुझे श्रीमती वेसी का पता लिखो। मेरे बक्सों का क्या हुआ?

तुमसे किसने कहा कि मेरी जर्मन अच्छी हो गई है? अपने खान–पान के प्रति सावधानी बरतो। मुझे यह जानकर परेशानी हुई कि तुम्हें दुबारा दर्द शुरू हो गया है। निश्चय ही यह खान–पान की वजह से है।

सेन आजकल कहाँ हैं? माथुर कहाँ हैं?

मैं पहले भी लिख चुका हूँ कि अब मेरे लिए दुबारा यूरोप आना संभव नहीं है। मुझे आशा है कि डलहौजी का परिवर्तन मुझे ठीक कर देगा। मुझे खुशी है कि तुम्हारी राय मुझसे मिलती है।

मैंने पुरी जाने का विचार त्याग दिया– (यह समुद्र के किनारे है।) क्योंकि आजकल पहाड़ो पर मौसम अच्छा होगा।

एक दो सप्ताह में तुम्हें कुछ चित्र भेजूँगा।

तुम्हारे लंबे पत्र के लिए धन्यवाद। यद्यपि मैं लंबा पत्र नहीं लिख पाता। तुम जानती हो कि मैं अपने मित्रों को कभी नहीं भूलता और उनके समाचार पाकर प्रसन्न होता हूँ। कृपया संक्षेप में मुझे लिखो कि तुम्हारे

पास कब वक्त होता है और तुमने पिछला वर्ष कैसे बिताया। पता नहीं मैं यहाँ से तुम्हें चूड़ियाँ भेज पाऊँगा या नहीं, किंतु तुम यूरोप से ही क्यों नहीं खरीद लेतीं? तुम्हे किस प्रकार की चाहिएं? सभी चूड़ियाँ चेकोस्लोवाकिया अथवा जापान से आयात की जाती हैं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

विएना
4.5.37.

प्रिय श्री बोस,

आपके दो पत्र (15 अप्रैल का साधारण डाक से और 22 तारीख का एयरमेल से) समय पर मिल गए थे, उनके लिए धन्यवाद।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप परिवर्तन के लिए पंजाब जा रहे हैं। आशा है शीघ्र ही आज बिल्कुल ठीक हो जाएँगे। डलहौजी में शायद इतनी गर्मी नहीं होगी। यहाँ अप्रैल में बहुत गंदा मौसम रहा। रोज बारिश और सर्दी। पहली तारीख से कुछ बदला है और आजकल बहुत अच्छा है। पेड़ पौधे हरे–भरे हैं और फूलों से लदे हैं। सुंदर दृश्य है।

मेरी फ्रेंच काफी सुधरी है। किंतु घर पर अभ्यास करने के लिए बहुत कम समय मिलता है। सुबह घर के काम में और दोपहर बाद उस बच्चे की देखभाल में व्यस्त रहती हूँ। शाम को और बहुत से काम करने होते हैं। पढ़ाई तो मेरे लिए सुख का साधन मात्र बनकर रह गया है। फिर मुझे अपनी अलमारी की देखभाल करनी होती है, आप अनुमान लगा सकते हैं कि मेरे पास कितना खाली समय रहता है, वास्तव में बिल्कुल भी नहीं। किंतु अब मैं कुछ ग्रोवर कमा लेती हूँ, जिससे अपने पाठ की कीमत अदा कर सकती हूँ, कुछ कपड़े खरीद सकती हूँ और पत्राचार कर सकती हूँ। बचत कुछ नहीं हो पाती। मैंने पैसा बचाने की काफी कोशिश

की लेकिन असंभव कार्य है।

मेरा स्वास्थ्य वैसा ही है। प्रायः गॉल ब्लैडर में दर्द हो जाता है। भोजन के प्रति सावधान रहती हूँ, किंतु हर समय यह संभव नहीं, क्योंकि हमारे यहाँ प्रायः मीट बनता है। मैं केवल काल्ब्सफिश ले सकती हूँ, लेकिन यह उन्हें पसंद नहीं। रिंडफिश और स्वानफिश मेरे लिए ठीक नहीं हैं। मैं माँ से नहीं कह सकती कि मेरे लिए अलग पकाए, क्योंकि इसमें पैसा भी व्यय होगा और समय भी अधिक लगेगा। माँ वैसे ही जल्दी थक जाती है। वह बूढ़ी हो चुकी है और काम इतना अधिक है कि जवान व्यक्ति भी नहीं कर सकता।

शायद 5 जुलाई को हम गाँव के लिए रवाना होंगे। तभी स्कूल बंद होंगे। मेरी बहन अभी स्कूल में पढ़ रही है। इसलिए हमें उसकी छुट्टियों का इंतजार करना पड़ेगा।

पिछले दो सप्ताह से मुझे पत्रिका का साप्ताहिक अंक मिल रहा है। किंतु 'ओरिएंट' नहीं मिल पाया।

हाँ मैं श्रीमती मिलर से कई बार मिल चुकी हूँ। वे अभी तक भारत की सुंदरता से प्रभावित हैं और विएना से अप्रसन्न हैं। कुछ दिन पहले मैं पेंशन कास्मोपोलाइट से बक्से ले आई थी। श्रीमती वेसी ने पेंशन बेच दिया था। पहले पत्र में भी मैंने यह लिखा था।

डलहौजी में कृपया आप कुछ चित्र खींचने का प्रयास करें। मैं भी पोलाऊ में यह कोशिश करूँगी। यदि रील महंगी न हुई तो।

श्रीमती हारग्रोव से बहुत दिनों से कोई संपर्क नहीं हो पाया। आजकल वे ध्यान में व्यस्त हैं, उन्होंने मुझे पत्र लिखा था। बाद में वे मुझे कुछ टाइपिंग का काम सौंपेंगी।

शेष विएना ज्यों का त्यों है। सभी मित्र ठीक–ठाक हैं और आपको शुभकामनाएँ भिजवा रहे हैं। एक दिन श्रीमती कुर्टी का बहुत प्यारा पत्र मिला था। वे आपकी रिहाई की खबर सुनकर काफी प्रसन्न थीं।

क्षमा करें, अब मैं यहीं समाप्त करती हूँ। आज प्रातः से मैं बहुत व्यस्त हूँ। मैं घर में अकेली हूँ, माता–पिता बाग में गए हैं और बहैन स्कूल गई है। अब मुझे अपना भोजन तैयार करना होगा, यानी एक कप कॉफी। मैं अपने लिए खाना बनाने में बहुत आलस करती हूँ। मैं पत्रों के उत्तर देकर लगे हुए ढ़ेर को कम करना चाहूंगी। पता नहीं इतना ढ़ेर कैसे लग गया।

मेरे परिवार की ओर से सादर प्रणाम। मरा ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
एमिली शेंक्ल

लाहौर
6.5.37, बृहस्पतिवार

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

पिछले शनिवार मैंने तुम्हें यहाँ से एयरमेल द्वारा पत्र लिखा था। पहली तारीख को मैं इलाहाबाद से यहाँ पहुँच गया था। वहाँ मैं चार दिन के लिए रूका था। क्या तुम ये जगहें नक्शे में देख सकोगी? 4 या 5 दिन बाद मैं डलहौजी पर्वत के लिए रवाना हो जाऊँगा। मुझे इस पते पर पत्र लिखनाः–

द्वारा डॉ0 एन0 आर0 धर्मवीर
डलहौजी (पंजाब)

आज कुछ और लिखने को नहीं है। जब मैं यहाँ आया था तब मौसम बहुत अच्छा था, लेकिन अब गर्मी पड़ने लगी है।

तुम्हारे पिछले पत्र से यह पता चला कि तुम पपरिका आदि खाने लगी हो जो बुरी बात है। इसी से दर्द पैदा होता है। तुम अपने खान–पान

का ध्यान क्यों नहीं रखतीं, जबकि तुम्हें पता है कि यही तुम्हारे कष्ट का मुख्य कारण है? मुझे आशंका है कि तुम शक्ति से अधिक कार्य कर रही हो, क्या नहीं? अपने अगले पत्र में मुझे यह समाचार देना कि तुमने अपना ध्यान रखना शुरू कर दिया है। इस् डाक द्वारा तुम्हें कुछ पैसे भिजवाने की व्यवस्था कर रहा हूँ।

कुछ माह डलहौजी रहने की योजना है। तुम गाँव कब जा रही हो?

कृपया अपने माता–पिता को मेरा प्रणाम कहना और तुम्हें शुभकामनाएँ। लोती को प्यार।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

लाहौर
11.5.37.

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 4 मई का एयरमेल द्वारा भेजा गया पत्र आज प्रातः मिला जो डलहौजी से यहाँ भिजवाया गया है। अभी तक मैंने लाहौर नहीं छोड़ा है, किंतु आज रात डलहौजी के लिए रवाना हो रहा हूँ। कल प्रातः वहाँ पहुँच जाऊँगा।

"मुझे अपनी कार्डरोब भी देखनी है?" से तुम्हारा क्या अभिप्राय है"?

मुझे यह जानकर दुख हुआ कि इन दिनों प्रायः तुम्हें दर्द हो जाता है।

तुम्हारी बहन आजकल क्या पढ़ रही है? मेरा विचार था कि वह मैट्रिक पास कर चुकी है।

ज्यादा कॉफी मत पीना। यदि पीनी ही हो तो ज्यादा दूध डाल कर पियो और खाली पेट कभी मत लो। कॉफी खाली पेट ली जाए तो गॉल ब्लैडर में अवश्य दर्द पैदा करती है।

आज कुछ और लिखने को नहीं है। अपने स्वास्थ्य का ध्यान अवश्य रखो। जो भारतीय पत्र मैंने अपनी रिहाई के संबंध में भिजवाए थे (18 मार्च) तथा कलकत्ता की बैठक (7 अप्रैल) के विषय में, वे तुम्हें मिले? माथुर या सेन का कोई समाचार?

तुम्हारे माता–पिता को सादर प्रणाम। कुछ महीने तक मेरा पता यही रहेगा–द्वारा डॉ एन0 आर0 धर्मवीर, डलहौजी, पंजाब।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

विएना
20.5.37

प्रिय श्री बोस,

आपका पहली तारीख का पत्र मुझे पिछले हफ्ते में मिल गया था। किंतु खेद हैं मैं तत्काल जवाब नहीं दे पाई।

आशा है आजकल आप डलहौजी में होंगे। वहॉ कैसा लग रहा है? क्या आपके स्वास्थ्य में सुधार हुआ है? आशा है कि हुआ होगा।

आपके इलाहाबाद आवास का समाचार मैंने पत्रिका में पढ़ा था जो इसी सप्ताह मुझे प्राप्त हुई। मैंने पढ़ा कि आप महात्माजी से मिले। अच्छी मुलाकात रही होगी। पत्रिका निरंतर मिल रही हैं किंतु चित्रात्मक 'ओरिएंट' नहीं मिल रहा। मैं आपकी आभारी हूँ कि कम से कम एक पत्र तो मिल रहा है, जिससे व्यक्ति को यह ज्ञान रहता है कि विश्व के अन्य भागों में क्या हो रहा है।

अभी तक मुझे श्रीमती वेसी का नया पता नहीं मिला है। किंतु उन्होंने मुझे आश्वासन दिया है कि जैसे ही वे कहीं स्थायी तौर पर रहने

लगेंगी, वे मुझे सूचित करेंगी। आजकल वे यात्रा पर रहती हैं। आपके बक्से अन्य ठिकाने पर पहुंचा दिया गया हैं। मैंने यह व्यवस्था कर दी थी। आपको जब भी किसी चीज की आवश्यकता हो तो कृपया मुझे लिखें, मैं वे चीजें (पुस्तकें) आप तक पहुँचाने की व्यवस्था कर दूँगी। मैंने आपके भतीजे को पुस्तकों की पूरी सूची दी थी, जिन दिनों वह यूरोप में था, वह आपको मिल गई होगी।

मैं अपने भोजन का यथासंभव ध्यान रखती हूँ, किंतु फिर भी कभी–कभी दर्द होता है। किंतु उतना भयानक दर्द नहीं होता जितना उन दिनों हुआ था, जब आप यहाँ थे।

सेन आजकल एडिनबर्ग में है और माथुर कहीं जर्मनी में । किंतु कहाँ मुझे मालूम नहीं। उनसे कोई संपर्क नहीं है। केवल कटयार सच्चा मित्र है वह अक्सर पत्र लिखता रहता है, हालांकि मैं उसे उत्तर के लिए काफी इंतजार करवाती हूँ। वह कुछ दिनों में अपने घर लौटने वाला है और उसने पत्र में लिखा था कि आजकल वह दिन घंटे और मिनट गिन रहा है कि कब अपनी मातृ–भूमि में पहुँचेगा।

आप संक्षेप में जानना चाहते हैं कि मैंने पिछला वर्ष कैसे बिताया। आप जानते हैं कि मेरे पास नौकरी नहीं थी, इसलिए मुझे घर पर ही रहना पड़ा। सुबह घर का काम, दोपहर में फ्रेंच पढ़ना, पढना और लिखना। जून में मुझे फ्रेंच पढ़ना रोकना पड़ा, क्योंकि –(1) मैं गॉव चली गई थी। (2) पैसा खत्म हो गया था और जेब खर्च के रूप में 5 शिलिंग से मैं कुछ नहीं कर सकती थी। कभी–कभी कैफ़े जाती, मित्रों से मिलती और कभी कभी फिल्म देखती। (एक टिकट 90 ग्रोशेन की) सर्दियों के आरंभ में मैंने अपने लोगों के लिए क्रिसमस की कुछ कढ़ाई शुरू की कुछ सिस्टर एलविरा के लिए भी किया, जिसका उन्होंने मुझे पैसा दिया। इससे मैं अपने परिवार व अपने मित्रों को उपहार दे पाई। पहली जनवरी से मैं एक भारतीय बालक की देखभाल कर रही हूँ। इस महीने के अंत में वह परिवार भी चला गया और मैं फिर बेकार हो गई हूँ। इसके अलावा पिछले साल मैंने

कई जगह आवेदन पत्र भेजे, किंतु कोई सफलता नहीं मिली। आजकल मैं खाली वक्त में पोशाकें, बैग और पेटियाँ बनाती हूँ। बस कुल मिला कर यही है।

मैंने यहाँ चूड़ियों के विषय में पूछा था किंतु यहाँ नहीं मिल पाई। यदि आप भिजवा नहीं सकते तो चिंता की कोई बात नहीं। मैं साधारण कांच की अलग–अलग रंगों की चूड़ियाँ चाहती हूँ।

आज मेरी श्रीमती वैटर से बात हुई थी उन्होंने शिकायत की कि आप उन्हें पत्र नहीं लिखते हैं। श्रीमती मिलर से तीन सप्ताह से संपर्क नहीं हो पाया। आजकल फिर मेरी फ्रेंच की पढ़ाई बंद है, क्योंकि मेरी अध्यापक गर्मियों की छुट्टियों में चली गई हैं। किंतु मैं अनुवाद कार्य और उनके दो पत्रों का फ्रांसीसी अनुवाद पढ़ रही हूँ। वे मुझे मेरी अशुद्धियॉ निकाल कर भेजेंगी। पिछले सप्ताह मेरे एक मित्र ने मुझे एक बढ़िया पुस्तक दी–लेबर इन आयरिश हिस्टरी, यह जेम्स कोनोली ने लिखी है। इसे पाकर मुझे खुशी हुई और कुछ ही दिनों में इसे पढना प्रारंभ कर दूँगी।

कृपया मुझे बताएँ किं आपका क्या हाल है। जब चित्र खींचें तो मुझे भी अवश्य भिजवाएँ। मेरे माता–पिता व मेरी बहन आपको सादर प्रणाम भेज रहे हैं। मेरी मित्र एला ने भी अपने एक पत्र में आपको नमस्ते लिखने को कहा है। मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ स्वीकार करें।

आपकी शुभाकांक्षी
एमिली शेंक्ल

डॉ0 धर्मवीर आपके मित्र हैं या एक प्रकार का सैनेटोरियम चलाते हैं?

विएना
26.5.37

प्रिय श्री बोस,

आपके 6 तारीख के पत्र के लिए शुक्रिया। वह मुझे 26 तारीख में मिला। आज ही अमेरिकन एक्सप्रेस ने भी मुझे फोन करके पैसे की सूचना दी। इसे भेजने के लिए हार्दिक धन्यवाद। मैं इसे बैंक में रख दूँगी और जब आप मुझे कुछ खरीदने या भिजवाने को कहेंगे तब इसका इस्तेमाल करूँगी। यदि मुझे आवश्यकता पड़ी तो मैं भी कुछ पैसा ले सकती हूँ। बहरहाल, मैं इसे बचा कर रखूंगी। आजकल प्रति पाऊंड का रेट 26.20 शिलिंग है। शायद आपको याद हो पिछले या उससे पिछले वर्ष यह दर 25 शिलिंग थी।

अब तक आप डलहौजी पहुँच चुके होंगे और लाहौर में हुई थकान से कुछ राहत भी महसूस कर रहें होंगे। हॉ मैं नक्शे में हर जगह खोज लेती हूँ। किंतु नक्शे से यह आभास नहीं होता कि वह जगह कैसी है। डलहौजी कैसी जगह है? वहाँ किस प्रकार के पेड़ उगते हैं? आशा है वहॉ की जलवायु आपके उपयुक्त होगी। यहाँ विएना में आजकल बहुत गर्मी है। लेकिन इतनी गर्मी मुझे पसंद है। जब गर्मी होती है तो मैं प्रसन्न और स्वस्थ रहती हूँ।

हॉ, मैं वादा करती हूँ कि भविष्य में अपने खान–पान पर ध्यान दूँगी और यथासंभव उचित भोजन ही करूँगी। जहाँ तक अतिरिक्त श्रम का प्रश्न है तो वह अब नहीं रहेगा, क्योंकि वह भारतीय परिवार, जिनके बच्चे की देखभाल मैं करती थी, शीघ्र ही विएना से जा रहा है। मुझे इस बात का दुख है क्योंकि मुझे बच्चा याद आएगा।

8 जुलाई को हम गाँव जाएँगे। मेरा पता होगा–

एमिली शेंक्ल
मार्जगासे 112

पोलाऊ बी/हार्टबर्ग
(आस्ट्रिया)

वैसे आप मुझे पत्र विएना के पते पर भी लिख सकते हैं, वहाँ से सारी डाक मुझे भेज दी जाएगी। हम लोग 6 या 8 सप्ताह पोलाऊ में रहेंगे। आशा है वहाँ अच्छी गर्मी होगी और हमारा समय अच्छा बीतेगा। तब मैं पूरा दिन घास में लेट कर बिता दूँगी और धूप में भुन जाऊँगी। मैं कुछ पुस्तकें ले जाऊँगी जो वहाँ पढूंगी। कुल मिलाकर मैं वहाँ एक आलसी की जिंदगी व्यतीत करूँगी और केवल अपनी ही देखभाल करूँगी।

कल मैं श्रीमती मिलर से मिलीं थी। उन्होंने मुझे बताया कि वे बहुत परेशान हैं। जिन लोगों के पास अधिक काम नहीं होता उनके साथ यही होता है। यदि इस महिला के दो या तीन बच्चे हो जाएँ तो इसके पास परेशान होने का समय ही नहीं बचेगा। संभव है नौकरी छूटने के बाद मैं भी परेशान हो जाऊँ। जब मुझे आसपास ऐसे सब लोग परेशान दिखाई देते हैं तो मुझे लगता है कि मैं इस समाज के लिए उपयुक्त व्यक्ति हूँ।

एक दिन श्रीमती वेटर आपके विषय में पूछ रही थीं। उन्होंने बताया कि कई दिन से उन्हें आपका कोई पत्र नहीं मिला। मैंने उन्हें आपका डलहौजी का पता दे दिया है। संभवतः वे आपको वहाँ पत्र लिखेंगी।

फ्रेंच सीखना फिलहाल बंद है क्योंकि मेरी अध्यापक गाँव गई है। किंतु मैं गर्मियों में उन्हें पत्र लिखूँगी और उनके पास कुछ काम भेजूंगी जिसे वे ठीक कर लौटाएँगी।

शेष अन्य कुछ लिखने को नहीं है। मेरे माता–पिता और लोती (जो मुझसे लंबी और मोटी है) अपनी शुभकामनाएँ और धन्यवाद!

आपकी शुभाकांक्षी
एमिली शेंक्ल

पुनश्चः—मैंने अभी अपटोन सिंक्ल्येर द्वारा 'द मनी चेंजर्स' पढ़ी। क्या आप इस पुस्तक के विषय में कुछ जानते हैं। हालांकि यह पुस्तक पूरी तरह बैंक के विषय में थी और मुझे पूरी तरह समझ में भी नहीं आई, किंतु यह बहुत दिलचस्प पुस्तक है।

द्वारा डॉ0 एन0 आर0 धर्मवीर
डलहौजी
पंजाब
27.5.37

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारे 20 तारीख के एयरमेल द्वारा भेजे गए पत्र के लिए शुक्रिया। वह मुझे कल मिला। दो सप्ताह से तुम्हारी कोई सूचना नहीं मिली इसलिए मैं चिंतित था। अब तक तुम जान चुकी होओगी कि मैं वहाँ 12 मई को पहुँच गया था। श्री एवं श्रीमती धर्मवीर मेरे मित्र हैं इसीलिए यहाँ मैं उनका अतिथि हूँ। भारत में यह सामान्य बात है, किंतु यूरोप में ऐसा संभव नहीं है।

प्रोफेसर डेयेल ने मुझे पत्र में लिखा था कि उन्होंने मेरी रिहाई की खबर आज अखबार में पढ़ी। क्या तुमने उन्हें 22 मार्च को ही सूचित नहीं किया था।

यदि तुम हर सप्ताह मुझे कुछ पंक्तियाँ लिख दिया करो तो अच्छा रहेगा। यदि व्यस्त हो तो लंबा पत्र न सही, किंतु कुछ पंक्तियाँ तो लिख ही सकती हो।

मैं पहले से बेहतर महसूस कर रहा हूँ, लेकिन बहुत अच्छा नहीं। यह 2000 मीटर की ऊंचाई पर शांत पहाड़ी इलाका है। एक ओर

हिमालय की बर्फ से लदी पहाड़ी श्रृंखला दीखती है तो दूसरी ओर मैदानी इलाका और नदियाँ। यहाँ की हवा ताजी और स्वास्थ्यवर्धक है।

मैंने तुम्हारे लिए 'ओरिएंट' भिजवाने की भी व्यवस्था कर दी है। पहले उन्होंने बताया था कि मुझे कोई दाम नहीं देना पड़ेगा, किंतु वास्तव में वे उसका दाम चाहते थे। अब मैंने पैसा जमा करा दिया है, तुम्हें लगातार अखबार मिलेगा।

तुम्हारी भेजी पुस्तकों की सूची मुझे समय पर मिल गई थी।

यदि तुम चाहो तो मैं तुम्हें सलाह दे सकता हूँ कि तुम अगले महीने से अपना समय कैसे व्यतीत करो। पता नहीं इस राय का महत्व है या नहीं। (जर्मन भाषा के वाक्यों का अनुवाद—क्या तुम मुझे भूल गई हो? इतने दिन में पत्र क्यों लिखती हो? क्या तुम नहीं जानती कि मैं तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा करता हूँ?—संपादक) हर हाल में अपने फ्रेंच भाषा के पाठ जारी रखो। फ्रेंच बोलना भी शुरू करो।

क्या तुम्हें पता है आजकल लोवी कहाँ है? हाँ मैं श्रीमती वेटर को लगातार पत्र नहीं लिख पाता और वे बहुत ज्यादा संवेदनशील हैं।

जब भी तुम्हें समय मिले तो मेरी जो पुस्तकें वहाँ पड़ी हैं, उन्हें पढ़ो। वे तुम्हें दिलचस्प लगेंगी। क्या आजकल तुम पोस्ट आफिस जाती हो?

एला को मेरी नमस्ते कहना। अपना माता–पिता को और लोती को मेरा प्रणाम कहना।

साथ में एक चित्र भेज रहा हूँ जो तब खींचा गया था जब मैं डलहौजी पहूँचा था। यदि चाहो तो बेशक किसी को मत दिखाना। पता नहीं मुझे बंगाली वेशभूषा में पहचान भी पाओगी या नहीं।

क्या अभी भी तुम्हारे फेफड़े या गले में तकलीफ है? सिस्टर एलविरा को मेरा प्रणाम कहना। क्या आजकल तुम अपने छोटे मित्र से

मिलती हो?

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्चः– मेरे पुराने मित्रों में से शर्मा मुझे कलकत्ता में मिलने आया था। वह पंजाब से मुझे मिलने आया जिसके लिए मैं उसका आभारी हूँ।

सुभाष चंद्र बोस
30.5.37

प्रिय श्री बोस,

रविवार की गर्म और धूप भरी दोपहरी। मैं और श्रीमती मिलर काबेंजल होटल की बालकनी में बैंठे हैं, वही जगह जो विएना में आपको बेहद पसंद थी।

शुभाकांक्षी
एमिली शेंक्ल

(श्रीमती मिलर व शेंक्ल का संयुक्त कार्ड)
(इस पत्र पर तारीख नहीं हैं, किंतु संदर्भ से पता चलता है कि यह पत्र सुभाषचंद्र बोस ने अपनी रिहाई के बाद मार्च 1937 में या शायद अप्रैल या मई 1937 में फ्रॉ लोवी द्वारा डाक में डाला गया था)

कई दिन से तुम्हें पत्र लिखना चाहता था। समय बीतता गया और तुम समझ सकती हो कि अपनी भावनाओं के विषय में लिखना मेरे लिए कितना कठिन कार्य था। मैं तुम्हें यह बताना चाहता हूँ कि मैं आज भी वही हूँ, जैसा तुम मुझे पहले जानती समझती थीं। एक दिन भी ऐसा नहीं बीता जब मैंने तुम्हारे विषय में सोचा न हो। तुम हर समय मेरे पास रहती हो। इस दुनिया में मैं किसी अन्य के विषय में शायद सोच भी नहीं

सकता। मैं तुम्हारे विचार जानने को उत्सुक हूँ। कृपया मुझे साधारण रूप से एयरमेल डाक द्वारा अपनी भाषा में अपने विचार लिख भेजो। ताकि मैं तुम्हारे विचार जान सकूँ। मैं नहीं जानता भविष्य में मुझे क्या करना चाहिए। मैं निर्णय लेने की स्थिति में नहीं हूँ। मैं तुम्हें बता नहीं सकता इन पिछले कुछ महीनों में मैंने स्वयं को कितना अकेला और दुखी पाया है। केवल एक ही बात मुझे प्रसन्न कर सकती है, किंतु मैं नहीं जानता वह संभव है या नहीं। बहरहाल मैं रात दिन इसी विषय में सोचता रहता हूँ और प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि वे मेरा मार्गदर्शन करे। जब भी तुम्हारी बीमारी की सुनता हूँ तो बहुत परेशान होता हूँ। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखो ताकि मैं चिंतामुक्त हो सकूँ। मै हृदय और आत्मा से तुम्हारा हूँ।

पिछले सप्ताह मैंने लोवी के पते पर तुम्हें पत्र लिखा था। क्या तुम्हें वह पत्र मिला? मैंने यात्रा के दौरान जो पत्र तुम्हें लिखा था वह मिला ? मैंने पोर्ट सईद के बाद लिखा था और मसावा से डाक में डाला था।

वहाँ से चलने के बाद, मैंने अमेरिकन एक्सप्रेस को निर्देश दे दिया था कि वह तुम्हें पांच पाउंड दे दें। शायद पिछले वर्ष। क्या तुम्हें पैसा मिला? आशा है वह तुम्हारे कुछ काम आया होगा।

पिछले बारह माह मैं तुम्हारे साथ (तुम्हारे परिवार के लोगों और बाहर वालों का) व्यवहार कैसा रहा? कृपया मुझे सूचित करो।

मुझे दुख है कि तुम अपने स्वास्थ्य का उचित ध्यान नहीं रखती और तुम्हारा दर्द पुनः शुरू हो गया है। क्या तुम नहीं जानतीं कि मुझे तुम्हारे स्वास्थ्य की कितनी चिंता है और मै। तुम्हारे बारे में कितना सोचता हूँ?

क्या तुमने वह सारी राशि खर्च कर दी जो तुम्हारे पास थी?

आजकल तुम क्या सोचती रहती हो? क्या तुम्हें तुम्हारे पुराने मित्र याद हैं?

आजकल तुम ईश्वर से क्या माँगती हो? भविष्य में तुम्हें क्या आशा है?

कृपया एयरमेल द्वारा सीधे–सादे तरीके से अपनी भाषा में शीघ्र उत्तर दो। मैं समझ जाऊँगा। मेरे नए कुरोरल के पते पर ही लिखना। मेरे घर के स्थायी पते पर नहीं। अपना नाम मत लिखना।

तुम मेरे स्वास्थ्य के विषय में जानना चाहती हो? पहले से बेहतर हूँ। काफी दिन मुझे एग्जीमा रहा और कोई भी डाक्टर मेरा इलाज नहीं कर पाया। किंतु मैंने अपना स्वयं इस प्रकार इलाज कर लिया। मैंने एग्जीमे की खाल को नोच डाला फिर उस पर आयोडीन डाल दिया। पहले बहुत जलन हुई, लेकिन बाद में कुछ दिन बाद वह ठीक हो गया। यदि कभी तुम्हें एग्जीमा हो जाए तो मेरी दवाई आजमाना। क्या अभी भी तुम्हें खाँसी हैं?

अप्रैल में मैं तुम्हारी मित्र एम0 (हॉपास्टडट)से मिला था। लेकिन उनकी पत्नी से मुलाकात नहीं हो पाई उसे सावधानी से पत्र लिखना, क्योंकि वह बहुत भयभीत है। जब मुझे पत्र लिखो तो याद रखना मेरे मित्र पत्र पढ़ते हैं। फ्रॉ एफ0 एम0 क्या कहते हैं?

विएना
1.6.37

प्रिय श्री बोस,

आपका 11 मई का पत्र आज प्रातः मिला। धन्यवाद!

30 मई को मैं कोबेंजल में श्रीमती मिलर के साथ थी। हमने आपको एक पोस्टकार्ड लिखा था और आशा है इस पत्र के साथ ही वह भी आपको मिल जाएगा। वह बहुत प्यारी दोपहर थी, धूपभरी! और हम उस जगह बैठे थे, जहॉ से पूरे विएना का दृश्य नजर आता है। आपको भी यह जगह बहुत पसंद थी। बाद में वहाँ थोड़ी ठंड हो गई इसलिए हम होटल में जाकर सैलून में बैठ गए। वहाँ सभी लोगों को देखने में बड़ा

आनंद आ रहा था। हमने वहाँ इजीप्ट के राजदूत को देखा, कुछ फिल्मी कलाकारों को और विदेशियों को देखा। फ्रॉहेडी ने मुझे अपनी भारत की यात्रा के विषय में बताया इसलिए समय बहुत तेजी से बीत गया।

आज से मैं फिर बेरोजगार हो गई हूँ, क्योंकि वह परिवार विएना से इटली चला गया है। बच्चे की बहुत याद आती है तो मन खराब हो जाता है। मुझे नहीं पता था कि बच्चे से इतना लगाव हो जाएगा और बाद में मुझे दुख होगा।

अपनी वार्डरोब देखने से अभिप्राय है कि मुझे अपने कपड़े ठीक–ठाक कर रखने हैं, फटे कपड़े सीने हैं और प्रेस करने हैं। मैं आजकल बहुत कंजूस हो गई हूँ और पूरा प्रयत्न करती हूँ कि कपड़ों पर पैसा व्यर्थ खर्च न करूँ।

मेरी बहन ने अभी हाईस्कूल नहीं किया है। वह वहाँ केवल पांच वर्ष गई हैं (हाईस्कूल में आठ वर्ष लगते हैं।) मेरे माता–पिता इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि उसका मैट्रिक पास कर लेना भी फायदेमंद नहीं होगा, क्योंकि आजकल नौकरी मिलती नहीं चाहे आपके पास यूनिवर्सिटी की डिग्री ही क्यों न हो। फिर उसे लैटिन और गणित नहीं आता। इसलिए उन्होंने उसे पिछले वर्ष स्कूल से निकाल लिया, तभी से वह घर का काम सिखाने वाले स्कूल में है। वहाँ वह खाना पकाना, सिलाई, कपड़े धोना, कपड़े प्रेस करना आदि वे सभी सीखती है, जो घर चलाने के लिए आवश्यक है। यह कोर्स जुलाई में समाप्त होगा। उसके बाद वे उसका क्या करेंगे अभी निश्चित नहीं है शायद उसे टाइपिंग और शार्टहैंड सिखाएँ। उसके साथ परेशानी यह है कि वह कोई विदेशी भाषा सीखना नहीं चाहती। एक साल उसने अंग्रेजी सीखी, किंतु वह अंग्रेजी में बात नहीं कर सकती। उसका दिमाग बिल्कुल बेकार है, इसलिए वह कई बार मुझसे पिटी भी है।

मेरा स्वास्थ्य अब बेहतर है। कई दिन से दर्द भी नहीं है। यथासंभव मैं सावधान रहती हूँ। किंतु बहुत से दूध में कॉफी पीना, यह मैं

नहीं कर सकती। इसकी जगह मैं कॉफी पीना बिल्कुल छोड़ सकती हूँ।

अपनी रिहाई के बाद जो भारतीय अखबार आपने भेजे थे वे मुझे मिल गए थे। हर हफ्ते मुझे साप्ताहिक आनंद बाजार पत्रिका मिल जाती है। पिछली, कल ही मिली थी। मैंने पढ़ा कि आप पहले से स्वस्थ हुए हैं। यह सुनकर प्रसन्नता हुई और मुझे आशा है कि अब आप तेजी से स्वस्थ होंगे। कृपया पूर्ण विश्राम करें ओर अपनी आदत के अनुसार सुबह तीन बजे तक पढ़ना छोड़ दें। जब आप पूर्ण स्वस्थ हो जाएँ तो पुनः कार्य शुरू कर सकते हैं। फिर भी आपको अपनी सेहत का दुरूपयोग नहीं करना चाहिए, क्योंकि जितना आप अधिक सचेत रहेंगे उतना ही अधिक कार्य कर पाएँगे।

मास्टर व सेन का कोई समाचार नहीं है। दोनों ही पत्र लिखने में आलसी हैं।

कल श्रीमती वेटर ने मुझसे आपके विषय में पूछा था और बताया कि उन्हें आपका कोई पत्र नहीं मिला है। कृपया उन्हें कुछ पंक्तियाँ अवश्य लिख दें। वे खुश हो जाएँगी।

पिछले सप्ताह मैंने साधारण डाक से आपको पत्र लिखा था, आशा है आपको मिल गया होगा।

क्या आपने डलहौजी में कुछ चित्र लिए? वह कैसी जगह है? डॉ0 धर्मवीर शायद वही सज्जन हैं, जिनकी धर्मपत्नी जर्मनी की हैं? मुझे याद है आपने एक बार मुझै एक पंजाबी डॉक्टर व उनकी पत्नी का चित्र दिखाया था, जिनकी पत्नी जर्मनी की महिला थीं, और पंजाबी पोशाक पहने एक बच्चा गोद में लिए थीं। क्या यह वही परिवार है?

मेरे परिवार की ओर से सादर प्रणाम

मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

आपकी शुभाकांक्षी

एमिली शेंक्ल

साथ में उस बच्चे का चित्र है जिसकी देखभाल मैंने पिछले चार माह की थी। कितना प्यारा है, मुझे उसके माता–पिता से ईर्ष्या होती है।

द्वारा डॉ0 एन0 आर0 धर्मवीर
डलहौजी
पंजाब
3.6.37

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

आशा है तुम्हें मेरे पत्र लगातार मिल रहे होंगे। हालाँकि मुझे उनका उत्तर लगातार नहीं मिल रहा है।

पिछले सप्ताह मैंने तुम्हें एक चित्र भेजा था जो तब खींचा गया था जब मैं यहॉ पहुँचा था।

इस पत्र के साथ कुछ टिकट भेज रहा हूँ। क्या तुम अभी भी टिकट एकत्र करती हो? यदि हॉ, तो मैं कुछ और भेज सकता हूँ। क्या तुम्हारी मुलाकात सिस्टर एलविरा से हुई? उनका स्वास्थ्य अब कैसा है? तुम्हारी बहन आजकल क्या कर रही है? क्या वह मैट्रिक की परीक्षा देगी?

कृपया सिंह से कहना कि वह कभी–कभी मुझे पत्र लिखता रहे। उसका पता है–बेनोगाझे 9/5, या शायद (बी 45–1–73 यू)

तुम सब लोग गाँव कब जा रहे हो? यदि तुम्हारे पास तुम्हारे अपने कुछ चित्र हैं तो कृपया कुछ मुझे भेज दो। क्या लोवी का कोई समाचार मिला?

मेरा विचार है कि तुम्हें अपनी फ्रेंच भाषा में बोलचाल जारी रखनी चाहिए। फ्रेंच स्पीकिंग क्लब में भर्ती क्यों नहीं हो जाती? पिछले वर्ष जो पैसा तुमने कमाया क्या वह सब खर्च कर दिया? तुम्हारा स्वास्थ्य अब

कैसा है? आशा है इस गर्मी के मौसम में तुम्हें फेफड़े की परेशानी नहीं होगी? तुम्हारा एग्जीमा कैसा है? क्या अभी भी वह तुम्हें परेशान करता है? पिछली गर्मियों (1936) में यानी अप्रैल, मई और जून में तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा रहा?

मेरा गला फिर खराब हो गया था और मैं लगभग 10 दिन बीमार रहा, किंतु कोई गंभीर बात नहीं थी। अब मैं पहले से बेहतर महसूस कर रहा हूँ।

पिछले कई माह मैं जर्मन नहीं पढ़ पाया, किंतु मैं इसे पुनः प्रारंभ करना चाहता हूँ।

(अनुवाद–महान युवती, भविष्य में क्या करने की योजना है? –सम्पादक) क्या तुम्हारा फ्रांसीसी भाषा में पत्राचार जारी है? आज कुछ अन्य लिखने को नहीं है अतः अब बंद करता हूँ।)

हार्दिक शुभकामनाएँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

द्वारा डॉ0 एन0 आर0 धर्मवीर
डलहौजी
पंजाब
10.6.37

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

आशा है तुम्हें मेरे पत्र लगातार मिल रहे होंगे। मैं हर सप्ताह पत्र लिखता हूँ। इस सप्ताह एयरमेल से पत्र भेज रहा हूँ।

मेरा स्वास्थ्य पहले से बेहतर है। पंद्रह दिन पहले मेरा गला खराब हो गया था। अब ठीक है और मैं बाहर आ–जा सकता हूँ। यदि

मैं कुछ माह यहीं रहा–जैसा कि मैं चाहता भी हूँ तो आशा है मैं शीघ्र हो जाऊँगा और पुनः काम में लग जाऊँगा।

वह कौन आदमी था जिसके साथ तुम काम करती थी? क्या भारत का उसका पता और नाम तुम्हें मालूम हैं?

पिछले सप्ताह मैंने तुम्हें सुझाव दिया था कि तुम्हें फ्रेंच बोलचाल प्रारंभ रखनी चाहिए। इस पर विचार करना, भविष्य में लाभदायक सिद्ध होगी। यदि तुम्हारे पास इस पर खर्च करने को पैसा है तो उसका उपयोग अवश्य करो। यदि तुम चाहो तो मैं तुम्हें सुझाव दे सकता हूँ कि भविष्य में तुम अपने समय का सदुपयोग कैसे कर सकती हो। यदि आजकल तुम्हारे पास कोई नौकरी नहीं है तो तुम मेरा सुझाव मान लो।

क्या तुम आजकल पोस्ट ऑफिस जाती हो?

अचानक मुझे सेन का पत्र मिला। आजकल वह इंग्लैंड में है। अपनी डिग्री की पढाई कर रहा है। जुलाई में अपने इम्तहान खत्म होने के बाद वह आगे की पढ़ाई के लिए शायद विएना जाएगा। वैसे क्या तुम्हें उसके मित्र ट्रूड वेस के विषय में कुछ जानकारी है?

श्रीमती वेटर ने कुछ सप्ताह पहले मुझे पत्र लिखा था और लिखा कि विएना में आजकल यहूदी अपने भविष्य के प्रति अशंकित है और अमरीका जाने की सोच रहे हैं।

तुम अपने स्वास्थ्य के लिए क्या कर रही हो?– (अनुवाद–कल मुझे तुम्हारा पत्र मिला और मुझे सब कुछ समझ आ गया।–संपादक) क्योंकि मैं स्वयं आधा डाक्टर बन चुका हूँ, इसलिए तुम्हें मेरे सुझाव मान लेने चाहिए। क्या अभी भी तुम्हें फेफड़े के पीछे दर्द महसूस होता है? क्या गॉल ब्लैडर से कोई परेशानी है? क्या बिजली के हीटर का इस्तेमाल करती हो?–(अनुवाद–तुम्हारा पत्र पाकर मैं कितना प्रसन्न हुआ। तुम्हें बता नहीं सकता) यदि तुम्हें एग्जीमा जैसा कोई त्वचा रोग हो तो तुम मुझे लिख सकती हो। मेरे पास सरल किंतु प्रभावी इलीज है, जो मैंने स्वयं पर

आजमाया भी था।

क्या हाल ही में तुम्हारी मुलाकात सिस्टर एलविरा से हुई? यदि मिलो तो मेरी नमस्ते कहना। अब इलाज के बाद उनका स्वास्थ्य कैसा है?–(अनुवाद–मुझे प्रसन्नता है कि तुम आशावादी बनी हो।–संपादक) क्या आजकल एला से संपर्क हुआ है? उसे मेरी नमस्ते कहना।

तुम्हारी बहन आजकल क्या कर रही है? अपने माता–पिता को मेरा प्रणाम कहना और बहन को नमस्ते। अपने स्वास्थ का ध्यान रखना। मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्चः–यदि तुम्हें मालूम हो तो कृपया मुझे श्रीमती वेसी का पता लिखो। साथ में श्री फाल्टिस के लिए पत्र है।

विएना
15.6.37

प्रिय श्री बोस,

कल मुझे प्रातः आपका 27 तारीख का पत्र और कुछ चित्र प्राप्त हुए। दोनों चीजों के लिए धन्यवाद। मैं आपको पहचान नहीं पाई, पोशाक के कारण नहीं, बल्कि आप बेहद कमजोर लग रहे थे। बहुत शर्म की बात है, अब आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहना होगा, खुराक बढ़ाइए ताकि आपका कुछ वजन बढ़े, अन्यथा मुझे बहुत दुख होगा।

अब मैं हर सप्ताह आपको पत्र लिखूँगी। कम से कम कुछ पंक्तियाँ तो जरूर, यदि अधिक नहीं लिख पाई तो। पिछले सप्ताह मैं बहुत व्यस्त थी, इसलिए आपको लिख नहीं पाई। आशा है आप क्षमा कर

देंगे।

मैंने आपकी रिहाई की सूचना डेमेल को निजी तौर पर नहीं दी थी, लड़कों ने बताया होगा।

आपको मालूम ही है कि डा0 बी0 सी0 राय आजकल विएना में ही हैं। वे अपनी भाभी और भतीजी को साथ ले आए हैं। उनके साथ एक वृद्ध यहूदी महिला सुश्री हरमन, कलकत्ता की रहने वाली, तथा एक भारतीय युवा लड़की, सुश्री हुवीसिंह (या ऐसा ही कुछ नाम) भी है। गैरोला ने यह प्रबंध किया है कि मैं उन्हें विएना की सैर करा दूं। और अब आवश्यकता होती है तो मैं श्री राय की मदद भी कर देती हूँ। कल सारा दिन मैं उनके लिए अनुवाद और टाइपिंग का कार्य करती रही। वे सभी लोग बहुत अच्छे हैं। डॉ0 राय ने कल मुझे बताया कि प्रोफेसर डेमेल उन्हें विभिन्न क्लिनिक दिखाने में लगे हैं। डॉ0 राय ने मुझे लौंग और इलायची का पूरा टिन दिया है, जो मैं आजकल खाने में लगी हुई हूँ। आपक जानते हैं ये मुझे कितनी पसंद हैं और यहॉ ये चीजें मिलती नहीं हैं। रेणु (सुश्री राय) और मैं आज प्रातः घूमने गए थे और दोनों को बहुत मजा आया। उसके बाद हम घर गए और दोपहर का भोजन एक साथ किया। वह विएना के व्यंजन बनाना सीख़ना चाहती हैं। किंतु वे कुछ ही दिन में वहाँ से चले जाएँगे।

भगवान का शुक्र है कि अब आप पहले से बेहतर महसूस कर रहे हैं। ताजी हवा से आपको बहुत लाभ होगा। वहाँ पर फोटो अवश्य खींचना, क्योंकि आप जानते ही हैं कि मुझे इनका कितना शौक है।

अब मुझे 'ओरिएंट' और पत्रिका दोनों ही मिल रहे हैं। आपकी हूँ, किंतु कृपया मुझे इनकी कीमत अवश्य लिख भेजें, क्योंकि आप इसकी कीमत क्यों अदा करें।

इस महिने आपके सुझावों के लिए धन्यवाद। जहाँ तक संभव होगा मैं ऐसा ही करूँगी। केवल फ्रेंच के संबंध में एक कठिनाई है, क्योंकि

ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जिससे फ्रेंच में बात की जाए, और मेरा स्वयं से बात करना ठीक नहीं है।

हाँ मुझे लोवी का पत्र मिला था। मैं पोस्ट आफिस जाती हूँ। आज मैं श्रीमती वेटर से मिली और उन्होंने मुझे बताया कि आपने उन्हें पत्र लिखा है।

जब मैं गाँव जाऊँगी तो कुछ पुस्तकें अवश्य पढ़ूँगी। किंतु अभी यह संभव है। कल मैं रात एक बजे तक बैठी अनुवाद करती रही। उसके बाद कुछ पढ़ना संभव नहीं था, क्योंकि मुझे प्रातः सात बजे उठना भी था।

आजकल सिस्टर एलविरा से मेरा संबंध कोई बहुत अच्छा नहीं है। पता नहीं क्यों, आजकल वे मुझसे बचने के अजीब तरीके खोजती हैं। और मैं कभी भी स्वयं को उन पर लादुंगी नहीं।

कई महीने बाद मेरे छोटे से मित्र से मुलाकात हुई। वह आपको नमस्ते भिजवा रही है। एला को इस माह पत्र लिखूँगी। कई सप्ताह पहले ही मुझे लिखना चाहिए था।

फिलहाल मेरा गला, गॉल ब्लैडर और फेफड़ा सब ठीक–ठाक हैं। आजकल तंग नहीं कर रहे।

क्या आप उस जगह के आसपास हैं, जहाँ शर्मा ठहरा है? यदि उससे मुलाकात हो तो मेरी नमस्ते कहिएगा। कटयार का पत्र आया था उसने लिखा है कि संभवतः वह जुलाई के अंतिम सप्ताह में यहाँ आएगा, लेकिन यदि मैं यहा होऊँगी तभी । पुराने लोग फिर भी अच्छे हैं।

आज रात मैं गैरोला और एक भारतीय महिला के साथ 'ह्यूरिगर' जाऊँगी। आपके स्वास्थ्य के लिए एक जाम पिऊँगी।

आपकी शुभाकांक्षी

एमिली शेंक्ल

पुनश्चः—मेरे माता—पिता और लोती (जो मुझसे लंबी और मोटी है) आपको नमस्ते भेज रहे हैं। आपने जो चित्र मुझे भेजे मां को बहुत पसंद आए कि मैं वे उन्हें दे दूँगी ताकि वे उसे फ्रेम कर सकें। किंतु मुझे एक बात कहनी है। इस गाउन जैसी कमीज की बाहें बहुत लंबी हैं। इन्हें छोटी करवा लेना। श्रीमती धर्मवीर आपको सुझाव दे सकेंगी—आशा है मेरी इस टिप्पणी से आपको बुरा नहीं लगेगा? लेकिन आप जानते हैं कि मैं स्पष्टवादी हूँ।

16.6.37

यह पत्र भेजने से पहले मैं आपको बताना चाहती हूँ कि हम 'ह्यिूरिगर' गए थे। वहाँ हमें बहुत मजा आया। वहाँ बहुत से भारतीय और विएना की महिलाएँ थीं। वहाँ हमने सबकी सलामती के लिए जाम पिया। सुश्री हुवीसिंह ने दो भारतीय गीत सुनाए, दो महिलाओं ने इटली का गीत गाया और मैंने विएना के गीत गाए। जल्दी ही हम लोग घर वापिस आ गए। आज मैं बिल्कुल थक जाऊँगी, क्योंकि आज मुझे श्रीमती व सुश्री राय के साथ बेलवेडरे जाना पड़ा। कई घंटे पिक्चर गैलरी में बिता कर आदमी कितना थक जाता है। डेढ़ बजे मैं घर वापिस आई, जल्दी से खाना खाया और जल्दी ही डॉ0 राय का टाइपिंग का काम करना शुरू कर दिया। वहाँ से मैं काटेज सैनेटोरियम गई और अब यह पत्र लिख रही हूँ। रात का खाना खाते ही मैं तत्काल सो जाऊँगी।

हार्दिक शुभकामनाएँ।

आपकी शुभाकांक्षी
एमिली शेंक्ल

17.6.37

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 26 मई का पत्र मुझे 13 जून को मिला, प्रसन्नता हुई। तुम्हें अब तक मेरे डलहौजी से भेजे पत्र मिल चुके होंगे। यह जगह 2000 मीटर की, या शायद ज्यादा, ऊँचाई पर स्थित है। यहाँ एक ओर दूर बर्फ से ढके पहाड़ दिखाई देते हैं तो दूसरी ओर दूर तक फैले मैदान और नदियाँ । यह एक शाँत पहाड़ी इलाका है, जैसा मुझे पसंद है। क्योंकि यहाँ मिलने आने वाले मुझे तंग नहीं करते। गर्मी से भी दूर है, इसलिए भी खुश हूँ।

आशा है गाँव में तुम्हारा समय अच्छा व्यतीत होगा। ऐसा लगता है कि गर्म शहर ही तुम्हें रास आयेगा वैसे भी धूप की बहुत शौकीन हो। खैर जो भी हो। मुझे आशा है वहाँ तुम फ्रेंच सीखोगी और समय का सदुपयोग करोगी। हमारा जीवन इतना क्षुद्र है कि हमें बिल्कुल भी समय व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए। हमेशा कुछ उपयोगी चीजें सीखनी चाहिए।

श्रीमती मिलर के संबंध में, जब लोग ये कहें कि वे बहुत घबरा रहे हैं तो कभी उनकी बात पर विश्वास मत करो। कुछ लोग प्रदर्शन भी करते हैं। वह परेशान होने का दिखावा भी ऐसे करते हैं मानो सुदंर पोशाक पहनी हो। वैसे यूरोपीय महिलाओं में घबराहट ज्यादा रहती है, क्योंकि वे धूम्रपान और शराब का सेवन करती हैं। और रात में ठीक से सोती भी नहीं हैं। फिर वक्त ऐसा भी आता है कि वे चाहें भी तो सो नहीं सकतीं। जब ऐसा होता है तो घबराहट ही होती है। वैसे तुम अपने वादे के मुताबिक सिगरेट पीना कब छोड़ोगी? एक दिन में कितनी सिगरेट पीती हो?

पोलाऊ में तुम्हें संगीत का भी अभ्यास करना चाहिए। इससे तुम्हें समय बिताने में आसानी हो जाएगी, क्योंकि वहाँ तुम्हारे साथी नहीं होंगे। यदि हर सप्ताह मुझे पत्र लिखो तो एयरमेल से भेजने की आवश्यकता

नही है।

मैं पूछूँगा कि इस जगह के पिक्चर पोस्टकार्ड मिलेंगे या नहीं। यदि मिले तो भेजूँगा और साथ ही अपने मेजमानों के साथ अपनी फोटो भी भेजूँगा। यदि मिल जाए तो अगली डाक से ही भेज दूँगा।

भविष्य के लिए मेरी तुम्हें सलाह है कि (1) अपने शरीर को ठीक रखो, प्रतिदिन अभ्यास करो। विएना में तुम किसी जिमनास्टिक स्कूल में दाखिला ले सकती हो। (2) घरेलू सफाई और मितव्ययिता के पाठ सीखो। ताकि भविष्य में जीवन सुखमय हो सके। (3) एक योग्य सेक्रेटरी बनने का प्रशिक्षण लो जिसके लिए बुक कीपिंग, एकाउंटेंसी तथा फाइलों को सुव्यवस्थित ढंग से रखना आना आवश्यक है। (4) संगीत सीखो कोई वाद्य बजाना सीखो ताकि तुम स्वयं का और अपने परिवार का मनोरंजन कर सकों। (5) अधिक से अधिक भाषाएँ सीखो। इन्हें बोलना आना आवश्यक है। (6) थोड़ी बहुत कढ़ाई–सिलाई भी आनी चाहिए, बुनाई–कढ़ाई आदि। (7) जो विषय तुम पढ़ना चाहती हो ध्यान रहे भविष्य में तुम्हारे लिए उपयोगी हो सके। इस सबके अतिरिक्त तुम्हें दर्शन भी पढ़ना चाहिए।

आशा है मुझे इस अनुपयोगी सलाह देने के लिए क्षमा कर दोगी। शायद जो बातें मैंने सुझाई हैं, वे तुम भलीभाँति जानती ही हो। असलियत यह है कि आज प्रातः मेरा मन कर रहा था कि मैं बिन मांगी राय किसी को दूँ। आजकल यहाँ से बृहस्पतिवार और सोमवार को एयरमेल रवाना होती है। वहाँ से किस दिन होती है? साधारण डाक हमें बृहस्पतिवार को डालनी होती है।

मुझे प्रसन्नता है कि तुम्हें उसके बदले में अच्छी दर मिल गई है। तुम यह राशि जैसे भी चाहो खर्च कर सकती हो।

क्या पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी घूमने जाना चाहती हो। पिछले साल शायद तुम सिस्टर एलविरा के साथ घूमने गई थी। आशा

इनकी पत्नी अंग्रेज महिला है – बहुत बढ़िया । मेरा इनसे पुराना परिचय है।

आशा है तुम स्वस्थ हो। मैं भी बेहतर हूँ। हार्दिक शुभकामनाएँ। तुम्हारे माता–पिता को प्रणाम।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

डलहौजी
पंजाब
1.7.37

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

आशा है तुम्हें मेरे पत्र लगातार मिल रहे होंगे। पिछले सप्ताह मैंने ड्रकाशे द्वारा तुम्हें यहाँ के कुछ पिक्चर पोस्टकार्ड भेजे थे। आशा है शीघ्र ही तुम्हें मिल जाएँगे। कृपया अपने दो चार चित्र तथा जिन स्थानों पर तुम घूमी हो वहाँ के चित्र भेजना।

इस सप्ताह कुछ विशेष नहीं है। मैं आजकल ठीक–ठाक हूँ – पहले से बहुत बेहतर। किंतु प्रगति बहुत धीमी है।

तुम्हारा स्वास्थ्य आजकल कैसा है? अपने माता–पिता को मेरा प्रणाम कहना। तुम्हें और तुम्हारी बहन को शुभाशीष।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

है कि अभी तुम्हारी उनसे मैत्री ज्यों की ज्यों होगी या फिर तुम्हारे नाम की किसी चेकोस्लोवाकिया की लड़की से? क्या आजकल तुम बहुत खर्च करती हो? पिछले वर्ष तुमने जो कमाया वह सब खर्च कर दिया या कुछ जोड़ा भी है? आशा है पोलाऊ में आजकल मौसम बहुत शानदार होगा। कभी–कभी मेरी इच्छा होती है कि में जर्मन भाषा मैं कुछ लिखूँ, किंतु मुझे गलतियों से डर लगता है। क्या मुझे.....

(अस्पष्ट)

डलहौजी

24.6.37

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

1.6.37 के तुम्हारे पत्र के लिए धन्यवाद! उसके साथ चित्र भी थे तुम्हारा कोबेंजल होटल से लिखा पोस्टकार्ड भी मुझे मिल गया है। अप्रैल के अंत में मैंने श्रीमती वेटर को पत्र लिखा था और आज भी लिख रहा हूँ। जब मैं उनके अलावा अन्य लोगों को पत्र लिखता हूँ तो उन्हें बुरा लगता है। असली बात यह है।

मैं ड्रक्शा–इन्शरबेन द्वारा इस जगह के कुछ पिक्चर पोस्टकार्ड भेज रहा हूँ–अलग लिफाफे में। ये तुम्हें इस पत्र के साथ ही मिल जानी चाहिए।

जब तुम्हें समय मिले तो भगवद्गीता (जर्मन) अवश्य पढ़ना और गार्नर की अंग्रेजी पुस्तक। इससे तुम्हारा बौद्धिक विकास होगा। पिछले सप्ताह (एयरमेल) के पत्र में मैंने तुम्हें बहुत सी सलाहें दी थीं, इसलिए मुझसे नाराज मत होना। जब मैं लिखता हूँ तो इससे बेहतर कुछ नहीं लिख पाता।

फोटो से तो ऐसा नहीं लगता कि तुम्हारा वजन कम हुआ है। आजकल तुम्हारा वजन कितना है?

नहीं, ये डॉ0 धर्मवीर वे नहीं हैं जिनका चित्र तुमने देखा था।

द्वारा डॉ0 एन0 आर0 धर्मवीर
डलहौजी
पंजाब
8.7.37

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 15 जून का पत्र मुझे 4 जुलाई को मिला। धन्यवाद! संभवतः आजकल तुम पोलाऊ में हो।

मैं आजकल पतला हो रहा हूँ। मैं मोटा होना भी नहीं चाहता। किंतु स्वस्थ रहना चाहिए। आजकल तुम्हारा वजन कितना है?

तुम फ्रेंच पत्राचार क्यों नहीं करती? जब तक तुम्हारे पास पते नहीं थे, तब तक तो तुम बहुत उत्सुक थी। अब तुम्हें कुछ फ्रांसीसी पते मिल गए हैं तो तुम पत्र नहीं लिख रही।

श्रीमती वेटर को जब यह पता चलता है कि मैं अन्य लोगों को पत्र लिखता हूँ, लेकिन उन्हें नहीं लिखता, तो वे नाराज हो जाती हैं। यह बात सदा याद रखना।

तुम्हें सिस्टर एलविरा के व्यवहार में आया परिवर्तन पहले-पहले कब पता चला? क्या तुम कारण का अनुमान लगा सकती हो? संभवतः यह महिला का सामान्यतः परिवर्तनशील स्वभाव ही है।

शर्मा यहाँ से बहुत दूर है, किंतु उसने मुझे लिखा है कि वह मुझसे मिलने अवश्य आएगा। जब मैं घर लौटा था तब वह कलकत्ता में भी मुझसे मिलने आया था। मेरे विचार से कटयार वापिस लौटना नहीं चाहता।

मेरी कमीज़ की बाहें छोटी नहीं की जा सकतीं, क्योंकि भारतीय शैली यही है। यह कमीज कोट के अंदर पहनने के लिए नहीं है। यह कुर्ता है।

डॉ0 राय के लिए तुम क्या काम कर रही हो? क्या इस कार्य के

वह तुम्हें पैसे देता है?

कॉटेज सैनेटोरियम में कौन है? क्या डॉ0 राय के लोगों में से कोई?

आशा है तुम स्वस्थ हो। मैं बिल्कुल ठीक–ठाक हूँ। तुम्हें व तुम्हारे माता–पिता को शुभकामनाएँ।

साथ में कुछ टिकट हैं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

द्वारा डॉ0 एन0 आर0
धर्मवीर
डलहौजी
पंजाब
भारत
15 जुलाई, 1937

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 23 जून का पत्र मुझे 11 जुलाई को मिला। बहुत–बहुत धन्यवाद! मैं देख रहा हूँ कि आजकल तुमने अपने पत्र टाइप करने छोड़ दिए हैं। क्या तुम्हारा टाइपराइटर खराब हो गया है?

तुमने जो चित्र भेजे थे वे मुझे कुछ दिन पहले मिले। बच्चे के चित्र सहित। किंतु मैं समझ नहीं पाया। मुझे लगता है कि तुम्हें इस बात का कष्ट हुआ कि बच्चे के माता–पिता चले गए हैं।

क्या डॉ0 फल्टिस का कोई समाचार है। क्या तुम जानती हो कि उनका सैलशाफ्ट कैसा चल रहा है।

यदि तुम चाहो तो मैं तुम्हें कुछ और चित्र भिजवा सकता हूँ।

आशा है अब तक तुम्हें वे पिक्चर पोस्टकार्ड मिल गए होंगे जो मैंने भेजे थे (डलहौजी के दृश्य)

क्या डॉ0 राय को जर्मन भाषा आती है? या वे बिल्कुल भी नहीं जानते?

मुझे प्रसन्नता है कि तुम अब स्वस्थ हो। मैं पहले से बेहतर हूँ। अपने माता–पिता को मेरा प्रणाम कहना और अपनी बहन को शुभाशीष देना।

अभी–अभी मुझे श्री फाल्टिस का पत्र प्राप्त हुआ है।

शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

द्वारा डॉ0 एन0 आर0 धर्मवीर
डलहौजी
पंजाब
23 जुलाई, 1937

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

वनिस से तुम्हारा भेजा पोस्टकार्ड पाकर प्रसन्नता हुई। तथा जेनेवा से लिखा तुम्हारा पत्र भी मिला। आज मैं तुम्हें लंबा पत्र नहीं लिख पाऊँगा क्योंकि मुझे देर हो गई है और यह पत्र डाक में डालना है, इसलिए कुछ पंक्तियाँ लिख रहा हूँ। मैं पूर्णः स्वस्थ हूँ। तुम कैसे हो? आजकल गॉव में ही होगी। जेनेवा में किससे मुलाकात हुई? अपनी यात्रा के विषय में विस्तार से लिखो – यदि अभी नहीं लिखा है तो।

शुभकामनाओं सहित। अपने माता–पिता को मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

डलहौजी
पंजाब
भारत
29 जुलाई, 1937

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 6 जुलाई का पत्र मुझे 25 तारीख में मिला। जब तुम्हें पत्र देरी से मिले तो कृपया उसका लिफाफा मुझे भेज दिया करो। मुझे आश्चर्य है कि मेरे द्वारा एयरमेल द्वारा भेजे गए पत्र तुम्हें साधारण डाक से मिल रहे हैं। मैं डाक विभाग से शिकायत करूँगा।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि तुम्हारा स्वास्थ्य अब ठीक है। कटयार शायद तुम्हारे फेफडों की जॉच करना चाहता था। खुशी है कि उनमें कोई खराबी नहीं है। कृपया गॉल ब्लैडर की देखभाल करना मत छोडना। यदि भोजन के प्रति सावधान रहोगी तो स्वस्थ रहोगी।

मैं पहले से बेहतर हूँ, किंतु कभी–कभी पेट में दर्द हो जाता है। संभवतः धीरे–धीरे ठीक होगा। मैं चाहता था कि बैगस्टीन में एक माह इलाज करवा पाता। किंतु यह संभव नहीं है। मुझे प्रसन्नता है कि आपने सिगरेट पीना कुछ कम कर दिया है। किंतु तुम चाहो तो और भी कम कर सकती हो। एकदम मत करो, किंतु धीरे–धीरे कर सकती हो। तभी तुम्हें सफलता मिलेगी।

मेरे विचार से तुम्हें अधिक से अधिक चीजें का प्रयत्न करना चाहिए। पुरूष अथवा स्त्री जितना ही अधिक शिक्षित होगा उतना ही उसे भविष्य में फायदा होगा।

मुझे आश्चर्य है कि गैरोला परीक्षा में उत्तीर्ण कैसे हो गया। उसे तो चिकित्सा के संबंध में कुछ भी ज्ञात नहीं है।

अगले सप्ताह मैं तुम्हें जर्मन भाषा में पत्र लिखने का प्रयास करूगाँ।

संभवतः कुछ और पिक्चर पोस्टकार्ड भी भेजूँगा। किंतु मुझे यह विश्वास हो जाए कि जो चित्र मैंने पहले तुम्हें भेजे थे वे तुम तक पहुँच चुके हैं।

हाँ, तुमने जो फोटो भेजे थे वे मुझे कुछ सप्ताह पूर्व मिल गए थे। अब तुम्हारा वजन कितना है।

शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

डलहौजी
पंजाब
5.8.1937

प्रिय फ्राँलिन,

मुझे तुम्हारे वेनिस, जेनेवा और पोलाऊ से लिखे (दिनांक 6, और 13 जुलाई) पत्र मिले, प्रसन्नता हुई। मैं यह जानना चाहता हूँ कि तुम्हारी जेनेवा यात्रा का प्रबंध किसने किया? मेरे विचार से कोई भारतीय होगा – क्या ऐसा ही है? क्या तुम विएना वापिस आने में वेनिस गई थीं। तुमने वेनिस में क्या खरीदा? वह व्यक्ति कौन था, जिसके लिए तुमने विएना में कुछ माह कार्य किया? श्री कटियार क्या कहते हैं? वह इस बात से प्रसन्न हैं या परेशान कि भारत वापिस लौटना पड़ रहा है। इतने दिन रोम में उन्होंने क्या किया?

मुझे प्रसन्नता है कि तुम बेहतर महसूस कर रही हो। तुम्हें हमेशा यह याद रखना चाहिए कि तुम्हें गाल ब्लैडर की परेशानी है इसलिए तुम्हें हमेशा सावधान रहना चाहिए।

बंगाल डाक कार्यालय से मुझे पता चला कि तुम्हारा पार्सल व

अन्य पत्र आदि रास्ते में ट्रेन में जल गए।

मुझे यह जानकर आश्चर्य हो रहा है कि मेरे दो पत्र जो मैंने एयरमेल द्वारा भेजे थे वे तुम्हें साधारण डाक से मिले। यदि मेरा पत्र विएना में बहुत दिन बाद मिला करे तो कृपया लिफाफा मुझे वापिस भेज दिया करो, ताकि मैं यहाँ शिकायत लिखूँ, वैसे तुम भी चाहो तो विएना में शिकायत दर्ज करा सकती हो।

.....(अस्पष्ट) यहूदी? क्या अन्य लोगों की भाँति उन्हें भी ईश्वर ने ही नहीं बनाया है। क्या फ्रेजीवेस विएना में पढ़ रही है या लंदन में ? सेन ने मुझे लिखा था कि वह विएना जाएगा। शायद आजकल विएना में ही हो। वह कुछ माह वहाँ रहकर पढ़ाई भी करेगा और नौकरी भी करेगा। क्या श्रीमती वेसी अभी भी पेंशन कोस्मोपोलाइट में ही रह रही हैं? शायद उनका पेंशन तो बंद हो चुका है।

यह अच्छी बात नहीं है कि तुम सिगरेट पीती हो। 'जर्मन महिलाएँ तो धूम्रपान नहीं करतीं।' मुझे विश्वास है कि यदि तुम चाहो तो सिगरेट के बिना भी जिंदा रह सकती हो। तुम्हें चिंतित होने की जरूरत नही–शांत रहो और धैर्य रखो तो तुम्हें सिगरेट की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। आजकल तुम क्या कर रही हो? यदि भविष्य के जीवन की तैयारी करो तो बेहतर होगा। व्यक्ति को सदैव कार्य करते रहना चाहिए।

क्या तुम जर्मन भाषा में भगवद्गीता पढ़ना नहीं चाहोगी? यह तुम्हारे लिए मुश्किल काम नहीं है।

पता नहीं गैरोला की सभी परीक्षाएँ कैसी रहीं। क्या तुम कुछ जानती हो?

गार्नर अथवा गैटल (ठीक से मालूम नहीं), तुम्हारें पास विएना में है। यह पुस्तक राजनीति पर है। जब मैं विएना आया था तो वह पुस्तक तुम्हारे लिए भारत से खरीद कर ले गया था। शायद तुम यह भूल चुकी हो।

54.5 किलो वजन कम है। तुम्हारा वजन तो काफी कम हो चुका है। कम से कम 57 किलो वजन होना चाहिए। (1 किलो = 2.2 पाउड)

यदि तुम्हारा जन्म 1910 में हुआ था तब तो तुम अभी बहुत छोटी हो। मैं तो बहुत बड़ा हूँ, क्योंकि मैं पिछली सदी में पैदा हुआ था।

आजकल मैं पहले से बेहतर महसूस करता हूँ, लेकिन पूरी तरह अभी ठीक नहीं हुआ हूँ। हालांकि यहाँ प्रायः बारिश होती है, किंतु फिर भी मौसम अच्छा है। यहाँ का तापमान 20 या 21° रहता है। रात–दिन मैं खाता–पीता, सोता और पढ़ता रहता हूँ, कभी–कभी सैर करने भी जाता हूँ, किंतु जर्मन बहुत कम पढ़ पाता हूँ।

आशा है आजकल पोलाऊ में मौसम अच्छा होगा और तुम बाहर मौजमस्ती के लिए जा सकती हो। पैदल कितनी दूर तक चलती हो?

अपने माता–पिता को मेरा सादर प्रणाम कहना। लोती कैसी है, उसे मेरा शुभाशीष।

हार्दिक शुभकामनाओं साहित
सदैव तुम्हारा

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्चः–मेरी गलतियों के लिए मुझे क्षमा कर देना।

डलहौजी
12.8.37

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 20 जुलाई का पत्र मुझे 8 तारीख में मिला। तुमने लिखा है कि उस सप्ताह के दौरान तुम्हें मेरा पत्र नहीं मिला – किंतु मैं प्रत्येक

सप्ताह लगातार तुम्हें पत्र लिखता हूँ। यदि पत्र तुम्हें देर से मिले या एयरमेल द्वारा भेजा गया पत्र तुम्हें साधारण डाक से मिले तो उनके लिफाफे मुझे भेज देना मैं यहाँ डाक विभाग में शिकायत दर्ज करूँगा। एयरमेल के पत्र साधारण डाक द्वारा भेजे जाने की शिकायत तो मैं यहाँ कर भी चुका हूँ। वे लिफाफे मांग रहे थे और मैं वे उन्हें उपलब्ध नहीं करा सका। श्रीमती वेटर की भी यही शिकायत है कि उन्हें मेरे पत्र देरी से मिलते हैं। तुम उन्हें भी कह देना कि वे भी लिफाफे मुझे भेज दें ताकि मैं शिकायत कर सकूँ। उन्हें बता देना कि मैं अगले सप्ताह उन्हें पत्र लिखूँगा। अंग्रेजी में 'boil tea or cook tea' नहीं कहना चाहिए बल्कि केवल यह कहना चाहिए कि 'Make tea' और 'Prepare tea' चावल उबालते हैं, चाय नहीं। क्योंकि चाय आप तब डालते है जब पानी नीचे उतार लेते हैं।

यहाँ अन्य कुछ लिखने को नहीं हैं। आजकल बरसात हो रही है, इसलिए हम लोग बाहर आ जा नहीं पाते। इस माह के अंत तक बरसात समाप्त हो जाएगी।

पिछले सप्ताह मैंने तुम्हें जर्मन भाषा में पत्र लिखा था। आशा है वह समय पर मिल जाएगा।

'मीराबेन' महात्मा गाँधी की अंग्रेज शिष्या सुश्री स्लेड हैं, जो आजकल यहाँ आई हुई हैं। जब वे यहाँ आई तो उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं था और उन्हें मलेरिया बुखार हो रहा था। अब वे स्वस्थ हैं और शीघ्र ही महात्मा गाँधी के पास लौट जाएंगी। मैं कोशिश करूँगा कि यहाँ खींचा गया संयुक्त फोटो तुम्हें भिजवा सकूँ।

मेरा गला बेहतर है, किंतु लिवर और पाचन क्रिया अभी ठीक नहीं हो पाई है। मैं बूढ़ा भी होता जा रहा हूँ।

तुमने भारत के विषय में कुछ पुस्तकों की जानकारी चाही है, किंतु मेरे विचार से उन्हें भेजने का कोई लाभ नहीं हैं। क्योंकि तुम्हारे पास

जो पुस्तकें हैं, तुम उन्हें ही नहीं पढ़ती। जब तक गंभीर मनःस्थिति में नही आओगी तब तक पढ़ाई में मन नहीं लग पाएगा। विएना में तुम्हारे पास ढेरों पुस्तकें हैं, विभिन्न विषयों पर, किंतु मैं नही जानता कभी तुमने उन्हें देखा भी हो तो।

आशा है तुम्हारा समय अच्छा बीत रहा होगा, स्वास्थ्य की देखभाल कर रही होगी। मैं बिल्कुल ठीक हूँ।

तुम्हें और तुम्हारे माता–पिता को प्रणाम व लोती को प्यारा।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

डलहौजी
19.8.37

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 27 जुलाई का पत्र 15 तारीख में पाकर मुझे अति प्रसन्नता हुई। पता नहीं मेरा एक पत्र (1, जुलाई) डाक में इधर–उधर कैसे हो गया? कृपया मेरे सभी पत्र जो तुम्हें देर से मिले और एयरमेल द्वारा भिजवाए गए, जो पत्र साधारण डाक से मिले उन सभी के लिफाफे मेरे पास भेज दो। मैंने यहाँ स्थानीय डाकघर में शिकायत की थी। वे लिफाफे माँग रहे थे। यदि फिर भविष्य में कभी ऐसी शिकायत हो तो मुझे उनके लिफाफे अवश्य भिजवा देना। मैं उसी समय शिकायत कर दूँगा। अब मुझे तुम्हारे पत्र लगातार मिल रहे हैं।

इस माह के अंत में संभवतः बरसात समाप्त हो जाएगी और तब मौसम अच्छा हो जाएगा। वैसे कुल मिला कर यहाँ दार्जिलिंग जैसी नमी नहीं है। मेरा वजन 154 पाउंड है। (1 किलो – 2.2 पाउंड) इस प्रकार मेरा वजन 20 पाउंड के आसपास घटा है। यह वजन जब मैंने यूरोप

छोड़ा था, उसकी तुलना में कम है। किंतु अब मुझे वजन की इतनी चिंता नहीं, किंतु ताकत होनी जरूरी है।

इस स्थान के विषय में कुछ लिखने को विशेष नहीं है। अधिक लोंगो से मिलना जुलना हो नहीं पाता। मेरे मेज़बान बहुत सख्त हैं और वे जब तक कोई व्यक्ति प्रसिद्ध हो जाता है बहुत से लोग केवल श्रद्धा जताने की दृष्टि से भी उससे मिलने आने लगते हैं। किंतु इसका अभिप्राय यही है कि मेरा समय व्यर्थ बर्बाद हो। वैसे ऐसे मिलने वाले यहाँ कम हैं, क्योंकि यह जगह कुछ अलग–थलग पड़ती है। डॉ0 शर्मा पिछले सप्ताह मुझसे मिलने आए थे और डॉ0 कटियार संभवतः अगले सप्ताह आएँगे।

पिछली डाक से आयरिश समाचार पत्र मिला, जो तुमने भिजवाया है।

निंरतर जिमनास्टिक करना अच्छा है, इससे मांसपेशियों में दर्द नहीं होता। आजकल तुम सिलाई का क्या काम कर रही हो। क्या पिआनो या वायलिन बजाती हो? वैसे तुम वायलिन बजाना क्यों नहीं सीख लेतीं?

मुझे यह जानकर खेद हुआ कि अस्त–व्यस्त रूप में भोजन लेने के कारण तुम पुनः बीमार हो गई हो।

मैं तुम्हें जर्मन भाषा में पत्र लिख सकता हूँ, किंतु उसमें मेरा बहुत सा समय बर्बाद हो जाता है। किंतु तुम सीधी–सादी जर्मन भाषा में पत्र लिख सकती हो। मैंने प्रो0 डेमेल को हाल में जर्मन भाषा में पत्र लिखा था जिसका उन्होंने उत्तर भी जर्मन भाषा में ही दिया।

तुम्हारे माता–पिता को प्रणाम। तुम्हें व तुम्हारी बहन को शुभाशीष।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

डलहौजी
पंजाब
भारत
27.8.37

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 13 अगस्त का पत्र पाकर प्रसन्नता हुई, जो मुझे 22 तारीख को मिला था। चित्रों के लिए बहुत–बहुत धन्यवाद। अच्छे आए हैं। मैं तुम्हें एन्शटीबेन द्वारा एक फोटो भिजवा रहा हूँ जो सुश्री स्लेड (मीराबेन) जब यहाँ आई थी तब खींचा था। वे गाँधीजी की शिष्या हैं (अंग्रेज) दो महीने यहाँ बिताने के बाद वे आश्रम में चली गई जहाँ गांधी जी रहते हैं। वे सदा भारतीय वेशभूषा पहनती हैं और भारतीय नाम भी रख लिया है। चित्र में उन्होंने पंजाब की स्थानीय वेशभूषा पहन रखी है, जिसमें ढीली–ढाली सलवार, ढीला कुर्ता और एक दुपट्टा होता है।

मुझे यह जानकर हर्ष हुआ कि तुमने दुबारा फ्रेंच सीखनी शुरू कर दी है। कृपया मुझे साधारण जर्मन भाषा में पत्र लिखना। मैं समझ जाऊँगा। किंतु मुझे जर्मन भाषा में पत्र लिखने में बहुत समय लगता है।

तुम्हारा जिमनास्टिक कैसा चल रहा है? तुम्हें यह रोज करना चाहिए वरना तुम्हारी मांसपेशियों में दर्द होगा और वे कठोर हो जाएँगी।

यदि तुम श्री जेनी को पत्र लिखो तो उन्हें लिख देना कि मुझे उनका पत्र मिल गया है और मै शीघ्र ही उसका उत्तर भी दूँगा। क्या तुम्हारी मुलाकात मैडम होरव से हुई, जिन दिनों वे विएना में थीं या तुम केवल उन्हें पत्राचार के माध्यम से ही जानती हो।

मैं लगातार तुम्हें पत्र लिख रहा हूँ। कृपया मुझे यह अवश्य सूचित किया करो कि मेरा किस तारीख का पत्र तुम्हें किस दिन मिला। साधारण डाक से 18 दिन लगते हैं, जबकि एयरमेल में 7 दिन। यदि पत्र देर से मिले तो उसका लिफाफा संभाल कर रख लो और मुझे भिजवा दो ताकि मैं शिकायत दर्ज करा सकूँ।

मैं तब तक तुम्हें कोई पुस्तक भेजना नहीं चाहता जब तक कि तुम पढ़ने के लिए बेहद उत्सुक न हो जाओ।

जो पहला चित्र तुमने मुझे भेजा था वह उतना अच्छा नहीं था। बच्चे का फोटो अच्छा आया थाकृकृ (जर्मन भाषा)

(अनुवाद – किंतु तुम्हारी फोटो अच्छी नहीं आई – संपादक)

क्या डॉ0 सेलिंग नन बन गई हैं? नहीं तो वे ननों के आवास में क्या करने गई हैं?

यदि दूध तुम्हारे लिए उपयुक्त नहीं तो तुम दही क्यों नहीं लेती? यह हल्का भी होता है और आसानी से घर पर ही तैयार किया जा सकता है। वैसे क्या तुम्हें दही जमाना आता है – नही तो मैं तुम्हें सिखा सकता हूँ। थोड़ा सा (बहुत कम मात्रा में) दही लेकर इसे हल्के गर्म दूध में मिला दो और रातभर रखा रहने दो। सुबह दही तैयार मिलेगा। यदि बहुत सर्दी हो तो रातभर रसोई में ही पड़ा रहने दो।

मैं स्वस्थ होता जा रहा हूँ। शायद सिंतबर के अंत तक यहा रहूँगा। यदि तुम चाहो तो मुझे हमेशा जर्मन भाषा में पत्र लिख सकती हो। मैं इच्छानुसार उत्तर दूँगा। तुम्हारे माता–पिता को सादर प्रणाम। तुम्हें व तुम्हारी बहन को प्यार।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

2 सितम्बर, 1937
(जर्मन भाषा के पत्र का अनुवाद)

प्रिय महोदया,

तुम्हारे 10 तारीख के पत्र (साथ में लेख भी था) के लिए धन्यवाद! इस सप्ताह मैं एयरमेल द्वारा पत्र भेज रहा हूँ। तुम मुझे हमेशा जर्मन भाषा में पत्र लिख सकती हो। साथ में मैं डॉ0 सेन के लिए पत्र भेज रहा हूँ जो आजकल फिर विएना में ही हैं। मुझे ठीक–ठाक मालूम नहीं कि वे कहाँ ठहरे हैं, किंतु मेरे विचार से वे अल्सर्स्ट्रासे में ठहरे हैं और शायद उनका नंबर 18/15 या 20/15 है। उन्होंने मुझे लिखा था कि वे 18/15 में ठहरेंगे, किंतु मेरे विचार से वेसपरिवार वहाँ ठहरा हुआ हैं।

कृपया पहले पक्का पता कर लेना कि वे कहाँ ठहरे हैं। उसके बाद ही उन्हें यह पत्र भेजना । यह जानकर प्रसन्नता हुई कि ग्राज में तुम घूमने गई थी। मैंने सुन रखा है कि ग्राज बहुत खूबसूरत शहर है। दुर्भाग्यवश मेरा वहाँ जाना नहीं हो पाया। अभी तक मुझे ग्राज के चित्र भी नहीं मिले हैं। (जो तुमने मुझे भेजे थे।)

तुम वापिस विएना कब जा रही हो?

पोलाऊ में आजकल मौसम कैसा है – तुमने अब तक कितनी मक्खियाँ मारी हैं? क्या रात में तुम्हें शांतिपूर्ण नींद आ जाती है?

मुझे बहुत से पत्रों के उत्तर देने होते हैं और कई लेख आदि लिखने होते हैं। आजकल मैं कुछ पुस्तकें भी पढ़ रहा हूँ। यहाँ पहाड़ों पर मेरा कोई सचिव नहीं है। मेरी मेजबान जो बहुत अच्छी है, कभी–कभी मेरा टाइप का काम कर देती है।

कृकृ (अस्पष्ट) इसलिए, तुम्हें भी नन बन जाना चाहिए। पता नहीं मेरे इस लेख का क्या होगा। शायद मुझे संपादक से (इंटरसाम्टे ब्लाट) शिकायत करनी पड़े। क्या तुम्हें मालूम है कि मंजूरुद्दीन अहमद का लेखक कौन है? यह लेख किस अंक में और किस तारीख को प्रकाशित हुआ था। तुम्हें हमेशा अंक की संख्या और तिथि भी लिखनी

चाहिए।

मुझे विश्वास है कि अब तक तुम विएना पहुँच चुकी होगी? अब वहाँ क्या करने का विचार है? श्री फाल्टिस और प्रोफेसर डेमेल को मिलो और दोनों को मेरी नमस्ते कहना। बहुत दिनों से श्रीमती हार्ग्रोव का कोई समाचार नहीं मिला। कृपया सूचित करो कि वे कैसी हैं? विएना से अपना कोई अच्छा सा चित्र भेजो। अर्ल्स्ट्रासे 23 में एक अच्छा फोटोग्राफर है (मैं उसका नाम भूल रहा हूँ), उसके पास एक बार मैं गया था। यदि चाहो तो वहाँ जा सकती हो। क्या तुमने यह सुना है कि प्रो. डेमेल 30 अगस्त को भारत की यात्रा पर जाएँगे।

पिछले सप्ताह मैं घूमने गया था। हम लोग लगभग 18 किलोमीटर चले। अब मैं पहले की अपेक्षा बेहतर महसूस कर रहा हूँ, किंतु लिवर और पाचन क्रिया पूरी तरह ठीक नहीं हो पाई है। कृपया मुझे लिखो कि विएना में तुम आजकल क्या कर रही हो। क्या तुम श्री सेन से हमारी भाषा सीखना नहीं चाहतीं? अपने माता-पिता को मेरी सादर नमस्ते कहना और तुम्हें मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

सदैव तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

डलहौजी
पंजाब
9.9.37

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 17 अगस्त का पोस्टकार्ड मुझे 5 तारीख में मिला। पता नहीं तुम्हें मेरा पत्र क्यों नहीं मिल रहा। मैंने अपनी डायरी में देखा तो पता चला कि मैंने तुम्हें पत्र लिखा है। वैसे मेरी डाक कभी इधर-उधर नहीं होती। यदि ऐसा हो जाए, तो मैं अगले ही पत्र में तुम्हें इसकी सूचना दे देता हूँ। यदि मेरा कोई पत्र तुम्हें देर से मिले तो कृपया मुझे उसका

लिफाफा अवश्य भेजों ताकि मैं शिकायत दर्ज करा सकूँ। पत्र खोलने में सावधानी बरतना कि डाकघर के निशान नष्ट न हो। क्योंकि उन्हीं के द्वारा डाकघर में कार्यवाही होगी।

शायद तुम वापिस विएना में पहुँच गई हो। गाँव से लौटने के बाद कैसा महसूस हो रहा है?.......... (अनुवाद – मैं अभी अगले दो महीने और यहीं रहूँगा) अक्तूबर सिंतबर में यहाँ खुश्की और गर्मी पड़ने लगती है। हालांकि इस वर्ष अभी यहाँ बारिश ही हो रही है।....... (अनुवाद–तुम्हारा वजन अब कितना है?–संपादक) 26 तारीख को मैंने तुम्हें रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजा था। अब तक मैं तुम्हें दो पत्र जर्मन भाषा में लिख चुका हूँ। मैं सुनना चाहता हूँ कि तुम्हें मेरी जर्मन भाषा कैसी लगी। परेशानी यह है कि मुझे जर्मन शब्दों के लिए बहुत देर तक सोचना पड़ता है और फिर उन्हें व्याकरण की दृष्टि से ठीक करना पड़ता है, जबकि अंग्रेजी में मैं फटाफट लिख सकता हूँ। क्या अभी भी तुम टिकटें एकत्र करती हो। मैं पत्र के साथ कुछ भेज रहा हूँ– क्योंकि मैं इन्हें एकत्र नहीं करता बल्कि यूँ ही फेंक देता हूँ।

तुमने मुझे ग्राज से पत्र नहीं लिखा – किंतु पोलाऊ से लिखा जो 10 तारीख का है। तुमने ग्राज से जो पिक्चर पोस्टकार्ड भेजे थे वे मुझे मिल गए हैं। बहुत बहुत धन्यवाद – वे बहुत सुंदर हैं। जिस कागज में तुमने फोटो लपेटे थे 20 चित्र लिखा था। मुझे 20 ही चित्र ठीक–ठाक मिल गए हैं। किंतु लिफाफा कोई नहीं था। क्या उसमें कोई पत्र भी था? यदि था तो वह चुरा लिया गया होगा। मुझे तत्काल लिखो ताकि मैं इसकी शिकायत कर सकूँ। ऐसा लगता है कि तुम्हारे पत्रों पर विशेष नजर रखी जा रही है, किंतु अपने जीवन में मैं यह समझ नहीं पा रहा कि ऐसा क्यों हो रहा है।

(अनुवाद – जब फोटो आदि भेजो तो मुझे जर्मन भाषा में ही पत्र लिखो। विएना में तुम हमारी भाषा नहीं सीख सकती? – संपादक)

कुल मिलाकर मेरा स्वास्थ्य ठीक है। ....

(अनुवाद – तुम्हारी सैर बढ़िया रही) जब विएना जाओ तो अपने मित्रों को मेरी नमस्ते कहना।

तुम्हारे माता–पिता को सादर प्रणाम और तुम्हें नमस्कार।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

डलहौजी
पंजाब
16.9.37

प्रिय फ्रॉलिन,

तुम्हारे 25 अगस्त के पत्र के लिए शुक्रियां जो मुझे 12 सितंबर को प्राप्त हुआ। यहाँ सितंबर के पूरे महीने में बहुत तेज बारिश होती रही, इसलिए इस वर्ष यह महीना अच्छा नहीं रहा। डॉक्टरों की राय है कि मैं अभी पूरी तरह स्वस्थ नहीं हूँ, इसलिए अभी मुझे कलकत्ता से दूर यहाँ दो महीने और रहना पड़ेगा। यदि तुम्हारे पास विएना में पर्याप्त समय हो, और संभव हो तो एक अध्यापंक की व्यवस्था कर हमारी भाषा अवश्य सीख लो। क्या तुम्हारे पास गेटल (गार्नर नहीं) की पुस्तक, जो मैंने तुम्हें दी थी 'द आर्ट आफ गवर्नेस' है? यदि है तो अब तुम उसे पढ़ सकती हो।

मैं प्रत्येक सप्ताह तुम्हें पत्र लिखता हूँ। यदि तुम्हे हर सप्ताह मेरा पत्र नहीं मिलता है तो, या देर से मिलता है तो कृपया मुझे लिखो और लिफाफा भी साथ भेजो।

तुम्हारे चित्रों के लिए धन्यवाद, किंतु वे बहुत अच्छे नहीं है।

इंडियन एसोसिएशन आजकल क्या कर रही है? विएना में तुम्हें फ्रेंच बोलनी तो सीख ही लेनी चाहिए।

मुझे खुशी है कि तुम्हें चर्खा चलाना पसंद आया। क्या तुम्हारे पास चर्खा है? तुम्हें कहाँ से मिला? याहाँ डॉक्टर और उसकी पत्नी प्रतिदिन सूत कातते हैं। मुझे तुम्हारा भेजा सूत्र (पत्र के साथ) मिला। यह सूत हमारे यहाँ की रूई जैसा नहीं है।

आजकल तुम्हारा वजन 57 किलो के लगभग होना चाहिए और तुम्हें पहले से शक्तिशाली भी महसूस करना चाहिए, क्या ऐसा नहीं है?

क्या तुम्हें लगता है कि यूरोप की अपेक्षा अब मैं अच्छी जर्मन लिख लेता हूँ। अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम और लोती को नमस्ते। तुम्हें शुभकामनएं। मैं सदा तुम्हारा रहूँगा।

सदैव तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च :-मै अपने मित्र को रकसैक उपहार में देना चाहता हूँ। कृपया मुझे सूचित करो कि एक अच्छा रकसैक कितने रूपये का आएगा? क्या तुम मुझे प्रो0 डेमेल या सेन के हाथ भिजवा दोगी। डेमेल 30 अक्तूबर को विएना से चलेगा। क्या तुम जानती हो कि सेन कब चलेगा?

सुभाष चंद्र बोस
22 सितंबर, 1937

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारे 31 अगस्त के पत्र के लिए शुक्रिया जो मुझे 19 सितंबर को मिला। तुम्हारा मित्र कटयार कुछ दिन पहले यहाँ था और कल ही घर वापिस लौटा है। मैं उसे नौकरी दिलाने का प्रयास कर रहा हूँ।

यूरोप में यहूदियों ने बहुत उन्नति की है, क्योंकि वे योग्य हैं। आर्य लोग मूर्ख हैं, वरना, यूरोप में विदेशी इतनी उन्नति कैसे कर पाते?

29 जुलाई का जो पत्र तुम्हें 31 अगस्त को मिला वह जर्मन भाषा

में था या अंग्रेजी में?

तुम इतनी परेशान क्यों हो? तुम इतनी युवा हो। जब तुम मेरी भांति 40 वर्ष की हो जाओगी तो क्या बनना चाहोगी।

मुझे यह जानकर बेहद प्रसन्नता हुई कि आजकल तुम बहुत काम कर रही हो या बहुत पढ़ाई कर रही हो। तुम एच0 ए0 के विषय में कौन सा लेख लिख रही हो और किसके लिए?

तुमने लिखा है कि तुम बहुत छोटी हो। तुम ऐसा क्यों सोचती हो? तुम्हारी वास्तविक लंबाई कितनी है? यह बात मैं मानता हूँ कि व्यक्ति जब मोटा हो जाता है तो आलसी हो जाता है। इसीलिए मैं पतला बना रहना चाहता हूँ।

यदि संभव हो तो कृपया जर्मन भाषा में ही उत्तर देना।

मुझे खुशी है कि अब तुम स्वस्थ हो। किंतु तुम्हें नींद ठीक से आनी चाहिए। मेरे विचार से तुम बहुत सोचती और चिंतित रहती हो। क्या यह बात ठीक नहीं है? यदि तुम नौकरी की तलाश में भी हो तब भी तुम्हें शांत रहना चाहिए।

आजकल यहाँ का मौसम बहुत अच्छा धूप वाला है। हम शीघ्र ही ट्रैकिंग पर जाएँगे।

मेरे भोजन के विषय में तुमने जो कहा वह गलत है। मैं वही खाता हूँ जो मुझे मेरे डॉक्टर (मेजबान) खाने की अनुमति देता है। वह इस विषय में बहुत सख्त है।

यह अच्छी बात है यदि तुम सूत कातना जानती हो तो। क्या अभी भी सूत कातती हो? तुम्हारा सूत कैसा है? यहाँ तो प्रायः रूई से सूत काता जाता है।

क्या तुम अन्य भारतीयों को भी मिलीं। अंदाजन वहाँ कितने भारतीय हैं। उनमें से कितने एसोसिएशन में आते हैं?

तीन बार तुमने मुझे चित्र भेजे हैं और मुझे वे सभी मिल गई है। बहुत–बहुत धन्यवाद।

भारत में 40 वर्षीय पुरूष बूढ़ा हो जाता है – क्या तुम्हें मालूम है? पता नहीं अभी कब तक और यहाँ रहूँगा। डॉक्टर का विचार है कि मुझे 15 नवंबर तक पहाड़ों में ही रहना चाहिए चाहे यहाँ रहूँ या कहीं और। फिलहाल मैं अपने रिश्तेदारों से बात कर रहा हूँ उसके बाद ही कुछ निर्णय लूँगा।

श्री टाइमर को तथा अन्य मित्रों को मेरा प्रणाम कहना।

कृपया मुझे सूचित करो कि तुम्हारे सपने किस प्रकार के हैं। मैं शायद उनकी भविष्यवाणी कर सकूँ, क्योंकि मैंने थोड़ा सा सपनों का मनोविज्ञान पढ़ रखा है।

पिछले दिसंबर में तुमने जो पार्सल भेजा था उसकी रसीद मेरे पास नहीं है।

अपने माता–पिता को मेरा हार्दिक प्रणाम कहना।

शुभकामनाओं सहित,

सदैव तुम्हारा
सुभाष चंद्र बोस

डलहौजी
30 सितंबर, 1937

मेरी प्रिय मित्र,

तुम्हारे 8 सितंबर के पत्र के लिए शुक्रिया, जो मुझे 27 सितंबर को मिला। अशुद्धियां निकालने के लिए भी धन्यवाद। तुम्हारा मित्र कटयार हाल ही में यहीं था। वह बहुत अच्छा दिख रहा था। अभी उसने कोई निर्णय नहीं किया है कि वह क्या करेगा और मैं उसे नौकरी

दिलवाने में उसकी सहायता कर रहा हूँ।

संभवतः एक सप्ताह बाद मैं घर लौट जाऊँगा, किंतु ठीक–ठीक मालूम नहीं। इसलिए तुम मुझे मेरे घर के पते पर पत्र लिख सकती हो। अक्तूबर में यहाँ का मौसम अच्छा रहता है, किंतु दुर्भाग्यवश मैं और अधिक यहाँ नहीं रह सकता। मेरे मेजबान और उनकी पत्नी को लाहौर जाना है, अतः मैं घर लौटना ही पसंद करूँगा।

मैंने सुना है कि एसोसिएशन में लोग हमेशा झगड़ा ही करते रहते हैं । मेरे विचार से गैरोला आत्म–केंद्रित व्यक्ति है तथा लालची भी है। (कृपया उससे मत कहना) वैसे वह काफी मेहनती है। सेन साहसी और विशाल हृदय व्यक्ति है। लेकिन वह गैरोला जितना कार्य नहीं कर सकता, क्योंकि वह पढ़ाई भी कर रहा है। यही अच्छा होगा कि तुम बैठकों में जाना बंद कर दो।

पिछले पत्र में मैंने लिखा था तुम्हें चिंता नहीं करनी चाहिए।

जब तुम मेरी अशुद्धियाँ निकालों तो केवल शब्द ही लिख भेजा करो।

क्या तुम्हें गैटल की पुस्तक 'द आर्ट आफ गवर्नेस' मिली? क्या तुम इसे पढ़ना नहीं चाहोगी?

तुम कैसी हो? मैं ठीक हूँ।

कृपया अपने माता–पिता को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ देना।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

मैं, सदैव तुम्हारा शुभाकांक्षी

सुभाष चंद्र बोस

पुनश्चः—सदा जर्मन भाषा में पत्र लिखो। जब लिफाफा वापिस भेजो तो इसे टिकट सहित भेजना साथ में मैं कुछ टिकट भेज रहा हूँ।

सुभाष चंद्र बोस

विएना

30.9.1937

प्रिय श्री बोस,

बुधवार को जब मैंने साधारण डाक से आपको पत्र लिखा तो एक खास बात के विषय में पूछना भूल गई थी, ऐसोसिएशन के विषय में, हालाँकि मैंने वादा किया था। इसलिए मुझे यह पत्र एयरमेल द्वारा भेजना पड़ा और यदि संभव हो तो कृपया एयरमेल द्वारा ही उत्तर भी देना।

हम राष्ट्रीय झंडे के कायदे–कानून जानना चाहते हैं।

झंडों के रेखा चित्र

सही झंडा कौन सा है? समाचार पत्रों के अनुसार 'ए' ठीक है। किंतु यहाँ विएना में एक भारतीय झंडा है जिसमें चर्खा 'बी' की भाँति बना है। वे चाहते हैं कि मैं उनके लिए झंडा पेंट कर दूँ, लेकिन यहाँ कोई नहीं जानता कि सही कौन सा है। वे इसके विषय में काफी चिंतित हैं (मैं समझ नहीं पा रही कि इसमें चिंता की क्या बात है।)

कृपया मुझे बताएँ, अन्यथा ये लोग मेरा जीना दूभर कर देंगे। जैसे कि मुझे झंडा सिलने और पेंट करने के अतिरिक्त अन्य कोई कार्य नहीं है।

एक और बात। हालाँकि मैं जानती हूँ कि यह अनुचित है, किंतु फिर भी मैं आपसे निवेदन करती हूँ कि एसोसिएशन के लिए कुछ चंदा दें। संभव है आपके कुछ मित्र भी चंदा दे सकें। आप जानते हैं कि बहुत से काम करने को है, लेकिन हाथ में पैसा उतना नहीं है। उदाहरण के तौर पर डॉ0 बी0 सी0 राय ने 6 महीने तक क्लर्क रखने के लिए पैसा दिया है। किंतु मुझे मालूम है कि ये लड़के टेंट अथवा कमरे तथा कागजों के लिए पैसा देने पर भी खर्च करेंगे। उनकी आपसे मांगने की हिम्मत नहीं है, इसलिए यह दुरूह कार्य मुझे उन्हें बताए बिना करना पड़ रहा है। कृपया उन्हें दो या तीन पुस्तकें लाइब्रेरी के लिए भी भेज दें, ताकि वे

लाइब्रेरी की शुरूआत कर सकें।

अब आप समझ ही गए होंगे कि मुझे कितनी बातें चिंतित किए रहती हैं। यदि आपकों एसोसिएशन को आगे बढ़ाने के संबंध में विचार देने हैं तो कृपया अवश्य लिखें।

मुझे आशा है कि आप मुझे इस कष्ट के लिए क्षमा कर दगे, यद्यपि मुझे मालूम है कि आप इन दिनों बहुत व्यस्त हैं। किंतु इन लोगों को सहायता की बहुत आवश्यकता है।

इस सप्ताह पत्रिका में मैंने आपका बहुत लंबा लेख पढ़ा जो आपने भविष्य में यूरोप की स्थिति क्या होगी उसके विषय में लिखा है। इतने लंबे लेख कोई कैसे लिख सकता है। यह लेख काफी दिलचस्प है, हालाँकि मुझे राजनीति बिल्कुल समझ में नहीं आती। मुझे इसे पढ़ने में 2 घंटे लगे। अब मैं वह पुस्तक पढ़ने की कोशिश करूँगी जो आपने मुझे मेरे जन्मदिन पर सन 1935 में उपहार स्वरूप दी थी। के0 हैनशोफर की 'वेल्ट पोलिटिक वॉन हूटे'। यह पुस्तक बहुत अच्छी तरह लिखी गई है, किंतु उनकी शैली बहुत भयानक है। पहले मैं समझी कि मैं मूर्ख हूँ और मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा। किंतु आज मेरे पिता ने यह पुस्तक पढ़ी तो उन्होंने भी यही कहा। उन्हें भी यह समझने के लिए कि वह क्या कहना चाहता है इसे दो तीन बार पढ़ना पड़ा।

आपका स्वास्थ्य कैसा है? क्या अभी भी आपका लिवर आपको परेशान करता है? मुझे बुरी तरह जुकाम हो गया है, किंतु लगता है कि शीघ्र ही वह ठीक हो जाएगा। मेरी माता ने पिछले सप्ताह एक्सरे कराया था– जिसमें गॉल ब्लैडर की सूजन आई है। इस प्रकार मैं अकेली ही नहीं हूँ। भगवान का शुक्र है कि आजकल मुझे अधिक दर्द नहीं होता।

मैं एक पत्रकार के साथ मिलकर भारत पर कुछ लेख लिखना चाहती हूँ और उन्हें आस्ट्रियाई अखबारों में छपवाना चाहती हूँ। क्या आप सुझाव दे सके हैं कि आवश्यक सूचना कहाँ से मिल सकती है।

मैं पारिवारिक जीवन, शादी–ब्याह आदि के अवसरों के विषय में लिखना चाहती हूँ।

अभी मुझे ध्यान आया कि पूजा का त्यौहार तो अब तक समाप्त हो चुका होगा। विजया की शुभकामनाएँ स्वीकार करें।

मैं आपकी और क्या सेवा कर सकती हूँ? यदि कोई सेवा है तो लिखने में झिझकिएगा नहीं। यथाशक्ति मैं उसे अवश्य पूरा करूँगी।

विएना में आपकी जो पुस्तकें पड़ी हैं उनमें से कोई पुस्तक आपको चाहिए? अब क्योंकि आपने पुनः कार्य शुरू कर दिया है, इसलिए आपको इनकी आवश्यकता पड़ सकती है। मैं ये आपके पास भेज दूँगी। किंतु मैं ये पुस्तकें किसी व्यक्ति के हाथ नहीं भेजूँगी – डाक से ही भेजूंगी, क्योंकि आप तो जानते ही हैं कि इस विषय में बहुत कम लोग ऐसे हैं जिनपर विश्वास किया जा सकता है। पुस्तकों कें विषय में वे प्रायः भूल जाते हैं।

एक बार पुनः कष्ट के लिए क्षमा चाहती हूँ।
मेरी हार्दिक शुभकामनांएँ।

आपकी शुभकामनाएँ
एमिली शेंक्ल

7.10.37

प्रिय सुश्री शेंक्ल

पिछले सप्ताह मुझे तुम्हारा पत्र मिला। अब मैं कलकत्ता जा रहा हूँ और ट्रेन में बैठा हूँ। एक दो दिन वहाँ रहने के बाद मैं कर्सियांग के लिए (दार्जिलिंग के निकट) रवाना हो जाऊँगा। इसलिए कृपया मुझे कलकत्ता के पते पर ही पत्र लिखना।

डलहौजी से मैंने बुक पोस्ट द्वारा एक पत्रिका 'एशिया' और रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा दो पुस्तकें भेजी थीं। आशा है वे शीघ्र तुम्हें मिल

जाएँगी। मैं बिल्कुल ठीक हूँ। आशा है वहाँ सब ठीक ठाक होगा

शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

कर्सियांग, डी0 एच0 राय
बंगाल
13.10.37

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 21 सितंबर और 30 सितंबर का एयरमेल द्वारा भेजा पत्र मिला। 5 तारीख को मुझे डलहौजी अचानक छोड़ना पड़ा। कलकत्ता होता हुआ यहाँ पहुँचा हूँ, जहाँ मैं अपनी माता और अन्य रिश्तेदारों से भी मिला। अब मैं कुर्सियांग में अपने भाई के पास रह रहा हूँ। पिछले सप्ताह मैंने ट्रेन में तुम्हें एक पत्र लिखा था। आशा है समय पर तुम्हें मिल जाएगा।

साथ में मैं प्रोफेसर डेमेल के लिए एक पत्र भेज रहा हूँ, कृपया उन तक पहुँचा देना। कृपया उन्हे फोन कर बता दें कि यदि वे चाहेंगे तो तुम पत्र का अनुवाद कर दोगी।

यह पत्र मैं जल्दबाजी में लिख रहा हूँ। साधारण डाक से साथ में सही झंडा और रंग आदि भेज रहा हूँ। ब्रिस्टल हॉस्टल में जो झंडा था, वह क्या हुआ?

मुझे खेद है कि जब तक मुझे यह पता नहीं लग जाएगा कि एसोसिएशन क्या कर रही है तब तक मैं चंदा नहीं भेज सकता। अभी तक उन्होंने मुझे निराश ही किया है। मुझे नहीं लगता कि तुम्हारा वहाँ अपना समय और शक्ति बर्बाद करने का कोई लाभ है। मैं कुछ छोड़ देना नहीं

चाहता (इस पत्र की कुछ पंक्तियाँ मिल नहीं पाई।)

(यह पत्र सुभाष चंद्र बोस ने जर्मन भाषा में बड़े अक्षरों में लिखा है पत्र के अंत में कोने में लिखे शब्दों से व पत्र के संदर्भ से यह आभास होता है कि 4 नवंबर 1937 में लिखा गया है—संपादक)

प्रिय महोदया,

संभवतः मैं नवंबर के मध्य में यूरोप की यात्रा पर आऊँगा। किंतु अभी निश्चित नही है। इस विषय में वास्तविक स्थिति के बारे में मैं अगले पत्र में लिखूँगा। मैं बैगस्टीन में चार पाँच सप्ताह तक रहना चाहूँगा। दिसंबर के मध्य में मैं वापिस लौट आऊँगा। कृपयाकुर्हास हॉकलैंड, बैगस्टीन आदि के बारे में पूछताछ कर पता कर लें कि क्या मैं (और तुम) वहॉ ठहर सकता हूँ। वहॉ 1934 की भाँति मैं एक माह रहकर पुस्तक लिखना चाहता हूँ। सुश्री रिकार्ट अब श्रीमती हेलमिंग बन गई है। कृपया उन्हें लिख कर पता कर लें कि मुझे कितने पैसे देने होंगे। 1936 में मैंने स्वास्थ्य कर के और आवास आदि की व्यवस्था के करों सहित दस शिलिंग दिए थे। संभवतः मैं वायुयान द्वारा यात्रा करूँगा। मेरे पत्र पर निर्भर मत रहना। यदि मैं आया तो तुम्हें तार द्वारा सूचित करूँगा कि नेपल्स कब पहुँच रहा हूँ। नेपल्स से एक दिन में मैं बैगस्टीन पहुँच जाऊँगा। तुम्हें बैगस्टीन मुझसे पहले पहुंचना होगा और मुझे रेलवे स्टेशन लेने आना होगा। रास्ते से मै। तुम्हें टेलिग्राम दे दूँगा, कि बैगंस्टीन कब पहुँच जाऊँगा।

इस संदेश के विषय में अपने मात–पिता के अतिरिक्त अन्य किसी को न बताना।

मुझे उत्तर मत देना और मेरे अगले एयरमेल पत्र (या तार) की प्रतीक्षा करो। अभी भी मुझे मेरी यात्रा के विषय में पक्का पता नहीं है। 4.11.37.

तार दिनांक 16.11.37

रेडियोग्राम

जी0 एल0 पी/के0 1150.

डब्ल्यू 10, कलकत्ता, 31.15.1125

डी0 एल0 टी0 शेंक्ल, फैरोगासे 24.18. विएना

वायुयान द्वारा 22 तारीख को बैगस्टीन पहुंचूँगा। आवास की व्यवस्था कर देना और मुझे स्टेशन पर मिलना। 21 तारीख को तुम्हें बैगस्टीन से तार दूँगा कि बैगस्टीन पहुंचने का समय क्या रहेगा—बोस.

(रोम से 21.11.37 को भेजा गया तार)

तार

शेंक्ल

पोस्टरेस्टान्टे

विलाख सोमवार को पहुचूँगा, 14/26 अगली गाड़ी पकडूँगा।

बोस

8.1.38.

यहाँ म्यूनिख स्टेशन पर कुछ भारतीय मित्रों के साथ कॉफी पी रहा हूँ। शेष कुशल है।

सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ। माता—पिता को सादर प्रणाम।

सुभाष चंद्र बोस

एंटवर्प

10.1.38, प्रातः 8 बजे

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

केवल तुम्हें यह सूचित करने के लिए पत्र लिख राहा हूँ कि मैं लंदन के लिए रवाना हो रहा हूँ। मैं ओस्टेंड ट्रेन से नहीं जा रहा हूँ। अपने मित्रों के साथ कार में जा रहा हूँ। इसलिए यहाँ से देर से चलूँगा—वरना मुझे बहुत जल्दी निकलना पड़ता।

म्यूनिख से जिस ट्रेन में आया उसमें बहुत भीड़ थी। अधिकांश अंग्रेज यात्री थे। मैं बिल्कुल ठीक हूँ।

यदि वहाँ आयरलैंड पर बनी फिल्म पारनैल देखने को मिले तो अवश्य देखना। बहुत अच्छी फिल्म है। हमने कल रात देखी थी। आशा है सब ठीक–ठाक है। प्रणाम और शुभाशीष।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

आर्टिलरी मैंशन,
3 एम फ्लैट,
विक्टोरिया स्ट्रीट,
लंदन एस डब्ल्यू –1।
सोमवार–11 बजे अपराह
(11–1–38 संपादक)

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

सांय 5.20 पर मैं यहाँ पहुँच गया था और स्टेशन पर मेरा भव्य स्वागत हुआ। समुद्र शाँत ही था। आज सायं प्रेस वालों के साथ एक सम्मेलन है। जब तक यहाँ रहूँगा अत्यधिक व्यस्त रहूँगा। साल्जबर्ग से म्यूनिख तक की यात्रा बहुत अच्छी रही। म्यूनिख से ब्रसेल्स तक की यात्रा में भीड़भाड़ अधिक होने के कारण मैं ठीक से सो नहीं पाया। एंटवर्प में मेरे दोस्तों के साथ अच्छा समय बीता और वे लोग मुझे ओस्टेंड तक अपनी कार में ले.आए थे। उसके बाद से मैं यहा हूँ। तुम कैसी हो? मुझे नहीं लगता कि मैं विएना में रूकूँगा, लेकिन तुम्हें यह बात किसी को बताने की जरूरत नहीं है। इस बुरे लेख के लिए क्षमा करना। क्या पढ़ सकोंगी?

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

आर्टिलरी मैंशन,
विक्टोरिया स्ट्रीट,
लंदन एस0 डब्ल्यू –1।
16.1.38

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

इन दिनों अत्यधिक व्यस्तता के कारण मैं पत्र नहीं लिख पाया। मुझे तुम्हारे दो पत्र मिल गए हैं–धन्यवाद।

कृपया दो स्टील की घड़ियाँ जिनके बारे में तुमने पूछताछ की थी–द डिप्लोमैट न0 सी0 के0 124, और डाक्टर की घड़ी सं0 651 चौकोर, दोनों ओमेगा खरीद लेना। महिलाओं की घड़ी मैं जानता हूँ, वहाँ नहीं मिल पाएगी। कल एयरमेल द्वारा पैसे भिजवा दूंगा। कृपया अमेरिकन एक्सप्रेस से पैसा ले लेना और घड़ियाँ खरीदकर हवाई अड्डे पर पहुँच जाना। मैं प्रातः 8.40 पर विएना पहुंचूँगा और वहाँ से 11.30 या 11.00 बजे रवाना होऊँगा। किसी और को नहीं लिख रहा हूँ। मैं 19 तारीख को प्राग पहुंचूँगा। वहाँ एक रात बिताऊँगा। 20 तारीख को मैं वापिस लौट जाऊँगा।

(इस पत्र का अंतिम भाग खो गया है।)
(प्राग से 19.1.38 को तार)

तार
शेंक्ल
फैरोगासे,
24, विएना।

दो घड़ियाँ खरीद कर हवाई अड्डे पर मिलो।

होटल क्विरीनेल
रोम
20.1.38.

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

नेपल्स से तुम्हें पत्र लिखने के लिए मेरे पास वक्त नहीं होगा, इसीलिए यहीं से कुछ पंक्तियाँ लिख रहा हूँ। मैं यहाँ सुरक्षित पहुँच गया। हम लोग वेनिस में नहीं रूके लेकिन किसी अन्य हवाई अड्डे पर रूके जहाँ दोपहर के भोजन की व्यवस्था ही नहीं थी। बस यही असुविधा हुई। यह सब ठीक है। मैं नेपल्स के लिए रवाना होने ही वाला हूँ। मैं बहुत थका हुआ हूँ, वर्ना, बिल्कुल स्वस्थ हूँ।

आशा है तुम भी स्वस्थ होगी। अपने माता–पिता को प्रणाम कहना।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

होटल ग्रांड बर्टाग्ने,
ले पेटिट पेरिस,
एथेंस।
21.1.38 रात्रि।

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

रोम से मैंने तुम्हें एयरमेल द्वारा पत्र लिखा था, अब तक तुम्हें वह मिल जाना चाहिए। अब मैं अपनी यात्रा पर हूँ जैसा कि तुम्हें इस पत्र के ऊपर लिखे पते से आभास हो ही गया होगा। नेपल्स और एथेंस के बीच मौसम बहुत खराब था। हवा हमारे विपरीत दिशा में बह रही थी। यहाँ हम लोग देर से पहुँचे, इसलिए अलैग्जैंड्रिया के लिए रवाना नहीं हो पाए, जैसा कि हमारा कार्यक्रम था। कैप्टन का विचार है कि इससे हमारे भारत पहुँचने के समय में कोई अंतर नहीं पड़ेगा। वह समय पूरा कर लेगा। मैं

यह पत्र तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ, क्योंकि अभी मेरे पास समय है और भारत पहुँचने के बाद मेरे पास बिल्कुल भी वक्त नहीं रहेगा। मुझे आशा है कि यदि भविष्य में मैं तुम्हें लगातार पत्र नहीं लिख पाया तो तुम बुरा नहीं मानोगी। काल्पनिक बातों में डूब कर चिंता करनी छोड़ा और अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखो।

तुम्हारा शुभाकांक्षी

सुभाष चंद्र बोस

कल 23 तारीख को बसरा (इराक)–23 की रात जोधपुर 24 की सुबह (दोपहर) कलकत्ता।

श्री फाल्टिस को मेरा संदेश दे देना और बुरा...... (अस्पष्ट) ब्यूरो। आशा है अब तक तुम सुश्री होलमे को सूचित कर चुकी होगी।

सुभाष चंद्र बोस

तुम्हें सदा लोगों को यह नहीं बताना चाहिए कि तुम मेरे संपर्क में हो।

सुभाष चंद्र बोस

(कलकत्ता से 24.1.38 का तार)

रेडियोग्राम

40, कलकत्ता, 6/5 24 1505 ई0एम0पी0एम0सी0आई0एल0सी = शेंक्ल फ्रांस होटल विएना = सुरक्षित+

(कलकत्ता से 24.1.38 को तार)

रेडियोग्राम

117 कलकत्ता 8/7 24 1740 ई0एम0पी0 एल सी0 शेंक्ल फ्रांस होटल विएना

हार्दिक संवेदनाएं–बोस

38/2, एल्गिन रोड,
कलकत्ता।
अथवा 1, वुडबर्न पार्क,
कलकत्ता।
.25.1.38.

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

कल मैं यहाँ सुरक्षित पहुँच गया था और फिर व्यस्त हो गया। कल ही तुम्हें वायरलैस संदेश भेजा है—सुरक्षित। इसके बाद ही एक ही वायरलैस संदेश था–'हार्दिक संवेदनाएँ'।

तुम्हारे पिताजी की मृत्यु का दुखद समाचार सुनकर बहुत कष्ट हुआ। कृपया मुझे विस्तार से बताओ कि यह सब कैसे हुआ? एकदम अचानक! इतना दुखद समाचार! यह कोई दुर्घटना थी या वे अचानक बीमार हो गए थे। कृपया मेरी हार्दिक संवेदनाएँ स्वीकार करो और घर में सभी सदस्यों को मेरी ओर से ढाढ़स बँधाना।

मैं साथ में कुछ इटली की करेंसी भेज रहा हूँ। इसे अस्ट्रियाई करेंसी में परिवर्तित करा लेना और इस्तेमाल में लाना। मैं तुम्हें एल 1/– भी भेज रहा हुँ।

जल्दी में हूँ किंतु हृदय से तुम्हारे दुख में दुखी हूँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी

सुभाष चंद्र बोस

1, वुडबर्न पार्क,
अथवा,
38/2, एल्गिन रोड,
कलकत्ता।

8.2.38.

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

मैं 24 जनवरी को कलकत्ता पहुँच गया था तभी से अत्यधिक व्यस्त हूँ। मैं बता नहीं सकता कि तुम्हारे प्रिय पिताजी की मृत्यु के समाचार से मुझे कितना आघात लगा। मैं हैरान हूँ कि इतनी जल्दी यह सब कैसे हो गया। मैं सोच रहा था कि तुम मुझे विस्तार से सब लिखोगी, किंतु तुमने ऐसा नहीं किया। कृपया मुझे जल्दी बताओ कि यह दुखद घटना कैसे हुई। शायद तुम बहुत व्यस्त हो, इसीलिए मुझे पत्र नहीं लिख पा रहीं।

मुझे 28 तारीख को प्रांतीय सम्मेलन के लिए कलकत्ता से बाहर जाना पड़ा। 31 तारीख को वापिस आया और 1 फरवरी को वर्धा में कार्यकारिणी की बैठक में जाना पड़ा वहाँ से मैं कल ही वापिस लौटा हूँ। वर्धा में मेरी मुलाकात महात्मा गांधी, पंडित नेहरू एवं अन्य बड़े–बड़े नेताओं से हुई। 11 तारीख को मुझे हरिपुरा कांग्रेस के लिए जाना है। अब मैं अपना भाषण लिखने का समय निकालूँगा।

24 जनवरी को मैंने तुम्हें दो तार भेजे थे–एक अपने पहूँचने का और दूसरा तुम्हारे पिताजी की मृत्यु का। फिर 25 तारीख (शायद 27) जनवरी में तुम्हें एक रजिस्टर्ड पत्र लिखा था। क्या वह पत्र तुम्हें सही सलामत मिल गया? मुझे एयरमेल द्वारा तुरंत सूचित करो।

कृपया यह भी लिखो कि आजकल तुम क्या कर रही हो।

आशा है तुम्हें पत्रिका लगातार मिल रही होगी। मैं समय पर उसकी सदस्यता का नवीनीकरण करा दूँगा। क्या तुम्हें ओरिएंट चाहिए?

13 से 22 तारीख तक मैं कांग्रेस में व्यस्त रहूँगा। वहाँ से बंबई जाऊँगा और इस माह के अंत तक कलकत्ता वापिस लौटूँगा।

कृपया मुझे निरंतर पत्र लिखती रहना। तुम कैसी हो? तुम्हें व तुम्हारी माताजी को प्रणाम, लोती को प्यार।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्चः—बंबई में मेरा पता रहेगा—द्वारा बंबई प्रादेशिक कांग्रेस कमेटी, बंबई। लंदन के रास्ते मैं कुछ पैसा भेजूंगा।

सुभाष चंद्र बोस

38/2, एल्गिन रोड,
कलकत्ता।
हरिपुरा कांग्रेस
16.2.38.

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हें बताने के लिए यह पत्र लिख रहा हूँ कि आजकल मैं हरिपुरा कांग्रेस में अत्यधिक व्यस्त हूँ। आशा है तुम ठीक हो। अब तक मुझे तुमसे केवल एक एयरमेल पत्र मिला है—एयरमेल द्वारा भेजा पोस्टकार्ड नहीं मिला—पता नहीं क्यों।

फरवरी के मार्डन रिव्यू में तुम्हारा बैगस्टीन पर लेख प्रकाशित हुआ है। तुम्हें मिलाया नहीं मुझे सूचित करो। 23 तारीख को मैं यहाँ से बंबई के लिए रवाना हो जाऊँगा। एक सप्ताह बाद वहाँ से कलकत्ता चला जाऊँगा। हार्दिक शुभकामनाएँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

वर्धा
6.3.38

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारे 4/2 और 18/2 के पत्र के लिए धन्यवाद। 23 फरवरी

को मैं हरिपुरा से रवाना हो गया था। बंबई में बहुत व्यस्त रहा। बंबई में मेरा भव्य स्वागत हुआ। कल बंबई से चल पड़ा था और अब कलकत्ता के मार्ग में हूँ। कलकत्ता में तीन सप्ताह रहूंगा फिर यात्रा पर निकलूँगा। तुम्हारा 18 फरवरी का पत्र मुझे बंबई में मिला।

मुझे अभी तक तुम्हारा एयरमेल कार्ड और साधारण डाक द्वारा भेजा गया 26 तारीख का पत्र नहीं मिला है। पहला शायद खो गया और दूसरा संभवतः कलकत्ता में होगा। वहाँ से मेरी डाक मुझ तक नहीं पहुँच पाई है।

कृपया मुझे बताओ कि तुम्हारी माताजी को पेंशन मिलेगी अथवा नहीं। यदि मिलेगी तो क्या उतनी जितनी तुम्हारे पिताजी को मिल रही थी।

कलकत्ता से मैं तुम्हें विस्तृत पत्र लिखूँगा। इस वक्त बहुत जल्दी में लिख रहा हूँ। अब मुझे महात्मा गाँधी से मिलने जाना है जो पास के गाँव सोगोन में रहते हैं जो शहर से 7 मील की दूरी पर स्थित है।

तुम्हारे परिवार के प्रति मेरा हृदय दुख से भरा है। अपनी माताजी को मेरा प्रणाम कहाना। लोती और तुम्हें शुभाशीष।

जब से मैं वर्धा से कलकत्ता आया हूँ, तुम्हें पत्र नहीं लिख सका। हालाँकि हमेशा सोचता रहा। जबसे यहाँ आया हूँ, बहुत व्यस्त हूँ–किंतु अब लगातार तुम्हें पत्र लिखूंगा। आजकल यूरोप से एयरमेल सप्ताह में 4 बार आती है। आशा करता हूँ कि तुम्हारी माताजी शीघ्र ही पूर्ण स्वस्थ हो जाएँगी, उनको कष्ट सहने की शक्ति मिलेगी और आपरेशन के बाद हमेशा के लिए इस कष्ट से छूट जाएंगी। इस सप्ताह मैं तुम्हें लंबा पत्र लिखने का प्रयास करूँगा।–(अनुवाद–मैं तुम्हारे 8 पाउंड एक दिन बाद एयरमेल से भेज दूंगा और आशा करता हूँ कि एक ही दिन में वे तुम्हें मिल जाएँगे।–संपादक) मैं फिर जर्मन भाषा भूलने लगा हूँ।

आशा है तुम अपने स्वास्थ्य का यथासंभव ध्यान रखोगी। आशा

है तुम डॉक्टरों की राय लेकर अपना स्वास्थ्य ठीक करोगी। तुमने मुझसे ऐसा वादा किया था। अब तुम्हारी माताजी घर लौट आई हैं अतः अब तुम्हें अपने स्वास्थ्य को देखने का भी कुछ समय मिल जाएगा। मुझे यह जानकर बहुत दुख हुआ कि श्रीमती वेटर तुमसे इतनी नाराज हैं। अभी तक मुझे वह ऐयरमेल द्वारा भेजा गया कार्ड नहीं मिला है जो तुमने अपने पिताजी की मृत्यु के तुरंत बाद लिखा था। दूसरा पत्र मुझे मिल गया है। अगले पत्र में मैं उसकी सूची तुम्हें भेज दूँगा। तुम्हारे पत्र में अन्कूलस के बाद विएना की स्थिति का छोटा सा वर्णन झलकता है। अपनी माताजी को मेरा प्रणाम कहना और तुम्हें व लोती को शुभकामनाएँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी
38/2, एल्किन रोड, कलकत्ता
5.4.38 (मंगलवार)

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

आशा है मेरा 28 तारीख का पत्र तुम्हें मिल गया होगा। पिछली जनवरी में घर लौटते ही मैंने तुम्हें जो लीरा और पाउंड भिजवाए थे, वे तुम्हें मिले?

आजकल मैं अत्यधिक व्यस्त हूँ, क्योंकि 1 अप्रैल से कार्यकारिणी की बैठक है। आजकल हम सुबह से रात तक कार्य करते हैं। मैं ठीक हूँ, किंतु कार्य बहुत ज्यादा है।–

(अनुवाद–पिछले सप्ताह मैंने 8 पाउंड भिजवाए थे क्या तुम्हें मिले।–स0)

तुम्हारी माताजी का व तुम्हारा क्या हाल है? क्या वे ठीक है? उन्हें मेरा प्रणाम कहना और लोती व तुम्हें मेरा प्यार। – (अनुवाद मैं रात

दिन तुम्हारे विषय में सोचता रहता हूँ।–सं0) आशा है तुम स्वस्थ हो। हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सुभाष चंद्र बोस
अध्यक्ष,
अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी
38/2, एल्गिन रोड,
(1, वुडबर्न पार्क)
कलकत्ता
9.4.38.

प्रिय मित्र,

मैं तुम्हारा अपने मित्र श्री सील (लंदन के) से परिचय करा दूँ, जो इंग्लैंड से भारत लौट रहे हैं। उनके हाथ मैं ये चार चीजें भेज रहा हूँ– हाथी दाँत की माला, एक जोड़ी जूते, एक ब्रोच और एक छोटा सा बक्सा (चंदन की लकड़ी और हाथी दांत का बना) भेज रहा हूँ। श्री सील सुदंर विएना देखना चाहते हैं। कृपया इनकी मदद करना। तुम्हारी माताजी को प्रणाम तुम्हें व लोती को प्यार।

मैं, सदैव तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस
अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी

बंबई जाते समय गाड़ी में

9.5.38

मै अब बंबई जा रहा हूँ जहाँ लगभग 10—15 दिन रहूँगा। कृपया एयरमेल से इस पते पर उत्तर देना—द्वारा, डी0 एन0 पारीख, 26, मेरीन ड्राइव, बैकबे रिक्लामेशन, बंबई। 15 दिन बाद मैं बंबई छोड़ दूँगा। तब तुम मुझे मेरे कलकत्ता के पत्ते पर—38/2, एल्गिन रोड, पोस्ट आफिस कलकत्ता—पत्र लिख सकती हो जहाँ मैं अपनी माँ के पास रहूँगा। मेरा टेलिग्राफिक पता है— सुवास बोस, कलकत्ता। मुझे बंबई में कुछ जरूरी काम है— (1) श्री जिन्ना से हिंदू मुस्लिम के लिए सुझाव पर विचार—विमर्श। (2) सात प्रदेशों के प्रधान मंत्रियों के सम्मेलन की अध्यक्षता। (3) कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक की अध्यक्षता।

मैने पिछला पत्र तुम्हें 9 अप्रैल को लिखा था जिसमें अपने मित्र जो यूरोप जा रहे थे के हाथ पंक्तियाँ लिख कर भिजवाई थीं। तब से मैं तुम्हें पत्र नहीं लिख पाया। मुझे क्षमा करना। मैं बहुत व्यस्त था। भविष्य में लगातार पत्र लिखूँगा। तुम्हारी ओरिएंट की सदस्यता 6 माह के लिए नवीकरण करवा दी है। क्या तुम्हें 'पत्रिका' चाहिए? यदि तुम्हें उसे पढ़ने का समय हो तो मैं हर्षपूर्वक उसकी सदस्यता का भी नवीनीकरण करवा दूँगा।

आशा है तुम्हारी माताजी अब स्वस्थ होंगी। अब जबकि हमेशा के लिए कष्ट से छुटकारा हो गया तो वे आपरेशन के बारे में क्या सोचती हैं? मेरी भाभी का पिछले वर्ष आपरेशन हुआ था, गॉल ब्लैडर निकाल दिए जाने के बाद से रोज—रोज होने वाले दर्द से उन्हें छुटकारा मिल गया है। चलती गाड़ी में लिख पाना कठिन है, अतः लेख खराब है।

—(अनुवाद—जूते तुम्हें पूरे आए? क्या चंदन की लकड़ी की खुश्बू अच्छी है?—स0) पता नहीं मेरी जर्मन तुम्हें समझ आ रही है या नहीं?

खेद का विषय है कि घर लौटने के बाद से पुस्तक लेखन में कोई प्रगति नहीं हुई है:—(अनुवाद—कृपया लगातार मुझे पत्र लिखो। तुम्हारे पत्र

पढ़ने में मुझे क्षमा करना।) तुम्हारा 28 तारीख का पत्र मुझे 4 मई को मिला।

विएना के अखबारों में जो कांग्रेस के झंडे को लेकर हुए विवाद की खबर छपी है वह मैसूर राज्य की बात है।

तुम्हारे टेलिग्राफ ऑफिस के आवेदन का क्या हुआ? जब तुम्हें पता चले तो मुझे भी सूचित करना।

वहाँ के अपने मित्रों के विषय में लिखना। खेद है पत्राचार रोकना पड़ेगा। समय नहीं है। फाल्टिस दुख हुआ कि तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं है। यहाँ हम लोग गर्मी से परेशान हैं और बारिश की प्रतीक्षा में हैं, ताकि सूखी पृथ्वी को कुछ ठंड मिल सके। अपने वादे के अनुसार क्या तुम डाक्टर के पास गई थीं। अब तुम कैसी हो? तुम्हें अपना ध्यान रखना चाहिए।

पिछले दो माह मैं काफी घूमा हूँ, किंतु केवल बंगाल प्रांत में। अब देश के एक कोने से दूसरे कोने में जाऊँगा।

तुमने जो जर्मन पत्रिकाएँ भिजवाई हैं, उनके लिए धन्यवाद। फोटो देखने में मजा आयां, किंतु अभी पढ़ा कुछ नहीं है। कृपया बताओ कि उसमें कौन–कौन सा लेख पढ़ने योग्य है, यदि है तो किस पत्रिका में।

तुम्हारे व तुम्हारी मित्रों के संयुक्त हस्ताक्षरों वाला पोस्टकार्ड मिला। मैं तुम्हें यह बताना भूल गया कि तुम्हारा 24 जनवरी का विस्तृत पत्र मुझे मिल गया था जिसमें तुमने अपने पिताजी की मृत्यु का विस्तृत चर्चा किया था। वह कहीं इधर–इधर हो गया था, किंतु अंततः मुझे मिल ही गया। फिर मुझे तुम्हारा 29 मार्च का पत्र मिला। क्या तुम मार्च–अप्रैल में बादपिस्टयार गई थी? अब एक महीने की छुट्टी में वहाँ क्यों नहीं चली जाती? या कम से कम पंद्रह दिन के लिए?

क्या बादपिस्टयार निदेशक ने तुम्हें तुम्हारे लेख का कुछ पारिश्रमिक दिया?

मार्डन रिव्यू में मैंने तुम्हारा पिस्टयार के विषय में लेख देखा था किंतु ओरिएंट में नहीं। मैं शीघ्र ही वोन हेव को पत्र लिखूँगा। तुम भी उसे पत्र लिखती रहो। क्या तुम्हें तुम्हारे लेख वाली प्रतियाँ मिलीं? मेरा स्वास्थ्य कुल मिला कर ठीक है–किंतु मुझे अपनी शक्ति से अधिक कार्य करना पड़ता है।

मुझे इन्टरेन्सान्टे ब्लाट की प्रति मिली, जिसमें महात्मा गाँधी के साथ मेरा चित्र प्रकाशित हुआ है। मुझे तुम्हारा 15 अप्रैल का पत्र भी मिला। अब मुझे यह पत्र डाक में डालना है–इसलिए यहीं समाप्त करता हूँ। तुम सब लोग कैसे हो?

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

बंबई
20.5.38

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 12 तारीख का एयरमेल द्वारा भेजा गया पत्र 18 तारीख को कलकत्ता पहुँच गया था, जो मुझे भिजवाया गया अंतः आज ही मिला है। उसके लिए बहुत–बहुत धन्यवाद। मुझे दुख है कि मैं कई दिन से तुम्हें पत्र नहीं लिख पाया। फिर भी 9 तारीख को मैंने ट्रेन में तुम्हें पत्र लिखा था। तब मैं बंबई आ रहा था। यहाँ मैं बहुत व्यस्त हूँ। मैंने पिछले सप्ताह तुम्हें साधारण डाक द्वारा और इस सप्ताह भी कुछ कागज भिजवाए हैं। कलकत्ता में मैंने ओरिएंट तुम्हें भिजवाने की व्यवस्था कर दी है। मुझे अपना रोजमर्रा का कार्यक्रम लिखो। अब तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है? क्या डॉक्टर से राय ली और उसका बताया उपचार किया? क्या वह तुम्हें स्वस्थ कर पाया? मुझे प्रसन्नता है कि तुम्हारी माताजी अब पहले से

बेहतर हैं। कृपया उन्हें मेरा प्रणाम कहना। मैं स्वस्थ हूँ, हालांकि कार्य की अधिकता है।– (अनुवाद–मैं रात दिन तुम्हारे ही विषय में सोचता रहता हूँ।) आज रात पूना जा रहा हूँ और 23 तारीख को बंबई वापिस जाऊँगा। तब 24 या 25 में बंबई से कलकता के लिए रवाना होऊँगा। पूना यहाँ से 4 घंटे की यात्रा की दूरी पर है।– (अनुवाद–क्या कुछ पैसा तुम्हें भेजूँ?) इस पत्र का उत्तर कलकत्ता के पते पर ही देना।

कृपया मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ स्वीकार करें।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

अध्यक्ष
सुभाष चंद्र बोस
अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी
तार–सुवास बोस–कलकत्ता
टेलि0–पार्क, 59, कलकत्ता
26, मैरीनड्राइव, बंबई
24.5.38.

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारे 15 व 17 तारीख के पत्रों के लिए धन्यवाद जो मुझे बंबई में 22 तारीख को मिले। तुम्हारा पहला पत्र 12 तारीख का मुझे 20 तारीख में मिला और मैं तुम्हें उत्तर भी दे चुका हूँ। कुछ दिन पूना में बिताने के बाद मैं बंबई आ गया हूँ और आज रात कलकत्ता के लिए रवाना हो रहा हूँ। कृपया मुझे उसी पते पर उत्तर देना।–(अनुवाद–टेलिग्राफ ऑफिस से तुम्हें कितना पैसा मिलता है।–सं0) कलकत्ता जाकर तुम्हें पत्रिका भिजवाने की व्यवस्था करूँगा।

मैं वोन हैव को भी पत्र लिख रहा हूँ। यदि तुम्हारे पास उसका पता हो तो तुम भी पत्र लिख सकती हो।

जब तुम आस्ट्रियाई टिकट लगाती हो तो, मैंने देखा है कि तुम 1 शिलिंग 8 ग्रोशेन के टिकट लगाती हो और जब जर्मन टिकट इस्तेमाल करती हो तो 70 ग्रोशेन और 25 फेंनिग के। इसका क्या कारण है? 25 फेंनिग तो 50 ग्रोशेन के बराबर ही होने चाहिएं।

मेरे विचार से तुम्हें श्री फाल्टिस से एक बार मिल लेना चाहिए और मेरी नमस्ते भी कह देना।

क्या विएना में बेरोजगारी की समस्या कुछ सुधरी?

यह जानकर दुख हुआ कि तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं है। मुझे शंका है कि तुम अपने स्वास्थ्य की ठीक देखभाल नहीं कर रहीं। तुम ऐसा कब करोगी? काम अत्यधिक है– वैसे मैं बिल्कुल ठीक हूँ। सादर प्रणाम।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च :–संलग्न पत्र कृपया वोनहेव को भेज देना। मैं उनका पता भूल गया हूँ

सुभाष चंद्र बोस

अखिल भारतीय कांग्रेज कमेटी
(ट्रेन में)
26.5.38

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

बंबई से मैंने तुम्हें एक पत्र लिखा था। संभवतः मैं कुछ दिन तुम्हें पत्र न लिख पाऊँ, इसीलिए गाड़ी में पत्र लिख रहा हूँ। बंबई से कलकत्ता

की यात्रा 36 घंटे की है। तुम्हारे पिछले पत्र से यह जानकर, कि तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता, बहुत दुख हुआ। मुझे डर है कि तुम अपने स्वास्थ्य की उचित देखभाल नहीं कर रही। मैं समझ सकता हूँ कि अपने पिता की मृत्यु के पश्चात तुमने घर की जिम्मेदारी का बोझ उठा लिया है। मुझे आशा है कि अब तुम डॉक्टर के पास जाकर ठीक से अपनी सभी बीमारियों का इलाज करवाओगी। एक सप्ताह (या दो सप्ताह) की छुट्टी क्यों नहीं ले लेती? आराम करो और वोल हेव को पत्र लिखो। मुझे लगता है मैं कुछ पैसा तुम्हें भिजवाऊँगा—जो केवल तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए होंगे। तुम डॉक्टर के पास क्यों नहीं जाती? अब तुम कैसी हो? टेलिग्राफ ऑफिस से तुम्हें कितनी आय होती है।—सं0)

जब मैं बंबई में था तो मैंने तुम्हें कुछ बंबई के समाचार पत्र भिजवाए थे। क्या अमिय का मित्र विएना आया था? कृकृकृ (अनुवाद — तुम घर वापिस कब आओगी?—सं0)

मैंने 'ओरियंट' की तुम्हारी सदस्यता बनवा दी है और 'पत्रिका' भिजवाने की भी व्यवस्था करूँगा। आजकल तुम अपना समय कैसे व्यतीत करती हो? आजकल तुम्हारी बहन क्या कर ही है। जो पेंशन तुम्हारी माताजी को मिल रही है वह किसी परिवार के लिए पर्याप्त नहीं है। कृपया मुझे श्रीमती वेटर की सूचना दो। कुछ दिन पहले तुमने लिखा था श्रीमती वेटर का व्यवहार पुनः तुम्हारे साथ बहुत अच्छा हो गया है और मैत्री हो गई है। किंतु पिछले पत्र में तुमने दूसरी ही कहानी लिखी है। तुम उनसे मैत्री क्यों नहीं कर लेतीं? श्रीमती फाल्टिस व श्री फाल्टिस को मेरा प्रणाम कहना। लड़कों की एसोसिएशन कैसी चल रही है? यदि तुम्हारे पास फालतू समय हो तो मुझे बताओ। तब मैं तुम्हें कुछ सुझाव दे सकूँगा कि तुम भविष्य की क्या योजना बनाओ ताकि तुम्हारी तरक्की जल्दी हो सके। कृपया मेरे टेलिग्राफिक को नोट कर लो। सुबह को रवाना हुआ था और अब कलकत्ता लौट रहा हूँ। यह पत्र मैं गाड़ी में ही लिख रहा हूँ। वर्धा से कलकत्ता तक की ट्रेन की यात्रा 24 घंटे की है। लगातार यात्रा के वावजूद भी मैं बिल्कुल ठीक हूँ और मेरा वजन भी बढ़

गया है? यही बात मुझे पसंद नहीं है। 8 जुलाई को मुझे फिर वर्धा लौटना पड़ेगा क्योंकि कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक है।

तुम्हारे 31 मई के साधारण डाक द्वारा भेजे गए पत्र के लिए तथा 15 जून के एयरमेल द्वारा भेजे गए पत्र के लिए शुक्रिया। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि तुम्हें शीघ्र ही वेतनवृद्धि की उम्मीद है। आज के भारतीय समाचार पत्रों में समाचार है कि आस्ट्रिया की सरकार ने सभी यहूदी कर्मचारियों को फैक्टरी की नौकरी से निकाल देने के आदेश दिए हैं। यदि ऐसा हुआ तो विएना में थोड़े से यहूदी रह जाएँगे।

कृपया मुझे बताओ कि श्री हैव ने तुम्हें क्या उत्तर दिया। यदि वे तुम्हें भुगतान नहीं करते हैं तो मैं औपचारिक रूप से तुम्हारे नाम पर स्थानांतरण कर दूँगा। क्या तुम्हारे पास वे पत्र हैं, जिसमें श्री हैव ने मुझे पैसा देने की चर्चा की थी? वे पत्र आवश्यक है।

मुझे प्रसन्नता है कि तुम अपने स्वास्थ्य की देखभाल कर रही हो। हालाँकि पहले पत्र में तुमने कुछ और ही कहा था। उसमें तुमने कहा था कि तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं है। जो छोटा चित्र तुमने मुझे भेजा वह मुझे बहुत पसंद आया – अब तक के सभी चित्रों में से सबसे अच्छा। यदि तुमने यही चित्र कुछ दूरी पर से लिया होता तो और भी अच्छा आता। तुमने मुझे एक अच्छा चित्र भेजने का वादा किया था। पोस्टकार्ड साइज का फोटो चलेगा।

यदि तुम अधिक व्यस्तता और थकान महसूस करती हो तो तुम्हें हैल्सीकोल लेनी चाहिए। यह एक अच्छा टॉनिक है। यहाँ कलकत्ता में भी यह उपलब्ध है इसलिए आजकल मैं इसे ले रहा हूँ। हाँ आपको डॉक्टर के पास जाकर ठीक से अपना इलाज करवाना चाहिए। इस बार तुम बैगस्टीन में 'कुर' क्यों नहीं लेतीं? उससे तुम्हें लाभ होगा।

कलकत्ता पहुँचते ही मैं अत्यधिक व्यस्त हो जाऊँगा और पत्र व्यवहार के लिए मेरे पास समय नहीं रहेगा। इसलिए ट्रेन में पत्र लिख रहा हूँ। वर्ष भर में मुझे बहुत सी यात्रा भी करनी है। कृपया मुझे

समय–समय पर पंत्र लिखती रहना, बेशक मैं तुम्हें पत्र लिखूँ या नहीं। मुझे एक सचिव मिल गया है जिसे जर्मन भाषा आती है। यदि तुम्हारे पास फालतू वक्त हो तो कृपया मुझे बताओ। संभव है मैं तुम्हें समय के सदुपयोग के संबंध में कुछ राय दे सकूँ। क्या तुम अंग्रेजी और जर्मन भाषा की शार्टहैंड भूल गई हो? अपनी माताजी को मेरा प्रणाम कहना और तुम्हें भी शुभाशीष। तुम्हारी बहन को शुभकामनाएँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

27.6.38

कलकत्ता पहुँचने पर मुझे तुम्हारा 20 तारीख का पत्र (जर्मन) मिला। मुझे दुःख है कि तुम्हें एक पाउंड के 12.30 मार्क्स या 18.45 शिलिंग मिल जाते। यदि मार्क्स में हिसाब लगाया जाए तो शिलिंग की अपेक्षा कीमतों में क्या अंतर है? भारतीय विद्यार्थियों को अच्छी कीमत मिल जाएगी, क्योंकि उन्हें पंजीकृत मार्क्स मिलेंगे। आशा है तुम अपने स्वास्थ्य की देखभाल कर रही हो। क्या तुम्हे अंग्रेजी और जर्मन शार्टहैंड याद है?

सादर
तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

38/2, एल्गिन रोड,
कलकत्ता
8.7.38

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

बहुत दिनों से तुम्हारा कोई समाचार नहीं, वैसे गलती मेरी ही थी कि तुम्हें पत्र नहीं लिख पाया। इस बीच मैं यात्रा में ही रहा। 4 तारीख सोमवार को मुझे एंफ्लुएंजा ने घेर लिया, जिसने अभी भी पीछा नहीं छोड़ा

है। बहुत से मिलने-जुलने वाले आते रहते हैं फिर भी कुछ बहुत वक्त निकाल ही लेता हूँ।

मैंने तुम्हारी आनंद बाजार पत्रिका की सदस्यता का नवीनीकरण करवा दिया है। तुम्हारी सदस्यता सं0 – 1805 है। 15.3.38 से 14.9.38 तक तुम इसकी सदस्य हो। 15.3.38 के बाद के समाचार पत्र मिल रहे हैं या नहीं?

तुम कैसी हो? तुमने लिखा था कि डॉक्टर के पास जाओगी, क्या गई? मेरे विचार से आस्ट्रिया में विदेशी नागरिकों को कष्ट उठाना पड़ेगा, क्योंकि शिलिंग की अपेक्षा मार्क्स में उन्हें कम पैसा मिलेगा। कम से कम तुम्हारे साथ तो यही हुआ है, जो मैंने अनुभव किया।

यहाँ के समाचार पत्रों का कहना है कि आस्ट्रियावासी नई सरकार से संतुष्ट नहीं हैं। यह झूठ होना चाहिए – क्योंकि सब कुछ तो शांत है। बैगस्टीन में मेरे मेजबान की कोई खबर? किसी अन्य मित्र का कोई समाचार?

जब समय हो तो पत्र अवश्य लिखना। क्या जर्मन और अंग्रेजी का शार्टहैंड याद है?

सादर,
तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

38/2, एल्गिन रोड,
कलकत्ता
14.7.38

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारे 6 तारीख के पत्र के लिए शुक्रिया। वह मुझे 11 तारीख में मिला। एक सप्ताह मैं एंफ्लुएंजा से पीड़ित रहा, किंतु अब बेहतर

महसूस कर रहा हूँ।

21 तारीख को मैं कलकत्ता से रवाना होऊँगा, ताकि कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक में उपस्थित रह सकूँ। एक सप्ताह बाद वापिस लौटूँगा। मेरा जर्मन भाषा जानने वाला सचिव चला गया है और उसके स्थान पर अभी किसी अन्य को नहीं रखा है। वह परिश्रमी व्यक्ति नहीं था। क्या वॉन हाव ने तुम्हें कोई उत्तर दिया? वैसे क्या तुम्हें मालूम है कि विएना में भारतीय उसी प्रकार रजिस्टर्ड मार्क्स ले सकते हैं, जैसे कि जर्मनी में? भारतीय विद्यार्थियों के लिए यह बात सहायक होगी वर्ना आस्ट्रिया में उनका रहना बहुत महँगा हो जाएगा। पत्रिका कार्यालय की रसीद भेज रहा हूँ। कुछ महीने तुम्हें ओरिएंट और पत्रिका दोनों ही मिलेंगी। जब नवीकरण का समय पास आ जाए तो मुझे पहले ही बता देना ताकि मैं व्यवस्था कर दूँ। अमिय के पिता ने मुझे बताया था कि वे पुस्तकें लेने विएना आना चाहते हैं, किंतु उनका विचार है कि आस्ट्रिया जाना सुरक्षा की दृष्टि से ठीक नहीं, इसलिए उन्होंने अपने विएना के मित्रों को पत्र लिखे हैं कि वे पुस्तकें उस तक भिजवा दें। तुम्हारे देश के विषय में लोगों का क्या विचार है सुनना मजेदार लगता है। यदि तुम मेरी कुछ काम कर दोगी तो मैं तुम्हारा आभारी रहूँगा। एक प्रकाशक मेरे भाषणों व लेखों के संकलन की एक पुस्तक प्रकाशित करना चाहता है। मेरा विचार है कि यूरोप में मैंने जितने भी लेख लिखे थे सब संभाल कर रखे हैं। क्या तुम उन्हें एकत्रित करके पंजीकृत डाक द्वारा मेरे पास भिजवा दोगी? तुम्हें कष्ट तो होगा किंतु मेरी सच्ची सहायता होगी। प्रकाशक लेख और भाषण चाहता है। तुमने एक बार मुझे लिखा था कि तुम्हारे पिताजी ने भी मेरे संबंध में अपनी डायरी में (26 जनवरी) कुछ लिखा है। मैं जानना चाहूँगा कि उन्होंने क्या लिखा है। आशा है तुम पूर्णतः स्वस्थ हो। तुम्हारी माताजी को वे तुम्हें मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ। लोती को शुभाशीष। तुम्हारें स्वास्थ्य के विषय में डॉक्टर की क्या राय है?

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

(अनुवाद – तुमने सफेद कोट खरीदा है। यह तुम्हें बहुत अच्छा लग रहा है। यह कितने में खरीदा, शेष फिर)

सुभाष चंद्र बोस

अध्यक्ष

सुभाष चंद्र बोस

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी

27.7.38

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

मेरा 8 तारीख का पत्र तुम्हें 14 तारीख में मिला। जबकि तुम्हारा 15 तारीख का पत्र मुझे 19 में मिल गया था। मैं कलकत्ता से 21 तारीख को, कार्यकारिणी की बैठक के लिए वर्धा के लिए रवाना हुआ था। कल प्रातः कलकत्ता वापिस जा रहा हूँ। 24 घंटे बाद वहाँ पहुँच जाऊँगा। यहाँ मंत्रियों को लेकर समस्या खड़ी थी। इस विषय में समाचार पत्रों में समाचार पढ़ोगी ही । मुझे यह जानकर बहुत दुख हुआ कि तुम अत्यधिक लापरवाह हो और अभी तक डॉक्टर के पास नहीं गई हो। अब जब तक तुम मुझे यह नहीं लिखोगी कि तुम डाक्टर के पास गई थी और उससे इलाज करवा रही हो तब तक मै। तुम्हें पत्र नहीं लिखूँगा। जो समय पत्र लिखने में लगाती हो उसी का सदुपयोग डाक्टर के पास जाकर कर सकती हो। क्या अमिय वहाँ आया था? बहुत दिन से मैंने उसे भी पत्र नहीं लिखा। मैं तुम्हें भारतीय लोक कथाएँ अवश्य भिजवा दूँगा लेकिन केवल तभी जब आश्वस्त हो जाऊँगा कि तुमने अपना इलाज शुरू कर दिया है। मैं प्रायः ठीक हूँ, किंतु व्यस्तता (कार्य) गलती से अधिक है। मैंने अपने चाचा को पत्र लिखा कि वे जर्मनी के सज्जन से टिकटों के विषय में पत्राचार करें। नॉन हाव से कोई उत्तर मिला? आशा है अब दोनो पत्र लगातार मिल रहे होंगे। जब लोती नहीं होती तब तुम अपना समय कैसे व्यतीत करती हो? अकेलापन महसूस करती होंगी। तुम्हारी माताजी को तुम पर अभिमान होगा कि तुम अब कार्य कर रही हो। मित्र को जर्मन

में क्या कहते हैं—क्या लाइबलिंग? आज दोपहर मैं गाँधीजी से मिलने आश्रम गया था । वहाँ एक अंग्रेज व्यक्ति था जो साधु बन गया है। एक जर्मन महिला भी थी। उनकी अंग्रेज शिष्या सुश्री—स्लाड मीराबेन भी वहीं थीं। शेष कुछ लिखने को नहीं है अतः समाप्त करता हूँ। (अनुवाद—फिर मिलेंगे। मेरी प्रेयसी। सं0)

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

गाड़ी से
3.9.38.

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

मेरा विचार है कि जो थोड़ी बहुत जर्मन भाषा मुझे आती थी, मैं भूल गया हूँ, इसलिए आज कुछ पंक्तियाँ लिखने का प्रयास करूँगा।

मेरे पास हॉव का घर का पता नहीं है। वह प्रायः घर बदलता रहता था और बाद में उसने मुझे केवल पत्राचार का पता ही दिया था। मैं क्या करूँ? तुम बर्लिन में दूतावास को उसके पते के लिए क्यों नहीं लिखतीं? उसका पुराना वोहंग का पता तुम्हें भेजने का क्या लाभ होगा? अब वह वहाँ होगा भी कि नहीं पता नहीं।

लेखों व समाचार पत्रों की कटिंग्स के लिए धन्यवाद। तुम्हें काफी कष्ट हुआ होगा।

जर्मन जानने वाला सचिव होना आवश्यक नहीं हैं, किंतु यह सुयोग था कि उसे जर्मन भाषा भी आती थी।

बर्लिन से लोती का अंग्रेजी में लिखा पत्र मिला। मैं हैरान हैं कि वह किसने लिखा। क्या उसने?

तुम्हारे पिताजी की डायरी का अंश भेजने के लिए धन्यवाद। अब – (जर्मन भाषा का अनुवाद)

मुझे तुम्हारे 25 जुलाई, 10 अगस्त और 25 अगस्त के पत्र मिले, धन्यवाद। पहले मैंने सोचा—अपने स्वास्थ्य के प्रति बहुत असावधान। केवल यही पत्र लिख रहा हूँ। यदि तुम डॉक्टर से नहीं मिली तो कभी पत्र नहीं लिखूँगा। अगर डाक्टर से मिल ली तो सदा की तरह खुशी—खुशी पत्र लिखता रहूँगा। मुझे दुख है कि तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं है, जबकि मैंने तुम्हें अनेक बार यही कहा है कि अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखो और डाक्टर से संपर्क करो।

आजकल मैं अत्यधिक व्यस्त हूँ और पत्राचार के लिए भी मेरे पास वक्त नहीं है। इस समय मैं वर्धा के रास्ते में हूँ और यह पत्र गाड़ी में ही लिख रहा हूँ। 6 सितंबर तक कलकत्ता वापिस लौट आने की उम्मीद है। उसके बाद मद्रास की लंबी यात्रा पर निकलूँगा।

मुझे खुशी है कि अब तुम्हारी आय होने लगी हैं। कृपया मुझे लिखना यदि किसी चीज की आवश्यकता हो तो।

कृपया एम0 परिवार के सभी सदस्यों को मेरी नमस्ते कहना (कार्लोवी वरी में) क्या श्री एम0 आजकल हृदय रोग से गंभीर रूप सें बीमार हैं———

सुभाष चंद्र बोस

बंबई

13.10.38.

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 16 सितंबर का पत्र तीन अक्टूबर को पाकर प्रसन्नता हुई। यह देरी भी इसलिए हुई कि मैं उन दिनों दिल्ली में था। 23 तारीख को मैं कलकत्ता से दिल्ली के लिए वायुयान से रवाना हुआ था। बीच में कानपुर रूकना पड़ा, जहाँ मैं बीमार हो गया। वहाँ से, ठीक होने के बाद मैं 26 सितंबर को दिल्ली के लिए रवाना हुआ। वहाँ बहुत व्यस्त रहा और 5 अक्टूबर को बंबई के लिए रवाना हुआ। यहाँ मलेरिया रोग से ग्रस्त हो

गया। तीन दिन बाद बुखार उतरा अभी कमजोरी है। तुम्हारा पत्र रजिस्टर्ड था। फोटो के लिए धन्यवाद—हालांकि मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि पहले वाली अधिक अच्छी थी।

पता नहीं मैंने लोती को उत्तर दिया या नहीं। क्या दिया था? कृपया मुझे बताना।

कानपुर में तुम्हारे मित्र कटयार से मुलाकात हुई। आजकल वह काम भी कर रहा है और अच्छा पैसा कमा रहा है। दिल्ली में सिंह से भी मुलाकत हुई। वह वापिस घर लौट आया है।

यह जानकर हर्ष हुआ कि तुम्हारी माताजी पहले से स्वस्थ हैं। मुझे विश्वास है कि पहले की अपेक्षा अब विएना में रहना महँगा है। प्रायः यहाँ के समाचार पत्रों में आस्ट्रिया के समाचार छपते रहते हैं, किंतु वर्तमान शासन के पक्ष में नहीं।

दक्षिण भारत की मेरी यात्रा स्थगित हो गई है। उसके बजाय मुझे शिलांग (आसाम—पूर्वोत्तर में) और फिर वहाँ से दिल्ली जाना होगा। बंबई से मैं 15 तारीख को नागपुर होता हुआ कलकत्ता लौटा। कलकत्ता से शिलांग जाऊँगा और फिर दक्षिण भारत में।

सड़क पार करने में सावधानी बरता करो। तुम बहुत लापरवाह हो।

यह जानकर दुख हुआ कि मेजर की विएना में मृत्यु हो गई।

यदि श्रीमती वेटर का कोई समाचार हो तो देना। मेरे विचार से एच0 अकैडिमियल एसोसिएशन होटल द फ्रांस से मोरन्यू ग्रास में चली गई है। इसीलिए तुम उस होटल में अब नहीं जातीं।

विएना पहले जैसा ही है या कुछ जीवंत हुआ है?

कृपया अपनी माताजी को मेरा प्रणाम कहना और बहन को शुभकामनाएँ देना।–

(अनुवाद–प्रियवर – तुम्हें मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ)

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्चः—मैं बिल्कुल ठीक हूँ, हालाँकि कुछ कमजोरी है। कुछ दिन में यह भी ठीक हो जाएगी।

सुभाष चंद्र बोस

वर्धा

17.10.38.

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

बंबई से मैंने तुम्हें एयरमेल द्वारा पत्र लिखा था। अब मैं कलकत्ता जा रहा हूँ, किंतु रास्ते में कई जगह रूककर भाषण आदि देता हूँ। 20 तारीख को कलकत्ता पहुँचूंगा। यह पत्र गाड़ी में लिख रहा हूँ इसलिए हाथ हिल रहा है। मैं दो बार बीमार हुआ हूँ। एक बार 23 सितंबर को कानपुर में और दुबारा 5 अक्टूबर को बंबई में । मैं एक विशेष विमान द्वारा कलकत्ता से दिल्ली जा रहा था, किंतु बुखार के कारण मुझे रास्ते में कानपुर में रूकना पड़ा। ठीक होने पर पुनः वायुयान से दिल्ली के लिए चला । दिल्ली से 5 अक्टूबर को बंबई के लिए रवाना हुआ और वहाँ पुनः बीमार हो गया। अब मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ। कलकत्ता से मैं शिलांग, आसाम की राजधानी जाऊँगा। आसाम से लौटने पर लंबी यात्रा पर निकलूंगा। अभी तक कई कारणों से दक्षिण भारत नहीं जा पाया हूँ।

(अनुवाद—कृपया कभी—कभी मुझे जर्मन भाषा में पत्र लिखती रहो। मेजर की मृत्यु के बारे में सुनकर बहुत दुख हुआ।) आशा है तुम्हें पोलाऊ जाने के लिए अवकाश मिल जाएगा, जिसकी तुम्हें बेहद आवश्यकता है। अधिक काम मत करों और अपने स्वास्थ्य की देखभाल करो। क्या डॉक्टर से मिली ?

आशा है सावधानी से सड़क पार करती हो। यातायात बाएं से दाएं हो गया है।

पता नहीं मेरे पत्र तुम तक पहुँचने में इतने दिन क्यों लग जाते हैं।

मेरे विचार से मैं तुम्हारे 16 सितंबर के पत्र का उत्तर दे चुका हूँ। यह चित्र पहले चित्र जैसा अच्छा नहीं है।---

(अनुवाद—हर समय अकेलापन अनुभव करता हूँ। यद्यपि रात दिन अत्यधिक व्यस्त रहता हूँ। जीवन बहुत कठिन है किंतु मैं क्या कर सकता हूँ?)

आजकल तुम क्या कर रही हो? क्या सोच रही हो? आशा है तुम पूर्णतः स्वस्थ हो।

(प्रियतमा को ढेर प्यार। अपनी माता व बहन को मेरी नमस्ते कहना।—सं0)

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

19.11.38.

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

कई दिन से तुम्हें पत्र नहीं लिख पाया। इसके लिए खेद है। शायद तुम्हारे तीन पत्रों का उत्तर मैं नहीं दे पाया हूँ। क्षमा चाहता हूँ।

तुम्हारे पिछले पत्र से पता चला कि आजकल तुम अपने स्वास्थ्य की ओर ध्यान दे रही हो। मुझे प्रसन्नता हुई। कृपया सूचित करो कि अस्पताल से लौटने के बाद तुम्हें कैसा लग रहा है? यदि इतनी रोजाना दो लीसीकोल लो। इससे तुम्हें बहुत लाभ होगा। यह टॉनिक अब भारत में भी उपलब्ध है। मैं रोज लेता हूँ। दूसरी चीज सैंटोजेन है। यह जर्मनी का उत्पादन है और विएना में सस्ता होगा। कृपया दिन में एक बार इसे दूध के साथ अवश्य लो फिर तुममें परिवर्तन महसूस होगा। क्या मेरी यह राय मानोगी? मैं ये दोनों चीजें इस्तेमाल करता हूँ और इन दोनों ने मुझमें बहुत परिवर्तन ला दिया है।

क्या तुम्हें समाचार पत्र निरंतर मिल रहे हैं? एक माह पूर्व मैंने पत्रिका की सदस्यता का नवीनीकरण करवा दिया था। ओरिएंट की क्या स्थिति है? क्या वह तुम्हें लगातार मिल रहा है? क्या उसका नवीनीकरण करवाना जरूरी है? यदि हाँ तो कृपया मुझे बताओ।

अब मैं लखनऊ जा रहा हूँ। वहाँ से कानपुर जाऊँगा, जहाँ संभवतः कटयार से भी मुलाकात हो। उसके बाद लाहौर जाऊँगा। वहाँ से कुछ दिन के लिए कलकत्ता लौटूंगा। कलकत्ता से वर्धा जाऊँगा और वहाँ से दक्षिण भारत जाऊँगा। दक्षिण भारत की यात्रा लगातार टलती जा रही है। दिसंबर के प्रथम सप्ताह में मैं कलकत्ता में होऊँगा, 8 दिसंबर को वर्धा में और उसके बाद दक्षिण भारत में।

तुम्हारा 10 तारीख का पत्र मुझे 11 तारीख में मिला। अस्पताल जाने से पूर्व तुमने लिखा था। 28 तारीख का तुम्हारा पत्र भी समय पर मिल गया था। क्या मैंने सूचित किया था कि दोनों फोटो मिल गए हैं? पहला ज्यादा अच्छा था। दुख है कि तुम पर काम का अत्यधिक बोझ है। क्या आजकल तुम्हें तुम्हारी माताजी पर निर्भर होना पड़ता है? आजकल लोती क्या कर रही है? कृकृकृ(अनुवाद—मेरी प्रेयसी के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ—संपादक)

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

जोधपुर
6.12.38.

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 21 नवंबर का पत्र मुझे कराची में दोपहर में मिला। पिछले माह के मध्य से ही मैं ऊपरी भारत (यानी यू0पी0, पंजाब, और सिंध) की यात्रा पर हूँ। लगातार एक जगह से दूसरी जगह घूम रहा हूँ। अब

कलकत्ता के लिए वायुयान द्वारा रवाना होहूँगा। (फिलहाल रात भर जोधपुर में रहूँगा), वहाँ से वर्धा 9 तारीख को जाऊँगा। चार पाँच दिन वर्धा में रहने के बाद मैं दक्षिण भारत की यात्रा पर निकलूँगा। यह सब दिसंबर के अंत तक पूरा हो जाएगा।

क्रिसमस की हार्दिक शुभकामनाएँ और नववर्ष की मंगल कामनाएँ। यात्रा के दौरान संभवतः मैं तुम्हें लगातार पत्र न लिख सकूँ उसके लिए क्षमा कर देना। जब भी तुम्हारे पास समय हो मुझे पत्र अवश्य लिखना। मेरा ईश्वर से प्रार्थना है कि नया साल तुम्हारे लिए सुख स्वास्थ्यवर्धक सिद्ध हो।

तुम्हारे बुखार का चार्ट पढ़ कर खेद हुआ? कृपया प्रोफेसर विल्हम न्यूमान से अपने फेफड़ों की जाँच तुरंत करवाओ। वे फेफड़ों के विशेषज्ञ हैं। फेफड़ों की अनदेखी मत करो। तुमने कहाँ आपरेशन करवाया और किसने आपरेशन किया था? क्या तुमने गॉल ब्लैडर भी निकलवा दिया है? अमिय ने तुम्हारा कुमारी बनर्जी से परिचय कराया था, वह मुझे एक माह पूर्व मिली थी और उसने मुझ तक तुम्हारी नमस्ते व शुभकामनाएँ पहुँचा दी थी। एम0 का परिवार आजकल कष्ट में हैं, क्योंकि एम0 को अब रिटायर होना है। अपने स्वास्थ्य का विस्तृत हाल लिखो। मैं यह जानने को उत्सुक हूँ कि आजकल तुम्हारा क्या हाल है? क्या तुम्हारी माताजी विएना में ही थीं? वे ब्रेस्लू से कब वापिस लौटीं?

इसमें संदेह कि मैं आगामी वर्ष के लिए पुनः अध्यक्ष चुना जाऊँगा या नहीं।– ~~(अनुवाद—~~प्रियवर, मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।)

लगातार यात्रा करने और भाषण देने के कारण मैं बहुत थक गया हूँ।

समाचार पत्रों का क्या हुआ? क्या 'ओरिएंट' तुम्हें ठीक–ठाक मिल रहा है? जब नवीनीकरण आवश्यक हो तो मुझे बता देना। पत्रिका पढ़ने का तुम्हें समय मिल पाता है? डॉ0 शर्मा कलकत्ता में मुझसे मिलने

आए थे। माथुर से मेरी मुलाकात लाहौर में हुई थी। उसे अच्छी नौकरी मिल गई है।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

गाड़ी में
10.12.38.

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

मैं वर्धा के रास्ते में हूँ। वहाँ 4, 5 दिन रहकर बंबई के लिए रवाना हो जाऊँगा। बंबई से 18, 19 तारीख में मद्रास के लिए चल दूँगा। दो सप्ताह या तीन सप्ताह मद्रास प्रेसीडेंसी जाता रहूँगा। तुम मुझे पते पर पत्र लिख सकती हो–

द्वारा, प्रांतीय कांग्रेस कमेटी, मद्रास 8 या 9 जनवरी को कलकत्ता वापिस लौट आऊँगा।

मुझे इस बात की खुशी है कि तुम अस्पताल से निकलकर घर पहुँच गई हो। मेरे भतीजे ने लिखा है कि वह एक महीना विएना में व्यतीत करेगा। संभव है वह वहाँ पहुँच भी चुका हो।

तुम्हारा पिछला पत्र 1 दिसंबर का था जो मुझे घर छोड़ने से कुछ ही देर पहले मिला था। उससे पहला पत्र 21 नवंबर का था। वह तुमने अस्पताल से लिखा था उसका उत्तर मैं दे चुका हूँ। कृपया अपने अस्पताल में बिताए दिनों का विस्तृत वृतांत लिखो। तुम कहाँ थी? तुम्हारा आपरेशन किसने किया? क्या उन्होंने गॉल ब्लैडर भी निकाल दिया है? अब कैसा महसूस करती हो? मुझे तुम्हारे फेफड़ों की बहुत चिंता है। एक बार विशेषज्ञ द्वारा जाँच अवश्य करवा लो। इसकी अवहेलना मत करो।

पता नहीं तुम्हारे पत्र मुझ तक पहुँचने में इतना वक्त क्यों लगता है। तुमने भी देखा होगा कि मेरे पत्र तुम्हें काफी जल्दी मिल जाते हैं।

क्या अभी भी तुम्हें बुखार आता है? क्या ब्यूरो में कार्य ग्रहण कर लिया? क्या कार्य करने के योग्य तुम महसूस करती हो? मुझे उम्मीद है कि तुम सैंटोजन और हैल्सीकोल लेकर देखोगी। मुझे दोनों से लाभ पहुँचा है।

तुम्हारे गले के विषय में तुम्हारे डॉक्टर की क्या राय है? उसमें क्या खराबी है?

इस बार मैंने उत्तर प्रदेश, पंजाब और सिंध की यात्रा की। कभी मुझे एक दिन में दस–दस भाषण देने पड़े और 17 से 18 घंटे तक लगातार कार्य करना पड़ा फिर भी मैं स्वस्थ हूँ। सर्दियों की जलवायु ठीक है, इसलिए मैं इतना परिश्रम कर पा रहा हूँ।

आशा है अब तुम अपने स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखोगी और फिर बीमार नहीं पड़ोगी।

ये अध्यक्ष पद के पुनः चुनाव का कुछ विरोध हो रहा है। पता नहीं क्या होगा। किसी भी दशा में मुझे फरवरी के अंत तक कठोर परिश्रम करना ही है।

कुछ दिन पूर्व सुश्री बनर्जी से मेरी मुलाकात हुई थी। उसने तुम्हारी चर्चा की थी। उसने बताया कि विएना बहुत बदल गया है।

कृपया अपनी माता को मेरा प्रणाम कहना और लोती को मेरी शुभकामनाएँ देना। तुम्हारे शीघ्र स्वास्थ्य की कामना करता हूँ। क्रिसमस और नववर्ष की भी शुभकामनाएँ। पता नहीं इस वर्ष क्रिसमस और नववर्ष पर तुम कैसा महसूस करोगी। इससे पहले कि मैं भूल जाऊँ, अपने जन्मदिन की मुबारकबाद स्वीकार करो।–(अनुवाद–प्रियवर, हार्दिक प्यार)

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

बंबई

26.12.38.

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

आस्ट्रिया के चित्रों की पुस्तक भिजवाने के लिए शुक्रिया। वह मेरे पास 24 तारीख को पहुँच गई थी। आज तुम्हारा जन्मदिन है। मैं तुम्हें हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हें मानव की सेवा में सुख और शांति मिले तथा ईश्वर तुम्हारी मनोकामनाएँ पूरी करे।

आज वर्धा से चल दूँगा और कल मद्रास पहुँच जाऊँगा। 9 तारीख को कलकत्ता से वर्धा के लिए रवाना हुआ था जहाँ 16 तारीख की कार्यकारिणी की बैठक थी। वर्धा से मैं यहाँ आया वहाँ तभी से बीमार चल रहा हूँ, गला खराब है। अब मैं दक्षिण भारत की यात्रा पर निकलूँगा। 10 तारीख को वापिस बंबई पहुँचूंगा। यहाँ से 11 को बारदोली जाऊँगा, जहाँ कार्यकारिणी की बैठक होगी। मीटिंग के बाद 15 जनवरी को बंबई वापिस आ जाऊं, दो तीन दिन वहाँ रहने के बाद कलकत्ता चला जाऊँगा।

बहुत दिन से तुम्हें पत्र नहीं लिख पाया क्षमाप्रार्थी हूँ। प्रत्येक दिन तुम्हारे पत्र का इंतजार रहता था। तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है, विस्तार से लिखो।

नववर्ष के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ । मैं जानना चाहूंगा कि इस वर्ष नववर्ष की शाम तुमने कैसे बिताई। शुभकामनाओं सहित।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

(क्रिसमस कार्ड जिस पर बीजापुर की रानी चांदबीबी का चित्र है।)
क्रिसमस और नववर्ष की शुभकामनाएँ।

सुभाष चंद्र बोस
दिसंबर 1938
वर्धा
4.1.39

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

पिछले पत्र में मैंने तुम्हें लिखा था कि मैं दक्षिण भारत की यात्रा पर जाने वाला हूँ। एक बार फिर व्यवधान पैदा हो गया है। मैं यहाँ बंबई से 27 दिसंबर को महात्मा गांधी से मिलने आया था, मुझे उसी दिन वहाँ से मद्रास वापिस लौटना था, किंतु मैं बीमार हो गया था। इस बार गला और नाक खराब है। चेहरे में बहुत दर्द है और तेज बुखार है। दर्द कम हो गया है, किंतु चेहरे में अभी आराम नहीं आया, क्योंकि बुखार अभी चल रहा है। 4–5 दिन में ठीक हो जाने की आशा है। फिर मैं बंबई के उत्तर में बारदोली नामक जगह जाऊँगा, जहाँ 11 जनवरी को कार्यकारिणी की बैठक संपन्न होगी। कुछ दिन बाद कलकत्ता लौटने की उम्मीद है जहाँ 8 या 10 दिन रहूँगा। फिर यदि सब सामान्य रहा तो फरवरी में दक्षिण भारत की यात्रा पर निकलूंगा।

बहुत दिन से तुम्हारा पत्र नहीं मिला। शायद कलकत्ता में पड़ा हो। 8,10 दिन से मेरी डाक कलकत्ता से यहाँ नहीं भेजी गई है, क्योंकि बीमारी की वजह से मेरे कार्यक्रम में परिवर्तन हो गया। किंतु मैंने कलकत्ता संदेश भिजवा दिया था अतः कल तक सारी डाक इकट्ठी यहाँ पहुँच जाएगी। तुम्हारे स्वास्थ्य के विषय में जानने को बहुत उत्सुक हूँ। कृपया मुझे अपने अस्पताल में बिताए दिनों के विषय में विस्तार से लिखो, तुम्हें डाक्टर नर्स, दवाइयाँ – इलाज आदि कैसा लगा। तुम किस अस्पताल में थीं? क्या खाना खाने के बाद होने वाले दर्द से छुटकारा पाने की दृष्टि से तुमने अपना गॉल ब्लैडर निकलवा दिया है?

हालाँकि लोग मुझे अध्यक्ष चुनने को उत्सुक हैं, किंतु मुझे नहीं लगता कि मैं पुनः अध्यक्ष चुना जाऊँगा। कुछ लोग गांधीजी पर दबाव

डाल रहे हैं कि इस बार कोई मुसलमान अध्यक्ष बनाना चाहिए, यही गांधीजी भी चाहते हैं – किंतु मेरी अभी तक उनसे कोई बात नहीं हुई है। एक तरह से तो यह अच्छा रहेगा कि मैं पुनः अध्यक्ष न बनूँ। इससे मुझे सारा वक्त अपने लिए मिल जाएगा। इस माह कें अंत में चुनाव होंगे।

कृकृ(अनुवाद – प्रिय, तुम कैसी हो? मैं रात दिन तुम्हारे ही विषय में सोचता रहता हूँ।)

मेरे विचार से आजकल तुम्हारे पास घर और दफ्तर में दोनों ही जगह खूब काम होगा। आजकल घर पर तुम कौन से वाद्य बजाती हो? क्या गिटार? कार्यालय से कितने दिन अनुपस्थित रहीं? यदि स्वास्थ्य लाभ के लिए तुम गैस्टीन या कहीं और जा सकीं तो बेहतर होगा। कृपया बताओ कि श्रीमती और श्री हेलमिंग का क्या हाल है। आशा है आजकल उनके यहाँ बहुत से अतिथि होंगे। तुम्हारी माताजी के लिए सादर प्रणाम, बहन और तुम्हें प्यार।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

11.2.39

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

बहुत दिन से तुम्हें पत्र नहीं लिख पाया, क्षमा चाहता हूँ। इन दिनों मैं अत्याधिक व्यस्त रहा। अगले वर्ष के लिए भी मैं पुनः अध्यक्ष चुन लिया गया हूँ। महात्मा गाँधी और उनके सहयोगियों ने मेरा विरोध किया। पंडित नेहरू तटस्थ रहे। इस चुनाव का परिणाम मेरी विजय है। पूरा देश इस निर्णय से उत्साहित है, किंतु मेरे कंधों पर बहुत बोझ आ पड़ा है। मेरा काम बहुत बढ़ गया है, जिसे संभालना मेरे लिए कठिन होगा।

तुम्हें मेरे चुने जाने की खबर कब और कैसे हुई? मेरे विचार से

यूरोप के सभी पत्रों को केबल द्वारा सूचित किया गया था। मेरे भतीजे को इंग्लैंड में अगले दिन सुबह– 30 जनवरी को खबर मिल गई। क्य तुम मेरी जीत से प्रसन्न हो?

तुम्हारा 21 दिसंबर का पत्र मुझे दिसंबर के अंत या जनवरी के प्रारंभ में मिला। उससे तुम्हारा अस्पताल में बिताए गए दिनों के बारे में पता चला। क्या अब तुम पूर्ण स्वस्थ अनुभव करती हो?

तुम्हें विएना में मेरे भतीजे से मिलकर कैसा लगा? क्या उसमें कोई परिवर्तन अनुभव किया? मेरा मतलब बौद्धिक एवं शारीरिक परिवर्तन से है। उसने मुझे लिखा है कि उसे विएना बहुत पसंद आया।

दिसंबर के अंत में और जनवरी के प्रारंभ में मैं लगभग पंद्रह दिन अस्वस्थ रहा। अब ठीक हूँ। नाक और गले में परेशानी है।

क्रिसमस उपहार के तौर पर तुमने जो चित्रों की किताब भेजी है, उसके लिए शुक्रिया। मुझे यह पुस्तक बहुत पसंद आई। मुझे खेद है कि मैं तुम्हें कुछ नहीं भेज सका, क्योंकि मुझे डर था कि तुम्हें बहुत सी ड्यूटी देनी पड़ सकती है। क्या तुम्हें मालूम है कि यहाँ कोई ऐसी व्यवस्था है, जिसमें मैं अग्रिम टैक्स जमा करा दूँ ताकि तुम्हें पार्सल पर वहाँ टैक्स न देना पड़े? ऐसी स्थिति में मैं तुम्हे कुछ उपहार भेज सकूँगा।

क्या तुम मुझे अपने जन्म का सही समय, तिथि और स्थान बता सकती हो?

कृपया हैल्सीकोल और सैंटोजेन निरंतर लो। आशा है तुम मेरी राय मानोगी जो मैं अपने अुनभव के आधार पर दे रहा हूँ। कृकृकृ (अनुवाद–मैं सदा तुम्हारे बारे में ही सोचता रहता हूँ – तुम विश्वास क्यों नहीं करती? –सं0)

कृपया Zero लिखा करो Cero नहीं।

तुम्हारा 21 तारीख का पत्र मद्रास भेज दिया गया था, किंतु वह

मुझे सही सलामत मिल गया। मुझे बीमारी की वजह से अपनी मद्रास की यात्रा स्थगित करनी पड़ी।

तुम्हारा 19 जनवरी का पत्र भी मिला। मेरे विचार से वेयर जाने पर जो परिवर्तन हुआ वह तुम्हारे लिए अच्छा रहा। अब विएना में तुम कैसी हो?

क्या तुम्हें ओरिएंट चाहिए? कृपया मुझे सूचित करो।

मुझे तुम्हारा एक फरवरी का पत्र भी मिला जो तुमने मेरे पुनर्चुनाव की सूचना मिलने के बाद लिखा था। .... (अनुवाद–पता नहीं भविष्य में मुझे क्या कदम उठाना चाहिए। कृपया कुछ सुझाव दो कि मुझे क्या करना चाहिए?)

यह पत्र तुम्हारे तीन पत्रों के उत्तर में लिख रहा हूँ। तुम्हारे टाइपराइटर का क्या हुआ?

कृकृ(अनुवाद – बहुत प्यार व हार्दिक शुभकामनाएँ – सं0)

सुभाष चंद्र बोस

19.4.39

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हें पत्र लिखे एक अरसा हो गया। इन दिनों आपके पत्रों का उत्तर न दे पाने पर पता नहीं तुम मेरे बारे में क्या सोच रही होगी। भविष्य में तुम्हें लगातार पत्र लिखने का वादा करता हूँ। वैसे मुझे भी तुमसे शिकायत है कि तुम मुझे लगातार पत्र नहीं लिखती हो।

15 फरवरी को मैं बीमार हुआ था और तभी से लगातार बीमार हूँ। पिछले कई बरस से इतनी लंबी और गंभीर बीमारी कभी नहीं भुगती। अब कुछ स्वस्थ होना शुरू हुआ हूँ। 21 तारीख को कलकत्ता के लिए रवाना हो जाऊँगा।

बीमारी की हालत में ही मुझे त्रिपुरी जाना पड़ा जहाँ कांग्रेस का

वार्षिक सम्मेलन था और उसकी अध्यक्षता मुझे करनी थी। त्रिपुरी सम्मेलन के पश्चात मैं यहाँ बिहार प्रांत में अपने भाई के पास रहने आ गया। कलकत्ता पहुँचते ही मैं अत्यधिक व्यस्त हो जाऊँगा।

क्या तुम्हें अब पत्रिका मिल रही है? क्या उसे पढ़ने का समय मिल जाता है? यदि हाँ, तो तुम्हें मुख्य समाचार तो मिल ही जाते होंगे। पत्रिका के नवीनीकरण की तिथि पर मुझे सूचित कर देना।

शायद तुम जानती ही हो कि गाँधीवादियों के विरोध के वाबजूद मैं पुनः अध्यक्ष चुन लिया गया हूँ। वे बहुत नाराज हैं कि मैंने उनके उम्मीदवार को हरा दिया। गाँधीजी स्वयं मेरी जीत को अपनी हार मान रहे हैं। चुनाव के बाद से मेरी गांधीजी के ग्रुप से अनबन है जो अभी भी सामान्य नहीं हो पाई। कांग्रेस में बहुत विवाद है, मेरे चुनाव के बाद से, और यह सब गाँधीवादी गुट की करनी है।

तुम्हें यह जानकर प्रसन्नता होगी कि भारत सरकार ने मेरी पुस्तक पर से रोक हटा दी है। 'द इंडियन स्ट्रगल' नामक यह पुस्तक अब भारत में भी आ सकती है।

तुम्हारा स्वास्थ्य अब कैसा है? आपरेशन के बाद क्या तुम पूर्ण स्वस्थ महसूस कर रही हो? क्या यह परिवर्तन तुम्हारे लिए लाभकारी रहा? तुम्हारा रोजमर्रा का कार्य क्या है? बाकी समय कैसे बिताती हो? क्या तुम्हारा कोई मित्र है?

मैं चाहता हूँ कि काश मैं विश्राम के लिए बैगस्टीन जा पाता। लेकिन पता नहीं समय और पैसा निकाल पांऊँगा या नहीं। क्या बैगस्टीन के फ्रॉ हैलमिल की कोई खबर है? क्या अभी भी वे अपनी पेंशन चला रही हैं? क्या पहले की अपेक्षा अब अधिक यात्री आ रहे हैं?

.... (अनुवाद – पत्र न लिखने के लिए क्षमा चाहता हूँ। किंतु तुम्हारे विषय में हमेशा की तरह रोज सोचता रहता हूँ। क्या तुम भी मेरे बारे में सोचती हो? सच? –सं0) देखा मैं अभी जर्मन भाषा पूरी तरह भूला

नहीं हूँ। हालाँकि अब मुझे पढ़ने लिखने का समय नहीं मिलता। कृकृकृ (अनुवाद – कृपया हेलमिक से पूछना कि यदि मैं वहाँ इलाज करवाने आऊँ तो मुझे कितना खर्च करना पड़ेगा। पहले जितना या अधिक? यदि मैं वहाँ आऊ तो क्या तुम वहाँ पहुँच पाओगी? क्या तुम्हारा मालिक इसकी इजाजत दे देगा? – संपादक)

मैंने तुम्हें पिछला पत्र 10 जनवरी को लिखा था। तुमने 2 मार्च 1939 में उसका उत्तर दिया था। इसलिए तुम पर भी देरी का आरोप लग सकता है? क्या तुम सैंटोजन और हैल्सीकोल ले रही हो?

मुझे तुम्हारे चचेरे भाई – दंत चिकित्सक की मृत्यु के विषय में सुनकर बहुत दुख हुआ। मेरी हार्दिक संवेदनाएँ स्वीकार करो। एक के बाद एक रिश्तेदार का इस दुनिया को छोड़ कर जाना कितना दुखद हो सकता है।

क्या तुम्हें अपने पुराने मित्रों – यानी हमारे मित्रों – से मिलने का समय मिल जाता है। एक साल से मैं उनसे संपर्क नहीं कर पाया, किंतु अब पुनः पत्राचार शुरू करूँगा। अपनी माताजी को प्रणाम कहना और बहन को आशीर्वाद। .... (अनुवाद – प्रिये, तुम्हारे लिए प्यार। फिर मिलेंगे। – सं0)

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च :– क्या तुम्हें एक राय दे सकता हूँ? मुझे लगता है कि तुम्हारे शरीर में आयोडीन की कमी है। इसीलिए तुम्हारी गर्दन और गला अपेक्षाकृत मोटे हैं। डाक्टर से राय लो। तुम्हें रोज आयोड़ीन लेना चाहिए। यह बात महत्वपूर्ण हैं।

सुभाष चंद्र बोस

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी

रेलगाड़ी से,
14.5.39

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

मुझे खेद है कि मैं तुम्हें पहले पत्र नहीं लिख सका। पिछले कुछ माह मैं अत्याधिक व्यस्त रहा और 16 फरवरी से 10 अप्रैल के बीच बीमार भी रहा। बीमारी की हालत में ही मैं त्रिपुरी सम्मेलन में भी गया था। हालांकि अब स्वस्थ्य हूँ, किंतु अभी भी कमजोरी है। 21 अप्रैल से फिर कठोर परिश्रम में लगा हूँ। अब मैं (उत्तरी भारत) यूनाइटेड प्रांतों के सम्मेलनों में जाऊँगा । संभवतः 18 तारीख को कलकत्ता वापिस लौटूँगा।

तुम शायद अब तक सुन ही चुकी होगी कि मैंने कांग्रेस के अध यक्ष पद से त्याग पत्र दे दिया हैं, क्योंकि मेरे लिए महात्मा गांधी व उनके कट्टर अनुयायी के साथ समझौता करने में बहुत मुश्किलें पेश आई। हालांकि मेरे पक्ष में 3000 लोग थे कांग्रेस के, किंतु अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के 400 लोगों में मैं बहुमत नहीं पा सका। यह अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी 12 महीने तक कार्य करेगी, जब तक कि नया सम्मेलन नहीं होता।

त्याग पत्र देने से मुझे क्षति नहीं हुई है। बल्कि मैं और अधिक लोकप्रिय हो गया हूँ।

तुम्हारा 2.2.39 का पत्र मुझे समय पर मिल गया था, किंतु मैं अभी तक उसका उत्तर नहीं दे पाया। ...... (अनुवाद – मैं रोज तुम्हारे बारे में ही सोचता रहता हूँ।)

मुझे उम्मीद है कि तुम्हें मेरा जेलगौड़ा से लिखा पत्र मिल गया होगा। यह मैंने उन दिनों लिखा था जब मैं त्रिपुरी सम्मेलन के बाद आराम कर रहा था। तुम्हारे म्यूनिख जाने के संबंध में – मुख्य मुद्दा तुम्हारे नौकरी के भविष्य में तुम्हें विएना में अधिक पैसा मिलेगा या म्यूनिख में। भविष्य को नजर में रखकर ही तुम्हें यह निर्णय लेना होगा कि तुम म्यूनिख जा सकती हो, वरना विएना में रहना उचित है। भविष्य में तुम्हें विएना के 140

आर0 एम0 के स्थान पर 200 आर0 एम0 ही मिलते हैं तो तुम्हें विएना में अपने परिवार के साथ ही रहना चाहिए।

देरी से पत्र लिखने के लिए क्षमा चाहता हूँ। अब मैं बेहतर महसूस कर रहा हूँ। भविष्य में तुम्हें लगातार पत्र लिखता रहूँगा। ....
(अनुवाद – सदा की तरह अत्यधिक प्यार – संपादक)

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

रेलगाड़ी से,
15.6.39

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

मैं इस समय गाड़ी में हूँ, लाहौर जा रहा हूँ, जहाँ से पेशावर जाऊँगा (पूर्वी पश्चिमी भारत)। वहाँ से बंबई जाऊँगा जहाँ 21 जून को पहुंचूँगा। कुछ समय बंबई में रहूंगा फिर वहाँ से 8 या 10 जुलाई को कलकत्ता पहुंचूँगा। संभव है बंबई से सीधा कलकत्ता लौंटू–तब मैं जून के अंत में कलकत्ता पहुँच जाऊँगा।

अब से तुम्हें लगातार पत्र लिखूंगा अर्थात् सप्ताह में एक बार। आशा है तुम्हें भी पत्र लिखने का समय मिलेगा। फोटो जो तुमने खीची और 30 मई के अपने पत्र के साथ भिजवाई उसके लिए धन्यवाद। यह पत्र मुझे 9 जून को कलकत्ता पहुँच गया था।

मेरे लिए यही सही कदम था मैं त्यागपत्र दे दूं। इसकी वजह से बहुत सी जगहों पर (बंगाल आदि) और उदारवादी दृष्टिकोण के लोगों में, मैं बहुत लोकप्रिय हो गया हूँ, हालांकि गाधीवादी मुझसे नाराज है। किंतु इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। पहले की अपेक्षा अब मुझ पर और भी अधिक काम का बोझ आ पड़ा है। अब मैं कांग्रेस में ही एक नया गुट, जिसे फारवर्ड ब्लॉक कहा जाएगा, बना रहा हूँ जिसमें सभी निष्पक्ष और उदारवादी व्यक्ति शामिल होंगे। इसके लिए मुझे अब बहुत सा काम और यात्राएँ करनी पड़ेंगी।

भारत एक अद्‌भुत देश है, जहाँ व्यक्ति इसलिए लोकप्रिय नहीं होता कि उसके हाथ में शक्ति है, बल्कि वह पद छोड़ दे तो लोकप्रिय होता है। उदाहरण के लिए इस बार लाहौर में मेरा पहले, जब मैं कांग्रेस अध्यक्ष था, की अपेक्षा अधिक जोरदार स्वागत हुआ।

21.6.39

मुझे दुख है कि मैं यह पत्र पहले डाक में नहीं डाल पाया। अब मेरी लाहौर और पेशावर की यात्रा पूरी हुई है और मैं अब बंबई की ट्रेन में हूँ। एक सप्ताह मैं बंबई में ही रहूँगा। बंबई के बाद संभवतः दक्षिण भारत जाऊँगा।

लाहौर में मेरी जेब काट ली गई थी। किसी चोर ने भीड़–भाड़ में मेरी जेब से मेरे पत्र और पैसे चुरा लिए थे। उन पत्रों में तुम्हारा पत्र और फोटो भी थे। मुझे दुख हुआ। यदि संभव हो तो मुझे अपना चीतिल द्वारा खिचवाया गया पासपोर्ट आकार का फोटो भेजो। कुछ माह पूर्व तुमने पोस्टकार्ड आकार के दो चित्र भेजे थे। वे भी कुछ दिन मेरे पास रहे फिर न जाने कहाँ खो गए।

आजकल शारीरिक 'श्रम बहुत करना पड़ रहा है। खेद है कि आजकल मुझे आराम भी नहीं मिल पा रहा, क्योंकि यही काम का समय है, जबकि स्वास्थ्य की दृष्टि से मुझे परिवर्तन के लिए कहीं जाना चाहिए। मैं सोच रहा हूँ कि जून और जुलाई में काम करने के बाद अगस्त में आराम करूँगा। अगस्त में बरसात शुरू हो जाती है। जिससे यात्रा करना कठिन हो जाता है।– (अनुवाद – अगस्त तक प्रतीक्षा करो। शायद मैं गैस्टीन आऊँ। यदि मैं वहाँ पहुँचूं तो तुम्हें भी वहाँ पहुँचना होगा। क्या तुम आओगी?) आजकल जर्मन भाषा पढ़ने का बिल्कुल भी समय नहीं मिल पा रहा। क्या तुम भारतीय समाचार पत्र पढ़ती हो? तुम्हें पढ़ने चाहिएं। क्या तुमने भगवद्‌गीता पढ़ी? हाँ, क्या मैंने तुम्हें बताया था कि मेरे भतीजे अशोक ने शादी कर ली है? मेरा दूसरा भतीजा अमिय इस माह के अंतिम सप्ताह में इंग्लैंड से घर वापिस लौट रहा है।– (अनुवाद–तुम

भारत कब आओगी? तुम्हारी माताजी और तुम कैसी हो? बहुत सा प्यार और ढेरों शुभकामनाएँ–सं0)

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

जबलपुर
4.7.39

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

कुछ दिन पहले तुम्हारा 23 जून का पत्र बंबई में मिला। यह कलकत्ता से इधर भिजवाया गया था। मैं 14 जून को कलकत्ता से रवाना हुआ था पंजाब और सीमावर्ती प्रांतों में घूमा। वहाँ से दिल्ली होता हुआ बंबई गया। अब मैं जबलपुर (मध्यवर्ती प्रांत) में हूँ। कुछ दिन में कलकत्ता या बंबई के लिए रवाना हो जाऊँगा। अगले कई सप्ताह तक लगातरा यात्रा में रहूँगा। मेरा स्वस्थ्य अभी ठीक नहीं है, बहुत कमजोरी है। लोगों में इतना उत्साह है कि मुझे स्वास्थ्य का ध्यान किए बगैर कार्य करना होगा। हम कांग्रेस में ही एक नया गुट फारवर्ड ब्लॉक बना रहे हैं। सब ओर से सहयोग मिल रहा है। अब मैं सोच रहा हूँ कि एक महीना कार्य करने के बाद मैं कम से कम एक महीना आराम करूँगा। उदाहरण के लिए यदि मैं 15 अगस्त से 15 सितंबर तक आराम करता हूँ तो मैं पुनः वर्ष के अंत तक कार्य करने के योग्य हो जाऊँगा। इसलिए अब पहले की अपेक्षा निरंतर पत्र लिखूंगा। मैंने अंतिम पत्र तुम्हें 21 जून को लिखा था, जो बंबई में डाक में डाला था। अब तक वह तुम्हें मिल गया होगा।

मुझे प्रसन्नता है कि तुम कुल मिलाकर ठीक–ठाक हो। मेरे विचार से आपरेशन के प्रभाव से मुक्त हो चुकी हो। मेरे विचार से गैस्टीन में तुम अपना इलाज कराओ तो पूर्णतः स्वस्थ हो ज़ाओगी। आशा है तुम्हारी गॉल ब्लैडर की परेशानी दुबारा नहीं हुई होगी। यदि गैस्टीन आओ तो अगस्त या सितंबर अच्छा है, क्योंकि उन दिनों में अधिक गर्मी होती है और न अधिक सर्दी।

मेरा जो भतीजा कैंब्रिज में पढ़ रहा था वह वापिस घर लौट आया है। कुछ माह यहाँ रहने के बाद पुनः कैंब्रिज लौट जाएगा।

एक माह पहले तुमने जो पत्र और फोटो भेजे थे वे मुझे मिल गए हैं। दुर्भाग्य से मेरी जेब कट गई और वह पत्र, फोटो तथा पैसे जो मेरी जेब में थे वे चोरी हो गए। संभवतः तुम चीतिल वाली फोटो पोस्टकार्ड आकार में पुनः भिजवा सको। पहली दो पोस्टकार्ड आकार की फोटो भी कुछ दिन मेरे पास रहने के बाद खो गई।

तुम फ्रेंच क्यों पढ रहीं हो? तुमने दुबारा पढ़ना शुरू किया या पहले का ज्ञान ही पर्याप्त था जो तुम्हें परीक्षा में पास करवा सकें?

रेलगाड़ी से

6.7.39

जबलपुर में अपना कार्य पूरा करने के पश्चात मैं बंबई लौट रहा हूँ। पक्का पता नहीं कि कब कलकत्ता वापिस लौटूँगा, क्योंकि मुझे बहुत सी यात्राएँ करनी हैं। फिर भी तुम मुझे मेरे कलकत्ता के पते पर, 38/2, एल्गिन रोड, कलकत्ता, पत्र लिखना। मुझे मिल जाएँगे।

मुझे खुशी है कि तुम्हारी फ्रेंच की परीक्षा हो गई और तुमने वह उत्तीर्ण कर ली है। क्या तुम्हें कोई अन्य भाषा भी सीखनी पड़ेगी?

मुझे कम से कम एक माह छुट्टियाँ लेनी चाहिए, लेकिन अभी यह मालूम नहीं कि अगस्त के मध्य में या सितंबर के प्रारंभ में । किंतु अगस्त के मध्य से पहले छुट्टी लेना कठिन है।

यात्रा और कठिन परिश्रम के बावजूद मैं स्वस्थ हूँ।– (अनुवाद – मैं सदा तुम्हारे विषय में ही सोचता रहता हूँ। हमेशा की तरह ढेरों प्यार –सं0)

तुम्हारा शुभाकांक्षी

सुभाष चंद्र बोस

बर्लिन

3.4.41

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हें मेरा यह पत्र पाकर परम आश्चर्य होगा और यह जानकर तो और भी कि यह पत्र मैं तुम्हें बर्लिन से लिख रहा हूँ। कल दोपहर ही मैं बर्लिन पहुँच गया था और तत्काल तुम्हें पत्र लिखता किँतु मैं अत्यधिक व्यस्त हो गया था। सभी होटल भरे पड़े हैं और बड़ी मुश्किल से मेरे लिए एक कमरे की व्यवस्था हो पाई आज मैं दूसरे होटल में 'नर्बरगर हॉफ' में शिफ्ट कर रहा हूँ।

मेरा कार्यक्रम अभी निश्चित नहीं हैं, किंतु पूर्ण संभावना यही है कि मेरा मुख्यालय बर्लिन ही रहेगा। मैं नहीं जानता कि मैं विएना आ पाऊँगा या नहीं। इसलिए तुम मुझसे मिलने बर्लिन अवश्य आओ। क्या तुम आ सकती हो? तुमसे मिलकर मुझे कितनी प्रसन्नता होगी यह तुम समझ ही सकती हो।

यह भी संभावना है कि मुझे यहाँ सचिव की आवश्यकता पड़े। यदि ऐसा हुआ, तो क्या तुम आ जाओगी? क्या तुम्हारी माताजी और बहन इस बात के लिए राजीं हो जाएंगी?

मेरा पासपोर्ट मेरे नाम से नहीं है, बल्कि ओरलैंडों मैजोटा के नाम से है। इसलिए जब तुम मुझे पत्र लिखो तो इसी नाम से लिखना। इस बात को पूर्णतः गुप्त रखना कि मैं यहाँ आया हूँ। तुम अपनी माताजी को और बहन को तो बता सकती हो, किंतु वे किसी से चर्चा न करें।

लौटती डाक से निम्न बातों के उत्तर दो।

(1) यदि मुझे यहाँ सैक्रेटरी की आवश्यकता हुई तो क्या तुम काम करोगी? (2) यदि बर्लिन आओगी तो कितना वेतन लोगी? (3) अभी तुम्हें कितना वेतन मिल रहा है। (4) आजकल किस ब्यूरो में काम कर रही हो और कितने घंटे काम करती हो। (5) क्या तुम्हारे पास टेलिफोन है। क्या तुम्हारा नं0 अभी भी आर 60.2.67 है। (6) क्या तुम कुछ दिन के लिए ब्यूरो से छुट्टी लेकर बर्लिन आ सकती हो ताकि हम मिल सकें? यदि

यहाँ आओ तो क्या यहाँ एक सप्ताह रहने और आने–जाने का व्यय कर पाओगी? बर्लिन में कोई जान–पहचान है जहाँ तुम रह सको, या मुझे ही बर्लिन में तुम्हारे लिए जगह खोजनी पड़ेगी? यह प्रश्न केवल इसलिए है ताकि हम वैसे ही मिल सकें।

कृपया शीघ्र इस पते पर उत्तर दो – ओरलैंडो मैजोटा, होटल नर्बरगर हॉफ, नजदीक एनहाल्टर बैनहॉफ। कृपया अपनी माताजी को मेरा प्रणाम और बहन को शुभाशीष कहना।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च :–यदि तुम एक सप्ताह बर्लिन में रहने का खर्च नहीं उठा पाओगी तो क्या उपहार के लिए पैसा उधार लेकर यहाँ आ जाओगी। युद्ध स्थितियों के कारण सरकार की ओर से तो यात्रा पर कोई प्रतिबंध नहीं हैं?

सुभाष चंद्र बोस
(तार–दिनांक 3 अप्रैल 1941)
ई0 शेंक्ल फ़ैरोगासे 24,
विएना 18

(जर्मन भाषा का अनुगद – बोस आजकल बर्लिन में है और पूछ रहे हैं कि तत्काल बर्लिन आना संभव हैं? विदेश विभाग को सूचित करो – सं0)

17.6.42

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

आशा है तुम स्वस्थ हो। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना। यह मित्र तुमसे मिलना चाहता है और बात करना चाहता है। क्या तुम इस पर विश्वास करती हो। इन परिस्थितियों में जो उचित समझो वही करो।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
ओ0 मैजोटा

(तार–दिनांक 8.7.42)
रोम
शेंक्ल सोफीनस्ट्रासे 6
बर्लिन चार्लटनबर्ग–2

.... (अनुवाद....... कल एंबलडंग ने तुम्हारे लिए स्टॉप शुगर कार्ड भेजे हार्दिक शुभकामनाएँ – मैजोटा)

बर्लिन
मंगलवार, 1.9.42

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

कल रात मैं कोनिग्सब्रक से लौटा। वहाँ हमारी संख्या 740 है।

हैंबर्ग में हमें अच्छी सफलता मिली।

मैं ठीक हूँ। श्री फाल्टिस संभवतः विएना के रास्ते सें शुक्रवार को यहाँ आएंगे। साथ में तुम्हारे लिए भोजन के कूपन हैं। आशा है तुम ठीक हो।

रात को शायद फोन करूँ – यदि कोई अतिथि न आया तो। कृपया सूचित करना कि तुम विएना कब लौटना चाहती हों? मैंने तुम्हारे पत्र श्री मदन को भिजवा दिए थे। शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारा शुभाकांक्षी
ओ0 मैजोटा

(तार–दिनांक 26.9.42)
तार
1626 बर्लिन चार्लटन बर्ग/2–20–26–1750
शेंक्ल विएना – 18
फैरोगासे – 24 विएना

.... (अनुवाद – भाषा का प्रश्न हल हो गया है। इसके विषय में चिंतित न रहो। हार्दिक शुभकामनाएँ –मैजोटा – सं0)

बर्लिन

बृहस्पतिवार 1/10/42

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

कल यानी बुधवार को मैंने पंजीकृत डाक द्वारा तुम्हारी प्रति 'इंडियन स्ट्रगल' को भिजवा दी थी। आशा है शीघ्र ही तुम्हें मिल जाएगी।

क्या तुम्हें सिगरेट चाहिए? यदि धीरे-धीरे धूम्रपान छोड़ दो ते बेहतर होगा। किंतु यदि चाहिए तो मैं भिजवा सकता हूँ। मैं फ्रॉ डिडरिक से ऐसी व्यवस्था कर रहा हूँ, ताकि तुम्हें लगातार पढ़ने को कुछ सामग्री मिलती रहे।

मुझे तुम्हारा 19/9 और 27/9 का पत्र मिल गया है। इसके साथ कुछ टिकटें भिजवा रहा हूँ।

आज (बृहस्पतिवार) तुम्हें एक्सप्रेस पार्सल द्वारा कुछ फल भी भेज रहा हूँ। आशा है ठीक ठाक हालत में तुम तक पहुँच जाएँगे।

फ्रॉ बीकृक् (अस्पष्ट) पुत्री का दो सप्ताह या दस दिन के अंदर विवाह हो जाएगा। वह पूछ रही थी कि क्या उन दिनों तुम बर्लिन में होगी। मैंने कह दिया नहीं।

वैसे, क्या मुझे उसे कुछ उपहार देना चाहिए? यदि हाँ, तो क्या? क्या कोई सुझाव दे सकती हो?

एक दिन मैंने श्रीमती हाफिज का पत्र तुम्हारे पते पर भिजवाया था। उन्हें जवाब लिखने में पूरी सावधानी बरतना।

मुझे आशा है कि तुम्हारी माताजी को व लोती को फल पसंद आएंगे। माताजी को प्रणाम और लोती को प्यार। आजकल पीटरहॉफ की नियुक्ति कहाँ पर है? क्या ग्राज में ?

शेष फिर, शुभकामनाओं सहित।

तुम्हारा शुभाकांक्षी

सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च :–मंगलवार को शायद मैं एक सप्ताह या कम समय के लिए रोम जाऊँगा । शायद 11 अक्तूबर को कोनिग्स में होऊँगा।

ओ0 मैजोटा

(तार – दिनांक 6.10.42)
शेंक्ल फैरोगासे 24 विएना 110
.......(अनुवाद – यात्रा में हूँ, लौटकर फोन करूँगा। – मैजोटा)

बर्लिन
शुक्रवार
(तिथि –नहीं –सं0)

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

बुधवार और बृहस्पतिवार को मैं कोनिग्सब्रक में था। मंगलवार को रात तुम्हें फोन करने की कोशिश की, किंतु एक्सचेंज ने बताया कि उधर से कोई जवाब नहीं आ रहा। रात 10 बजे का समय था।

मेरा विश्वास है कि प्रतिमाह स्विरका को 20 एम और एलिजाबेथ को 10 एम मिलते हैं। क्या नहीं ?

कोनिग्सब्रक में अब संख्या 1100 से भी ऊपर है।

साथ में कुछ भोजन के कूपन भेज रहा हूँ।

तुम्हारी माताजी कैसी हैं? उन्हें मेरा प्रणाम कहना। तुम और लोती कैसी हो? मैं ठीक हूँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
ओ0 मैजोटा

बर्लिन, चार्लटनबर्ग
सोफीन स्ट्रीट –6–7
बुधवार सायं
(21–10–42? सं0)

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

साथ में रिकासबन का पत्र है। कृपया जो तुम उचित समझो वही करो।

मेरी रोम यात्रा कुछ दिन के लिए स्थगित हो गई है। कल दोपहर में ही मुझे पता चला, रोम से सूचना मिली। सभी व्यवस्थाएँ दे दी थीं।

फॉ0 बुडहन (?) की बेटी का विवाह आज संपन्न हो गया। मैंने अपने कमरे उन्हें पार्टी करने के लिए दे दिए थे।

आशा है तुम ठीक हो। शेष सभी ठीक है।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
ओ0 मैजोटा
(संलग्नक)

बर्लिन
दिनांक –21–10–1942
बर्लिन, चार्लटनबर्ग–2
सोफीन स्ट्रासे–6–7
शुक्रवार 23.10.42

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

साथ में एक पत्र भेज रहा हूँ। आवश्यक कार्रवाई के बाद इसे लौटा देना और अपने विषय में उत्तर देना।

मंजूरुद्दीन अहमद ने मुझे 'गैहमिनस वोल इंडियन' नामक पुस्तक

भिजवाई थी। मैं वह उसे लौटाना चाहता हूँ – किंतु वह मिल नहीं रहा। क्या तुम कुछ जानती हो?

साथ में मेरा चित्र है। क्या तुम यही चाहती थी?

क्या तुम मुझे बता सकती हो कि बीबर के फोटो मुझे कहाँ से मिल सकते हैं? मुझे कुछ और चित्रों के लिए भी आदेश देना है किंतु मुझे उनका नंबर मालूम होना चाहिए। आशा है वहाँ सब ठीक है।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
ओ0 मैजोटा

बर्लिन
शनिवार, 26.10.42

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

मैं टेलिफोन के बिल भिजवा रहा हूँ ताकि तुम देख सको कि कौन से बिल मेरे नहीं हैं।

बर्लिन के कृकृ (अस्पष्ट) ने मेरी शिकायत पर कार्रवाई की थी और उन्होंने मुझे बताया कि उन्होंने विएना को सूचित किया है कि मैं अंग्रेजी बोल सकता हूँ।

कल ही तुम्हें पत्र लिखा था शीघ्र ही तुम्हें मिल जाएँगा।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
ओ0 मैजोटा

5.11.42

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

कल प्रातःकाल जल्दी ही मैं वायुयान द्वारा रोम के लिए रवाना होऊँगा। साथ में वह फोटो भेज रहा हूँ जो तुम वापिस चाहती थी। शेष

फोटो मेरे पास है। पता नहीं रोम से तुम्हें तार भेज पाऊँगा अथवा नहीं। इसलिए कोई खबर नहीं का अर्थ सब ठीक–ठीक समझना। इसी बीच तुम्हारे लिए शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

तुम्हारें भाई से मुझे पॉकेट लैंप मिल गया है।

माताजी को प्रणाम और लोती को शुभाशीष।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

(तार दिनांक 7.11.42)
7 नवंबर 1942
रेडियोग्राम
123 रोम 107 1430 =
शेंक्ल फैरोगासे 24 विएना 18.
.... (अनुवाद – सुरक्षित पहुँच गया, शुभाशीष मैजोटा –संपादक)